सदल मिश्र-ग्रंथावली

(सदल मिश्र की कृतियों का संग्रह)

सम्पादक

श्रीनलिनविलोचन शर्मा

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण
शकाब्द १८८२, विक्रमाब्द २०१७, खृष्टाब्द १९६०

मूल्य सजिल्द पाँच रुपये मात्र

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

वक्तव्य

'सदल मिश्र-ग्रंथावली' को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हर्ष हो रहा है। परिषद् का लक्ष्य जहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी की समृद्धि और उसके अभाव की पूर्त्ति करना रहा है, वहाँ उसका यह भी लक्ष्य है कि हिन्दी के प्राचीन अलभ्य और दुष्प्राप्य ग्रंथों का प्रकाशन कर उन्हें हिन्दी-प्रेमियों के लिए सुलभ किया जाय। इसी लक्ष्य की पूर्त्ति की दिशा में परिषद् ने निश्चय किया कि हिन्दी के आद्य गद्य-लेखक, बिहार-निवासी सदल मिश्र की रचनाओं को एकत्र करके ग्रंथावली के रूप में प्रकशित किया जाय। उनकी रचनाओं में 'नासिकेतोपाख्यान' नामक पुस्तक काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित तो हो चुकी थी, किन्तु उसकी प्रति उपलब्ध न थी। उनकी दूसरी पुस्तक, 'रामचरित' की प्रति सम्पूर्ण भारत में खोज-ढूँढ़ कराने पर कहीं भी प्राप्त करना संभव न हो सका। उन्हीं दिनों विश्वस्त सूत्र से पता चला कि लंदन की इम्पीरियल लाइब्रेरी में लेखक की दोनों पुस्तकों की एक-एक प्रति सुरक्षित है। परिषद् ने उन दोनों की प्रतिलिपि कराने का संकल्प किया और यह भार श्रीवीरेन्द्र नारायण पर सौंपा गया, जो उन दिनों लंदन में नाट्य-कला का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने प्रतिलिपि करने का परिषद् का आमंत्रण कृपापूर्वक स्वीकार कर उसे बड़ी श्रद्धा और लगन से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

परिषद् ने उक्त ग्रंथावली के सम्पादन का भार पटना-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभागाध्यक्ष आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा पर न्यस्त किया। सम्पादन के सम्बन्ध में शर्माजी अपने विचार सम्पादकीय भूमिका में व्यक्त कर चुके हैं। हम परिषद् की ओर से श्रीवीरेन्द्र नारायण तथा आचार्य शर्माजी का हार्दिक आभार स्वीकार करते हैं। व्यय-सापेक्ष्य दुष्प्राप्य अलभ्य ग्रंथ को इस रूप में सहज-सुलभ करने की दिशा में परिषद् से जो थोड़ी-बहुत सेवा हो सकी, विश्वास है, सुधी पाठक-समाज और शोधकर्त्ताओं को, इसे प्राप्त कर, विशेष प्रसन्नता होगी।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
पौष अमावास्या, २०१७ वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
संचालक

भूमिका

[१]

"The earliest prose in Bihar constitutes perhaps the earliest prose in Hindi in general...Of the four contemporary prose writers in Hindi, namely Sadal Miśra, Lallūlāl, Inśaallāh Khān and Sadāsukhalāl, the first belonged to Arrah and is regarded by common consent as having laid the foundation of that prose-style which came to stay. Both Sadal Miśra and Lallūlāl were teachers and writers of Hindi in the Fort William College in the early nineteenth century. The former wrote more chaste and well-knit prose than the latter. This was not recognised or appreciated by the East India Company authorities at the time, but posterity has proved that they were wrong.

The rejection of the chaste Hindi prose-style evolved by Sadal Miśra betrayed the future attitude of the alien rulers towards the language to be adopted for the courts and other official purposes."[1]

"सामान्य रूप से विचार करने पर संभवतः बिहार का प्रारंभिक आधुनिक गद्य हिन्दी का भी प्रारंभिक आधुनिक गद्य है। हिन्दी के चार समसामयिक गद्य-लेखकों, अर्थात् सदल मिश्र, लल्लूलाल, इंशाअल्ला खाँ और सदासुखलाल, में प्रथम आरा के थे और प्रायः सर्वसम्मति से उस गद्य-शैली के प्रतिष्ठापक थे, जो आगे चलकर स्वीकृत हुई। सदल मिश्र तथा लल्लूलाल दोनों ही उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में फोर्ट विलियम कालेज में हिन्दी के अध्यापक और लेखक थे। द्वितीय की तुलना में प्रथम ने अधिक परिमार्जित एवं सुगठित गद्य लिखा। फोर्ट विलियम कालेज के तत्कालीन अधिकारियों ने इसका महत्त्व नहीं समझा या स्वीकार किया, किन्तु बाद की पीढ़ियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह उनकी गलती थी।

सदल मिश्र द्वारा प्रवर्त्तित परिमार्जित गद्य की उपेक्षा विदेशी शासकों के उस रुख का परिचय देती है, जिसे कचहरियों तथा सरकारी काम-काज में व्यवहृत होनेवाली भाषा के संबंध में वे भविष्य में अपनाने जा रहे थे।"

[२]

आचार्य शिवपूजन सहाय ने सदल मिश्र के एक भाई के वंशज से उनके संबंध में ऐसे संस्मरण सुने थे, जिनसे उनके व्यक्तित्व की एक झाँकी मिल जाती है। ये संस्मरण स्वयं

१. Bihar Through the Ages, संपादक, श्री आर० आर० दिवाकर, ओरियंट लांगमैन्स, कलकत्ता, में हिन्दी साहित्य पर, भूमिका-लेखक द्वारा लिखित, अध्याय, पृ० ४४-४५।

आचार्यजी के संस्मरण के रूप में श्रीबजरंग वर्मा, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, को प्राप्त हुए थे और उन्होंने इनका उपयोग अपनी एक वार्त्ता में किया था, जो आकाशवाणी से प्रसारित हुई थी। मैं श्रीवर्मा का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे अपनी वार्त्ता की एक प्रतिलिपि देने की कृपा की थी, जिससे मैं उपर्युक्त विषयक पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

"जो लोग पं० रघुनंदन मिश्र के निवास-स्थान पर जाते थे, उनके पूछने पर वे अपने दादाजी, अर्थात् पं० सदल मिश्र[1] के विषय में सुनी-सुनाई बातें कहानी की तरह कहा करते थे। जैसे, पंडितजी के पहनावे के विषय में उनका कहना था कि वे सिर पर बड़ा साफा, बगलबंदी और घुटने के ऊपर की धोती पहनते थे—वैसी धोती, जिसे 'कच्छा' कहते हैं। जनेऊ केवल कुमारी कन्याओं के काते हुए सूत से स्वयं बनाकर पहनते थे। गले में बराबर पूजा की माला लटकती रहती थी। सोने के समय उसे निकालकर जपते थे। प्रायः जीवन भर स्वयंपाकी रहे। भोजन में खिचड़ी और पुए के बड़े शौकीन थे। नौकर उन्होंने कभी रखा ही नहीं। जब दूसरों के घर जाते, तो नौकरों के माँजने पर भी बरतनों का व्यवहार उन्हें फिर धोये बिना नहीं करते थे। कम से कम सेर आध सेर मिट्टी से तो हाथ साफ करते थे। एक लोटकी से ढके हुए एक लोटे में भरा पानी सदा अपने साथ लटकाये फिरते। जब कहीं बैठते, तो पहले पानी छिड़ककर लोटा वहीं रखते और तब बैठते। अपना बिस्तर स्वयं लगाते और उस पर किसी को बैठने नहीं देते। सोने के समय अपना सोंटा खाट पर रखकर ही सोते। प्रातःकाल ईशावास्योपनिषद् और अध्यात्मरामायण का पाठ करना वे कभी न भूलते। पूजा के बाद मैदान में चींटियों को सूजी और शक्कर बाँटना उनका नित्य का नियम था। गाय और कुत्ते उन्हें बहुत प्रिय थे। घर छोटा होने के कारण गाय बँधती, तो दूसरे के यहाँ थी, किन्तु उसकी सेवा के लिए नित्य अवकाश निकाल कर वहाँ जाते थे। गो-सेवा उन्हें इतनी प्रिय थी कि कलकत्ता में भी उन्होंने एक गाय पाल रखी थी। स्वभाव के बड़े ही विनम्र थे और बोलते बहुत कम थे। अधिक समय मौन ही रहते। बराबर कुछ न कुछ लिखते रहते। मिट्टी की एक छोटी-सी दावात और कील की कलम उनका साथ कभी नहीं छोड़ती थीं।

उस समय कलकत्ता से आरा तक रेल न थी। नोट की जगह तोड़े का चलन था। पं० रघुनंदन मिश्र कहा करते थे कि पंडित जी कई वर्ष पर तोड़े के साथ गंगा के मार्ग से घर आते थे। नाव से सिनहा[2] उतरते। पं० रघुनंदन मिश्र के पिता (सदल मिश्र के अनुज) बैलगाड़ी और लठैतों के साथ वहाँ जाते और उन्हें आरा तक लिवा लाते।"

१. आचार्यजी के संस्मरण से ऐसा प्रतीत होता है कि रघुनंदन मिश्र के अपने पितामह सदल मिश्र थे। भूमिका में सदल मिश्र का जो वंश-वृक्ष तथा दान-पत्र प्रस्तुत किये गये हैं, उनसे स्पष्ट है कि सदल मिश्र या तो निस्संतान थे, या मृत्यु के समय इनके कोई संतान न थी। इसकी पुष्टि उस दान-पत्र से हो जाती है, जो भूमिका के अंतर्गत अन्यत्र मूल से प्रतिमुद्रित है।

२. आरा से उत्तर गंगा का एक प्रसिद्ध घाट।

रघुनंदन मिश्र के एक पुत्र, राजा मिश्र, जो १९४६ में जीवित थे और आरा में रहते थे, के अनुसार सदल मिश्र संस्कृत के विद्वान् और कुशल अध्यापक के रूप में प्रसिद्ध थे। धनाभाव के कारण वे पटना गये। वहाँ एक समृद्ध जमींदार के आश्रय में वे रहने लगे और उन्हें पुराण सुनाया करते। पुराण-वाचन के समय अन्य व्यक्ति भी उपस्थित होने लगे और पटना-निवासी कुछ अँगरेज भी आकृष्ट हुए। इनमें से एक सदल मिश्र के पांडित्य तथा साधु प्रकृति से इतना प्रभावित हुआ कि उसने मिश्रजी को कलकत्ता में ईस्ट इंडिया कंपनी की अच्छे वेतनवाली तथा सम्मानपूर्ण नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया और उन्हें कलकत्ता चलने को निमंत्रित किया।

इसी अँगरेज सुहृद् के माध्यम से सदल मिश्र गिलक्राइस्ट के संपर्क में आये और उन्हें फोर्ट विलियम में नियुक्ति मिली। वहाँ प्रायः पच्चीस वर्षों तक कार्य करने के बाद सदल मिश्र कलकत्ता से प्रभूत धनराशि—प्रायः डेढ़ लाख रुपये—लेकर जहाज से सेमरिया घाट (सिनहा घाटवाली बात अधिक प्रमाणिक मानी जा सकती है) आये, जहाँ से आरा तक अँगरेज सैनिकों ने उन्हें अपने संरक्षण में पहुँचाया।[1]

डेढ़ लाख रुपयों की बात विश्वसनीय नहीं प्रतीत होती। कम से कम फोर्ट विलियम कालेज से तो वेतन, पारिश्रमिक या पुरस्कार के रूप में इतनी रकम मिश्रजी ने कदापि अर्जित न की होगी। 'भाखा'-मुंशी के रूप में, जैसा फोर्ट विलियम कालेज के विवरणों से ज्ञात होता है, विद्वानों को प्रायः ५०) प्रति मास मिलते थे, हालाँकि विवरणों में लल्लूलालजी का तो उल्लेख है, मिश्रजी का कहीं प्रत्यक्ष उल्लेख भी नहीं है।

सदल मिश्र, यह अविश्वसनीय नहीं है, पर्याप्त धन लेकर आरा वापस आये होंगे, क्योंकि उन्होंने सिगही, बयगुलफा (इसका उल्लेख राजा मिश्र ने नहीं किया है; श्यामसुन्दर दास ने किया है, जिन्होंने कदाचित् राजा मिश्र के पूर्वजों से यह सूचना प्राप्त की होगी) तथा हसनपुरा का ११०००) में ठीका लिया था और आरा में एक अच्छा खासा मकान भी बनवाया था। सन् १९४३ ई० में इसी मकान में राजा मिश्र रहते थे (जिनके एक भाई श्यामलानंद मिश्र के भी उन दिनों जीवित रहने का उल्लेख Great Men of Shahabad में है, यद्यपि तथ्य यह है कि राजा मिश्र के भाई का नहीं, बल्कि एक पितृव्य का नाम श्यामलानंद था)।

सदल मिश्र खेती-बारी में अभिरुचि रखते थे और अधिक समय आरा में संस्कृत के छात्रों के अध्यापन में लगाते थे। वे उदाराशय थे और निर्धन छात्रों को, उनके भोजन तथा आवास की व्यवस्था करके, यथासंभव सहायता पहुँचाते थे। ऐसा कहा जाता है कि स्वयं बाबू कुँवरसिंह ने पुनः आरा छोड़कर बाहर जाने से उन्हें रोका था।

---

१. Great Men of Shahabad, H. D. Jain College, Arrah, नामक पुस्तक में सदल मिश्र विषयक जो लेख है, उसमें लेखक-द्वय ने राजा मिश्र से सुनी-सुनाई बातें लिख दी हैं; जो वंश-वृक्ष उन्हें प्राप्त हुआ है, वह भी भ्रामक है; उससे अधिक प्रामाणिक, यद्यपि अपूर्ण, वंश-वृक्ष तो श्यामसुन्दर दास ने बहुत पहले अपने द्वारा संपादित नासिकेतोपाख्यान की भूमिका में प्रस्तुत किया था।

[३]

१७६७-६८ ई० में अनुमानतः जन्म।

१७८३—जॉन नार्थविक गिलक्राइस्ट का भारत में आगमन।

१७९१—सदल मिश्र कलकत्ता गये (प्रायः २४-२५ वर्ष की अवस्था में)

१७९८—ओरियंटल सेमिनरी की स्थापना और गिलक्राइस्ट की अध्यापक के रूप में नियुक्ति।

१८००—फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना, हिन्दुस्तानी विभाग के प्रधानाध्यापक के रूप में गिलक्राइस्ट की नियुक्ति।

१८०३—सदल मिश्र द्वारा चंद्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान का संस्कृत से खड़ी बोली में अनुवाद।

१८०४—१८०९—सदल मिश्र कालेज में विद्यमान।

१८०६—गिलक्राइस्ट के स्थान पर मोअट की प्रधानाध्यापक के रूप में नियुक्ति; सदल मिश्र को अध्यात्मरामायण का खड़ी बोली में अनुवाद करने के लिए पुरस्कार।

१८०९—हिन्दी और फारसी शब्द-सूची तैयार करने पर सदल मिश्र को पुरस्कार।

१८१०—"तुलसीदास के रामचरितमानस का एक संस्करण संशोधित करके छपवाया था। इस संस्करण की एक प्रति काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में है।"[१]

१८३१—"१८८८ में इन्होंने ११०००) पर सिंगही गाँव, बयगुलफा और हसनपुरा का ठीका लिया था।"[२]

१८३६—फोर्ट विलियम कालेज टूट गया; इसके पूर्व घर लौट गये, ऐसा अनुमान।

१८४७-४८—८० वर्ष की उम्र में मृत्यु। "बाबू शिवनन्दन सहाय लिखते हैं—'संवत् १९०४ का इनके नाम का बयनामा हमारे देखने में आया है, जो इस समय उनके पौत्र पं० रघुनन्दन मिश्रजी के पास है। इसके पहले के कागजों में भी इनका नाम है। १९०५ संवत् के एक कागज में इनका नाम न होकर केवल इनके वंशधरों का नाम देखा जाता है।' इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि संवत् १९०४ और १९०५ के बीच में पंडित सदल मिश्र की मृत्यु हुई। इनके वंशधरों का कहना है कि पंडित सदल मिश्र ने ८० वर्ष की आयु पाई थी। इस हिसाब से इनका जन्म संवत् १८२४–२५ के लगभग होना चाहिए।"[३]

१. श्यामसुन्दर दास, भूमिका, पृ० ३।

२. उपरिवत्, पृ० ३।

३. उपरिवत्, पृ० ३।

इस दान-पत्र में सदल मिश्र के हस्ताक्षर तथा उनके निस्सन्तान होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं (मूल पृथक् पृष्ठ पर)। पुरानी बिहारी भाषा का उदाहरण भी द्रष्टव्य है—

श्री 8

रांचवेद्‌मर्थोतिय
मधर शर्मणे मस्यक्‌'

दसखत सदल
मिश्र

गो० अवकर्ण मि
स सा: कमवे
आरा

लि: सदल मिश्र आगे हवेली वाग जमीन वगैर मे वदल मिश्र के लरिकन्ह के ओ सीताराम के लरिकन्ह के हम भाग लगा देल जे आरे मे गिरिधर मिश्र ओ जीरा बहू वगैरह के खरीदगी हवेली ओ हसन पूरा मे सोरह कठवा मे हमार लगाबल वाग से वाग ओ फागू के वाग इ सभ मेघमणि तीनो भाई लेथु. एह मे मोहन तीनो भाइ के कुछ इलाका ना ही. ओ आरे मे बैजू मिश्र के खरीदगी हवेली समेत साविक हवेली ओ हसनपूरा मे मोहन के लगावल सावा बिगहा मे के वाग से इ सभ मोहन तीनो भाई लेथु. एहमे मेघमणि वगैरह तीनो भाइ के कुछ इलाका ना ही. ओ साविक वाग मे पुराणा दुइ फेड आम ओ वदल मिश्र के लगावल एक पेड महुआ एक फेड गुलर से ओ जहा जहा हमरा पिता के जगह जमीन वा तेह सभ मे आधा मोहन तीनो भाइ लेथु ओ आधा मेघमणि तीनो भाइ लेथु. एह शिवाय हमरा दुनो वेगति का पाछा जे कुछ हम र माल मताय ठहरे ओ देना पावना हमार ठहरे तेह सभ मे आधा मेघमणि तीनो भाइ ओ आधा मोहन तीनो भाई वरावर वाट लेहि कवनो वात के झगरा तकरार न करे. एह अर्थे तोषवन्दी दस्ता वेज लिख देल जे वष्त पर काम आवे. सं० १८८८ पौष वदि प्रतिपत् मंगलवार८—

गो० राजवल्लभ मि
श्र
गो० शिव प्रसाद मिश्र
सा० आरे

गो० हुरन मिश्र
सा० आरे मि
श्र टोला बकल
म सदल मिश्र

साहि मेघमणि मीश्र वो वृज
मणि मिश्र वोनाथ मिश्र
सदल मिश्र बपरा लावल लेही

१९२५ में श्यामसुन्दर दास ने लिखा था, "ये स्वयं यह भी लिखते हैं कि उन्होंने 'दो एक संस्कृत ग्रन्थों से भाषा और भाषा संस्कृत किये।' पर वे सब ग्रन्थ अब कहीं मिलते नहीं।" वार्ष्णेय को भी, जिन्होंने फोर्ट विलियम कालेज तथा आरंभिक आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रामाणिक शोध कार्य किये हैं, 'अध्यात्मरामायण' का अनुवाद सुलभ नहीं हुआ और उन्होंने लिखा है, 'सदल मिश्र की यह रचना दुर्भाग्यवश अभी तक अप्राप्य है।' प्रस्तुत सदल-मिश्र-ग्रन्थावली में सदल मिश्र ने संस्कृत से जो दो भाषानुवाद किये, अर्थात् 'नासिकेतोपाख्यान' और अध्यात्मरामायण का अनुवाद 'रामचरित्र' वे एकत्र प्रकाशित हो रहे हैं—पहला तो श्यामसुन्दर दास के द्वारा सम्पादित और प्रकाशित था ही। सदल मिश्र द्वारा संपादित रामचरितमानस का उल्लेख श्यामसुन्दर दास ने किया है और वार्ष्णेय द्वारा संगृहीत विवरणों में नक़्लिआत-इ-लुक़मानी के अनुवाद में सदल मिश्र ने भी योग दिया था, इसका उल्लेख है, जैसा इस भूमिका में दिये गये तालिका-विशेष से स्पष्ट है। किन्तु, आज भी सदल मिश्र ने भाषा से संस्कृतानुवाद की जो बात कही है, उसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान की रचना के विषय में स्वयं लिखा है : "चित्र-विचित्र, सुंदर-सुंदर, बड़ी-बड़ी अटारिन से इंद्रपुरी समान शोभायमान, नगर कलिकत्ता महा प्रतापी वीर नृपति कंपनी महाराज के सदा फूला फला रहे, कि जहाँ उत्तम लोग बसते हैं औ देश देश से एक से एक गुणीजन आय आय अपने अपने गुण को सुफल करि बहुत आनंद में मगन होते हैं।

नाम सुन सदल मिश्र पंडित जी वहाँ आन पहुँचा वो बड़ी बड़ाई सुनि सर्वविद्या-निधान ज्ञानवान महा-प्रधान श्री महाराज जान गिलक्रस्त साहब से मिला कि जो पाठशाला के आचार्य हैं। तिनकी आज्ञा पाय दो एक ग्रंथ संस्कृत से भाषा वो भाषा से संस्कृत किए।

अब संवत् १८६० में नासिकेतोपाख्यान को कि, जिसमें चंद्रावती की कथा कही है, देववाणी से कोई-कोई समझ नहीं सकता, इसलिए खड़ी बोली में किया।"[1]

इस पुस्तक की प्राप्ति के संबंध में श्यामसुन्दरदास का यह वक्तव्य है : "सन् १९०१ में कलकत्ते की एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में रक्षित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की जांच करते हुए मुझे पंडित सदल मिश्र द्वारा अनुवादित चंद्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान की एक प्रति प्राप्त हुई थी। उस प्रति के आधार पर उसे संपादित कर मैंने नागरी-प्रचारिणी ग्रन्थमाला से प्रकाशित करवाया था।"[2]

सदल मिश्र की कृतियाँ कब लिखी गईं और प्रकाशित हुईं, फोर्ट विलियम कालेज से उनका क्या संबंध था और इस संबंध में कालेज के अधिकारियों की हिन्दी विषयक नीति कहाँ तक प्रति-

---

१. श्यामसुन्दर दास द्वारा संपादित संभवतः प्रथम संस्करण की प्रतिलिपि, ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में श्रीवीरेन्द्र नारायण द्वारा कृत और परिषद् को प्रेषित।

२. श्यामसुन्दर दास, षष्ठ संस्करण, संवत् २००७ वि० की भूमिका, पृ० १।

बिंबित है, इन तथा अन्य प्रसंग-प्राप्त बातों पर यहाँ कुछ विस्तार से विचार कर लेना असमीचीन न होगा।

१९ अगस्त, १८०३ को गिलक्राइस्ट ने फोर्ट-विलियम कालेज की कौंसिल के विचारार्थ एक पत्र लिखा था--इसके पूर्व उन्होंने इस संबंध में और भी पत्र लिखे थे--जिसमें उन्होंने "लोकप्रिय हिन्दुस्तानी भाषा का अध्ययन सरल बनाने और भारतवर्ष में प्रचार तथा प्राचीन हिन्दुस्तानी रचनाओं के आधार पर निश्चित सिद्धांत स्थिर करने की दृष्टि से हिन्दुस्तानी विभाग में तैयार या तैयार हो रहीं चवालीस पुस्तकों की . . . सूची"[1] प्रेषित की थी और उन्हें पुरस्कार देने की सिफारिश की थी। यह सिफारिश कौंसिल को मान्य नहीं हुई, क्योंकि वेतनभोगी विद्वानों को अथवा अपूर्ण रचनाओं के लिए पुरस्कार देने के पक्ष में कौंसिल नहीं थी। इस सूची में अन्य पुस्तकों के साथ नक़लियात-इ-लुक़मानी और चंद्रावती भी सम्मिलित हैं, जिनमें से पहले को अन्य विद्वानों के साथ, और दूसरे को स्वयं ही सदल मिश्र ने अनूदित किया था। सूची के वे अंश यहाँ उद्धृत हैं, जिनका संबंध सदल मिश्र से है[2]—

हिन्दुस्तानी रचनाएँ नाम	छप जाने के बाद के अनुमान				ग्रंथकर्त्ता	विशेष
	बड़े चौपेजी पृ०	छोटे चौपेजी पृ०	अठपेजी पृष्ठ	पुरस्कार		
(जो छप चुकी हैं)						
,,						
,,						
,,						
नक़लियात-इ-लुक़मानी	—	—	३००	६००	तारिणीचरण मित्र, मौलवी अमानत उल्लाह, सदल मिश्र पंडित, मीर बहादुर अली, मीर शेर अली अफसोस, श्री लाल कवि और ग़ुलाम अशरफ़	इन अनुवादकों में से केवल पहले तीन पारिश्रमिक पाने के विशेष रूप से अधिकारी हैं, क्योंकि बंगाली अरबी और संस्कृत का भार इन्हीं के ऊपर पड़ा। और, वह भी तारिणीचरण के ऊपर सबसे अधिक।
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
,,						
चंद्रावती	—	—	१५०	६०	सदल मिश्र	

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००—१८५४ ई०), डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय युनिवर्सिटी, इलाहाबाद, सं० २००४ वि०, पृ० ५८।

२. उपरिवत्, पृ० १८५, १८८।

गिलक्राइस्ट ने २३ फरवरी, १८०४ को कालेज-कौंसिल के मंत्री के नाम अपना त्याग-पत्र भेजा और वह २६ फरवरी, १८०४ की बैठक में स्वीकृत हुआ। गिलक्राइस्ट के बाद प्रथम सहायक कैप्टन मोअट स्थानापन्न प्रोफेसर की हैसियत से काम करने लगे थे। "९ मई, १८०४ को जेम्स मोअट ने कालेज-कौंसिल के मंत्री, चार्ल्स राथमैन, के नाम लिखे गये पत्र में हिन्दुस्तानी विभाग के लिए, 'भाखा'-मुंशी लल्लूलाल और सदल मिश्र पंडित की उपस्थिति अनावश्यक समझी। उनका यह पत्र कौंसिल की ११ जून, १८०४ की बैठक में पेश हुआ और १ जुलाई, १८०४ में उन्हें वेतन मिलना बन्द हो गया। दूसरे शब्दों में, वे कालेज से अलग कर दिये गये। किन्तु 'भाखा'-ज्ञान की आवश्यकता कालेज में बराबर हुआ करती थी। इसीलिए कालेज कौंसिल ने १७ अक्टूबर, १८०४ की बैठक में, जिसमें ब्यूकैनैन, हारिंगटन और कोलब्रुक उपस्थित थे, लल्लूलाल (श्री लाल कवि) और सदल मिश्र को फिर कालेज में ले लिया, और पिछली जुलाई के बाद का वेतन भी उन्हें दे दिया, क्योंकि वे जुलाई से ही रक्खे समझे गये। . . ."[१]

"'रामायण' की प्रतिलिपि करने के सम्बन्ध में कौंसिल ने १८ नवम्बर, १८०५ की बैठक में सदल मिश्र पंडित को छब्बीस रुपये आठ आने दिये। और १७ मई, १८०६ की बैठक में कौंसिल ने संस्कृत की 'अध्यात्मरामायण' का खड़ी बोली में अनुवाद करने पर उन्हें तीन सौ रुपये देने का प्रस्ताव स्वीकार किया। सदल मिश्र की यह रचना दुर्भाग्यवश अभी तक अप्राप्य है।[२]

२७ मई, १८०९ की बैठक में कौंसिल ने 'हिन्दी' और फारसी शब्द-सूची का अनुवाद करने पर सदल मिश्र को पचास रुपये दिये।"[३]

संभवतः १८११ में विलियम हंटर, मंत्री, कालेज-कौंसिल, ने कौंसिल को एक पत्र भेजा था, जिसमें उन ग्रन्थों की सूची थी, "जिनसे वे 'हिन्दुस्तानी डिक्शनरी' तथा उसके परिशिष्ट भाग की रचना करने में सहायता ले रहे थे।"[४] इस सूची[५] में कुल ४३ पुस्तकों के नाम हैं। ३०वीं पुस्तक का इस प्रकार उल्लेख है—"सदल मिश्र पंडित: 'रामचरित्र' (पूर्वी संस्कृत से)।"

'रामचरित्र' 'अध्यात्मरामायण' का अनुवाद है। 'पूर्वी संस्कृत' से क्या तात्पर्य है, स्पष्ट नहीं है।

फोर्ट विलियम कालेज के तत्त्वावधान में गिलक्राइस्ट (१८००-१८०४), अथवा उनके स्थान पर हिन्दुस्तानी प्रधानाध्यापक के रूप में नियुक्त होनेवाले मोअट (१८०६-१८०८), टेलर (१८०८-१८२३), प्राइस (१८२३-१८३०) आदि अन्य विदेशियों के द्वारा हिन्दी-गद्य

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००-१८५४ ई०), पृ० ६५।
२. उपरिवत्, पृ० ७५।
३. उपरिवत्, पृ० ९९।
४. उपरिवत्, पृ० १०३।
५. उपरिवत्, पृ० १९७ (पूरी) सूची के लिए।

का कोई 'हित-साधन' नहीं हुआ। "वास्तव में हिन्दी गद्य तो फोर्ट विलियम कालेज से बाहर नवयुगीन परिस्थितियों के प्रभावांतर्गत स्वतंत्र रूप से विकसित हो रहा था।"[१]

"लल्लूलाल तथा अन्य 'भाखा'-मुंशियों के प्रतिकूल सदल मिश्र ऐसी भाषा प्रवर्त्तित कर रहे थे, जो प्रकृत्या उर्दू से भिन्न होने के कारण स्वतंत्र अस्तित्व की अधिकारिणी थी और वह हिन्दुस्तानी के नाम पर खप नहीं सकती थी। इसी का परिणाम था कि कलकत्ते से बाहर भी यदि हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता होती थी, तो लल्लूलाल के ग्रन्थ ही भेज दिये जाते थे। सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' का, सिवाय एक सूची के, और कहीं उल्लेख नहीं मिलता। न तो कालेज के पाठ्य-क्रम में उसका जिक्र है और न कहीं बाहर भेजी जानेवाली पुस्तकों में। जून १८२५ में आगरा और दिल्ली की सरकारी पाठशालाओं को भेजी जानेवाली पुस्तकों में 'प्रेमसागर', 'बैतालपच्चीसी', 'सिंहासनबत्तीसी', 'माधोनल' आदि पुस्तकों के नाम तो हैं, किन्तु 'नासिकेतोपाख्यान', का कहीं नाम नहीं है। बाद को और भी कई बार पुस्तकें बंबई और मद्रास की संस्थाओं को भेजी गईं। 'नासिकेतोपाख्यान' को यह सौभाग्य कभी प्राप्त न हुआ। कालेज तोड़ देने के बाद बोर्ड आव एग्जामिनर्स ने जो पाठ्य-क्रम प्रस्तुत किया, उसमें भी 'नासिकेतोपाख्यान' को स्थान न मिला। हाँ, फोर्ट विलियम कालेज और उसकी स्थापना से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के विज्ञापन-विभाग ने नागरी टाइपों का निर्माण किया, विराम-चिह्नों का प्रयोग किया और कोष तथा अनेक पुस्तकें छापेखाने में छापकर प्रस्तुत कीं, और इस प्रकार, अप्रत्यक्ष रूप से, प्रेस जैसे वैज्ञानिक साधन का गद्य के साथ संबंध स्थापित कर, उन्होंने उसके विकास का एक प्रमुख कारण ला उपस्थित किया और हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण निर्मित किया, वह भी अँगरेजी व्याकरण के अनुकरण पर। इस सबके लिए हिन्दी-भाषा-भाषी उनके आभारी रहेंगे। तुलसीदास जी के ग्रंथ भी संभवतः सबसे पहले फोर्ट विलियम कालेज के संरक्षण में ही मुद्रित हुए थे।"[२]

अंतिम दिनों में भी (१८३८–१८५४) कालेज के "पुराने क्रमानुसार ग्रंथ-रचना भी होती रही। किन्तु नवीन ग्रंथों का निर्माण बहुत कम हुआ। हिन्दी गद्य-ग्रंथ की रचना तो लल्लूलाल और सदल मिश्र के बाद फिर हुई ही नहीं। केवल प्राचीन ग्रंथ ही बार-बार छपते रहे।..."[३]

"कालेज के पठन-पाठन और उसकी भाषा-नीति की दृष्टि से जान नार्थविक गिलक्राइस्ट के ग्रंथ ही विचारणीय हैं, क्योंकि मोअट, टेलर और प्राइस में से टेलर और प्राइस के कोषों के अतिरिक्त उनकी किसी ऐसी कृति का उल्लेख नहीं मिलता जो हमारे विषय से संबंध रखती हो। वास्तव में ग्रंथ-रचना की दृष्टि से गिलक्राइस्ट के अतिरिक्त अन्य किसी प्रधानाध्यापक का नाम उल्लेखनीय भी नहीं है।..."[४]

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००–१८५४ ई०) पृ० १४२।
२. उपरिवत्, पृ० १४२।
३. उपरिवत्, पृ० १५१।
४. उपरिवत्, पृ० १६६।

"लल्लूलाल और सदल मिश्र की रचनाओं के नाते हिन्दी-साहित्य के इतिहास में फोर्ट विलियम कालेज का उल्लेख होना तो आवश्यक है, किंतु हिन्दी भाषा और गद्य-साहित्य के विकास या उन्हें एक कदम और आगे बढ़ाने की दृष्टि से उसका कोई महत्त्व नहीं है। कालेज से 'हिन्दुस्तानी' या उर्दू गद्य को प्रोत्साहन मिला, न कि हिन्दी गद्य को। जो कार्य कैरे ने बँगला के लिए किया, वह कार्य किसी ने हिन्दी के लिए न किया। हाँ, कोष, व्याकरण, टाइप, विराम-चिह्न आदि आधुनिक विषयों के सूत्रपात की दृष्टि से कालेज आधुनिक भारतीय भाषाओं के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।"[१]

[४]

नासिकेतोपाख्यान प्रचलित पौराणिक आख्यान है। उसका शाब्दिक हिन्दी अनुवाद सहित संस्करण सुलभ है।[२] सदल मिश्र ने ऐसे अनुवाद या भाषा-टीका से भिन्न मूलानुसारी, किंतु स्वतंत्रप्राय, हिन्दी रूप प्रस्तुत किया है, यह कहना उचित होगा। सदल मिश्र ने अपनी पुस्तक का एक शीर्षक 'नासिकेतोपाख्यान' भी रखा है, किंतु उसका मुख्य शीर्षक रखा है 'चंद्रावती'। यह शीर्षक कदाचित् उस नवीनता का परिचायक है, जिसके फलस्वरूप तुरत बाद के युग में हिंदी के अनेक उपाख्यानों—उपन्यासों—के नाम उनकी नायिकाओं के नामों पर रखे जाने लगे। शीर्षक से आभासित यह नवीनता रूपान्तरण की शैली में भी सहज निर्देश्य है। आगे उदाहरण-स्वरूप एक अंश मूल तथा रूपान्तर से, इसे ही ध्यान में रखते हुए, उद्धृत है।

नासिकेतोपाख्यान (३–९)—

"जनमेजय उवाच—

पृच्छामि ते महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।।
कथयस्व कथां दिव्यां सर्वपापप्रणाशिनीम् ।।
यां श्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ।।३।।

वैशम्पायन उवाच—

श्रूयतां राजशार्दूल कथां पौराणिकीं शुभाम् ।
शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे ये चान्ये तपसि स्थिताः ।।४।।
कश्चिदासीत्पुरा राजन्नृषिः परमधार्मिकः ।
उद्दालक इति ख्यातो ब्रह्मपुत्रस्तु तापसः ।।५।।

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००–१८५४ ई०), पृ० १७२।

२. मेरे सामने भार्गव पुस्तकालय, वाराणसी, से प्रकाशित जो संस्करण है, उसकी भाषा-टीका माधवप्रसाद व्यास की है।—सं०

वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः स्मृतिसिद्धान्तपारगः ॥६॥
तस्याश्रमपदं रम्यमृषिभिर्मुनिभिः श्रितम्।
नानाद्रुमलताकीर्णं नानापुष्पोपशोभितम् ॥७॥
हंसैः कारण्डवैश्चैव चक्रवाकैश्च शोभितम्।
सेव्यमानं खगानीकैर्महिषैर्गवयैर्मृगैः ॥८॥
आगतश्चाश्रमे तस्य पिप्पलादो महामुनिः।
तमागतं तथा दृष्ट्वा आतिथेयं चकार सः ॥९॥"

प्रचलित मूल पौराणिक कथा के उद्धृत अंश का तुलनीय अनुवाद इस प्रकार है—

"एक दिन एक समय राजा जनमेजय गंगा के तीर पर बारह बरस यज्ञ करने को रहे। एक दिन स्नान-पूजा करि ब्राह्मणों को बहुत सा दान दे देवता-पितरों को तृप्त करके ऋषि और पंडितों को साथ लिए वैशम्पायन मुनि पास जा दंडवत् कर खड़े हो हाथ जोड़ कहने लगे कि महाराज आप वेद पुराण सब शास्त्र के सार जाननिहार तिस पर व्यास मुनि के शिष्य सब योगियों में इंद्र समान हो। ऐसी कथा कि जिसके सुनने से पाप कटे और कोई रोग न होय नर जन्म संसार में अच्छा भोग अंत में मुक्ति मिले हमसे कहिए।

प्रसन्न होकर वह बोले कि हे राजा तुम बड़े ज्ञानी हो। अच्छा सब पाप दूर करनेवाली पुराण की कथा कि जिसके सुनने से निस्संदेह मुक्ति होती है मैं कहता हूँ। तुम ऋषि के सेवकों के समेत सावधान होकर सुनो।

किसी समय में ब्रह्मा के पुत्र ऐसे उद्दालक मुनि भए कि जिनके दर्शन से लोग पवित्र होते थे। वेद पुराण श्रुति स्मृति में बहुत निपुण और दाता दयालु कहिए तो वैसे ही बड़े समर्थ सब मुनियों में श्रेष्ठ कि जिनका तपस्या ही धन था उनके सुहावने आश्रम पर कि जिसको बड़े-बड़े मुनि लोग नित्य आप सेवें और जहाँ नाना प्रकार के वृक्षों पर लता सब छा रही थीं पिप्पलाद मुनि आन पहुँचे। देखते ही उद्दालक ऋषि उठ खड़े भए। सिर नवा प्रणाम वो जैसा कुछ चाहिए वैसा आदरभाव कर आसन दे बैठाया।"

'रामचरित या अध्यात्मरामायण' की रूपांतरण-शैली के संबंध में भी प्रायः वही बात कही जा सकती है, जो 'चंद्रावती या नासिकेतोपाख्यान' के विषय में निर्दिष्ट की जा चुकी है। यह पुस्तक अद्यावधि अप्राप्त थी और इस ग्रंथावली में संकलित होकर पहली बार प्रकाश में आ रही है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के आद्य संचालक आचार्य शिवपूजन सहाय की योजना के अनुसार, परिषद् के अधिकारियों की आज्ञा से, श्रीवीरेन्द्र नारायण ने अपने लंदन के प्रवास-काल में इण्डिया आफिस में सुरक्षित पाण्डुलिपि से इसकी प्रतिलिपि की थी। श्रीवीरेन्द्र नारायण ने बिंदु-विसर्ग का परिवर्तन किये विना प्रतिलिपि करके प्रायः चित्र-प्रतिलिपि जैसी प्रामाणिक सामग्री सुलभ बनाई थी। उन्होंने बड़े मनोयोग से प्रत्येक पृष्ठ के नीचे संपूर्ण मूल का आधुनिक हिन्दी रूप भी दिया था, जिसका उपयोग अनावश्यक प्रतीत हुआ। मैंने अप्रचलित या अस्पष्ट

शब्दों के आधुनिक रूप या अर्थ देकर ही संतोष किया है, जो वस्तुतः उपर्युक्त आधुनिक हिन्दी रूपांतरण में भी प्रायः नहीं दिये गये थे।

इस पाण्डुलिपि, जिसकी अविकल प्रतिलिपि अध्ययन के लिए सुलभ है, का अपने आप में भी अनेक दृष्टियों से महत्त्व है। तद्युगीन वर्त्तनी, वाक्य-रचना, विराम-चिह्नों आदि के प्रयोग के संबंध में इस पांडुलिपि के विश्लेषण से लाभप्रद प्रकाश पड़ता है। यहाँ कुछ का संकेत मात्र किया जा रहा है। यह भविष्य में स्वतंत्र निबंध का विषय बन सकता है।

इस पुस्तक के प्रस्तुत प्रथम मुद्रित संस्करण में '०' इस चिह्न का तात्पर्य यह है कि मूल पाण्डुलिपि में पंक्ति इसके पूर्व समाप्त हो गई है। कोष्ठकों में जो विराम-चिह्न हैं, वे सम्पादक के द्वारा सुविधा के लिए दे दिये गये हैं।

(१) अधिकतर व, ब नहीं; पृष्ठ २८१ पर पहली बार ब।

(२) केवल ष (ख के लिए); ख नहीं, किंतु धनुष, वर्ष, ऋषि, हर्षित, हविष्य आदि में ष।

(३) रूप इत्यादि में सर्वत्र रू के बदले  शब्द के मध्य या अन्त में प्रायः रू, र, किन्तु अरु, सारा इत्यादि में भी कहीं-कहीं यथा-प्रदर्शित कैथी 'र' का प्रयोग है।

(४) ड़ नहीं।

(५) ण प्रयुक्त, किंतु पाषान, पाषाण नहीं।

(६) ध्वनि-विशेष के तुरत बाद उसी ध्वनि के रहने पर बहुधा एक का लोप, उदाहरणार्थ, बालक को' के लिए 'वाल को'; 'राक्षस सव' के लिए 'राक्षस व'; 'अधिक कहा' के लिए 'अधिक हा'; 'चैन नहीं' के लिए 'चैन ही'; 'अधिक काम' के लिए 'अधिकाम'; 'स्वभाव वश' के लिए 'स्वभाव श', तथा अनेक अन्य उदाहरण।

(७) कहीं-कहीं ज के बदले य, उदाहरणार्थ, 'काम काय'।

(८) कहीं-कहीं य के बदले उ, उदाहरणार्थ, 'आउर्वल'।

(९) (क) पृ० १३४ पर पहली बार पूर्ण विराम का चिह्न '।' प्रयुक्त। इसके पूर्व कोई विराम-चिह्न नहीं।

(ख) पृ० ४५३ पर पहली बार अर्ध विराम के लिए '०' यह चिह्न।

(१०) छूट के लिए प्रयुक्त चिह्न —"।

[५]

श्यामसुन्दर दास के मतानुसार हिन्दी के प्रारंभिक गद्य लेखकों में 'पहला स्थान इंशाअल्ला खाँ, दूसरा सदल मिश्र और तीसरा लल्लू जी लाल को मिलना चाहिए।' वास्तविकता यह है कि इंशा अल्ला खाँ का गद्य उर्दू गद्य का आदर्श प्रारंभिक रूप मात्र माना जा सकता है। इंशाअल्ला खाँ की भाषा वैसी भाषा है, जिसका ढाँचा उर्दू का है। उसमें उर्दू-फारसी स्रोत के कुछ शब्द आ जाएँ, तो वह उर्दू बन जायगी। सदल मिश्र खड़ी बोली में लिखते हैं, किंतु तत्सम या तद्भव शब्दों

को हटा कर अरबी-फारसी से प्राप्त शब्दों को रख देने मात्र से वह उर्दू नहीं हो जायगी, वह तत्सम तद्भव शब्द-राशि का अधिकाधिक भार वहन करने की शक्ति का परिचय देती है और ईषत् परिष्कार से परिमार्जित आधुनिक हिन्दी का रूप ग्रहण कर सकती है। लल्लूलाल का स्थान ठीक ही सबके बाद आता है। ब्रजभाषा और हिन्दुस्तानी के छोरों को छूने वाली उनकी भाषा उस हिन्दी को पूर्वाशित करने में असमर्थ है, जो रूप-ग्रहण करने की दिशा में लेखकों द्वारा प्रेरित हो रही थी। इसकी झाँकी सदल मिश्र के ही गद्य में मिलती है।

नलिनविलोचन शर्मा

विषयानुक्रमणी

सदलमिश्र-ग्रन्थावली

चन्द्रावती

अथवा

नासिकेतोपाख्यान

सकल सिद्धिदायक वो देवतन में नायक गणपति को प्रणाम करता हूं कि जिनके चरण कमल के स्मरण किए से विघ्न दूर होता है औ दिन दिन हिय में सुमति उपजती वो संसार में लोग अच्छा अच्छा भोग बिलास कर सबसे धन्य धन्य कहा अन्त में परम-पद को पहुंचते हैं कि जहाँ इन्द्र आदि देवता सब भी जाने को ललचाते रहते हैं।

दोहा

गणपति चरण सरोज द्वौ, सकल सिद्धि की राश।
बन्दन करि सब होत है, पूरण मन की आश॥

चित्र विचित्र सुन्दर सुन्दर बड़ी बड़ी अटारिन से इन्द्रपुरी समान शोभायमान, नगर कलिकत्ता महा प्रतापी बीर नृपति कम्पनी महाराज के सदा फूला फला रहे, कि जहां उत्तम उत्तम लोग बसते हैं औ देश देश से एक से एक गुणी जन आय आय अपने अपने गुण को सुफल करि बहुत आनन्द में मगन होते हैं।

नाम सुन सदल मिश्र पण्डित भी वहाँ आन पहुँचा वो बड़ी बड़ाई सुनि सर्वविद्या-निधान ज्ञानवान महा-प्रधान श्री महाराज जान गिलक्रस्त साहब से मिला कि जो पाठ-शाला के आचार्य्य हैं। तिनकी आज्ञा पाय दो एक ग्रन्थ संस्कृत से भाषा वो भाषा से संस्कृत किए।

अब संवत् १८६० में नासिकेतोपाख्यान को कि, जिसमें चन्द्रावती की कथा कही है, देववाणी से कोई कोई समझ नहीं सकता, इसलिये खड़ी बोली में किया। तहां कथा का आरम्भ इस रीति से हुआ—

एक समय राजा जनमेजय गङ्गा के तीर पर बारह बरस यज्ञ करने को रहे। एक दिन स्नान पूजा करि ब्राह्मणों को बहुत सा दान दे देवता पितरों को तृप्त करके ऋषि और पण्डितों को साथ लिए वैशम्पायन मुनि के पास जा, दण्डवत कर, खड़े हो, हाथ जोड़, कहने लगे कि "महाराज! आप वेद पुराण सब शास्त्र के सार जाननिहार, तिस पर ब्यास मुनि के शिष्य, सब योगियों में इन्द्र समान हो। ऐसी कथा, कि जिसके सुनने से पाप कटे और कोई रोग न होय, भर जन्म संसार में अच्छा भोग, अन्त में मुक्ति मिले, हमसे कहिए।"

प्रसन्न होकर वह बोले कि "हे राजा! तुम बड़े ज्ञानी हो। अच्छा, सब पाप दूर करने-वाली पुराण की कथा कि जिसके सुनने से निस्सन्देह मुक्ति होती है, मैं कहता हूं, तुम ऋषि वो सेवकों के समेत सावधान होकर सुनो—

किसी समय में ब्रह्मा के पुत्र ऐसे उद्दालक मुनि भए कि जिनके दर्शन से लोग पवित्र होते थे। वेद पुराण श्रुति स्मृति में बहुत निपुण, और दाता दयालु कहिए तो वैसे ही, बड़े समर्थ, सब मुनियों में श्रेष्ठ, कि जिनका तपस्या ही धन था, उनके सुहावने आश्रम पर कि जिसको बड़े-बड़े मुनि लोग नित्य आप सेवैं और जहां नाना प्रकार के वृक्षों पर लता सब छा रही थीं—पिप्पलाद मुनि आन पहुंचे।

देखते ही उद्दालक ऋषि उठ खड़े भये। सिर नवा, प्रणाम वो जैसा कुछ चाहिए वैसा

आदर भाव कर, आसन दे बैठाया। प्रीति से हाथ पांव धोला, कुशल क्षेम वो उनके वहां आवने का कारण पूछा।

वह बोले कि हम तुम्हारी बड़ी तपस्या इस बन में सुनकर आए, तैसे ही तुमको देख बहुत प्रसन्न हुए। पर बिना व्याह यह तपस्या अकारथ होती है, क्योंकि स्त्री के साथ तप करके ऋषि सब सिद्धि को पहुंचे। और बेद की आज्ञा से सन्तान के लिये पत्नी सों भोग करना उचित है, नहीं तो विस बिन क्या कधी क्रिया सिद्धि होती है। और पुत्रहीन के, देवता वो पितर इन दोनों में कोई सन्तुष्ट नहीं। जग में विसके देव पितर वहुत आनन्द होते कि जिसको कुल उपजानेवाला पुत्र होता है। वो निपुत्री को घर में क्या सुख कि जिस बिना वह सदा अन्धकार रहता है।

इसलिए हमारी आज्ञा से और सब ऋषियों के सम्मति से किसी से कन्या याचकर अपना बंश उत्पन्न करो, नहीं तो यह तपस्या का परिश्रम तुम्हारा सदा ही व्यर्थ है।

उद्दालक ने उत्तर दिया की महाप्रभु तप करते हमको छियालीस सहस्र बरस बीते, स्त्री के कारण अब यों उसको त्याग दें तो महा नरक भोग होए। आप बड़े हो जैसी आज्ञा करिए।

हँस के पिप्पलाद ऋषि ने कहा कि तुमको यह कहना उचित नहीं, क्योंकि विना सन्तान योग तप कबहीं फलदायक नहीं होता है और सन्तति के लिये स्त्री के पास जाने को अगले मुनियों ने भी आज्ञा दी है। तिसमें वह ब्रह्मचारी गिना जाता है कि जो मनुष्य ऋतु समय में उसके पास जाता है। ब्रह्मचर्य्य ते तप भंग नहीं होता, धर्म्मशास्त्र भी कहता है।

ऐसी सांची सांची बातें कहके मन में वेद के मन्त्र जपते हुए पिप्पलाद मुनि ने फिर निकट समीप जा उद्दालक से कहा कि सन्तति के हेतु भार्य्या के पास जाने से तनिक भी दोष नहीं, आप स्वायंभुव मुनि ने ऐसा कहा है। यह वृत्तान्त वैशम्पायन राजा जनमेजय से कहते हैं।

जब इतना कह पिप्पलाद वहां से विदा भए तब उद्दालक चिन्ता करने लगे कि "देखो, हमारी तपस्या में क्या विघ्न आ पड़ा। कहां मेरी बुढ़ापे की अवस्था कि एक भी केश काला नहीं, सो सन्तति के कारण किससे कन्या हम मांगें। कौन उसको देने में प्रसन्न होगा।

ऐसे व्याकुल होकर मन में ठहराया कि अब तो ब्रह्मा के पास चलिए, वेही हमारी अभिलाष को पुरावेंगे।

तब आस पास के ऋषियों से पूछ ब्रह्मा के निकट गए, दूर ही से दण्डवत कर हाथ जोड़ लगे स्तुति करने।

उद्दालक के बचन सुन सन्तुष्ट हो वो ध्यान में जो थे सो आंख खोल पितामह बोले "कि हे ऋषीश्वर ! कुशल से हो ? तुम्हारे आश्रम में मङ्गल है ? और यहां आवने का प्रयोजन सुनावो।"

ब्रह्मा की बात सुन उद्दालक ने कहा कि "हां महाराज, आप के अनुग्रह से सब प्रकार से आनन्द है। मुनियों ने हमको पुत्र के लिये विवाह करने की आज्ञा दी है। इसलिए तुम्हारे शरन में आए, हमारा मनोरथ पूरण करिए"।

सुनते ही बिधाता ने कहा कि "पहले तुमको महातपस्वी कुल उद्धार करने योग्य पुत्र होगा। पीछे राजा इक्ष्वाकु के कुल की महासुन्दरी कन्या वो पतिव्रता सब गुण भरी सो तुम्हारी

भार्य्या होगी। चित्त में कुछ चिन्ता मत करो। हमारा कहा कधी झूठ न होगा। अपने आश्रम पर जा शिव पूजन करो"।

प्रजापति की बात सुनि चकित हो उद्दालक ने कहा कि "महाराज! आप बड़े होकर ऐसी मिथ्या बात कहते हो कि जो देखने में आई, न सुनने में। भला, बिना भार्य्या भी किसीको पुत्र होता है?"

उनका यह बचन सुनते ही ब्रह्मा वहां से गुप्त हो गए। तब उद्दालक ने जी में जाना कि विधि का कहा अन्यथा नहीं। इस आस पर वहां से ईश्वर का ध्यान करते हुए अपने आश्रम पर आए कि जहाँ चारों ओर ऋषि लोग अपने अपने जप ध्यान में लगे थे।

राजा जनमेजय से वैशम्पायन कहते हैं कि हे राजा! यह बहुत अच्छी कथा है इसे कान दे सुनो।

वहां से उद्दालक स्थान पर आए फिर उसी प्रकार चित्त लगाय तपस्या करने लगे। पर दिन रात स्त्री की चिन्ता में बहुत मग्न थे इसलिये काम से पीड़ित भए।

निदान एक दिन इसी ध्यान में थे कि उनका बीज पतन हुआ। तुरन्त उसे हाथ में ले कमल में रख कुश से बांध गंगा में जा छोड़ दिया। दैवयोग वह बहा हुआ चला सो राजा रघु की पुरी के सामने आ पहुंचा।

वहां चन्द्रावती नाम उस राजा की महा सुन्दरी कन्या, जिसके लक्षणों का बर्णन न तो किया जाता है, न तो कोई वैसी देवतों की कन्या न गन्धर्व्व और नागों की देखने में आई, न सुनने में कि जिसके रूप को देखके जग जीतने वाले कामदेव भी मोहित होए और तीनों लोक में ऐसा कोई नहीं कि उसकी आँखों के देखने से अचेत हो न गिरे। दश सहस्र राजों की कन्या दिन रात उसकी सेवा टहल में रहती थीं अपने बाप के घर में नाना भांत आनन्द बिहार किया करती। सागर में लक्ष्मी वो तारन्ह में चन्द्रमा समान शोभती, सब रनिवास में उसके चौथाई भी रूप किसीको नहीं कि जिसको देखकर आपस में लोग सब कहते थे कि इसे विधि ने अपने हाथों से बनाया। कोई तो कहता था कि अरे! यह इन्द्र की अप्सरा है किसीके शाप से इहां आ पहुंची। औ राजा रघु को जो पूछो तो जिनका इक्ष्वाकु के कुल में जन्म, वेद शास्त्रों में एक, बड़े धर्मात्मा, सारी पृथ्वी का पति, काम लोभ को जीते हुए प्रजा पालने में सदा प्रसन्न, ब्राह्मणों का भक्त, कि जिसको सत्य ही व्रत, उसके राज्य में न तो किसीको कुछ रोग और दुःख होए, हृष्ट पुष्ट सब लोग अति पराक्रमी और बड़ों के आगे छोटों का मरण औ नित्य घर घर मंगलचार होता था।

वैशम्पायन जनमेजय से कहते हैं कि हे महाराज! उस राजा की चन्द्रावती कन्या तरुण अवस्था में सहेलियों के साथ सब दिन गंगास्नान कर षटरस भोजन वो सोरहो शृंगार किया करती थी।

एक दिन सखियों का सिंगार कर मोतियों के हार उनके गलों में डाल, घोड़ों पर चढ़ाया। किसीके हाथ में ध्वजा, वो किसीके छत्र, किसीके कर में चौंर। कितनी गाती थीं कितनी बजाती, कितनी नाना भांति कुतूहल करती थीं।

उसी समय में ब्राह्मण सब आय आय मङ्गल वेदध्वनि और भांट बिखार[1] राजा रघु के बंश का बखान करने लगे। घड़ी भर में वो गङ्गा के तट पर जा पहुंची। वहां बहुत सा बिहार कर उन्हींके साथ जा स्नान करने लगी, कि देखती क्या है कि एक कमल का फूल सोने का सा बनाया, महा सुगन्ध, कुश से लपेटा हुआ सन्मुख बहा चला जाता है । तो बिलग बिलग कहने लगी कि देखो देखो, क्या अच्छा फूल बहा आता है; इसको कोई मुझे शीघ्र ला दो। मैं जानती हूं कि स्वर्ग पर से किसी देवता का वह गिर पड़ा है कि जिसकी छबि से गंगा के दोनों ओर अब कैसे शोभायमान हो रहे हैं।

सुनते ही एक सखी ने झट ला राजपुत्री के हाथ में दिया। वह बहुत प्रसन्न हो खोल कर ज्यों लगी सूंघने, कि वह बीज जिसे उद्दालक मुनि ने उसमें रक्खा था, नाक के पथ से पेट में चला गया। पर चन्द्रावती ने कुछ भी न जाना कि मेरे उदर में क्या गया है और स्नान पूजा कर हर्षित हो अपने मन्दिर में सबके सङ्ग चली आई।

पहिले मास में तो उस कन्या को कुछ अधिक सा देह में रूप उपजा और दूसरे में गर्भ का लक्षण जानने में आया। तीसरे में पियरा मुंह हो गया। चौथे में रोंए अलग अलग होने लगे, पांचवें में कुच व नितम्ब ऐसे भारी हुए कि जिनके भार से अलसा कर किसी से कुछ बात चीत न कर सकती। छठवें महीने में उसकी माता बड़ा सा पेट देख व्याकुल हो तुरन्त धरती में गिर पड़ी। क्षन एक तो मूर्छित रही, पीछे कुछ एक चेत कर उठ बैठी और लगी सोचने कि क्या मैं यह स्वप्न देखती हूं, कि मेरी मति में कुछ भ्रम हुआ है कि जिसका सम्भव नहीं सो देखने में आया।

ऐसे विचार, फिर लगी कहने कि देखो रे भाई! दश सहस्र राजकन्या सदा इसकी रक्षा में रहती हैं, तिस पर भी यह दशा हुई है! हाय! हाय! कैसा कुल में कलङ्क हुआ। जो सुनेगा सो क्या कहेगा?

इस भांति पछिता कर उससे पूछने लगी कि अरे बेटी! यह क्या तेरी अवस्था है? सत्य बात हमसे कहो।

तब वह बोली माता! मैं कुछ नहीं जानती हूं कि कैसा चरित्र हुआ। मैं बड़ी अभागिनी हूं। अब प्राण ही त्यागना बना, क्योंकि किसी प्रकार से कहूं पर हमारी बात को कोई कदही सांच नहीं मानेगा। कहां सूर्य्य का बंश, कि जिसकी उत्तम कीर्त्ति तीनों लोक में प्रसिद्ध है, और कहां उस कुल की हम कन्या कि जिस की जग में अब ऐसी हँसी होगी! अपने पिता को कौन मुंह दिखाऊंगी। नहीं जानती हूं कि अगले जन्म में कैसा काम किया कि जिसका महादुःखदायक यह फल आन पहुंचा है। जैसी शोक सन्ताप में अब हूं वैसी त्रिभुवन में जो ढूंढ़ो तो न कोई देवतों की कन्या, न गन्धर्व और असुरों की, न नागों की, न किसी किन्नर और मनुष्यों की होगी।

अपना पेट फाड़ मरों तो मर सकती हूं पर आत्मघात वो दूसरे एक जीव का बध कि जो मेरे गर्भ में है, ये दो हत्या होती हैं, इसलिये सो भी न कर सकती हूं। कहो क्या कहती हो?

वह कहते ही पृथ्वी में गिर पड़ी जैसी कोई फूली फली लता पेड़ पर से नीचे गिर पड़े।

१: भिखारी। (?)

ऐसी उसको देख रानी छाती पीट कर बोली कि बेटी ! क्या जाने किसने तुमको छला कि जिससे ऐसा काम किया। अब क्या करें, कहां जाऊं औ किसको पूछूं ?

इस भांति बहुत सा विलाप कर निदान वह भी धरती पर गिरी । तुरन्त सहेलियां उठाकर अनेक प्रकार से समझाने लगीं।

यह वृत्तान्त सारे राज में फैल गया। दिन रात घर घर यही चर्चा हो रही कि देखो रे भाई ! स्त्रीजन का विश्वास न करना, राजा रघु ने चन्द्रावती को लड़कई से आज तक सुग्गा सा पढ़ाया। वो वैसा ही मानते रहे हैं। व्रत नियम पूजा ध्यान में उसकी लगन देखकर जी में महाराज बहुत प्रसन्न थे कि यह कोई देवी है कि सुतपस्या से चूक के हमारे यहां आ जन्मी है। इसलिये दश सहस्र अपने जात भाई की कन्या उसकी सेवा में रखी थी वो बेटों से भी अधिक प्यार करते, वो निपट भोली सी जानते थे, और ऐसा नेम आचार कि सब दिन भली भांति से गङ्गा स्नान वो ठाकुर की पूजा, पुराणों का श्रवण होता है, और बिवाह के लिये कितना हठ हुआ पर यह अभागी ने न माना, वो कुकर्म्म किया तो ऐसा कि जिससे राजा रघु के कुल में कलङ्क लगा।

कोई तो लगा कहने कि हे भगवान ! सब दो पर लड़की नहीं कि जिससे लोक में हँसी होय।

वहां रानी उनके कहने से दो एक दिन तक उस बात को छिपाए रही। जब जाना कि अब लोगों में यही बात कानाकानी हो रही है, तब भय से डरती कांपती और नैनों से आंसू ढलकाती, जैसे सोने की लता पर से मोतियों के फूल झरें, कहने लगी कि महाराज. बड़ा अनर्थ हुआ, इसका कुछ पारावार नहीं। जीवदान मिले तो यह आपके आगे कहूं कि जिसके सुनने से रोएँ खड़े होंगे।

यह सुनते ही राजा चहुंक उठे क्षन एक तो ईश्वर का ध्यान किया, फिर बोले कि महारानी ! शीघ्र कहो। क्या ऐसा अनर्थ हुआ कि जिससे इतना घबरा रही हो ? मैंने जीवदान दिया। इसका कारण कहो। हमारे जीते ही तुम्हारी [यह अवस्था होय। रानी बोली महाराज ! बड़ा अद्भुत वृत्तान्त है। आपकी कन्या को बिना पुरुषसंसर्ग के गर्भ भया है, सो यह कुल को दूषन देनेहारा और कीर्ति को नाश करनिहारा है। यह सुनि राजा क्षण भर तो चुप रहे। पीछे क्रुधित हो बोले, अरे पापिनी ! तूने यह क्या किया ? ऐसा कहके उसके वन में छोड़ आने की आज्ञा दी।

यह आज्ञा पाय सेवक रथपर चढ़ा उस रोती भई कन्या को बन में छोड़ आए। उस बन में व्याघ्र और सिंह के भय से वह अकेली कमल के समान चञ्चलनेत्रवाली व्याकुल हो ऊंचे स्वर से रो रो कहने लगी कि अरे विधना ! तैंने यह क्या किया ? और बिछुरी हुई हरनी के समान चारों ओर देखने लगी। उसी समय एक ऋषि जो सत्य धर्म में रत थे] इन्धन के लिये वहां जा निकले दूर ही से उसका रोना सुनके अति व्याकुल हो लगे सोच करने कि यह तो अनाथ स्त्री कोई कांदती[1] है, इस महाबन में कहां से आई ? कौन सी विपत्ति में पड़ी है।

१. बँगला में काँदना रोने को कहते हैं।

तब मुनि से रहा नहीं गया, सो निकट चले आए और देखकर जी में कहा कि हो न हो यह अहल्या है कि द्रौपदी, कि इन्द्र की अप्सरा तिलोत्तमा कहीं से भूल पड़ी। इसके हाथ पांव के आगे क्या कमल का फूल कि जिनके देखने से तनिक भी नहीं मेरी आँखें तृप्त होती हैं। और चन्द्रमा समान बदन, केहरि कटि, मृग का सा चञ्चल नयन, बड़ी बड़ी छाती कि जैसे सोने का दो कलस होय, लाल अधर, तोते की सी नाक कि जिसके नीचे एक तिल कुछ और ही शोभा दे रहा है। इस भांति रूप देख चकित हो निदान पूछा कि कहो कहां से आई हो और क्यों इतनी आतुर हो रोती हो ?

कन्या बोली महाप्रभु! मैं राजा रघु की बेटी हूं। चन्द्रावती मेरा नाम है। मुझसी अभागी दूसरी कोई नहीं। दश सहस्र नृपराजाओं की कन्या के बीच में रहके कि किसी पुरुष का मुंह अपने जानने में न देखा वो नाना प्रकार के भोग बिलास छोड़ सदा मैं ठाकुर की सेवा करती थी। न जानूं कि यह गर्भ कहां से हुआ। इस कारण पिता ने देस निकाल दिया। यह सत्य बात आपके आगे कही, पर बिश्वास न कीजिएगा।

ऐसा उसका मधुर बचन सुनके ऋषि दया कर बोले कि आज से तू मेरी धर्म्म की बेटी। आवे हमारे आश्रम पर चलो। और भी मुनि लोग वहां रहते हैं, उनके समेत अपनी बिपत्ति काटो जब तलक अच्छा सा दिन न आवे।

मुनि की बात सुनि चन्द्रावती बोली कि हे स्वामी! बहुत अच्छा। इस दासी पर बड़ी दया की जो आके दर्शन दिया। आपके अनुग्रह से सब पीड़ा हमारी दूर हो गई। अब तुम्हारी सेवा टहल से संसार-सागर पार हो जाऊंगी।

इस प्रकार प्रार्थना कर उठ खड़ी भई। साथ साथ उस स्थान पर आई कि जहां सैकड़ों ऋषि लोग अपना अपना योग तप पूजा अर्च्चा कर रहे थे। वो कुण्ड में क्या अच्छा निर्मल पानी कि जिसमें कमल के फूलों पर भौरे गूंज रहे थे, तिस पर हंस सारस चक्रवाक आदि पक्षी भी तीर तीर सोहावन शब्द बोलते आस पास के गाछों[1] पर कुहूं कुहूं कोकिलैं कुहुक रहे थे, जैसा बसन्त ऋतु का घर ही होय।

राजपुत्री पवित्र आश्रम देख, वहीं सन्तुष्ट हो जी में लगी कहने कि ईश्वर ने बड़ी ही दया की जो गर्भ मुझको दिया। नहीं तो राजभोग छोड़ वो पिता माता की प्रीति की डोरी तोड़ क्यों-कर इन महापुरुषों का दर्शन होता। भला ये भी अच्छा ही हुआ जो लोगों में हमारी हँसी हुई। और अब एक चित्त हो इन मुनियों की सेवा वो योग तप करूंगी वो आवागमन से छूटूंगी। ऐसा विचार रहने लगी।

जब नवां महीना बीता तब सकुचा सिर झुका उसने ऋषियों से कहा कि महराज अब पूरे दिन चले आते हैं, इसलिये मैं एक दूसरे स्थान में जाया चाहती हूं जो आराम से बालक हो वो यह यज्ञशाला न अशुद्ध हो।

तब तपस्वियों ने तुरन्त किसी वन में, कि जहां घने-घने पेड़ों पर लता पसर रही थी, उनके नीचे कोठरी सा बना हुआ एक स्थान बता दिया।

१. बँगला में वृक्ष को गाछ कहते हैं।

प्रसन्न हो वहां वह गई। एक दिन ज्यों लगी उसे वेदना होने, त्योंही कुंज के द्वार पर जा सूर्य्य के ओर सन्मुख हाथ जोड़ खड़ी हो लगी कहने कि हे त्रिलोकनाथ! तुम सबही के अन्तरयामी हो। और इस बनके देवता और देवियो! तुम सब भी मेरी बात को कान दे सुनो। जो मैंने स्वप्न में भी कदही आज तक किसी पुरुष का मुंह न देखा होय तो यह गर्भ जैसा ही हुआ वैसा ही निकल जाय।

इस भांति बिनती कर भीतर जा बैठी और आंख मूंद ध्यान करने लगी। इतने में गर्भ नाभी से हृदय में आया। वहां से कण्ठ में जा नाक के पथ से महातेजस्वी सूर्य्य समान पुत्र उत्पन्न हुआ।

देखते ही चन्द्रावती बहुत आनन्दित हो तुरन्त उसे गोदी में ले उस तपस्वी से जो साथ में वहां लाया था पुकार कर कहा कि हे पिता! नाक से हमको अति सुन्दर बालक हुआ। क्या नाम रखें? इस समय कैसी लगन है? वह बोले कि नाक से भया इसलिये इसका नासिकेत नाम हुआ, वो लगन से जाना गया कोई बड़ा ही महापुरुष योगी होगा कि जिसके आगे देवता सब भी हाथ जोड़े रहेंगे।

इतना कह मुनियों को बुला मङ्गल गान कराया। वैशम्पायन कहते हैं कि हे राजा! दस दिन के बीतने पर चन्द्रावती नहा दूध पिला लड़के को घर में सुला कर फिर ऋषियों की सेवा करने लगी।

एक दिवस उनकी टहल करते कुछ बिलम्ब हुआ सो बालक जाग उठा। मारे भूख के चिल्ला चिल्ला के रोने लगा। तब वह कोप से आकुल हो उसके निकट जा लगी कहने "अरे दुष्ट! देख, तेरे कारण मा बाप ने घर से मुझे निकाल दिया वो लोगों में हँसी हुई। तू बेटा नहीं कोई बैरी आ जनमा। अब हमारी तपस्या वो मुनियों की सेवा में बाधा करने चाहता है। इससे तेरा दूर ही होना अच्छा है।"

ऐसे कह एक घास के बोझे पर रख के उसे गङ्गा में बहा, आप जा मुनियों को हर्षित हो फिर सेवने लगी कि जिससे थोड़े ही दिन में ज्ञान विज्ञान को पहुंची। और बालक जो बहा हुआ चला, सो कुछ दूर आगे गङ्गा के तीर उद्दालक ऋषि स्नान करते थे, उनके समीप आ लगा।

देखते ही वह चकित हो चारों दिशा चितौने लगे कि किस निर्दई ने घास पर इतना बड़ा लड़का बहा दिया है! कुछ भी उसके जी से दया न उपजी! इतने में ब्रह्मा की बात उनके मन में आई कि जो पहिले पुत्र तिस पीछे तुमको स्त्री मिलेगी।

तब तुरन्त हर्ष से दूने हो वही लड़के को गोदी में उठा लिया और वेदमन्त्र से नहलाय बाहर आए। बार बार बिधि की स्तुति करने लगे कि धन्य हो पितामह, तुम्हारा कहा क्योंकर झूठ होए। चलो पुत्र की चिन्ता तो गई। अब भली भांति से तपस्या करूंगा जो स्वर्ग से न टलूंगा।

ऐसे विचार अपने आश्रम पर पहुंच पुत्र को कहा कि सुनो पूत! यह पुण्यस्थान में नाना प्रकार के आचारों से महर्षियों को प्रसन्न, पिता की सेवा, कन्द मूल आहार करते रहो, जो इसी में सब विद्या भी तुमको अनायास आ जायगी।

इतनी आज्ञा कर उद्दालक मुनि योग्य पुत्र पा कृतार्थ हो अपनी क्रिया में अति सावधान भए।

वैशम्पायन राजा जनमेजय से कहते हैं, हे महाराज ! थोड़े दिन बीते पर जब रघु की पुत्री का क्रोध सब मिट गया, तब पुत्र का ऐसा मोह हुआ कि जिससे शोकसागर में डूबी चारों दिशा शून्य वो अंधार ही देखने में आया।

चौपाई

योग और तप कुछ नहीं भावे। रह रह नयन नीर भर आवे।।
क्यों हूं क्षण भर धीर न पावे। आकुल हो हो समय बितावे।।

दिन रात रोने कलपने वो कहने लगी कि धिक्कार है मुझको जो बिन अपराध बालक को नदी में बहा दिया। क्या मेरी तपस्या यह फलैगी कि जिसने ऐसा अधर्म किया, मनुष्य तो क्या कोई पशु भी न यह काम करेगा कि जो मैंने किया है। हाय पुत्र ! कहां गए ? तनिक भी मेरे मन से न भूलते हो। अब बिना तुम्हारे मिले न तो मैं कुछ खाऊंगी न पीऊंगी।

ऐसे विचार पुत्र के लिये आकुल हो वहां से उठ जहां तहां बौड़ी सी दौड़ी फिरती और जिस तिस बनबासियों से पूछती कि अरे लोगो ! तुम सबने इधर एक लड़का तो कहीं नहीं देखा है ?

जब किसी ने कुछ भेद न बताया तब शोक संताप से अचेत हो निदान गङ्गा के तीर तीर उसे ढूंढती हुई चली। सो कुछ दूर आगे बढ़ गई कि जहां बहुत से मुनियों के सुथरे सुथरे आश्रम थे और वोही बालक वहां गङ्गा में नहाने को आया था।

देखते ही हर्ष से चौगुनी भई वो झट उसे गोदी में उठा बारबार मुंह चूमने लगी कि कहो पुत्र किसने इतना बड़ा पाल के किया ? उस मुनि का कौन सा आश्रम और क्या नाम है ? मैं तुम्हारी माता हूं क्यों मुझे नहीं चीन्हते हो ?

बालक बोला कि माता ! मैं उद्दालक ऋषि के स्थान में रहता हूं कि जो एही साम्हने देखती हो और वो ही हमारे पिता माता देवता गुरु हैं। अबहीं कन्द मूल लाने बाहर गए हैं।

यह बचन कह अपने आश्रम पर उसे वह ले गया और आसन दे बैठाया। पानी लाकर पांव को धो दिया वो कहा कि माता तुम इहां आराम करो, तब तक इस अग्निशाला को हम लीपते हैं।

सुनते ही वह बोली कि पुत्र ! तुम रहो, आज मैं ही लीपौंगी। ऐसे कह उठके सारे घर को बोहार सोहार गोबरी मिट्टी पानी लाय बाहर भीतर बहुत सुन्दर लीप पोत आप गङ्गा के तीर जा बैठी।

इतने में उद्दालक ऋषि बन से कन्द मूल ले आन पहुंचे। देखते हो आश्चर्य माना कि आज तो बड़ी भांति से शाला लीपी गई।

निदान हँस के बोले कि पुत्र ! हम तुम्हारे भक्तिभाव से निपट प्रसन्न भए। मांगो, हमसे क्या बर चाहते हो। तब नासिकेत ने कहा कि महाराज ! यह काज मैंने नहीं किया, मा मेरी आई है। उन्होंने आश्रम को ऐसा सोहावन किया है। उद्दालक ने पूछा कि बेटा ! तुम्हारी माता कहां है ? बुला लावो, हम देखेंगे।

सुनते ही वह गङ्गातीर दौड़ा गया और मा से बोला कि पिता हमारे आए हैं, तुम्हें बोलाते हैं। चलो, वहां अहार कर रहो।

वो बोली कि पुत्र ! क्या अजगुत कहते हो कि जिससे लोक में निन्दा और अन्त में नरक होय। भला सुनो तो, पिता माता भाई गोतिया ये सब कन्यादान कर सकते हैं, पर पुत्र को कहीं नहीं सुना जो अपनी माता को और किसीको देता है।

वो क्योंकर मैं बड़े कुल की कन्या, फिर तिसमें तपस्विनी, अपने से पति करूं ? सो हमारे कहे से जाव, यह सब बात चीत सब बाप से कहो, वे जैसा कुछ उचित होगा सो करेंगे।

तब वह उठ पिता के पास आया। देखते ही वे बोले अरे पुत्र ! अकेले ही तू चला आया, उसको क्यों नहीं लाया ?

नासिकेत ने कहा कि महाराज ! मैंने तो कहा था, पर आप के निकट आना उनके जी में न आया और उन्होंने कहा कि सुनो पूत, मेरे यह युवा अवस्था से मत भूलो कि जिस किसे के पास यह जाती है। मैं जवान हूं सही, पर सैंकड़ों पतिव्रता में एक पतिव्रता वो राजा की कन्या हूं; बिना ब्याह तुम्हारे पिता के निकट नहीं जा सकती। वे भी वेद पुराण सब शास्त्रों से इसका दोष जानते होंगे।

उद्दालक बोले कि अच्छा, पुत्र, जाना, बिना विवाह यहां नहीं आवेगी। फिर जा पूछो कि तुम कौन से राजा की कन्या हो, वो अल्पवयस में बनवास हुआ सो क्या कारण। हम जो तुममें जन्मे सो किस प्रकार से, इसका उत्तर ले आवो।

पिता का सन्देस फिर उसने अपनी माता को जा सुनाया। तब वो बोली कि पुत्र ! तुम्हारे पिता तो सब हमारा बृत्तान्त आप ही जानते होंगे, क्योंकि बड़े सिद्ध हैं। तौ भी सुनो मैं कहती हूं।

आज काल्ह सारे पृथ्वी का पति ऐसे राजा रघु को ईश्वर ने बनाया है कि जिसक उत्तम जश देवता लोग भी स्वर्ग में गाया करते हैं औ सब धर्म्मात्मों में आगे वही गिने जाते हैं। उन्हींकी तो मैं बेटी हूं। चन्द्रावती मेरा नाम है। क्या क्या सुन्दर दस सहस्र राजाओं की कन्या दिन रात हमारी सेवा में हाथ जोड़े खड़ी ही रहती थीं। आदर भाव जो पूछो तो बेटों से भी अधिक पिता मुझे मानते थे।

एक दिन विपत की मारी हुई सहेलियों के साथ मैं गङ्गा नहाने को गई। वहां एक कमल का फूल कुश से लपेटा हुआ धारा में बहा चला आता था। बहुत सुन्दर देख एक सखी ने उसे हमारे हाथ में ला दिया। गांठ खोल लगी जो मैं सूंघने सो वहीं उसके भीतर से कुछ दूध सा नाक के पथ से मेरे पेट में चला गया। वो गर्भ का कारण हुआ। थोड़े दिन बीते जहां तहां यह बात कानाकानी होने लगी। निदान पिता के कान में जा पड़ी। सुनते ही वह आग हो गए। तुरन्त मारने की आज्ञा दी। पर मंत्रियों के कहने से एक महाबन में छोड़वा दिया। दैवयोग से फिरते फिरते एक मुनि वहां जा निकले। रोती हुई मुझको देख बेटी कह अपने आश्रम पर ले जा पालने लगे, वो उन्हीं के स्थान में मेरी नाक से, पुत्र, तुम्हारा जनम हुआ, इसलिये ऋषि ने नासिकेत नाम रखा।

एक दिवस मुनियों के निकट हमको कुछ अधिक अटकाव हो गया, इसमें बार बार तुम घर में रोने लगे। तब क्रोध की लहर जो उठी सो आकुल हो मैं दौड़ी गई। जाते ही घास के बोझ पर रख गङ्गा में जा तुमको बहा दिया। कितने एक दिन पीछे मोह से अचेत हो देखने के लिये फिर मैं गङ्गा के तीर पर गई, वो सब ठांव ढूढ़ती खोजती अब इहां आन पहुंची हूं।

माता की इतनी बात नासिकेत ने अपने पिता को जा सुनाई। बहुत आश्चर्य मानकर वे बोले कि बड़ों का कहना क्या कबहीं झूठ होता है! देखो, ब्रह्मा ने जो कहा सो देखने में आया। अच्छा पुत्र! कन्द मूल भोजन करा अपनी माता को साथ ला रखो। राजा रघु के पास कन्या याचने को मैं जाता हूं।

ऐसे कह वह वहां से चले सो कई एक घड़ी में उनके नगर में जा पहुंचे। चारों ओर पुरी की शोभा और लोगों को अति सुखी देखते हुए बहुत प्रसन्न हो नृप के द्वार पर गए।

तुरन्त द्वारपालों ने रघु से जा कहा कि महाराज! एक कोई ऋषि महातेजस्वी बाहर आय खड़े हैं।

सुनते ही वे मन्त्रियों को साथ ले दौड़े हुए आए। आवते ही मुनि के चरणों पर गिर पड़े और हाथ पकड़ भीतर लेजा अपने सिंहासन पर बैठाय कुशल क्षेम पूछ गङ्गाजल ले ऋषि के पांव पखार चरणोदक लिए। और जैसा कुछ चाहिए वैसा आदर मान कर हाथ जोड़ कहने लगे कि महाराज! बड़ा अनुग्रह किया जो आके दर्शन दिया। अब हमारी सब क्रिया वो जन्म सुफल हुआ। चाहिए कि आज से मेरे राज में सब भला दिन हुवा करेगा, क्योंकि जहां तुमसे ऋषियों की दया है, वहां सदा ही आनन्द बिहार होता है। अब कहिए किस कारण से यहां आगमन हुआ, सो इस दास को सुनाइए।

ऐसी नृप की मीठी मीठी बातों से हर्षित हो बार बार आसीस कह उद्दालक बोले कि धन्य हैं तुम्हारी माता वो पिता कि जिनको तुमसा धर्म्मात्मा पुत्र हुआ। और स्वर्गलोक में देवतों की कन्या दिन रात घर घर तुम्हारा गुण गाती हैं। तुम्हें बड़ा दानी जान कन्या याचने को मैं आया हूं। धर्म्मावतार! वेद की विधि से हमको उसे दीजिये तो लाख गो दान किए का फल पावोगे।

यह बात सुनके नरेश ने कहा कि स्वामी! अन्न बस्त्र हाथी घोड़ा द्रव्य जितना चाहिए सो हमसे सब लीजिये, पर कन्या तो मेरे घर में नहीं जो आपको मैं दूं।

मुनि बोले कि सत्य, वह पतिव्रता कन्या बिना ब्याही हुई तुम्हारे मन्दिर में नहीं, पर कहीं होगी। कुल बढ़ाने के लिये मुझको दीजिए, कोटिन्ह अश्वमेध यज्ञ का पुण्य सहज में होवेगा।

ऋषि की आश्चर्य बात सुन शोक से आकुल हो सकुचाकर राजा कहने लगे कि महाराज! प्राण से भी अधिक प्यारी एक पुत्री हमको थी सही, पर कुछ दोष सुनि मारे क्रोध से उसे घर से मैंने निकाल दिया। सो आपके योग्य नहीं। और ईश्वर जाने कि अब जीवती है कि मर गई।

तब उद्दालक मुनि पिछला समाचार भूपति को सुनाने लगे। जिस प्रकार ब्रह्मा से बर मिला और अपना बीज कमल के फूल में रख गङ्गा में बहा दिया था विसके सूंघने से चन्द्रावती को गर्भ हुआ। सो देख राजा ने बनबास दिया। वहां एक मुनि के आश्रम पर उसको नाक से पुत्र हुआ।

वो आगे नासिकेत, पीछे चन्द्रावती की अपने यहां आवने की बात सो सब मुनि ने बेवरे समेत राजा को सुनाई।

तब वे सुनकर बार बार पछिता पछिता रो रो कहने लगे कि हाय ! हाय ! यह देवचरित्र मैंने कुछ नहीं जाना। हमसा पापी अधर्म्मी दूसरा कोई नहीं जो बिना अपराध बेटी को बनबास दिया।

ऐसे कहते हुए वहां से तुरन्त हर्षित हो उठे। वो भीतर जा मुनि ने जो आश्चर्य बात कही थी सो पहिले रानी को सब सुनाई। वह भी मोह से व्याकुल हो पुकार पुकार रोने लगी वो गिड़-गिड़ा गिड़गिड़ा कहने कि महाराज ! जो यह सत्य है तो अब ही लोग भेज लड़के समेत झट उसको बुला ही लीजिए, क्योंकि अब मारे शोक के मेरी छाती फटती है। कब मैं सुन्दर बालक सहित चन्द्रावती के मुंह, कि जो बन में रहने से भोर के चन्द्रमा सा मलीन हुआ होगा, देखोंगी। देखो यह कर्म्म का खेल, कहां इहां नाना भांति भोग बिलास में वो फूलन्ह के बिछौने पर सुख से रात दिन जिसके बीतते थे, सो अब जंगल में कन्द मूल खा काँटे कुश पर सो कर स्यारों के चहुंदिशि डरावन शब्द सुनि कैसे बिपति को काटती होगी।

राजा बोले कि माता पिता से प्राणी का एक जन्म ही तो होता है। और सुख दुख जो पूछो तो जब जैसा बदा तब तैसा, क्या राजा क्या प्रजा, सब ही छोटे बड़े को होता है।

इतने में जहां से सखी सहेली और जात भाइयों की स्त्री सब दौड़ी हुई आईं, समाचार सुनि बहुत जुड़ाईं, मगन हो हो नाचने गाने बजाने लगीं, वो अपने अपने देह से गहना उतार उतार सेवकों को देने लगीं और अनगणित रुपैया अन्न बस्त्र राजा रानी ने ब्राह्मणों को बोला बोला दान दिया। आनन्द वधावा बाजने लगा। हर्षित हो नरेश ने वहां से सभा में जा ऋषि से कहा कि महाप्रभु ! आपने मेरा बड़ा कलङ्क मिटाया है। इस आनन्द का कुछ पारावार नहीं। अब निश्चिन्त हो इहां विराजिए, कन्या मंगा आपको मैं दूंगा।

ऐसे कह अमृत पदार्थ भोजन करा अति आदर से मुनि को टिकाया, वो तुरन्त सेवकों के सहित पालकी भेज नाती समेत बेटी को बन से मंगा लिया। गले लगा सब रनिवास भेंट किया। बालक गोदी में ले मतारी लड़की के घर में बैठा रो रो बन की बात पूछने लगी। भाई गोतिया हित मीत नगर के लोग देखने को आए। भीतर बाहर नृप के मन्दिर में मारे भीड़ के उथल पथल हो गया। तब भूप ने पण्डितों को बुला दिन विचार बड़ी [प्रसन्नता से सब] राजा वो ऋषियों को नेवत बोलाया। लगन के समय सबों को साथ ले मण्डप में कि जहां सोनन्ह के थम्भ पर मानिक दीप बरते थे, जा पहुँचे। मोतिन्ह से पूरा हुआ चौक में रतन जड़ा पीढ़ा रखवा उस पर वर कन्या दोनों को पटम्बर वो गले में हीरे की माला पहिरा बैठाया और वेदरीति से ब्याह आरम्भ किया। ब्राह्मण सब वेद पढ़ने लगे। भांति भांति के बाजन लगे बाजने, वो कथक गाने, बन ठन वेश्यागण जहां तहां नाचने, हर्षित हो राजा ने कन्यादान कर सहस्र हाथी लाख घोड़े वो गौ, असंख्य बासन भूषण बस्त्र रुपैया जँवाई को यौतुक दिया। फिर हाथ जोड़ बिनती किया कि सुनिए महाराज ! आपने निपट हमको सनाथ किया। मेरे घर में ऐसी कोई वस्तु नहीं कि जिससे तुम्हारी मैं पूजा करूं। देखिए, सागर को जल से, सूर्य्य को दीप से पूजते हैं, तिन्हको क्या उन से आनन्द होता है ? नहीं, महात्मा लोग आदर मान ही से सन्तुष्ट होते हैं।

इतनी कह ऋषि के चरण पर गिर पड़े। अति प्रसन्न हो मुनि उठ पीठ ठोंक आशीस दे बोले कि धन्य हो राजा रघु ! क्यों न हो। मुंह पर कहां तक बड़ाई करें। भगवान ने तुमको बड़ी बुद्धि दी है। ईश्वर करे यों ही सदा फूले फले रहो। और यह हमारे यौतुक को हाथी घोड़े द्रव्य तुम्हारे ही घर में रहें, क्योंकि वन के बसनेवाले तपस्वियों को इनसे क्या काज।

ऐसे कह धन छोड़ सब से मिल नासिकेत समेत भार्य्या ले उद्दालक मुनि वहां से अपने आश्रम पर आए।

तब राजा जन्मेजय ने वैशम्पायन ऋषि से कहा "ऐ महाराज ! सुना है जो स्थान पर आके कुछ दिन के बीते पर पिता के शाप से जीवित ही नासिकेत यम के पास गए और आए सो कृपाकर हमको सुनाइए कि जिससे सन्देह मेरा दूर होए"।

वे बोले हे राजा ! अति आश्चर्य्य कथा है, तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हो मैं कहता हूं, एक चित्त हो सुनो —

इस प्रकार राजा रघु की बेटी चन्द्रावती को व्याह साथ ले फिर उद्दालक तपस्या करने लगे और नासिकेत को योग की श्रद्धा हुई सो वे लगे योग करने।

एक दिन पिता ने उनको आज्ञा दी कि पुत्र ! आज हमको अग्निहोत्र यज्ञ करना है, तुम कन्द मूल फूल फल जितना मिले सो शीघ्र जा ले आवो।

सुनते ही वे उठ खड़े भए और किसी घने बन में जा पहुंचे। वहां हंस सारसों से सुशोभित ऐसा कोई सुन्दर सरोवर देखा कि जहां अच्छा निर्मल पानी, तिस में भांति भांति के कमल फूले थे, और उसके तट के वृक्ष सब अमृत समान फलों से फले थे। तब हर्षित हो उसके तट पर जा विधि से स्नान सन्ध्या कर शिव की पूजा करने लगे और समाधि लगाई, सो बरस दिन उनको वहां बीत गया। पीछे जब ध्यान छूटा तो तुरन्त कन्द मूल फूल फल कुश वो ईंधन ले पिता के पास आन पहुँचे। देखते ही वे क्रोध से लाल आंख कर बोले —

चौपाई

इतना दिन कहो कहां लगाए। तेरे कारण बहुत दुख पाए।।
अग्निहोत्र वह यज्ञ हमारा। तुझ बिन गया अकारथ सारा।।

पुत्र करते हैं सुख पाने को, नहीं तो निपुत्र होना अच्छा। अब ही पिता माता को दुख देने लगा, न जाने आगे क्या करेगा। देखो अग्निहोत्र से ब्रह्मा आदि देवता और पितर सब सन्तुष्ट होते हैं, सो हमसे कुछ हो सका नहीं।

पिता की बात सुनि नासिकेत बोले कि अग्निहोत्र कर्म्म केवल संसार के बंधन के लिये है, मेरे जानने में तो योग समान कोई दूसरी क्रिया मुक्तिदायक नहीं, कि जिसको ब्रह्मा आदि देवता सब भी साधते रहते हैं।

उद्दालक बोले वेद पढ़ि अग्निहोत्र करके करोड़न्ह बरस सुरपुर में नाना भोग बिलास करते हैं। योग से कहो क्या होता है।

नासिकेत ने कहा वेद पढ़ि अग्निहोत्र करने से बार बार संसार में आते जाते हैं। योग साधने से इस देह से मुक्ति हो आनन्द विहार करते हैं।

यह समाचार वैशम्पायन मुनि राजा जन्मेजय से कहते हैं कि इस प्रकार पुत्र को बराबर उत्तरदायक जान उद्दालक ऋषि नें शाप दिया कि जाव, अब ही तुम यमलोक सिधारो। अब इहां तुम्हारे रहने से हम प्रसन्न नहीं। पहिले तो वे डरावने शाप से लगे कांपने फिर धीरज कर योग के बल से तुरन्त यम के निकट चल खड़े भए।

सुनते ही आस पास के मुनि सब हाय हाय करते दौड़ आए। सिर में जटा, अंग में बभूत केले के छिलके का लंगोट बांधे, मृग का चर्म्म ओढ़े छोटा सा लड़का जान, मीठी मीठी बात कहते देखकर बहुत पछताने लगे।

पांव पकड़ मतारी रोने कलपने लगी। तब उद्दालक मुनि मोह से आकुला कर कहने लगे क्यों पुत्र! हमको बिसराए चले जाते हो। हम समान कुटिल कठोर निर्दयी दूसरा कौन जग में होगा जो तुम को शाप दे। क्योंकर, पूत उस पुरी में जावोगे कि जहां राजा कहिए तो यम है, वो महाभयावनी बैतरनी नदी बहती है, बाट में कितने एक दूर तक सदा अग्नि ऐसी बरती रहती है कि जहां पापी सब ज. जा जलते हैं ?

नासिकेत ने कहा पिता ! कुछ खेद मत करो, आपके प्रताप से यमराज को देख शीघ्र मैं चला आऊंगा। तुमसे पिता की बात जो सदा सत्य होती आई है, सो मैं झुठाने नहीं सकता हूं। देखिए, सत्य ही से चन्द्रमा सूर्य्य नित्य भ्रमते हैं। सत्य ही स्वर्ग में है, नहीं तो बिना उसके नरक भोग होता है। इस लिये यम की पुरी को देखूंगा। पिता ! मन को आकुल मत करो। इतना कह माता सहित पिता वो ऋषि को प्रणाम कर झट वहां से अन्तर्धान हो शिव का मन्त्र जपते वो ब्रह्मा का ध्यान करते चले, और बड़े सिद्ध थे इस कारण पहर भर में यम की वह सभा में, कि जहां अत्रि आदि अनेक ऋषि लोग अपनी अपनी पोथी खोल न्याव विचार यमराजा से कहते थे, जा पहुंचे।

चौपाई

शिव स्वरूप अति सुन्दर बालक। निपट छोट देखत सुखदायक॥
जटा मुकुट वो भस्म लगाए। जातेहि सकल सभा (मन) भाए॥

तब सिर नवाय प्रणाम कहि हाथ जोर लगे धर्म्मराज की स्तुति करने।

वैशम्पायन मुनि राजा जन्मेजय से कहते हैं, सूर्य्य समान तेजस्वी नासिकेत मुनि को, जिनके जाने से सभा शोभने लगी, देखते ही धर्म्मराज हर्षित हो तुरन्त उठ खड़े भए। आदर मान कर निकट अपने आसन पर ऋषि को बैठाया वो प्यार से समाचार पूछने लगे।

चौपाई

बालहिपन में घड़ी सिधाई। कहो मुनीश कैसे यह पाई॥
धन्य पिता जिनके तुम भए। तुम्हें देख पातक सब गए॥
कारण कौन यहां तुम आए। बार बार मेरे गुण गाए॥
अमृत बाणी बहुत सुनाई। जो कहत सोहावनि अति सुखदाई॥

इतनी यम की बातें सुन नासिकेत ने कहा दीनदयाल! अपनी भूल कहां तक मैं आपको सुनाऊं। जब कुमति आ घेरती है तब कैसहू कोई ज्ञानी होय, ज्ञान ठिकाने में नहीं रहता। एक तो पहिले आज्ञा में चूके ही थे, फिर ज्ञान की चर्चा में ढिठाई कर पिता को बराबर जा उत्तर दिया। इस अपराध से झट उनके मुख से यह बात निकल गई कि जा, अब ही यमपुरी को देख; तू हमारे साथ रहने योग्य नहीं। सो महाराज! पिता का बचन सत्य करने के लिये तुम्हारे समीप आया हूं। जैसी कुछ आज्ञा होए सो में करूं।

हँस के यम बोले कि महाप्रभु! तुम समान मुनि को, कि जो अब ही ऐसा योग में मगन हो संसार की माया मोह त्याग जो चाहे सो करे, जहां इच्छा आवे, तहां चला जाय, देखकर अति आनन्द हमको होता है। कहो क्या मन में है सो बर मुझसे मांगो।

नासिकेत बोले! महाराज ऐसी दया करते हो तो चित्रगुप्त समेत अपनी सारी पुरी वो धर्म्मात्मा लोग जहां पुण्य का अच्छा फल वो पापी जन नरक भोगते हैं, सो सब स्थान दिखावो। यही मेरे मन की लालसा है।

तुरन्त उनने दूतों को बुलाके कहा कि यह ऋषि बड़े सत्यवादी मर्त्यलोक से पिता के शाप पाय यहां आए हैं। जाव, सगरे पुर का दर्शन इन्हें करा लावो, कि जिससे अपना मनोरथ पूरण कर हर्षित हों।

प्रभु की इतनी आज्ञा सुनि दूत सब वोंहीं उनको चित्रगुप्त के पास ले गए और कहा कि धर्म्मावतार! यमराज ने हमको भेजा है। बाप का बचन रखने के लिये ये महापुरुष यहां आए! जो कुछ कहते हैं सो सावधान होकर सुनिए।

किंकरों की यह बात सुनि चित्रगुप्त ने मुनि से पूछा की महाराज! तुम्हारे दर्शन से निपट हम सन्तुष्ट भए, कहो क्या अभिलाष है, सो मैं पूरण करूं।

नासिकेत बोले, ईश्वर ने अति उत्तम तुमको बनाया है, सब शास्त्र के ज्ञाता, धर्म्म, अधर्म्म के विचार और तेज में देखते हैं कि यम के समान ही हो। और प्राणियों के सकल कर्म्म के जाननिहार बार बार मैं तुमको प्रणाम करता हूं। पुण्य पाप के कारण से सुख दुख के जो जो स्थान इस नगर में हैं सो देखने की मेरी इच्छा है। कृपानिधान! दया करके हमारे मनोरथ को पुरओ।

वैशम्पायन कहते हैं, इस प्रकार से बिनती किए पर चित्रगुप्त की आज्ञा ले दूतों ने नासिकेत को ले जा स्वर्ग नरक, कि जहां पुण्य पाप के फल पावते हैं, दिखा सुना प्रसन्न कर फिर चित्रगुप्त को कहते हुए धर्म्मराज के पास ले आय खड़ा कर दिया।

महातेजस्वी व समर्थ जान उनके आवते ही वे उठ खड़े भए और आसन दे बैठाय प्रीति कर पूछने लगे कि कहो नासिकेत ऋषि ! चित्रगुप्त समेत सारे पुर वो नाना भांति के लोग जो अपने अपने कर्म्म का फल भोगते हैं, देख आए ? श्रद्धा पूरी भई ?

वे बोले महाराज ! तुम्हारे प्रसाद से सब स्थान से मैं हो आया। अब माता पिता हमारे शोक से कलपते होंगे, आज्ञा करो तो उनका जा दर्शन करूं।

तब इतना बचन सुनि धर्म्मराज निपट हर्षित भए, वो यह बर दे उनको अपने यहां से विदा किया कि आज से तुम अपने योग के बल से सब दुख से छूट और मृत्यु को जीत युवा स्वरूप हो सदा आनन्द विहार में मगन रहो। और जो तुम्हारे कुल में होगा सो हमारा कबहीं न मुँह देखेगा।

इस प्रकार से यह वर पाय नासिकेत मुनि मन के वेग समान वहां से चले, सो पल भर में जहां माता पिता मारे मोह से दुबराकर मरने योग्य हो रहे थे, वहां अचानक जा पहुंचे, वो जाते ही दोनों की प्रदक्षिणा की, वो चरण छू प्रणाम कर सन्मुख जा बैठे।

[पत्नी] सहित उद्दालक ऋषि पुत्र को कुशल से देख बहुत हर्षित भए। वो तुरन्त गोदी में बैठा अति आनन्द से रो रो बार-बार मुंह चूमने लगे और कहने कि नासिकेत ! आज हमारा जन्म स्वारथ हुआ। हम समान क्रोधी दुराचारी पापी संसार में कौन होगा जो बिन अपराध शाप दे तुमको संकट में डाला। धन्य हो पुत्र, कि इसी देह से यम की पुरी को देख ज्यों के त्यों फिर चले आए। जग में एक से एक सिद्ध हुए और हैं, पर मैं जानता हूं कि तुम्हारे गुण वो तेज को कोई दशांश भी नहीं पा सकता है। कहो कैसा धर्म्मराज का लोक व नगर है ? कैसा यम का रूप, किस प्रकार की बाट कि जिससे इतना शीघ्र गए वो आए ? क्या खाने पीने को पाया ? किस रीति से बातचीत की ? और जो कुछ अचरज देखा सुना हो सो हमसे कहो कि सन्देह मिटे, वो जो करने की होय सो मैं करूं।

नासिकेत बोले—"पिता ! आपके पुण्य प्रताप से यम के मन्दिर हम गए। सबके संहार करनिहार दूत सहित यमराज, पुण्य पाप के लिखनेवाले चित्रगुप्त और भांति भांति के देवता अनगणित मैंने देखे। बड़ी स्तुति से रिझाकर यम से यह बर पाया कि इसी देह से जाओ, अब तुम्हारा जन्म मरण न होवेगा और युवा वयस सब दिन सुख में भरे पुरे रहोगे।

वैशम्पायन कहते हैं, इतने में नासिकेत धर्म्मराज के पुर से हो आया, यह सुनि ऋषि लोग बहुत चकित हो अपने अपने आश्रम में जिस भांति से तप करते थे, उसी प्रकार से यमलोक के समाचार पूछने के लिये चल खड़े भए। कितने एक तो नीचे माथ ऊपर पांव किए, और कितने एक ही चरण से खड़े, कोई दोनों, कोई एकही हाथ उठाए, किसी को देखो तो मौन ही व्रत किए, कोई सूखे पत्ते ही खा, कोई निराहारी हुए, बहुतेरे संसार सागर पार होने को योग ही में मगन दिगम्बर बेष बनाए, कठिन से कठिन तपस्या में मन लगाए, जहां पिता के समीप नासिकेत बैठे थे वहां आन पहुंचे।

देखते ही वे हर्षित हो उठ खड़े भए वो प्रणाम कर मिल भेंट, कुशल क्षेम पूछ, आसन दे एक एक को अलग अलग बैठा, पांव धुला, आचमन करा, अक्षत चन्दन फूल ले सबों को पूजने लगे।

तब समय जान ऋषि लोग बोल उठे कि नासिकेत! हम तुम से अति प्रसन्न भए। शिष्टाचार तो जैसा कुछ चाहिए वैसा हो चुका वो होता रहेगा, अब यमलोक की बात सुनावो। कैसी वह पुरी है कि जहां सदा आप धर्म्मराज विराजे रहते हैं? कैसे यम के दूत हैं? क्या वहां की रीति रहन ज्ञान तपस्या वो कैसी वहां बैतरणी नदी है? और यहाँ जो करते हैं सो वहां कैसे भोगते हैं? किस करम के फेर से यम के कोप में जा पड़ते हैं? कैसा उनका दण्ड व कैसे चित्रगुप्त हैं जो प्राणियों धर्म्म अधर्म्म लिख धर्म्मराज को जनाते हैं? पास में उनके कौन कौन मुनि लोग रहते हैं? सो सब कृपा कर कहो कि जिससे अति संतुष्ट हो तुम्हारे गुण को गावें।

उनकी इतनी बात सुनि बीच में बैठ नासिकेत कहने लगे कि जितने तुम साधु सन्त हो सो अब सावधान हो सुनो। ऐसी आश्चर्य यह कथा है कि जिसके श्रवण से रोमांच होते हैं।

धर्म्मराज के लोक में भांति भांति के लोग और वृक्षों से शोभित चार सौ कोस लम्बी चौड़ी चार द्वार की यमराज की पुरी है, कि जिसमें सदा आय वे अनेक गण गन्धर्व ऋषि वो योगियों के मध्य में धर्म्म का विचार किया करते हैं। तिस पुरी में जिस द्वार से जो प्राणी जाता है सो मैं तुमसे कहता हूं।

देवता पितर गुरु के भक्त, क्रोध लोभ को जीतनिहारे, दान धर्म्म में सब दिन जिनकी उत्तम मति रहती है, वो जो जेठ बैसाख में जल दे प्राणियों की प्यास मिटाते, वो जाड़े में वस्त्र दे दुखी जन को पालते हैं, ऐसे जितने लोग हैं सो तो वहां पूर्व द्वार से जाते हैं, वो नाना भोग बिलास करते, और जो हरि हर दुर्गा के भक्त अतिथि देवतों को पूजते, तीर्थों में नहाते, आहार को जीतते गौ बचाने को युद्ध करते, ज्ञान के लिए साधुन का संग करते, ऐसे जो महात्मा लोग हैं सो सब उत्तर द्वार से जा परमपद को पहुंच मनभावन सुख को पाते हैं। और धर्म्म में जिनकी श्रद्धा है, सत्य ही बोलते, सबसे नय चलते, पराए की हिंसा निन्दा नहीं करते, विष्णु के भक्त, परद्रव्य को मिट्टी, पर स्त्री को माता समान जानते हैं ऐसे जो कोई महापुरुष लोग हैं सो सब पश्चिम द्वार से वहां पहुंच बिमानों पर चढ़ जहां इच्छा आवे तहां जा, अपनी रुचि से आनन्द विहार किया करते हैं, और जो निर्द्दयी, पापी, कुटिल, कठोर, क्रूर, बिशील, वेद पुराण शास्त्र व देव पितरों की निन्दा करते हैं, वो गुरु को न मानते, झूठ ही बोलते रहते हैं ऐसे जितने अधम लोग हैं सो तो महा भयावन दक्षिणद्वार से जाते हैं, और दुःख भोगने के लिये धर्म्मराज की आज्ञा से तुरन्त काली काली बड़ी बड़ी देह पाय यमदूतों के हाथ पड़ मुद्गरों के मार से भुरकुस होते, अति अन्धकार महा महा रौरव नाम नरक में डाले जाते हैं, कि जिसमें जहां देखो तहां कीड़े कलबलाते हैं, और एक एक बाघ, सिंह, हुंडार, कुत्ते, बीछू, सांप, गिद्ध, कौए से भरे हैं कि पापियों के देखते ही सैकड़न आ झुक पड़ते हैं वो झट पकड़कर आपस में ऐसा खैंची किया करते रहते हैं तिनमें दारुण दुःखदायक बिच्छू डंक मारने लगते हैं, बार बार विषधर डंसने को फुफकार करने, लोहे समान चोंचों से गिध कौए तिस पर ऐसे लगते हैं सताने कि जिस दुख का कुछ पारावार नहीं है। हाय! हाय! मरे रे, दौड़ो रे सदा पुकारते रहते हैं। पर बिना धर्म्म के कोई उनको बचाना चाहे तो नहीं सकता है।

इस प्रकार से यमपुरी का दक्षिणद्वार अति डेरावन है कि जहां से दूतों के बस होकर पापी लोग ऐसे महानरक में पड़ते वो नाना भांति के दुख को सहते हैं।

इससे अधिक कुम्भीपाक आदि सहस्र नरक एक से एक मैंने देखे कि जिनमें बड़े बड़े कीट भरे वो हाहाकार शब्द दूर ही से सुनाता है। और वो महादुखदायक असिपत्र एक एक ऐसा बन है कि जहां खड्ग की धार के समान चोखे गाछों (?) के पत्ते हैं; नीचे तिसके अति दुर्गन्ध कीड़ों से आकुल पीप की नदी बहती है, वो अधमों के तलने के लिये बीच में कहीं कड़ाहों में तेल गरा गराता रहता है। बहुतेरे तो पहाड़ पर से गिराए वो शूली पर चढ़ाए जाते हैं।

यह समाचार वैशम्पायन राजा जन्मेजय से कहते हैं —

इस प्रकार से नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक का वर्णन कर, फिर जौन जौन कर्म्म किए से वह भोग होता है सो सब ऋषियों को सुनाने लगे, कि गौ, ब्राह्मण, माता, पिता, मित्र, बालक, स्त्री, स्वामी, वृद्ध, गुरु, इनका जो बध करते हैं वो झूठ साक्षी भरते, झूठ ही कर्म्म में दिन रात लगे रहते हैं, अपनी भार्य्या को त्याग दूसरे की स्त्री को व्याहते, औरों की पीड़ा देख प्रसन्न होते हैं और जो अधर्म्म से हीन पाप ही में गड़े रहते, वो माता पिता की हित बात को नहीं सुनते, सबसे बैर करते हैं, ऐसे जो पापी जन हैं सो सब महा डरावन दक्षिणद्वार से जा नरकों में पड़ते हैं।

इतनी कथा सुना फिर नासिकेत मुनि कहने लगे, कि यम की आज्ञा से दूत सब एक किसी को इहां से ले गए वो विसे उनके आगे खड़ा कर दिया, उसका जो पुण्य पाप का बिचार होते मैंने देखा है सो अब कहता हूं तुम सावधान हो सुनो।

यमराज की सभा में अपने अपने स्थान पर सुन्दर आसन बिछाए बैठे अत्रि, गौतम, मैत्रेय, बृहस्पति, शुक्र, वेदव्यास, जह्नु, कर्ण, भारद्वाज, दधीचि, गोभिल, दुर्बासा, मरीच, भृगु, गालव, सनत्कुमार, प्रलह, पुलस्त्य, ऋतु, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, मार्त्तण्ड, हरिमित्र व सुमित्र, ये सब ऋषि लोग अच्छा बस्त्र व भूषण पहरे द्वादश आदित्य समान शोभते, नाना शास्त्र बिचार बिचार प्राणियों के धर्म्म अधर्म्म का न्याय किया करते हैं। तिनके बीच में कानों में कुण्डल, शिर में सुन्दर मुकुट पहिरे तारन्ह में चन्द्रमा समान महान तेजस्वी धर्म्मराज सदा विराजते रहते हैं।

तहां अति निर्दयी निपट डेरावन वैसेही हाथ में दण्ड लिए दूतों ने उससे पूछा कि जिसको यहां से ले जा यम के पास खड़ा कर दिया था, कि कैसा पाप तुमने किया है जो धर्म्मराज के आगे सत्य बतावो।

इतने बीच सभा में बैठे हुए प्रकट उचित कहनिहार ऋषि लोग शास्त्र विचार के बोल उठे कि महाराज! इस पापी ने तो ब्राह्मण का बध किया है, कुम्भीपाक में कि जहां का दुख सहा नहीं जाता, अपने कर्म्म का जैसा कुछ फल है सो बहुत दिन तक भोगेगा।

यह सुनते ही वो यम की आज्ञा पाय किङ्करों ने झट उसे पकड़ लिया वो लाठियों से मारते पीटते घसीटते वहां ले चले और वोही नरक में जहां कोई किसीको क्षण भर भी पीड़ा से बचा नहीं सकता है, डाल दिया वो तुरन्त सहस्रन कीड़े बड़े बड़े मोटे मोटे देह में लिपट गए वो मांस काट काट खाने लगे।

नासिकेत ऋषियों से कहते हैं इसी भांति गोहत्या का भी निर्णय होते मैंने देखा है, और जो अपराधी विश्वासघात, गर्भपात करते, काम के बस हो जिस स्त्री के पास जाने को मना है, उसी से जा भोग करते हैं, मारे लालच के नहीं खाने को, सो हैं खाते, ऐसे जितने अधम लोग है सो तो कड़ाहों में कि जिनमें तेल गरम हो रहा है, डाले वो शूली पर चढाए जाते हैं। इस प्रकार बहुतेरन्ह शीकरों (सिक्कड़ों) से बाँध-बाँध दूत सब यम के निकट पहुंचावते हैं कि जहां तेज में सूर्य्य समान चित्रगुप्त प्राणियों के पुण्य पाप को लिख ले जा समझाते हैं, ऋषि लोग शास्त्र बिचार जैसा जिसको उचित है वैसा नयाव बतावते हैं, ऐसी धर्म्मराज की सभा और वहां का यह वृत्तान्त है और जिस जिस कर्म्म से इन नरकों में पड़ते हैं सो भी सुनो मैं कहता हूं।

जो नर चोरी आदि नाना भांति के कुकर्म्म में आप तो दिन रात लगे हैं, तिसपर भी औरों को देखते हैं, वो एक अक्षर भी जिससे पढ़ते विसे गुरु के बराबर नहीं मानते हैं, सो तब तक महा-नरक को देखते हैं कि जब तक यह संसार बना रहता है, और जो दुष्ट गुरु को वाद कर हराते व डाटते हैं, पिता, माता गुरु से व्यर्थ बैर करते हैं, वे सब विसी नरक में पड़ते हैं कि जहां ब्राह्मण के बध करनेवाले जाते हैं। इसलिये माता पिता गुरु को कदाहीं कोप न करावेंगे कि जिससे ऐसे ऐसे संकट को भोगेंगे। और जो कास पीतल तामा लोहा चुराते हैं, कन्यादान समय में भांजी मारते, मुनि ब्रह्मचारियों की तपस्या में जा बाधा करते हैं, और जो निर्द्दयी क्या घर में क्या बन में, क्या कहीं आग लगा सहस्रन जीव को जला देते हैं, सो सब असिपत्र बन में डाले व लाल लाल अंगारों पर घसीटे जाते हैं, व हाहाकार शब्द किया करते हैं।

और जो बालक, वृद्ध, स्त्री, साधु, सन्त को छलते हैं, नहीं करने को सो करते, और जो मनुष्य अच्छे अच्छे मीठी मीठी वस्तु बना छिप कर अकेला ही आप चट करते हैं, सो विस कूप में पड़ते हैं कि जो विष्ठा वो कीड़ों से भरा हुआ है।

जो नर बहुत दिन तक भोग व प्राण से भी अधिक मान किसू अपराध से पतिब्रता स्त्री को त्याग देते हैं सो सब भी असिपत्र बन नाम नरक में डाले जाते हैं वो नाना भांति की पीड़ा को सहते हैं।

इससे अधिक और भी नरक मैंने देखे कि जहां महाडरावन आग लहर रही है। अपने कर्मों से पापी लोग बार बार जलाए जाते हैं, बहुतेरे शीकरों से बांधे हुए मुँगरों के मार से नीचे गिर विलाप कर बेड़ी सहित उठ भागते हैं, तिस पर निर्द्दयी यम के दूत सब तुरन्त उसे पकड़ लोहे के घनों पर पटकते हैं, कितने एक तो गलों में फांसी लगा, किसी को दोनों पांव ही धर घसीटते वो डांट कर कहते हैं कि हा मूर्खो ! बहुत सबसे बैर बिसाहे हो, क्यों अब रोते हो ? अपना कमाया हुआ दुख भोगो और जो पर सों कुकर्म्म किया है विनको अष्ट धातु की बड़ी प्रतिमा को कि जो अग्नि में लाल की हुई है अँकवार से पकड़ाते हैं वो कहते कि जैसे ही तुमने पराए की भार्य्या से विहार किया है वैसे ही इससे भी हर्षित होके करो; विनके कहने पर जो जो तो नहीं उठते तिनको मारे लाठिन से चूर कर नीचे गिराते हैं।

ऐसे ही गञ्जन होते कोटिन स्त्रियों को भी देखा कि जो दूसरे पुरुष से अपने धर्म्म को

नाशती हैं;, कितने तो पहार वो तार के वृक्षों पर से गिराये जाते हैं, जो पराये का जीव मारने में अपना जनम गँवाते हैं।

जो नर किसी को खाने पीने में बाधा करते हैं सो सब भी बिसी नरक में रहते हैं कि जिसका दारुण दुःख सहा नहीं जाता है। और जो नारी स्वामी को निन्दती वो नित्य कलह करती हैं सो वहां डाली जाती हैं कि जहां बड़े बड़े सीमर के अंगारे ऐसे लहर रहे हैं। पति के मरे पर औरों से मिलती हैं, यम के दूत सब विसकी जीभ को काट लेते वो अष्टधातु की प्रतिमा को पकड़ाते हैं।

और जो पतिव्रता स्त्री की निन्दा करते हैं सो सब नरकों में फिर नाना पीड़ा ऐसे भोगते हैं कि किसी प्रकार से किसी को उससे बचाव होने का नहीं।

इस प्रकार बहुतेरे नरकों का वर्णन कर नासिकेत मुनि फिर लगे ऋषियों से कहने कि यम के पुर में और भी एक अद्भुत स्थान देख आया हूं, जहां लहराती हुई आग का सरूप उंचाई में चार व घेराव में बीस कोस महाडरावन वृक्ष है। लाखों पापी जन उसमें टांगे हुए हाहाकार शब्द को हैं करते, तिस पर अति कठोर निर्द्दयी यमदूत सब ब्रज्र समान शस्त्रों से बारबार मारते पीटते वो कहते हैं कि हा अधर्म्मियो! कदही नहीं तुमने हर्ष से किसी देवता पितर को तृप्त किये, न कोई तीर्थ में फिरे, न किसी अतिथि अभ्यागत को कुछ दिया, वो माता पिता ब्राह्मण गुरु संसार में देवता तुल्य गिने जाते हैं विन को भी तनिक आदर से न पूजा कि जिस चूक का ऐसा फल पाते हो।

इतना कह धर्म्मराज के दूत सब महादुखदायक नरकों में पातकियों को फिराते हैं। तिनमें किसी को देखो तो भैंसे पर कोई गीध कोई सारसों पर, कितने तो बांदरों पर, बहुतेरे श्यारों पर चढे हुए निपट काले महाकुरूप कि जिनका वाघ सिंह कुत्ता बिलाई का ऐसा तो मुंह, वो लाल लाल आंख, खड्ग, त्रिशूल, परसा, बरछी, लाठी, मुशल आदि बड़े शस्त्रों को हाथन में लिए यम की आज्ञा पाय नाना संकट में प्राणियों को डालते हैं। यह तो अपनी आंखों से पापियों की दुर्गति होते मैंने देखी है।

और जहां मन भावते नाना प्रकार के पकवान दही दूध घी मिठाई वो रतन जड़ाव एक से एक अद्भुत भूषण वो भांति भांति के पटम्बर वस्त्रों की कूट सदा लगी रहती है; वो कानन में कुण्डल, गले में मोतिन की माला पहिरे, अति सुन्दर सुन्दर अप्सरा सब बीना आदि बाजा हाथों में लिए नाचती गावती बजाती रहती है, तिस स्थान में वो विनके संग में अच्छे पुण्य के प्रताप से उत्तम उत्तम भोग बिलास करने को वे धर्म्मात्मा लोग जाते हैं वो विमानों पर चढ़े फिरते हैं। और यमराज की दया से बहुत दिन तक महा महा सुख हैं करते कि जो संसार में देवता, ब्राह्मण, गुरु इनको मन लगा भक्ति से पूजते हैं; वो जो भूमि, सोना, गौ, बस्त्र देते हैं, अतिथि अभ्यागत को आसन दे बैठाय अच्छा सुन्दर मधुर बचन बोल, कन्द मूल से भी संतुष्ट करते हैं; और जो लोग ऋतु समय अपनी स्त्री के पास जाते वो नित्य धर्म्म पुण्य करते, ऐसे जितने नर हैं सो सब तो कधी न यम का मुंह देखते हैं।

और जो मनोहर घर बना सोना विधि से ब्राह्मण को देते हैं सो सब तो ऐसे स्थान पावते हैं जहां जहां सोनन्ह के मन्दिर अनेक आश्चर्य्य आश्चर्य्य भोग कि जिनका कुछ बखान न किया

जाता है। और जो मनुष्य भूखे लोग को एक ग्रास भी अन्न देते और सब प्राणियों में दया करते, शरण में आए को पालते हैं, सो सुरपुर में अप्सरों के साथ जा विहार करते हैं। वो उपजे हुए अन्नों से भरा पुरा खेत अपनी श्रद्धा से जो हैं संकल्पते सो तो परम स्थान में विमानों पर कि जो जहां मन होय तहां ले जाता है, चढे फिरते नाना आनन्द किया करते हैं।

चौपाई

मोती मूंगा रतन हैं देते। सो हैं मणिमय गृह में रहते॥
पनही छत्र वो शीतल पानी। हरषि दान करते जो ज्ञानी॥
सो हैं इन्द्रपुरी को जाते। महा भोग जहं वो हैं पाते॥
हाथी ऊंट अन्न के दानी। दया धर्म्म वो शील के खानी॥
स्थान परम को वे हैं जाते। गण गन्धर्व जहां हैं गाते॥
बड़े तीर्थ में जो हैं मरते। सो भवसागर को हैं तरते॥

और नाना भूषण पहिराय वेद की विधि से कुलीन बर को जो कन्या देते हैं, सो तो सब सहित सारी पृथ्वी दान किए का फल पाय देवतों के निकट महासुन्दर स्त्रियों से विलसते हैं कि जिनके रूप से कामदेव भी मोहित होते हैं; वो बिना धर्म्म पुण्य के जिनके दिन हैं वीतते, सो लोहा की भाथी समान सांस तो लेते हैं पर तनिक भी न जीवन का सुख को पाते हैं।

नासिकेत ऋषियों से कहते हैं, कि धर्म्मराज से पालित और जो सुन्दर स्थान मुझको देखने सुनने में आया है सो भी तुमको सुनाता हूं कि जहां यम के निकट साधु दूत सब रहते हैं वो पूर्वद्वार से धर्म्मात्मा लोगों को अमरावती में पहुंचावते हैं। और आश्विन कार्तिक में अन्न, जाड़े में वस्त्र वैसाख जेठ में अच्छा शीतल पानी, बसन्त के समय में फूल फल जो नर हैं देते, सो सब बहुत दिन तक सूर्य्यलोक में बास करते वो नाना सुख को भोगते हैं। जो तो दुर्भिक्ष में अन्न वो सुभिक्ष में सोना हैं देते, सो तब तक स्वर्ग में बसते हैं कि जब तक चन्द्रमा सूर्य्य दोनों विद्यमान हैं। इसलिये चतुर लोग सब प्रकार से दान धर्म्म में चित्त दिए रहते हैं कि जिससे महा आनन्द को पावते हैं। और जल के दानी, विष्णु के भक्त ब्राह्मणों के हैं जो पूजक, सो सब हंस चक्रवाकों से सुशोभित विमानों पर और चित्र विचित्र घोड़े हाथी मोर वो सारसों पर चढ़ यमपुरी के पूर्व द्वार से होते अपने अपने पुण्य के प्रताप से सुरपुर में जाते हैं।

वो धर्म्मात्मा लोगों के लिये यमराज से टिकाई हुई नख से शिख लों नाना रतन जड़ाव आभरण और गजमुक्ता आदि मणि से अलंकृत उन महासुन्दरी देवकन्याओं से भोग विलास करते हैं कि जिनका चन्द्रमा सा बदन, काञ्चन सी देह, तिन में कितनी तो स्फटिक सी स्वच्छ, कोई सिन्दूर का रंग बहुतेरी अति मनोहर स्याम सरूप, सब मिल जुल नाचती गाती बजाती हुई स्वर्गी लोगों को जहां इच्छा आवे तहां सुभग विमानों पर चढ़ाए लिए फिरती हैं।

देखो यह दान पुण्य का प्रभाव कि जिससे नर सब ऐसी उत्तम गति को हैं पहुंचते और सोना दिए से सूर्य्य के लोक, बस्त्र दिए से चन्द्रलोक में जाते हैं। अन्न के दान किए से तो मुक्ति मिलती है इसलिये सदा अन्न दान करना कि जिससे संसार सागर में के बार बार आवागमन के

दुःख से छूटें, वो परम आनन्द को पावें। नासिकेत मुनि ऋषियों से कहते हैं—महा महा अद्भुत अद्भुत नरक कि जिनके श्रवन से अङ्ग सिहर आता है, वो वैसे ही बड़े बड़े बहुतेरे पापियों को देखा और उस पुण्यस्थान का मुझको दर्शन हुआ कि जहां धर्म्मात्मा लोग रहते हैं। वो निपट सुख देनेवाली पुष्पोदका नाम ऐसी नदी बहती है कि जिसमें सुवर्ण की बालू वो दूध सा स्वच्छ अमृत समान स्वाद जल वो शंख पद्म हैं। और अति सुभग फूलों से शोभित तीर तीर में घने से कल्पद्रुम लगे हैं। शीतल सुगन्ध सदा मन्द मन्द समीर डोलता, हंस मोर कोकिल कपोत आदि पक्षी सोहावना शब्द करते, मत्त हो हो मधुकर सब गुञ्जते हैं। और जहां देखो तहां देवकन्या सब गाती। गण, गन्धर्व्व, सिद्ध, चारण नित्य आय आय विहार करते हैं। तिस नदी के तट में एक से एक लाल पीत नील श्वेत हरित आश्चर्य आश्चर्य सुन्दर सुन्दर दीप्तमान रत्नों की ऐसी खानि मैंने देखी कि जिसकी शोभा का कुछ वर्णन न किया जा सकता है।

उस मनोहर स्थान में वे नर जाते वो सुवर्ण की बालू के बीच में खेलते वो युवती युवती स्त्रियों के साथ नाना जल विहार हैं करते कि जो भक्ति भाव से देवता को पूजते वो तीर्थों में नहाते हैं।

और उस नदी के तट में चन्द्र सूर्य समान बहुतेरे मणि वो मोती, मूंगे, हीरों से रचित, सोनन्ह के सहस्रन मन्दिर मैंने देखे कि जहां पुण्यवान लोगों को अति सुख देने को रतन जड़ाव भूषण बस्त्र पहिरे सोरह सोरह वर्ष की अप्सरों को यमराज ने टिकाया है कि जिसका कमल सी सुन्दर बड़ी बड़ी आंख वो चन्द्रमा सा बदन है।

नासिकेत कहते हैं, कि जो देवता गुरु ब्राह्मण को मानते, धर्म्मशास्त्र को विचारते सकल प्राणियों में दया करते वो सबकी भलाई में दिन रात लगे रहते हैं, तिनके विलास के लिये धर्म्मराज की पुरी में पुष्पोदका नाम नदी को भगवान ने बनाया है जो तीनों लोक में प्रसिद्ध है। न तो वहां किसी को कुछ भूख प्यास कदही लगती, न कोई शोक सन्ताप होता है, न भय, न दुःख, न किसी बात की कुछ चिन्ता और नित्य नया नया आनन्द विहार करते हैं। सब कोई विन से मीठी बात बोलते हैं।

जो पापी नित उठ सबसे कलह करते वो पराए को दुःख देते, सो तो परलोक में जा महा महा कष्ट भोगते वो बार बार हैं पछताते! तहां यमराज के दूत कहते हैं कि हा! मूर्खो! तुमने मनुष्य की दुर्लभ देह पाय कदही न हरि की चर्चा की, वो सारे जन्म पाप ही में लगे रहे, कि जिसके करने में क्षण भर का तो सुख, पर कोटिन्ह बरस का नरक बास होता है। अब रोने कलपने से कहो क्या होगा जब समय गया है बीत, और कहा भी है—

दोहा

आगे दिन पाछे गए, कियो न हरि से नेह।
अब पछताए क्या भए, छूट गया जब देह।।

यह तो दूतों का बतकहा है। और जिस जिसके लाने को धर्म्मराज बिनको बरजते हैं सो हम तुमसे कहते हैं—कि जिनके गलों में तुलसी की माला, सुन्दर तिलक, प्रेम से शालिग्राम

को पूजते, सदा राम नाम हैं जपते, पर स्त्री को माता सी हैं समझते, वो एकान्त स्थान में पड़ा पराए धन को देख मिट्टी सा त्यागते, वो सत्य ही बोलते, सबसे नय चलते, धर्म्म पुण्य में चित्त देते, तीर्थों को करते क्रोध लोभ आहार को जीतते, वेद पुराण शास्त्रों को मानते न दुःख से अकुलाते न सम्पत्ति पाय बौराते, ऐसे जितने उत्तम जन सो सब ईश्वर के हैं भक्त, दूर ही से प्रणाम कर छोड़ देना।

इस भांति सदा यमराज अपने दूतों को सिखलाते पढ़ाते रहते हैं। सो भी मैं तुमसे कह चुका।

अब नाप में तीन लाख चौआलिस सहस्र कोस का वह पथ है कि जिससे धर्म्मराज के लोक में लोग हैं जाते, और उस मार्ग में जो जो अद्भुत मुझको देखने में आया है सो सब वर्णन कर सुनाता हूं। पहिले तो विस बाट में कुछ दूर तक जहां देखो तहां महा दुखदायक आग लग रही और कहीं तो अति अन्धकार हो रहा है, और कोई ठांव बड़े-बड़े चोखे चोखे काण्टों से छाए हुए ऐसे पर्व्वत मिलते हैं कि जिनपर चढ़ने से दारुण पीड़ा होती है। कहीं देखो तो लोहों की खूंटी व सूई सब गाड़ी हुई हैं तिस पर ऊँचे सों अति अन्धकार हो रहा है। थोड़ी दूर आगे उसके कितने एक कोस तक बालू है धीपता, वो बहुत स्थान में निपट पाला है परता, कि जिनके हेलने से महा एक आफत आन पहुंचती है, तहां कठिन कठोर क्रूर निर्द्दयी यमदूत सब सीकरों से बांध पापियों को लिये फिराते, वो लोहों की लाठी आदि नाना प्रकार के शस्त्रों से मार मार भुरकुस कर डालते हैं, वो बार बार करुणा करते सब रोते हैं, पर बिना धर्म्म कुछ त्राण नहीं पाते। नासिकेत मुनि ऋषियों से कहते हैं, उन अधर्म्मियों के लिए बना कि जो ब्राह्मण वो पशु पक्षी को बधते, गुरु स्वामी को निन्दते, बालक वृद्ध, स्त्री, अनाथ, पथिक, इनका धन हरते, वो महा पाप कर छिपाए रहते, विष दे ब्राह्मणों को मारते, वो व्यर्थ सगरे दिन हाहा भूत हो फिरे फिरते हैं, उस दारुण पथ में अन्न पानी को तरसते वो नाना गञ्जन भोगते। और भी बहुतेरे पातकियों को मैंने देखा कि जिनको क्रुद्ध हो हो दूत सब बार बार डांहते मारते धमकाते वो कहते हैं कि अवही हुआ क्या जो जो संकट आगे आवेंगे सो देखोगे। मनुष्य का उत्तम जन्म पाय तुमने तृण जल भी न किसी को दिया कि जो अति सुलभ वो सहज में है मिलता। क्या यमलोक के कठिन बात को नहीं सुना था कि जहां पापियों को मरन योग आ लगता है।

कवित्त

नरक बिनासी सुख के रासी हरि चरित्र नहिं गाए।
क्रोध लोभ को नीच संग कर कहो कौन फल पाए॥
त्यजि आचार महा मद माते हृदय च्येत में ल्याए।
आतुर ह्वै नारिन के पीछे मानुष जनम गंवाए॥

और न तो कदही तीर्थ व्रत किए, न कोई ग्रहण समय में गौ भूमि, सोना, रूपा आदि दान कुछ दिया। अब बिना पुण्य धर्म्म के निपट भयावन यह नरक समुद्र को क्योंकर पार होना चाहते हो। सो वैशम्पायन मुनि राजा जनमेजय से कहते हैं—

इतनी कथा जब नासिकेत ने सुनाई तब तो ऋषियों ने पूछा कि महाराज ! अति दुःख-दायक यमलोक के पथ में किस प्रकार से जाना पड़ता है वो कौन (कर्म्म करके) वहां से हैं छूटते, सो अब कृपा कर वर्णन करो कि जिससे हमारे मन का सन्देह जाय, वो मगन हों तुम्हारे जस को जा गावें।

वे बोले संसार सागर में जितने प्राणी हैं सो सब मृत्यु के बश हो स्त्री आदि कुल परिवार और अन्न धन लक्ष्मी इन समेत देह को त्याग प्रेत रूप हो बिना संग साथी के अकेले ही बिस बाट में जाते हैं। तिनमें जो तो पुण्यात्मा लोग हैं सो अपने धर्म्म के बल से महा दारुण मार्ग को सहज में पार हो देवता का रूप पाय धर्म्मराज की पुरी में ऋषियों के साथ उत्तम उत्तम भोग हैं करते।

और जो तो हैं पातकी सोई हैं अटकते वो नाना दुःख को सहते; तिस पन्थ में एक से एक महाभयावन बहुतेरे स्थान मैंने देखे; पर आठ तो निपट डरावन हैं कि जिनमें पहिले बड़े बड़े कांटों के वृक्षों से भरा हुआ चार सौ कोस का एक ऐसा है कि जहां दूर ही से अति हाहाकार शब्द सुनने में आता है, वो महा महा दुःख से पापीजन वहां से हैं निकलते। दूसरा आठ सहस्र कोस का तप्त बालुका कि बिना पनहीं दान के विसको पार होना कोई चाहे तो नहीं हो सकता है। तीस चालीस सहस्र कोस तक जहां देखो तहां निपट चोखे चोखे आरे सब उतान गड़े हुए हैं। तिस स्थान में शय्या के दानी सुख से हैं जाते वो पापियों को मरण योग आन लगता है।

बिसमें बहुत दूर तक चारों ओर बड़ी आग लग रही है। जो तो बावली तलाव कूप हैं खानते वो देवतों के मन्दिर बनाते सोई विसको सहज में तर जाते हैं।

पांचवां एक सहस्र दस कोस का महाअन्धकार बन है कि जिसको कालरात्रि लोग कहते हैं, दीपदानियों को पार होता है सहज में।

छठवां वैसे ही कई एक कोसों कोस तक अति अन्धकार महानिशा नाम स्थान है कि जहां बड़े बड़े बाघ सिंह, हुण्डार, कुत्ते, बीछू, सांप वो कंकड़ पाथर से भरे हैं, तिस पर काली घटा सदा छाई ही रहती है; तिस स्थान को वे पुण्यात्मा लोग क्षण में पार हो जाते हैं कि जो बिधि से प्रेतों को अन्न व बिप्रों को हाथी घोड़े गौ, दान देते वो तीर्थों में देवता पितर को संतुष्ट करते हैं।

सातवां निपट गंभीर जल से भरा हुआ बत्तीस सहस्र कोश का कि जिसको भूमि के दानी सब सुख से तर जाते हैं।

आठवां बीस सहस्र कोश तक महा भयावन रौद्र हो रहा है कि जहाँ नाना प्रकार के दान से धर्म्मिष्ठ लोग सहज में निकल जाते वो पापी सब हैं अटकते।

नासिकेत ऋषियों से कहते हैं—इस इस भांति से प्राणी सब मर मर के यहां से तीन लाख चौआलिस सहस्र के अन्त में जब जा पहुंचते हैं तब यमराज के द्वार पर पीप लोहू से भरी, वो सांप कीड़ों से आकुल पापी जन को महाभयावनी चार सौ कोश की वैतरणी नाम नदी आ मिलती है। जो नर काली गौ व अन्न हैं देते, गंगा सागर संगम आदि तीर्थों में नहाते सज्जनों से संग करते, सदा दान धर्म्म में लगे रहते हैं सो तो क्षण में गौ की पूंछ पकड़ इसको पार हो निर्मल शरीर पाय सुन्दर रथ पर चढ़ परम पद को पहुंचते हैं।

इस भांति से पुण्यात्मा लोग सुख से वो पापी सब नाना गंजन से जाते हैं। तैसे ही यम के दूत कि जो प्राणी जिस जोग हैं तिसको बिसी प्रकार से धर्मराज के लोक में ले जाते हैं। और जो देखा सुना है सो मैं अब कहता हूं।

सोना, रुपया, औ पटम्बर बस्त्र, दूध, घी, अन्न, जल जो इहां हैं देते सो सब वहां पावते हैं। इसलिये सदा धर्म्म करना कि जिससे संसार में जस व परलोक में सुख होय। और विमानों पर चढ़ धर्म्मिष्ठ लोग वह सुन्दर पथ से यमपथ से यमपुर में सिधारते हैं कि जहां अति निर्मल जल से भरे हुए अनेक बावली, तलाब, वो नाना भांति के फूले फले वृक्ष, खाने पीने को एक से एक बस्तु मिलती हैं। नासिकेत ऋषियों से कहते हैं, और जो अद्भुत मैंने देखा सो सुनो।

यम की सभा में कि जहां मुनियों के बीच में धर्म्मराज तारन में चन्द्रमा समान शोभते हैं, हमारे रहते ही महातेजस्वी नारद मुनि आन पहुंचे। दूर से देखते ही वे उठ खड़े भए वो प्रणाम कर सुन्दर आसन दे बैठाय हाथ पांव धोला कुशलक्षेम पूछ कहने लगे "महाराज! आज हम निपट कृतार्थ हुए। और आप के आगमन से जाना कि ईश्वर मुझसे बहुत संतुष्ट हैं"।

यम की इतनी बातें सुनि क्षण एक चुप होकर बोले "धर्म्म अधर्म्म विचारने को आप भगवान ने तुमको यहां रक्खा है। वो तीनों लोक में जितने दैत्य राक्षस मनुष्य देवता हैं सो सब तुम्हारे बश में हैं। देखने को मैं आया हूं कि किस प्रकार से प्राणियों के पुण्य पाप को विचारते हो सो हमको सुनावो।

नासिकेत कहते हैं कि इतने ही में भांति भांति के बाजन समेत, अति मनोहर सहस्रन बिमान, कि जिनके साथ उत्तम उत्तम बस्त्र भूषण पहिरे, वो हाथन में छत्र चामर बीणा बेनु लिये, नाना प्रकार के गीत गाती हुई एक से एक सुन्दरी अनेक अप्सरों और सबों के आगे ऐरावत पर चढ़े इन्द्र वहां आन पहुंचे।

दूर ही से हाथी घोड़े रथ का शव्द बड़ा सुनि वो उनके दर्शन से जितने पातकी हैं सो सब नरक से छूट स्वर्ग में चले जाते हैं।

यह समाचार पाय ऋषियों के सहित झट यमराज चम्पत हो गए। दूत सब भी मारे डर से जहां तहां उठ भागे। जब विमान आगे बढ़ गया तब ऋषियों को साथ लिये यम फिर अपनी सभा में जा बैठे।

बहुत चकित हो नारद मुनि पूछने कि पराक्रम में तो देखते हैं विष्णु समान हो और बड़े बड़े दैत्य दानव यक्ष राक्षस आगे खड़े ही हैं। निपट आश्चर्य मुझको लाग कि कौन सा भय हुआ कि जिससे इतना शीघ्र तुम भागे।"

नारद का बचन सुनि यम ने उत्तर दिया, "महाराज! है तो यह निपट गोप्य पर मैं तुमसे कहूंगा"।

नारद मुनि वो धर्म्मराज की ऐसी बात चीत होती ही है कि दूत सब सभा में आन पहुंचे के हाथ जोर यम से कहने लगे "धर्म्मावतार! अब कौन काम करने को हमें आज्ञा होती है सो कहिए"।

इतना बचन सुनि उनने उनसे कहा कि "दया धर्म्म त्याग जो अधम जिस जिस पाप में सदा गड़े रहते हैं तिनको वैसे ही दु:खदे सङ्कट में जा डालो"।

प्रभु की आज्ञा पाय महाक्रुद्ध हो दूत सब खड्ग बरछा, मुगरे लाठी आदि नाना शस्त्रों से जो पातकी जिस योग थे तिनको वैसे ही मारने पीटने लगे, वो घसीट घसीट अति दु:खदायक बाघ सिंह हुंडार, कुत्ते कि जिनके निपट डरावन दांत हैं, वो बीछू कीडों से जहां देखो तहां भरी हुई बैतरणी में लगे डालने कि जहां पीप लोहू के महा भयावन भौंरे घूम रहे हैं।

इस प्रकार जो नर गौ, ब्राह्मण, माता, गुरु का बध वो विश्वासघात करैं, वो स्वामी मित्र से विरोध करते, जात पांत से निकल अच्छा वेष बना झूठ ही ज्ञान भाषते फिरते वो पतिव्रता स्त्री को त्यागते रुक्ष हो सबसे बोलते हैं, सो नर बहुत दिन तक बैतरणी में कि जहां क्षण भर भी कोई किसी की रक्षा करने नहीं सकता डाले जाते हैं।

नासिकेत कहते हैं कि ऐसी आज्ञा कर यमराज जब सुचित भए तब नारद मुनि ने फिर उनसे पूछा कि किस कारण से तुम इहां से भाग गए सो मुझसे कहो।

धर्म्मराज बोले "आगे त्रेता युग में योग तप में मगन, सदा अश्वमेध यज्ञ करने वाले क्रोध-लोभ इन्द्रियों को जीते हुए, फुलवारी को माली सा प्रजा के पालनिहार ऐसा प्रतापी राजा जनक था कि जिसको आपसे आप अपना गुण औषधी सब बताती थीं; उसके राज्य में अमृत समान स्वाद फल वृक्ष फलते, बहुत दूध गौ देती, ढेर दिन तक लोग जीते थे, वो कदही किसी को कुछ रोग ब्याधि चिन्ता नहीं होती, तिसकी महा पतिव्रता व तपस्विनी सब गुण भरी सत्यवती नाम स्त्री कि जिसको इन्द्र आदि देवता सब आगे से ल्याने को आए थे। अप्सरों के साथ विमान पर चढ़ अमरावती को गई है, उसी को देख कर हम इहां से भागे, क्योंकि जो इन्द्रियों को जीतते हैं, वो गुरु गोविन्द की भक्ति करते, अतिथि अभ्यागत को पूजते, तिनको दण्ड देने के हम बली नहीं। और भी उनके तेज से डरते हैं। यही हमारे भागने का कारण है।

वैशम्पायन मुनि राजा जनमेजय से कहते हैं कि चित्रगुप्त सहित यमलोक का यह समाचार नासिकेत जब कह चुके तब ऋषि लोग सुनके बहुत चकित भए, वो बार बार प्रणाम स्तुति कर उनसे विदा हो अपने अपने आश्रम पर जा परलोक में स्थान पाने को और भी तप से अधिक जप पूजा ध्यान में लगे।

इति श्री नासिकेतोपाख्यानम् समाप्तम्।

रामचरित

अथवा

अध्यात्मरामायण

श्रीगणेशायनमः सिंधु सुता मुख चन्द्र ० चकोर (,) जा लग सिद्धि रहें कर जोर (।) विविध ० रूप होए विघन विदारे (,) प्रतिपालक सोहेव ० हमारे (।) १ जगमग जोति जासु तन ल से (,) ० संत जनन के मानस वसे (।) आनंद रूप गजा (-) ० नन वडे (,) भक्तन काज रहत जो खडे (।) २ नृ (-) ० पति वीर जव ते तुं भए (,) होत सिंगार जगत ० कौ नये (।) फूल उठी वसुधा हरषानी (,) धन धा (-) ० न्यन ते अति अकुलानी (।) ३ घर-घर मंगल (-) ० चार घनेरे (,) रंग ओ राग करहि बहुतेरे (।) सुचि (-) ० त होय नर करें कलो लें (,) मणिभूषण पहरे अ (-) ० नमोलें (।) ४ रण अंगन पगु देत तुम्हारे (,) इंद्र (-) ० हु हो पर त्राहि पुकारे (।) थर थर कांप उठें दिग ० पाल (,) निज शस्त्रन धरती मह डाल (।) ५ ०

अव इस पोथी के भाषा करने का कारण यि (-) ० ह[1] है कि मैं जो सदलमिश्र पंडित हूं (,) मुज को ० पाठशाला में (,) जो साहव लोगों के लिये कल ० कत्ता में हूई (,) संस्कृत की पोथियां भाषा करने ० को महा उदार सकल गुण निधान मिस्तर ० जान गिल्क्रिस्त साहव ने ठहराया औ एक ० दिन आज्ञा की कि आध्यात्म रामायण को ० ऐसी वोली में करो जीसमे फारसी आरबी ० न आवे (।) तव मै इसको खडी वोली में करने ल (-) ० गा औ सम्वत् १८६२ मे नौ आव[2] गवरन (-) ० न[3] वल्जली लार्ड मारंटंग साहववहादुर ० के राज्य मे इस पोथी को समाप्त किया ओ ० नाम इसका राम चरित्र रष्षा[4] पर जहां क (-) ० हीं[5] कठिन वेदान्त था मैंने देषा कि इसकी ० भाषा सव कोई समझ न शकेगा इस कारण ० वुसे छोड़ दिया अव गुण वानों से यिह भरो (-) सा[6] है कि इस पोथी के वीच जिस जगह ऊंच ० नीच देखें तो कृपा कर वुस दोष को छिपावें ० ओ अशुद्ध को शोधें अथ कथारम्भः 8 किसी समय वदरिकाश्रम मे शौनक आदि ० ऋषियों ने सूत से पूछा कृपा निधान अव ० कुछ विशेष हरि का यश आप हमे सुनाइ (-) ० ए तव वे लगे कहने कि एक वेर नारद योगी ० पर उपकार के लिये सिगरे लोक फिरते फी (-) ० रते सत्य लोक मे जा पहुचे तो वहां देषा कि ० मूरति धारण किये चारों दिश वेद खड़े हैं ० अरु प्रातः काल के सूर्य का ऐसा वर्ण ओ ० भक्तन को मन भावत फलदायक सकल ० शास्त्र का सार जान निहार जगत का नाथ ब्र (-) ० ह्मा सरस्वती को साथ ले वीच सभा मे वैठा है ० ओ मारकण्डे यादि मनि वारवार उसकी वडा (-) ० ई कर रहे हैं (।) तद दूर से देषते ही नारद ने दण्ड (-) ० वत किया ओ भक्ति से स्तुति कर हाथ जोड ० विस के आगे जा षडे भये कि इतने मे अति ० हर्षित हो मुस्कुरा के ब्रह्मा बोल उठा ए योगी ० तू क्या पूछा चाहता है मुह षोल के कह (,) प्रस (-) ० न्न होए सव मै तुझे वताऊंगा। इस भांति वि (-) ० धाता की आज्ञा पाय उन्ने कहा महाराज ० भलावुरा सव मै तुम से सुन चूका पर एक ही ० रह गया है सो आप दआ[7] कर समझाइऐ ० कि घोर कलियुग के आते ही नेम धर्म आचा (-) ० रसत्य वचन तज पर द्रव्य पर स्त्री हरने को ओ ० एक कौ एक झूठ कलंक लगाने को दिन रा (-) ० त लोग उपस्थित होंगे ओ महा नास्तिक ० कि जिन की पशुन

---

१. यह। २. नवाब। ३. र; गवरनर। ४. रख्खा। ५. कहीं। ६. भरोसा। ७. दया।

की सी वुद्धि (,) माता पिता के ० द्रोही (,) ० काम के दास (,) स्त्रीन[1] को देवता सम मानें (-) गें (,) तिनमें ब्राह्मण लोग तो ऐसे लोभी होंगे ० कि धन अर्ज्जन के लिये विद्या पढ़ वेद विक्र (-) य कर दिन काटेंगे अनु[2] अपनी जाति का क (-) ० र्म छोड वहुधा ओरों को ठगते फीरेंगे (।) क्षत्री ० वैश्य भी निज धर्म त्याग सदा कुमारग चलें (-) ० गे अरु जितने शूद्र हैं सो ब्राह्मण का आचा (-) ० र करेंगे (।) नारीन के चरित्र सुनिये तो शास ० शसुर की वैरी हो स्वामी को दुख देगीं (।) इन्ह ० नष्ट वुद्धियों को कि स प्रकार परलोक होगा ० इसी चिन्ता से मेरा जी बहुत अकुला रहा है ० तिस्से दीन दयाल ऐसा कोई थोड़ा ही सा उ (-) ० पाय वताइये कि जिस से ये परमगति पावें ० क्यूं कि आप सब ही कुछ जानते हो (।) ऋषि ० के इतने वचन सुन व्रह्मा बोले नारद अछी (-) ० वात तुमने पूछी सावधान हो सुनो (।) मैं कहता ० हूं कि भक्त वत्सल महादेव से पारवती ने एक ० वेर यों विनती की जो नाथ दयाकर रामचरित्र ० मुज को सुनाओ (।) तद नेह वश होए पुराण का ० कहा हूआ अध्यात्म रामायण आप शिव ने दे (-) ० वी को कह सुनाया त[3] से विसको पाय अति ० प्रेम से पूज नित (-) तन देष अव तलक भी भवानी ० आनन्द मे मगन रहती हैं (।) सोई जव प्राणीन ० के भाग से संसार मे प्रसिद्ध होगा तद विसके ० पढ़ने ही से लोग सद्गति को पहुंचेगें (।) तभी त (-) ० क पाप गरजा करेगा (,) निडर हो क्रूर यम के दू (-) त लोक में जायेंगे (,) ईश्वर ठहरावने के लिये आ (-) ० पस मे शास्त्रन को महा झगरा झंझट रहे (-) ० गा वरन ज्ञानी लोगों को भी रामरूप का बोध ० न होगा (।) सुनने सुनाये का विसका जो गुण ० है सो सव कहने का मुज मे सामर्थ्य नहीं पर ० तो भी शिव का कहा हूआ कुछ एक महातम व (-) ० रनन करता हूं कि रामायन का आधा श्लोक ० कै[4] एक जो कोई भक्ति से पढ़ता है सो तत क्ष (-) ० ण सव पाप से छूटता है ओ यथा शक्ति नि (-) त जो चित दे उसका पाठ करे सो संसार मे जी (-) ० वन मुक्त कहावे अरु जो मनुष्य आलस छो (-) ० ड अध्यात्म रामायन को पूजे (,) निकट जा नम (-) ० स्कार करे राम के भक्तन को लिख दे (,) एकादशी ० अरु रामनवमी के दिन उन के घर जा सुने सु (-) ० नावे (,) तिसे दिन दिन अश्वमेध करने का (,) स (-) ० कल देवता पूजने का (,) सब वेद शास्त्र पढ़ने पढ़ा (-) ० वने का (,) अक्षर अक्षर उत्तम तीरथों में सरव ग्रा (-) ० स सूर्य्य ग्रहण समय व्यास आदि श्रेष्ठ व्रा (-) ० ह्मणों कों अपने तुल्य धन दान करने का ० सहस[5] में फल मिलता है (।) इस प्रकार ओर भी ० रामायण का महत्व सदा शिव ने कहा है कि ० दिन रात जो उस को गावता है विसकी आज्ञा ० इन्द्रादि देवता सब चाहते हैं अरु विसे पढ़के जो (-) जो पुण्य काज किया जाता है सो (-) सो कोटि गुण ० होता है (,) तिसमे राम हृदय स्तोत्र जो जीव[6] लगा (-) य पढ़े सो ब्राह्मण वध भी किया होऐ तो भी ती (-) ० न दिन मे पवित्र होवे अरु जो नर हनुमान ० की प्रतिमा के निकट मौन साध मन मे नित ० तीन वेर पाठ करता है उसका सकल मनो (-) ० रथ पूजता है ओ जो पढ़ता हूआ तुलशी पी (-) ० पल की प्रदक्षिणा करता है वह ब्रह्म हत्या से ०

१. स्त्रियों को। २. अरु। ३. तब। ४. अथवा। ५. सहस्र। ६. जी।

छूटता है अरु राम गीता का महातम सब तो ० शंकर जानते है ओ आधा पारवती विस(-) ० का आधा मैं जानता हूं (,) सो भी थोडा सा मूज ० से सुन लो कि जिस्से तुरन्त ही लोगों के चित्त ० शुद्ध हो जांऐ (।) ऐसे कह व्रह्मा लगे वषानने कि ० हे नारद सिगरे मैं षोजता फीरता हूं पर जै(-) ० सा राम गीता पाप नाशनी है वैसा दूसरे कि(-) ० सी को मैं नहीं देखता इस कारण वेद समुद्र से ० मथ निकाल हर्षित हो लक्ष्मण को रामचंद्र ० की दी हूई राम गीता जो सज्जन मन दे सुनता(-) ० सुनवाता है सो कृता हो विराजता है जैसा का(-) ० र्त्तवीर्य को वधने की इछा कर धनुषविद्या ० शिषने के लिये महेश के निकट वस[1] उस रा(-) ० म गीता को पढ़ सुन कि जो पारवती पाठ क(-) ० रती है परशुराम ईश्वर स्वरूप हो गया तिस ० से व्रह्म हत्यादिक पाप सें जो नर निकाश[2] चा ० हते हैं वे एक मास उस गीता का पाठ कर आ (-) ० नन्द हो गाजें अरु निषिद्ध प्रतिग्रह भोजन ० कुवाच्य इनसें जो पातक होता है विसको ० राम गीता ही कीर्त्तने सें नाशती है ओ शा (-) ० लग्राम तुलशी पीपल अरु यती लोगों के ० निकट जो मनुष्य विसे पढ़ते हैं तिन्ह को व (-) ० ह फल मीलता है कि जिसका कुछ वषान ही[3] ० कि[4] जाता ओ ब्राह्मण जेमावते[5] भक्ति सें राम गीता का जो उच्चारण करते हैं तिन्ह के पितर ० विष्णु धाम को जाते हैं (,) तिन मे विशेष एकाद (-) ० शी व्रत रह (,) द्वादशी के दिन नेम आचार से पी (-) ० पर तले जा गीता जो पाठ करते हैं वे राम रूप हो ० जाते हैं अरु देवता सव उन्हें पूजते हैं ओ य(-) ० हां तक महातम है कि विना ज्ञान ध्यान तीर (-) ० थ स्नान राम गीता पढ़ने सें अनन्त फल हो ता है इस प्रकार बहुत कहां तक महातम वर ० नन करूं(।) तंत्र मंत्र श्रुति स्मृति पुराण ये जि ० तने हैं सो अध्यात्म रामायन की सोरहवीं क[6] (-) ० ला को भी नहीं पा शक्ते हैं (।) शौनक आदि ० ऋषि से सूत कहता है कि विसकी महिमा ० जो प्रजापति ने नारद को सुनाया जो मनु ० ष्य सुने सुनावे सो वैकुण्ठ में जा देवतान सें ० पूज्य होवे ० इति श्री राम चरित्रे वाल काण्डे ० प्रथमोध्याय: १ फिर व्रह्मा वोले विस आवि (-) ० नाशी चेतन रूप सीता(-)पति को वार वार मै प्र (-) ० णाम करता हूं कि जो पृथ्वी का भार उतारने के अर्थ देवतान की विनती से निर्मल रविकु (-) ० ल मे जन्म ले राक्षसन को वध[7] (,) धरती को सुख ० दे सकल पाप हरनहारी अटल कीरत वढ़ा (-) ० य फिर पानी मे पानी सा व्रह्म माह जा मिल ग(-) ० ये अरु जो संसार की उत्पत्ति स्थिति प्रलय ० के हेतु हैं औ देषने में सच माया मोह मे पडे हैं ० पर विचारिये तो विन सें दूर हैं अरु जो आ (-) ० नन्द मूर्ति जोति स्वरूप है (।) व्रह्म ज्ञान भरी हू (-) ० ई इस पोथी को जो मनुष्य एक चित्त हो सु (-) ० ने सुनावे वह सब पाप से छूट विसी हरि में मिल जाता है (।) इस्से भवबन्धन ते मुक्ति ओ ० विन कीये कोटिन गौ दान का फल जो नरचा (-) ० हते हैं तिन्हें उचित है कि नित नित अध्यात्म ० रामायन को पाठ करें ओ सुने क्यूंकि शिव प(-) ० हाड सें निकल राम समुद्र में मील रामायन रू(-) ० प यह गंगा तीनो लोक पवित्र करती है ओ म(-) ० न वांछित फल देती (।) इस भांति महिमा वरन(-) ० न कर

१. रहकर। २. छुटकारा। ३. 'नहीं' होना चाहिए। ४. किया। ५. ब्राह्मण-भोजन कराते हुए। ६. सोरहवीं=सोलहवीं। ७. का वध करके।

पुनि व्रह्मा एक ओर सें महादेव पार्वती ० का संवाद नारद जी से कहने लगे (—) इस रीति से ० कि एक वेर कैलाश के उपर जौ सैंकरन सू(-) ० र्य की ज्योति सा उद्योत है (,) अछे सोहावने सु(-) ० वर्ण के मन्दिर मे रतन की चौकी पर ध्यान लगा (-) ० य बैठे हूऐ सदाशिव सें (,) जो सकल पापहरन हा (-) ० रे ओ जिन्हे सिद्ध लोग से रहे हैं (,) वांयी जाघ पै ० बैठ भक्ति से शिर झुकाय देवी ने आनन्द ० कन्द यह वचन कहा (—) हे परमेश्वर अन्तर या(-) ० मी दया कर राम का वृत्तान्त मुजे सुनाइऐ (,) ० मै इसलिये आपसे पूछती हूं कि उनका चरि(-) ० त्र अरु तुम दोनों सनातन हौ (।) जो के[1] यह भेद दू(-) ० सरे किसी को वतावने योग्य नही पर महानुभा(-) ० व लोग अपने भक्तन से कोई वात नहि छि(-) ० पाते तिस से आप मेरे स्वामी हैं ओ मै तुम्हा(-) ० री सेवक हूं इस्से मुझे समझाय के कहिये (।) यों ० तो आपके कहे हूऐ वैराग्य सहित ज्ञान विज्ञा(-) ० न भवित स्त्री हो के मै भी बहुतेरे जानती हूं प(-) ० र जिस से तुरत ही संसार सागर तरिये सो मैं सुना चाहती हूं अरु सच पूछिये तो भव समु ० द्र पार होने के लिये जिस विन[2] दूसरा कोई उ (-) ० पाय है नहि सो दृढ़ भक्ति तो तुम्हारी सी मुझ ० को भी रामचन्द्र मे प्रसिद्ध है पै मेरे जी मे एक ० शंका आ लगी है विसे निर्मल कथा कह आप मिटाइऐ (।) सो यह है कि कितने लो(-) ० ग तो कहते हैं जो श्री रघुनाथ जी सब के आ ० दि परंव्रह्म अरु सकल माया से अलग हैं ० इसी लिये सिद्ध जन मन लगाय दिन रात वि(-) ० न का भजन करते है कि जिस के प्रताप से परम० पद को जाते हैं ओ वहुतेरे यों वक्ते[3] हैं कि यद्य(-) ० पि व्रह्म हैं पर निज अज्ञान से अन्धे हो वे भी आपसे अपने को नही पहचान शके क्यूंकि ० ओरों के समझाने से अपने को चेता[4] ओ ० जों जानते तो कहो व्रह्म कहा कर सीता के लि(-) ० ये वीच वन मे मनुष्य से क्यूं रोते कलपते फि(-) ० रे तिस्से विन ज्ञान की सेवा किये कोई नही ग (-) ० ति मुक्ति पाता (।) सव जीव जन्तु के समान एक ० वह भी कोई प्राणी है इस का उत्तर आप ने ० क्या ठहराया है सो शीघ्र कहिए जो मेरे मन ० का सन्देह जाये (।) उमा की इतनी वातें सुन अ(-) ० ति हर्षित हो महादेव बोले (—) हे पारवती धन्य हो (,) वडी भक्त हो कि जों राम का चरित्र जाना ० चाहती हो तिस्से यह भेद जो आगे किसी ने मु(-) ० ज से नही पूछा तुम्हारी भक्ति वश हो राम को ० प्रणाम कर अब मै कहता हूं कि श्री रघुनाथ स(-) ० दा माया से निर्लेग है ओ सव के आदि आनं(-) ० द कन्द एक पूरण व्रह्म हैं (,) निज माया से चर अ(-) ० चर रूप सारा यह संसार रच वाहर भीतर आ(-) ० काश से सव मे व्याप रहे हैं अरु घट घट वे ही वो(-) ० लते हैं पै गुप्त हो जगत को माया से भरमा रहे ० हैं (।) जो मूढ यह भेद नही जानते वे ही अन्धे हैं ० क्यूंकि अपनी सी अज्ञानता माया हीन चेत(-) ० न रूप परमात्मा मे ठहराते हैं (।) इसी अपराध ० से लडके वालों के मोह से अनेक काज मे ल(-) ० पिटाय संसार मे फंसते हैं ओ निज हृदय ० स्थित सीता पति को ऐसें भूल जाते हैं कि जै ० (-) से अपने गले का सोना कोई भूल जावे (।) यों क(-) ० ह फिर महेश कहने लगे (—) हे देवी जैसें जोतिस रूप सूर्य मे अंधेरा नही वैसे ही स्फटिक से ० निर्मल ज्ञान रूप परमात्मा रघुनायक मे अ(-) ० ज्ञानता नही है पै

१. यद्यपि। २. जिसके विना। ३. बकते। ४. ज्ञान पाये।

जैसें घूमनिहारों के लेखे[1] ० घर द्वार भी घूमता है वैसें देह इन्द्रिय सृजने ० वाले ईश्वर को माया वश होए अपने समा(-) ० न लोग गणते हैं तिस्से सदा प्रकाश रूप सू(-) ० र्य को जैसा न तो कभी दिन होता न रात तैसे ० ही आनन्द विज्ञान सरूप परमेश्वर जो रा (-) ० मचन्द्र हैं तिनमे माया मोह का कुछ लेश भी ० नहीं है (।) व्रह्मा कहता है नारद मुनि से कि इस ० भांति सम झाकर जव देषा कि अव भी पार(-) ० वती का सन्देह गया नही तव सदा शिव फि(-) ० र वोले (—) हे भवानी इस प्रसंग पर सीता राम ० हनुमान इन्ह तीनो का संवाद जो अति दु(-) ० र्लभ है ओ संसार सागर पार उतारन हा(-) ० रा—है सुनौ मैं कहता हूं कि अगले रामा ० यन मे कथा है कि देवताओं के कंटक राव(-) ० ण को अरु पुत्र वाहन सहित विसकी सेना ० को रण मे मार सीता को ले सुग्रीव लक्ष्मण ० के साथ हो हनुमान आदि वीरों को आगे क(-) ० र अवधपुरी मे आय वसिष्ठादिक वडे वडे ० ऋषिन से राज्य का तिलक पाय सिंहासन प(-) ० र बैठ रामचन्द्र ने अपने निकट एक वेर देषा ० कि भारी भारी सव काज कर हनुमान जी हा(-) ० थ जोडें षडे हैं पै ज्ञान विन[2] और कुछ नही ० मुज से चाहते (।) तव सीता से यह वचन कहा ० कि हनुमान को तुम मेरा सव भेद वता दो ० क्यूंकि नित उठ हम दोनों की वडी भक्ति क(-) ० रते हैं इसलिये ज्ञान के योग्य हैं (।) प्रभु की इ (-) ० तनी आज्ञा पाय अति हर्षित हो सीता ल(-) ० गी कहने (—) हे पवन कुमार श्री रामचन्द्र को व (-) ० ह पूरण व्रह्म समझो कि जिसको कुछ रूप (-) ० रेष नही औ जो आदि अखण्ड एक अवि (-) ० नाशी आनन्द कन्द सकल घट वासी हैं औ ० सदा जागता रूप अरु जो शान्त निर्मल जो ० ति से आप से आप प्रकाश हो रहे हैं अरु जि ० न मे संसार की वासना नहीं (,) सदा चेतन सरू (-) ० प हैं ओ मुझे जगत की उत्पत्ति पालन प्रल(-) ० य करन हारी आदि माया जानो (।) विस व्रह्म ० के संग होने ही से सारा जगत मैं उपजाती ० हूं ओ चर अचर नाना रूप हो संसार का सक(-) ० ल काज मैं ही करती हूं तिस्से अयोध्या नग(-) ० र माह निर्मल रघुकुल मे जनम(,) विश्वामि(-) ० त्र का सहाय हो विस के यज्ञ की रक्षा (,) श्राप ० से अहल्या को मुक्त (,) शिव धनुष का भंग(,) मुजे व्याह परशुराम के अहंकार का विना(-) ० श (,) वारह वर्ष अवध मे वस तिस पीछे दण्ड ० कारण्य मे जा विराध का वध(,) माया रूपी मा (-) ० रीच नाम राक्षस का क्षय (,) छाया सीता का नि(-) ० र्माण(,) जटायु को मुक्त(,) कवन्धा सुर का विना(-) ० श (।) शवरी से पूजाय सुग्रीव से मिल वाली का ० वध(,) मेरा षोज(,) समुद्र मे सेतु वंध(,) लंका पुरी ० को घेर रण मे पुत्र सहित रावण का क्षय(,) वि(-) ० भीषण को राज्य दान (,) मुझे ले पुष्पक नाम ० विमान पर चढ अवधपुर मे आगमन ति(-) ० स पीछे राज्य का तिलक(—) ये जितने काज हैं सो ० सव मैने ही किये हैं (।) अज्ञानी लोग झुठ मुठ राम को लगाते हैं क्यूंकि ये तो अचल आ(-) ० नन्द मूरति निराकार व्रह्म है कि जो न तो कु(-) ० छ चाहते न तजते न कोई काज करते हैं ० ओ न किसी के वाप हैं न वेटा(,) माया से अंधे ० हूए लोगन को मनुष्य से लगते हैं ० इति ० श्री रामचरित्रे वाल काण्डे द्वितीयोध्याय: (।) ० इस भांति वुझा समझा

१. घूमनेवालों के लिए। २. के अतिरिक्त।

जब सीता चुप भयी तव माया ही की करतूत वताने के ० लिये हनुमान से आप[1] रामचन्द्र सव व्यव(-) ० रा[2] कहने लगे कि जैसे तीन आकाश दिषा(-) ० ते हैं(—) एक तो वडा आकाश(,) दूसरा घटादिक ० मे (,) तीसरा जल के भीतर परछाहीं रूप(,) वैसे ही ० माया वश पडे हूए मनुष्य को चेतन व्रह्म ० भी तीन प्रकार जनाता है(—) एक तो निर्गुण जो ० सव मे व्याप रहा है(,) दूसरा जीव(-)सरूप(,) तीस(-) ० रा छाया सरूप जो दर्पनादिक मे देष परता है(।) तिन मे जैसे घटादिक मे का आकाश ० ओ छाया रूप आकाश ये दोनो मिथ्या है ० वैसे ही जीव वो दर्पनादिक मे की छाया ० ये भी झूठ है(,) एक व्रह्म सच है(।) ऐसे विचार स(-) ० कल संसार एक ब्रह्म ही मय जों जाना जा(-) ० ये तव माया का विनाश होऐ (।) यह भेद पाय ० मेरे भक्तजन मुजी से प्रीति करें नही तो ० मेरी भक्ति विना शास्त्र देषते देषते सैंक(-) ० रों वर्ष वीते जांये पर ज्ञान मोक्ष कधी[3] हो ० ने का नही वरन और भी दिन दिन मोह् वढ ० ता है (।) यह परम गुप्त ज्ञान जो आप मैंने तुम ० सें कहा है(,) हे हनुमान देषियो (,) मेरी भक्ति से ० विमुख हूए लोगन को मत वताइयो ओ ० किसी शठों को जिन दीजियो(।) पारवती से ० महादेव कहते हैं कि हे देवी यही राम हृदय है(,) ० अति गोपनीय इसे जानना(,) यिह वडा प(-) ० वित्र अरु सकल पाप का विनाशन हारा ० है ओ सव वेदांत का सार है(।)जो इस को भा(-) ० व भगति से पढ़ता है सो निश्चय मुक्त हो ० जाता है ओ अनेक जनम के अर्ज्जे हूए व्रह्म हत्यादिक पातक से ततक्षण छुटता ० है (।) ऐसे कह फिर शिव बोले कि जाति ही (-) ० न[4] चोर सुरायी[5] पर द्रव्य पर स्त्री हरनहार ० ओ माता पिता व्राह्मण इन का वध करने ० वाला और योगीन को कलंक लगावन हा(-) ० र कैसा ही कोई पापी होवे पर मन लगाय प्रे(-) ० म से पूज जो नर राम हृदय पाठ करे सो विस ० पद को जा देवताओं सें पूज्य होए कि जहां ० योगियों का भी पहुंच नहीं ० (।) इति श्री राम ० चरित्रे वाल काण्डे तृतीयोध्यायः ३ (।) शि(-)० व की इतनी वातें सुन अति आनन्द मेग (-) ० न[6] हो पारवती वोलीं (—) नाथ आप के अनु ग्र(-) ० ह सें मैं कृतार्थ भयी अरु सव मेरे सन्देह अ(-) ० व गये पर तुम्हारे मुख से अमृत समान ० राम का चरित्र सुन के मेरा जी तृप्त नही हू(-) ० आ तिस्से श्री रघुनाथ की कथा विस्तार क(-) ० र अव सुना चाहती हूं (।) उमा की इतनी वातें ० सुन अति हर्षित हो महा देव बोले कि जो ० अध्यात्म रामायन आगे आप राम ने मु(-) ० झ से कहा था सोई मैं तुम से कहता हूं सा(-) ० वधान हो सुनो कि जिस के श्रवण से अति ० भयावन पाप तें लोग छुटते हैं ओ धन संतति ० पाकर बहुत दिन तक जीते हैं (।) सो कथा यह ० है कि एक समय रावण आदि राक्षसन के भा(-) ० र से अति पीड़ित हो गौ का रूप धर देवता ० ऋषिन को संग ले व्रह्म लोक मे जा अपने ० दुख का सव कारण पृथ्वी ने रो रो कर व्रह्मा ० से कहा(,) तव वे सुन्दर महूरत साध उनको सा(-) ० थ लिये क्षीर समुद्र तीर जा वेदपुराण के ०अछे अछे स्तोत्रन से कि जिनमे वडी मीठी ० मीठी बातें है भक्ति से गिडगिडा गिडगिडा ० विस हरि की स्तुति करने लगे कि

१. स्वयं ही। २. ब्योरा। ३. कभी। ४. हीन जाति का, शूद्र। ५. सुरापी, शराबी। ६. में मग्न हो।

जो घट घ(-) ० ट वसता ओ सव का मनोरथ जानता है(।) त(-) ० व पूरव दिश से अन्धेरा दूर करते हुए ओ ० शंख चक्र गदा पद्म हाथों में लिये(,) शिर मे ० किरीट मणि(,) कानों मे कुण्डल(,) करों मे विजा(-) ० पठ[1] वाला[2] पहने ओ सुवर्ण के जनेऊ अरु वैसे ० ही वरन[3] वस्त्र धारण किये (,) गरे मे वनमाला ० औ कौस्तुभ मणि (,) वक्षस्थल मे भृगुपद का ० चिन्ह इन से अति विराजमान(,)सांवली(-) ० सी मनोहरमूरति (,) विकसित वदन(,) कमल ० नयन हरि लक्ष्मी सहित गरुड पर चढ़ झ(-) ० ट वहां आप प्रगट भये कि जिन्ह मे सहस्र (-) ० न[4] सुरय[5] की जोंति जगमगा रही थी ओ पा ० र्श्ववर्त्ती सनकादि ऋषि लोग चहुं दिश ० षडे[6] हूऐ जिन का गुण गाय रहे थे (।) शिव क(-) ० हते है हे पार्वती[7] कि वडे से तप किये विना ० किसे इतना सामर्थ्य है जो उनका दर्शन ० पावे(,) इस कारण एक व्रह्मा के देषने आये ० तो दण्डवत कर हाथ जोड़ गिड(-)गिडा गिड(-) ० गिडा यह वचन वह कहने लगा(—)दीनदया(-) ० ल(,) मै तुम्हारे विन[8] चरणों को सदा मन से प्र० णाम करता हूं कि जिनको भव वन्धन से ० छुटने के लिये ओ अपने(-)अपने काजन[9] ० के हेतु ओ ततक्षण मनवांछित फल पा(-) ० ने के निमित्त वडे(-)वडे मुनि लोग ध्यावते हैं(,) ० मुज[10] आदि देवता सव आगे सें सेवते आये ० हैं(,) ज्ञानी जन हृदय मे सुमरते हैं(—) हे कृपा सा(-) ० गर(,) माया से जगत की उत्पत्ति (,) पालन (,) वि(-) ० नाश आप हीं करते हो पर जल मे कमल ० की भांति संसार से सदा निर्लेप रहते हो इ(-) ० स लिये कि आनन्द विज्ञान स्वरूप हो (,) हे ० महाराज(,) कितने ही पाठ (,) पूजा(,) दान करें पै दु ० ष्टन के मन वैसा नही शुद्ध होता जैसा आ(-) ० प के गुण गावन हार भक्तन का चित्त निर(-) ० मल रहता है(।) यह समझ आपके विन चर (-) ० न को आय गहा हूं कि जिन पर पूजा के लि(-) ० ये चढ़ाइ हुई तुलशी से लक्ष्मी यद्यपि हृद(-) ० य मे रही रहती हैं तो भी सदा वैर करतीं हैं (,) इस०कारण कि ऐसा न होए जो यह मेरी सवत[11] हो ० जाय (,) इस्से यह वात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मी से भी ० अधिक प्रीति अपने चरनन के भक्त जन मे ० करते हो (।) हे परमेश्वर(,)अब मेरी यही श्रद्धा है०कि आपके पांव मे सदा मुजे भक्ति होये कि ० जो सकल दुख का पुरा[12] एक औषध है(।) व्रह्म की इतनी वातें सुन भगवान वोले(—) प्रजा प(-) ० ति तू क्या चाहता है(,) सो तेरा काज मै करूं(।) विस(-) ० ने विनती की कि हे महाराज (,) पौलस्त्य का पोता ० रावण नाम जो सकल राक्षसों का वड़ा राजा ० हैं मुज से वर पाय अति गर्वित हो लोकपा(-) ० लों सहित तीनों भुवन को महा दुख देता ० है (,) विसकी मृत्यु कोई ऐसे ही मनुष्य विना ० और किसी से होने की नहीं(—) मैने लिषा है(।) ० तिस्से विस देव (-) शत्रु को मानुष हो आप मा(-) ० रियै (।) ईश्वर ने उत्तर दिया (—)सुनो एक समय त(-) ० पस्या से संतुष्ट कर अदिति सहित कश्यप ० ने मुझ से वर मांगा कि तुम मेरा पुत्र हो तदभ (-) ० क्ति[13] वस अछा कह[14] बहुत मैने उनको ० भरोसा दिया(,)सोई अव पृथ्वी

१. विजाय। २. बाला। ३. वर्ण के। ४. सहस्त्रों। ५. सूर्यों। ६. खड़े। ७. 'से' आनावश्यक; 'कि हे पार्वती'। ८. उन। ९. कार्यों। १०. मुझ, मैं तथा अन्य। ११. सौत १२. पूरा, पूर्ण। १३. उसकी भक्ति। १४. 'अच्छा' ऐसा कहकर।

मे जा जनम ० ले दशरथ होवे और मैं चार स्वरूप हो कौश (-) ० ल्या आदि विन की स्त्रियों के गर्भ मे अवता (-) र० ले उनका पुत्र कहाऊंगा (।) इसी भांति मेरी ० योग माया भी राजा जनक के घर जन्म लेगी ० ओ उस का नाम सीता पडेगा तद विस की सा (-) ० थ हो यह काज मैं करूंगा (।) एैसे आशा (-) भरोशा ० दे विष्णु तो वहां से अन्तरधान हो गये (,) तव अ (-) ० ति हर्षित हो व्रह्मा ने देवताओं से कहा तुम्हा (-) ० रे लिये रघुकुल मे आप हरि अवतार लेंगे (,) ० तुम सव भी अपने (-) अपने अंश से वांदर (-) भा (-) ० लु हो पृथ्वी मे विन की सहायता जा करो (।) इस ० प्रकार देवतान को शिषा (-) पढा ओ धरती को ० वहुत प्रवोव[1] निश्चिन्त हो विधाता अपने आ (-) ० श्रम को गये (।) तव महा हर्षित हो सुर सव[2] तुर (-) ०त वड़े (-) वड़े पराक्रमी वानर भालु हो (-) हो[3] जहां (-) ० तहां पृथ्वी मे पसर गये ओ सहायता के लि (-) ० ये हरि की वाट निहारने लगे अरु परवत वृ (-) ० क्षों ही को शस्त्र ठहराय अवसर पर शत्रुन ० से युद्ध करने को चाहने[4] (।) इति श्री रामचरि (-) ० त्रे वाल काण्डे चतुर्थोध्यायः ४ (।) शिव कहते ० हैं—हे पारवती (,) हरि की आज्ञा पाते ही कश्यप ० आय दशरथ भये तो अयोध्या के ऐसे प्र (-) ० तापी राजा हुए कि अपनी वीरता सें सव लो (-) ० कों में प्रसिद्ध हो गये (,) निदान कितने एक वर्ष ० के वीते पुत्र के लिये निपट दुखित हो वार (-) वा (-) ० र प्रणाम कर हाथ जोड़ निज गुरु वसिष्ट मु (-) ० नि से एक वेर उन्हने विनती की (—) महाराज ० ऐसा कोई उपाय अव वताइऐं जिस ० सें सब लक्षण भरे अति उत्तम पुत्र मुजे हों (-) ० ए क्यूंकि एक उन्ही विना यह राज्य कुछ नहीं ० मुझको सुख देता है[5] (।) दशरथ की इतनी बातें ० सुन वसिष्ठ मुनि वोले—हे महाराज (,) तनिक चिं (-) ० ता मत करो चार पुत्र तुम्हे ऐसे होगें कि मानो ० दूसरे लोकपाल ही आ अवतरे होंए (,) पर ऋ (-) ० ष्य श्रृंग मुनि को मंगाय हमे साथ ले पुत्रेष्ट ० यज्ञ जों करो (।) इतने वचन के सुनते ही महा ० हर्षित हो मंत्री सों ऋष्य श्रृंग को झट बुला ० सुन्दर मुहूरत ठहराय स्नान (-) पूजा से सुचि (-) ० त हो वसिष्ट आदि ऋषिन को संग ले वडे० धूमधाम सें राजा दशरथ यज्ञ पर जा बैठे (।) ० जव श्रद्धा से होम करने लगे तव अति संतु (-) ० ष्ट हो सुवर्ण की सी देह धारण कर कांचन ० की परात मह सुन्दर हविष्य हाथ मे ले प्र (-) गट हो अग्नि देवता बोल उठे (-) हे पृथ्वीपति (,) दे (-) ० वताओं की वनायी हूई यह षीर[6] तुम लो (।) इ (-) ० सी से निसन्देह आप[7] ईश्वर तुम्हारे पुत्र हो (-) ० गें (।) ऐसे कह नृपति को हविष्य दे अगिन तो ० अन्तरधान हो गया तद अपना मनोवां (-) ० छित फल पा अति हर्षित हो वसिष्ट अरु ० ऋष्य श्रृंग को उठ के राजा दशरथ ने प्रणा (-) ० म किया ओ विन्हो की[8] आज्ञा पाकर कौश (-) ० ल्या ओ केकयी को आधों आध षीर वाट दी ० कि इतने मे सुमित्रा भी तहां आ पहुची तो रा (-) ० जा के हाथ पकर अपना अंश मांगने ल (-) ० गी (।) निदान अपने अपने भाग में से आधी ० आधी हविष्य प्रसन्न हो कौशल्या ओ के (-) ० कयी ने सुमित्रा को दी (।) पारवती से महादेव ० कहते है कि इस प्रकार पायस पा साथ हो[9] वि (-) ० धि से भोजन करती

१. प्रबोध देकर। २. सभी सुर, देवता। ३. हो होकर। ४. चाहने लगे। ५. मुझे तनिक सुख नहीं देता। ६. खीर। ७. स्वयं। ८. उन्हीं की। ९. एक साथ होकर।

ही तीनो रानी गर्भ से र(-) ० हीं तो विस दिवस से राज(-)मंदिर मे दिन(-)दिन दे(-) ० वता(-)सी शोभने लगी (।) जव दशवां मांस आन ० पहुचा तव चैत सुदि नवमी के पुनर्वसू नक्ष(-) ० त्र कर्क लगन मे यद[1] सूर्य (,) चन्द्रमा (,) वृहस्प (-) ० ति (,) शुक्र (,) पांचों ग्रह ऊंच स्थान मे थे ओ ऊपर ० से देवता सव फूल वरसाय रहे थे (,) तीनों भुव (-) ० न के नायक सनातन हरि कौशल्या के गर्भ ० से उत्पन्न हूये ओ श्याम(-)मूरति कमलनय(-) ० न चतुर्भुज सरूप वन[2] शंख (,) चक्र (,) गदा (,) पद्म ० लिये (,) मोर मुकुट शिर मे धरें पीताम्बर का(-) ० छे (,) केशर के तिलक दिये (,) वनमाला अरु म(-) ० णिमय हार आदि नाना भूषण पहनें (,) कानों ० में कुण्डल झलकाते (,) करुणभरी आंष[3](-) ० न से देखते ओ सुन्दर कपोलन पर टेढ़ी अ(-) ० लक लटकायें जब प्रगट भये तव भगवान ० का अद्भू[4]रुप देखती ही कौशल्या निपट च(-) ० कित हूंई तो हर्ष से आषों मे आंसू भर(-)भर प्र(-) ० णाम कर हाथ जोड स्तुति करने लगी कि हे ० पुरुषोत्तम आदि अनन्त पूरन परमात्मा (,) हे ० देवन के देव (,) शंख चक्र गदाधारी अच्युत (,) मैं ० आप को वार वार नमस्कार करती हूं (।) तुम ही ० वह निर्गुण व्रह्म हो जिसे वेदवादी लोग जग(-) ० त के केवल साक्षी मात्र ज्ञान सरूप अरू ऐंसे ० कहते है जो चाहिऐ की वचन से कोई उसे व(-) ० तावे कै[5] इन्द्रियों से पहचाने (,) वुद्धि से भी देख ० सके तो क्या सामर्थ्य है (,) ओ जो रज (-) तम (-) सत्व ० तीनो गुण धारण कर माया सें संसार को सृ(-) ० जता (,) पालता (,) संहारता है (,) पर आप ज्यों के ० त्यों निर्मल सरूप सदा ही रहता है (,) तिस्से को ० तुम्हारी अपरम पार गति जान शके (,) क्यूं कि ० अनेक रूप हो[6] तुम ही नाना काज करते ओ ० चलते (,) सुनते (,) देखते हो (,) पै ध्यान दे विचारिये ० तो कुक्ष[7] भी नही करते (,) इसी लिये तुम्है श्रुति ० कहती है कि विस चेतन परमात्मा को न तो जी(-) ० व है न मन (,) सदा ज्योति सरूप प्रकाश है औ हे ० महाराज (,) सकल प्राणीन में समान अंश से ० रहते हो (,) पर तो भी वुद्धिमानों को तो प्रगट ही हो (,) अज्ञान से अंधे हूये लोगन को लखे न ० ही जाते हो इस्से ऐंसे परमेश्वर कि जिन के ० उदर मे परमानुसरूप कोटिन व्रह्माण्ड दि(-) ० खाते हैं मेरे कोष मे जनम लें यही मनु(-) ० ष्यन को असंभव है (,) पर भक्तिवस हो (,) इ(-) ० स्से नही कहा जाता (।) हे करुना निधान (,) पति(-) ० पुत्र(-)धन आदि रूप संसार सागर मे माया से ० वहुत मै भ्रम रही हूं इस कारन पुन पुन[8] पा(-) ० व पडती हूं कि जगत मोहिनी आप की मा(-) ० या मुझे न कभी घेरे औ आप का यह रूप ० सदा मेरे मन मे वसे अरु हे दीनदयाल अ(-) ० पना यह रूप छिपा आनन्द दायक सुन्दर वा(-) ० लक अव हुजिये जिसे प्यार कर कंठ लगा खे(-) ० ला भव(-)समुद्र तरूँगी (।) कौशल्या की इतनी ० बातें सुन ईश्वर वोले (—) सुनो माता मुजी को ० पुत्र पावने के निमित्त दशरथ सहित तुमने ० तपस्या से बहुत मेरी आराधना आगे करी त(-) ० द निकट जा प्रगट हो मैंने भी स्वीकार किया ० ही था (,) तिस विच रावण को मार पृथ्वी का भा(-) ० र दूर करने के लिये व्रह्मा ने भी मुज से वडी ० प्रार्थना की (,) इस कारण मैंने मनुष्य

१. यदा, जब; तदा के लिए 'तद' का बहुधा प्रयोग। २. बन। ३. आँख। ४. संभवतः 'अद्भुत'। ५. अथवा। ६. होकर। ७. कुछ। ८. पुनः पुनः।

का जन(-) ० म लिया है अब जो जो तुम्हारी मन कामना ० है सो सो सब सुफल होंगी ओ भव सागर पा(-) ० र उतारनहार इश मेरे रूप का दूर्ल्लभ दर्श (-) ० न जो तुमे हूआ है सो अपने उस जनम की ० तपस्या का फल समझो (।) ऐसे जननी को बु ० झा(-) समझा फिर आप बालक हो लगे रोने ० पर तो भी ऐसे विशाल नयन महा सुन्दर भये ० जिसे देषत सुर(-)नर(-)मुनि के मन मोहै। शिव कहते है कि इतने ही मे राजा दशरथ ने पुत्र की उत्पत्ति ० सुनी तो महामगन हों सभा से झट उठ गुरु को सा (-) ० थ लिये अंगने मे चले आये औ सौर घर के ० द्वार पर जा कमल नयन महा सुभग सुत को मं(-) ० गा कर देष बहुत जुडाने अरु वसिष्ट की आज्ञा पा ० य विस समय के जितने कुछ जात(-)कर्म करने योग ० थे सो सब ज्यों कर चूके कि त्यों ही केकयी के एक (,) ० सुमित्रा के जौड़ही दो बालक हूए (,) तब तो निपट हर्षित हो सहस्रन गांव असंख्य रुपै[१] सोना ओ ० भांति भांति के वस्त्र धेनु आदि अनेक वस्तु राजा ० दशरथ लगे व्राह्मणों को दान करने (।) जव विन्ह का(-) ० जों से सुचित भये तव वडे वडे पंडितों को संग ले ० सुन्दर मुहूरत साध वसिष्ट मुनि लगे लडको ० का नाम धरने(,) तिनमे पहले कौशल्या के पुत्र ० का राम नाम रषा इस लिये कि ज्ञान सें ध्यान ० लगाय इन्ही मे मुनि लोग रमते हैं (।) इसी प्रका(-) ० र केकयी के लड़के को सव का भरण पोषण कर (-) ० न हार समझ भरत कर पुकारा ओ अनेक ल(-) ० क्षण देष सुमित्रा के वडे लवाल[२] को लक्ष्मण ० अरु सकल शत्रुन को हनने वाला जान छोटे ० को शत्रुघ्न ऐसे गुरु ने कहा (।) इतनी कथा सुना(-) ० य फिर महादेव वोले(—)हे पारवती जब कुछ दि(-) ० न के वे लडके भये तव उस षीर के गुण से जो कौ(-) ० शल्या के कयी ने निज भागों से निकाल सुमि (-) ० त्रा को दी थी राम के संग लक्ष्मण भरत के साथ ० शत्रुघ्न दो दो इकठे हो खेलने लगे(,) तिनमे ल(-) ० क्ष्मण सहित रामचन्द्र अनेक वाल लीला कर ० तोतली तोतली मीठी मीठी वातें कह माता पि(-) ० ता को परम सुख देने लगे (।) एक दिन रसोइ जेव(-) ० ते हुए राजा दशरथ ने देषा कि भाल मे मुक्ता ख(-) ० चित पीपल का पत्ता सा सुवर्ण का आभरण ० अरु कण्ठ माह मणिन के हार जिन्ह के वीच वी(-) ० च वाघ के नख गांथे हूए थे(,) कानों मे रतन जडि(-) ० त सुन्दर कुण्डल (,) कटि मे किंकिनी(,) हाथों मे विजा(-) ० यठ पहने इन्द्रनील मणि से श्याम सरूप राम(-) ० चन्द्र अंगने मे छोटे छोटे वछरून के पीछे पीछे डो(-) ० लते फीरते हैं(,) तव अति हर्षित हो प्यार कर ल(-) ० गे वुलवाने कि हे रामचन्द्र इहां आओ मेरे सा(-) ० थ हो भोजन करो (।) इस प्रकार कितने हूं वुलावें ० पर वे अपने खेल मे जो मगन थे सो काहे को ० आवें और भी भाग चले तद राजा ने कौशल्या ० को कहा कि तुम इन्हे पकड लाओ (।) सुनती ही ० हंस कर वे दौडीं तो जिसे योगी लोग ध्यान से भी ० नही धर शकें सो भगवान कौशल्या सें क्यूं कर ० पकडे जाय(,) निदान हाथों मे कादो लगायें हं(-) ० सते हूए आप ही पिता के निकट चले आये अ(-) ० रु ज्यों उन्होंने तनिक कवर मुह मे डाल दिया ० कि त्यों ही फिर भाग खडे भये (।) इस भांति आनन्द ० कन्द रघुनायक माया कर वालक वन राजा रानी ० को दिन दिन अधिक सुख देने लगे ओ उन्ह की ० माता

१. रुपये। २. संभवतः बालक, मुद्रण की अशुद्धि।

कौशल्या प्रीति सें ऐसीं विन में लवलीन ० रहें कि मास मास वर्ष वर्ष जब जब राम का जन(-)म दिन आवे तव तव महा महोत्सव ठान लड्डू ० पेडे टीकरी पैरकिये[1] आदि अनेक अनेक प्रका (-) ० र की मिठाई ओ पूआ पुरी आदि भांति भांति ० के पकवान वनाय वनाय सव इष्ट मित्र के घर घर ० बयना[2] भेजें ओ राम की चंचलता के कारण गृ ० ह के काजों मे बहुत मन ही[3] लगावें निदान एक ० दिवस राम को वडी भूष लगी तो निकट जामा(-) ० ता से खाने को लगे मांगने (।) जव कार्य वश हो वि(-) ० न्हो ने नहीं सुना तव तो निपट रिसिआ कर घ(-) ० र के भीतर पैठ ले लाठी सव वासन वर्त्तन तोड(-) ० ताड छीके पर से गिराय दही दूध माषन लक्ष्म(-) ० ण भरत शत्रुघ्न के संग हो रामचन्द्र खाने पीने ० लगे कि इतने ही मे किसी ने कौशल्या से जा क(-) ० हा तो हंस कर वेग ही जों वह आ पहुची कि तों ० ही ये सव भाग चले ओ पीछे पीछे कौशल्या ० भी दौडी तो पग पग गिरती पडती हूई निदा(-) ० न कुछ दूर पर जा राम का हाथ पकड़ लिया पर ० प्रेम सें डांट डपट नही किया (।) जव डर सें लडक प(-) ० न कर राम लगे सुसक सुसक रोने तव विहंस ० के उन्हें कंठ लगाय मुख चूम कौशल्या रानी ल(-) ० गी प्यार करने (।) इस प्रकार नाना वाल लीला क(-) ० र चारो भाई रघुनायक जो माया से मनुष सरू(-) ० प भये थे जव सात आठ वर्ष के हूए तव यज्ञो (-) ० पवीत दे धनुष विद्या सहित सव शास्त्र पढ़ा (-) ० य वसिष्ट गुरु ने उन्हो को पूरण पंडित किया (।) ० तिन मे राम की सेवा माह लक्ष्मण ओ भरत(,) ० की टहल मे शत्रुघ्न ऐसे सदा लव लीन भये कि ० जैसें स्वामी की आज्ञा मे सेवक जन रहे ओ श्री ० रघुनाथ जी का यह नित्य नेम था कि वडे तडके ० उठ धनुषवान ले लक्ष्मण सहित घोडे पर च(-) ० ढ़ अहेर के लिये आस पास के जंगलों मे पैठ ० वनये[4] दुष्ट मृगों को मार ला पिता को सव देषा[5] ० हर्षित कर निज भवन मे जा वस्त्र उतार स्नान० पूजा करें ओ मुनिन को वुलाय नाना धर्म शा(-) ० स्त्र पुराण सुन प्रसन्न हो भाई वन्धु के साथ वैठ ० अमृत समान रसोई जें[6] आचमन कर पान ० खाय वस्त्र भूषण पहन फिर निकट जा राजा ० दशरथ को प्रणाम कर सभा मे वैठ नगर का जो ० कुछ काम होए सो सव हितू सा करें (।) इस प्रकार ० वे परमात्मा कि जिन का कधी[7] जनम मरण न(-) ० ही होता माया फयला[8] नर अवतार ले म(-) ० नुष्य की रीति पर चलें पै विचारिये तो कुछ भी न ० ही करते ० (।) इति श्री रामचरित्रे वाल कांडे पंचमो (-) ० ध्याय: ५ (।)
इतनी कथा कह फिर महादेव वोले (—) हे भवानी (,) इस अनन्तर एक वेर तेज मे अग्नि ० समान विश्वामित्र ऋषि निज माया कर उत्प(-) ० न्न हूआ जान पूरण व्रह्म रामचन्द्र जी को देष ० ने के लिये अयोध्या मे दशरथ के यहां आन प(-) हु० चे तव दूर से देषते ही तुरत वे उठ खडे भये ओ ० शिर झुकाय प्रणाम कर सुन्दर आसन पर विठ (-) ० ला वशिष्ठ सहित विधि से ऋषि को पूज हाथ ० जोड नम्र हो विन से यह वचन कहने लगे (—) महा(-) ० राज आपके आगमन से वहुत मै कृतार्थ भया ० क्यूंकि तुमसे महानुभाव लोग जिस घर मे प(-) ० गु देते हैं वहां ही सव

१. एक प्रकार का मिष्टान्न, पिड़किया; मैदे या खोए की गुझिया। २. बायन, बयना, बैना; वह मिठाई या पकवानादि जो उत्सवादि के समय इष्ट मित्रों को भेजते हैं। ३. संभवतः 'नहीं'। ४. बनैले। ५. दिखाकर। ६. खाकर। ७. कभी। ८. फैलाकर।

सम्पत आ रहती है (।) ऐसे ० कह पुनि राजा ने पूछा (—) कृपानिधान किस कार (-) ० ण यहां आप आये सो कार्य अति शीघ मैं क (-) ० र लाऊं (।) निपट प्रसन्न हो विश्वामित्र जी बोले (—) ० धर्मावतार जव जव कोई परव आन पहुंचता है ० तव तव यज्ञ रच जों मै देवता पितरों की पूजा आ (-) ० रम्भ करता हूं तों ही अनेक भृत्य साथ लिये मा (-) ० रीच ओ सुवाहु दोनों दानव नित्य आ के मेरे आ (-) ० श्र मे[1] विघ्न करते हैं तिस्से विन दुष्टन को वध के ० निमित्त लक्ष्मण सहित जेष्ठ रामचन्द्र जी कों ० वशिष्ट से एकमत हो जों रूचे[2] तो मेरे संग कर दी (-) ० जे मैं तुम्हारा वहुत कल्याण मनाऊंगा (।) ऋषि ० की इतनी वातें सुनते ही राजा महाचिन्ता मे प (-) ० डे तो एकान्त मे ले जा गुरु सें पुछने लगे (—) महारा (-) ० ज अव क्या करूं (?) राम को तो कधी तजने को मेरा ० जी नही चाहता क्यूंकि सहस्रन वर्ष के पीछे ० वडे कष्ट से देवता समान चारु पुत्र मुजे हूए (।) ० तिनमे राम मेरा अधिक प्यारा है (।) जों वह गया तो मै कभीं जीने का नही ओ ये मुनि जों विमु (-) ० ख होवें तो अवश्य श्राप दे भस्म कर डालेंगे ति (—) ० स्से जिसमे मेरा भला होए सो उपाय दया ० कर आप वताइए (।) नृपति की इतनी वातें सुन ० वसिष्ट जी लगे कहने कि यह वात तो अभी प्र (-) ० सिद्ध करनी योग्य है नही (,) यहां तक कि देवता (-) ० ओं मे भी अभी छिपी हूई है (,) पर नेह वश हो मै ० कहता हूं कि श्रीरामचन्द्र जी को तुम कभी मा (-) ० नुष मत लेषो (।) ये सनातन परमात्मा आप ० आ अवतरे हैं धरती का भार दूर करने (।) लिये, ० व्रह्मा ने आगे इन की वड़ी स्तुति करी थी सोई ० भक्तवत्सल परमेश्वर अव कौशल्या के यहां ० आ जन्में हैं (।) तिस का यह कारण है कि कश्यप (-) ना (-) ० म तुम आगे व्रह्मा के पुत्र थे ओ सकल देवता (-) ० ओं की माता अदिति नाम तुम्हारी स्त्री थी (।) सा (-) ० थ हो तुम दोनों ने विस जन्म मे हरि की पूजा ध्यान (-) ० मे सदा चित्त लगा वहुत वर्ष तक महा उग्र ० तप किया (।) जब प्रसन्न हो भक्तवत्सल नाराय (-) ० ण निकट आ प्रगटे तव वडी श्रद्धा सें यही वर तु (-) ० म ने मांगा (—) कृपानिधान आप हमारे पुत्र हूजि (-) ० ये (,) निदान दया सिंधु परमेश्वर संतुष्ट होए अ (-) ० छा कह अन्तरधान हो गये सोइ परमात्मा रा (-) ० म रूप हो तुम्हारे वालक अव हूए हैं ओ सदा रा (-) ० म के आज्ञाकारी श्री लक्ष्मण जी को जो देषते ० हो सो शेषनाग आ अवतरे हैं ओ भगवान के ० शंख चक्र ये ही दोनों भरत शत्रुघ्न भये हैं (।) यह ० तो यहाँ का वृत्तान्त है अरु ईश्वर की योग मा (-) ० या ने राजा जनक के ह्यां जनम लिया है (।) नाम उ (-) ० स का सीता कर पुकारते हैं तिसी से राम का व्या (-) ० ह कराने के लिये विश्वामित्र ऋषि आये हैं (।) ० तिस्से हे राजा हर्षित मन सें ऋषि कों पूजिये ओ ० लछुमण समेत रामचन्द्र को इन के साथ कर दी ० जिये अरु हे पृथ्वीनाथ श्री रघुनायक का गुप्त ० भेद जो मैंने तुम्हे सुनाया कभी किसी से मत क (-) ० हिओ (।) वशिष्ट की इतनी वातें सुन कर रा (-) ० जा दशरथ बहुत अपने को कृतारथ मान वड़े ह (-) ० र्षित भये तो तुरत राम लछुमण को वुला गो (-) ० द में विठला वार वार मुह चूंम प्यार कर विश्वामि (-) ० त्र के संग कर दिया (।) तव दोनों भाई को पाकर म (-) ० हा प्रतापी ऋषि निपट सन्तुष्ट हो वहुत

१. आश्रम में। २. रुचे।

आ(-) ० शीस दे हर्षित कर दशरथ से विदा भये ० ओ० धनुष वाण खड्ग ले दोनों राजकुमार उन्ह के सा (-) ० थ हो लिये (।) जब कुछ दूर सब निकल आये त(-) ० ब देवताओं की सिरजी हुई बलीय(-)अतिवल ० नाम दो विद्या कि जिन्ह के ग्रहण करते ही कभी ० भूष प्यास परिश्रम आदि नहीं होते विश्वा(-) ० मित्र ऋषि रामचन्द्र को शिषला भांति भांति ० की कथा उन्हें सुनाते हूए गंगा तीर ताडका ना(-) ० म वन मे आ लगे कहने(—)हे रघुनंदन इस जंग ० ल मे एक ताडका नाम राक्षसी रहती है सो ना(-) ० ना रूप धर सकल प्राणीन को सदा संतावती है ० किसी प्रकार से इस का वध विना शोचे शीघ्र कि(-) ० या चाहिए(।) ऋषि की इतनी आज्ञा पाते ही अ(-) ० ति हर्षित हो झट धनुष पर गुण चढ़ाय रामचं(-) ० द्र ने एक ऐसा टंकार शब्द किया कि जिससे सा(-) ० रा वन गरज उठा(,) सो सुन कर घोर रूपिणी ता(-) ० डका से रहा नही गया तो क्रोध से मूर्छित हो ० दशन कट कटाय ऐसें उठ धायी कि जैसें पवन ० से मेघ दौड आवे (।) जद सन्मुख आन पहुंची त(-) ० द तका कर ऐसा एक वाण विस की छाती मे रा(-) ० म ने मारा कि वह मुह से बहुत रुधिर उगलती हू(-) ० ई वन मे गिड पडी (।) तब पिशाच की देह जो श्रा ० प से हुई थी श्री रघुवर के प्रताप से तज सब आ(-) ० भरण से भूषित महा सुन्दरी यछ की कन्या वुह ० हो गयी औ रघुनायक को वार वार प्रणाम क (-) ० र परिक्रमा दे विन्ह की आज्ञा पाय वैकुण्ठ धाम ० को गयी(।) यह लीला देष निपट संतुष्ट हो विश्वा(-) ० मित्र ने राम को गरे लगा लिया ओ विन का माथ ० चूम जी मे कुछ शोच समझ शस्त्र विद्या सहित ० गुप्त सब मन्तर वुन को वता दिये(।) इति श्री राम(-) ० चरित्रे बाल काण्डे षष्ठोध्याय: ६(।) शिव कहते ० है पारवती से कि इस प्रकार अनेक मुनिन से भ(-) ० रे हुए विस सोहावन वन मे ताडका को मार एक ० रात रह (,) होत सवेरे[1] वे सब चल खडे भये तो सिद्ध(-) ० चारण से सेवित सिद्धाश्रम नाम स्थान पर धीरें ० धीरें जा पहुचे(।) तहां जाते ही विश्वामित्र की आ ० ज्ञा पा जितने वहां के वसने वाले मुनि लोग थे ० सो सब आ आकर राम लछ्मण की पूजा करने ० लगे(।) इस उपरान्त कुछ घड़ी के बीतें श्री रघुना(-) ० थ ने विश्वामित्र से कहा(—)महाराज आप अब य(-) ० ज्ञ आरम्भ कीजे अरु विन दोनों अधम राक्ष ० सों कों जो तुम्हारी क्रिया मे नित्य आ महा उपद्र(-) ० व करते हैं मुजे देषाइए (।) इतने वचन के सुन(-) ० ते ही अति हुलसित हो वेदशास्त्र के पढ़न हा (-) ० रे वडे कुलीन एकईश सहस्र मुनिन को सा (-) ० थ ले विश्वामित्र ऋषि यज्ञ पर जा बैठ लगे होम ० करने (।) जब ठीक दोपहर हो चूका तव मारीच ० ओ सुवाहु दोनों राक्षस वहां आन पहुँचे ओ ० जों उपर से हाड रुधिर विन पर वरसावने लगे ० कि तों ही श्रीरामचन्द्र ने धनुष पर दो वाण र(-) ० षा कान तक षैंच एक सें मारीच को ऐसा मारा ० कि वह घूमता घूमता चार सौ कोश पर समुद्र ० मे जा गिरा(,) सो लोगन को महा अचरज सा ० लगा(,) अरु दूसरे अग्निमय बाण से सुवाहु ० कों ओंही जलाकर भस्म कर डाला और जि(-) ० तने विन के सहाय आये थे तिन्हे लछ्मण ० जी ने तुरत मार गिराया(।) तव दमामे वजावजा ० दोनों राजकुमारों पर देवता सब लगे फूल

---

१. सबेरा होते ही।

वर[1] ० ओ उर्वसी आदि अप्सरा नाचने सिद्ध चारण ० जश वषानने (।) तव महा आनन्द मे मगन हो ० विश्वामित्र ऋषि तुरत उठ खड़े हूए ओ पूज(-) ० ने ही योग राम लक्ष्मण को गरे लगा प्रेम से ० गोद मे विठला अमृत समान कन्द मूल फ(-) ० ल विन को भोजन करा यह वचन कहने लगे(—) ० हे सकल सिद्धि दायक जगन्नाथ(,) हे रघुनाथ(-) ० क हम निकंटक हो चूके(,) अव किसी वात की ० चिन्ता नही है(,) पर क्या जाने विन का साथी फि(-) ० र कोई दुष्ट राक्षस यहां आ धूम मचावे ति(-) ० स्से कुछ दिन तो और मेरे साथ तुम रहो (।) राम ० ने उत्तर दिया(—)अच्छा महाराज जब तलक आ ० ज्ञा कीजे तव तलक आप के निकट मै रहूं ऐ(-) ० से आपस मे वतराय पुराण की चर्चा ही से ती(-) ० न दिन विता चौथे दिवस ऋषि ने कहा(—)हे रा(-) ० मचन्द्र आज हम सब राजा जनक के यहां म(-) ० से उठे तो चले चले गंगा तीर गोतम मुनि के उस स्थान में छहा यज्ञ देषने कों जायेंगे (।) विन के नगर मे शिव ० का रष्या हूआ वडा सा एक धनुष पड़ा है जो कि(-) ० सी से टकसाये नहीं टकसता (।) तुम्भी चल के देषो (।) ० राजा जनक तुम्हारा वहुत आदर मान करेगा (।) ० ऐसे कह अनेक मुनिन के सहित दोनों वालक(-) ० न को संग लिये विश्वामित्र जी अपने आश्रमै ० आन पहुंचे कि जहां फूलों फलों के भार से पृ(-) ० थ्वी पर झूके हूऐ सुन्दर सघन वृक्षों के बीच मे पा(-) ० षाण हो अहल्या देवी उग्र तप कर रही थी औ(-) ० र चहुं दिश अति सोहावन दूव की मनोहर हरि ० अरी हो रही थी(,) पर मृग पंछी आदि कोई जी(-) ० व जन्तु नही रहता था(।) विस आश्रम को देष ० अति अचरज मान श्री रघुनायक ने विश्वा(-) ० मित्र से पूछा(—)महाराज फूले फले हुए पेडन ० से भरा हूआ ओ सदा प्राणिन से हीन किस म(-) ० हा पुरुष का महा सोहावन ओ अति उत्तम ० यह स्थान है जो मेरे मन को परम सुख देता है (?) ० इसका सव भेद समझा कर आप मुझे वता(-) ० इऐ (।) ऋषि बोले(—)हे रामचन्द्र सावधान हो सुनो (।) ० मै कहता हूं कि सब लोकों मे प्रसिद्ध वड़े धर्म्मा(-) ० त्मा गोतम नाम एक मुनि आगे यहां रहते थे ० सो तपस्या से हरि के ध्यान ही मे दिन रात मग(-) ० न रहते थे विन्ह को प्रसन्न होकर सेवा टहल ० के लिये व्रह्मा ने अहल्या नाम अति महा सुंद(-) ० री एक कन्या दी(।) तिस के साथ मुनि तो अपने ० तप से सदा लवलीन थे सो कितने दिनों के ० वीते संयोगन किसी समय इन्द्र की दृष्टि विस ० स्त्री पै पर गयी तो काम से निपट पीडित हो इ(-) ० सी ध्यान मे वह नित रहे कि कद मै समय पा(-) ० ऊंगा जो सुचित हो इससे भोग करूंगा (।) निदान ० किसी दिन गौतम के वाहर गये पर उन्ही का ० ठीक वेष धर घर मे आ अहल्या से विलस[2] जों ० इन्द्र तुरत निकल चला है कि त्यों ही द्वार पर मुनि ० आन ही पहुंचे तो अपना(-) सा रूप देषते ही मा(-) ० रे क्रोध के लाल होकर विस से पूछने लगे(—) क्यूं ० रे पापी महा दुष्ट अधम मेरा रूप धर तू कहां ० गया था अरु कौन है(,) सच कह नही तो श्रा(-) ० प दे अभी मै तुझे भस्म कर डालता हूं (।) मुनि ० की इतनी वात के सुनते ही डर कांप कर वह ० वोला (—) महाराज मै सुरपति हूं (,) कामवश होक(-) ० र मै तुम्हारे घर पैठा (।) मुज से वडा अपराध

१. बरसाने । २. भोगकर ।

हू(-) ० आ(,)पर हे दीनदयाल आप क्षमा कीजे (।)ऐसें ० कह ऋषि के चरणों पर गिड परा तव जल[1]० कर गोतम ने श्राप दिया कि एक योनि के का(-) ० रण तू आया (।) जा(,) तेरी सारी देह मे सहस्र भग हो जांवे (।) ऐसें इन्द्र को सुना भीतर आय देषें ० तों डर से थर थर कांपती हुई दोनों कर जोरें ० नीचें शिर किये अहल्या खड़ी है (।) तद विस को ० भी श्रापने लगे कि आज सें इस स्थान मे पा(-) ० षान हो आहार तज दिन रात महा तप तुम ० किया करो अरु जाड धूप वर्षा सह हरि को ध्या(-) ० वती हूई हृदय स्थित राम का नाम मन से नित ० जपो अरु अव से नाना जन्तु विहीन यह ० आश्रम भी हो जायगा (।) ऐसे वकझक फि(-) ० र दयावन्त हो कहने लगे कि सहस्र वर्ष के ० वीतें भाई सहित श्री रामचन्द्र जी जद वन उ(-) ० पवन मे फीरते फीरते यहां आवेंगे ओ च(-) ० रणों सें तुम्हे छूवेंगे तधी निष्पाप हो श्राप सें छूट भक्ति सें राम को पूज परिक्रमा दे स्तु(-) ० ति दण्डवत कर विन से विदा हो आगें की ० भाँति सुख से मेरीं सेवा जा करोगी(।) इस प्रका(-) ० र कह सुन निपट उदास हो तुरत वहां से उ(-) ० ठ हिमालय पहार पर जा गोतम ऋषि तप(-) ० स्या करने लगे(।) विश्वामित्र मुनि कहता है कि ० विन के वहां जाते ही पाषाण सरूप हो निज ० आश्रम मे अव तक अहल्या देवी महा उग्र त(-) ० प कर रही है(,) सदा सकल पाप विनाशनहारे ० तुम्हारे चरण की धूलि का स्पर्श चाहती है ति(-) ० स्से महाराज निकट चलकर गोतम की भा(-) ० र्या का उद्धार ही किया चाहिऐ क्यूं कि एकें तो ० ब्रह्मा की पुत्री(,) दूसरे महा तपस्विनी है (।) ऐंसें ० बुझा समझा हाथ पकड राम को समीप ले ० जा विश्वामित्र ने अहल्या को देषा दिया तो ० जाते ही दया वश हो पांव से जद रघुनायक ० ने वह शीला[2] छू दी तद ओं ही अति सुन्दरी ० स्त्री वन हडवडा कर वह उठ खडी हूई (।) विसे ० देष शिर झुकाय राम ने प्रणाम किया ओ ० कहा कि दशरथ का पुत्र मै ही श्रीरामचन्द्र हूं (।) ० तव पीताम्त्रर पहने कर मे धनुष वाण लिये ० लछुमण समेत मुसकुरा मुसकुरा वोल ० ते हूए ओ नील मणि से श्याम सरूप आ(-) ० नन्द कन्द कमल नयन रघुनायक कों कि ० कि[3] जिन की शोभा से दशो दिशा उद्योत हो रही ० थीं नीचें उपर निहार गोतम का वचन सुमर ० नारायण पहचान मारे आनन्द के सिगरी ० गात अहल्या को रोमांच हो आया तो अर्घ ० पादार्घ कर विधि से उन्हे पूज हर्ष से आषों ० में आंसू भर वार वार प्रणाम कर गिडगिडा ० गिड गिडा यह वचन कहने लगी(—)अहो कृ (-) ० पा निधान तुम्हारे पांव की धूंली के कि जि(-) ० न्हे शिव ब्रह्मादिक देवता सव वन्दते है स्प(-) ० र्श से मै निपट कृतार्थ भयी(।) को आपकी अ ० परम्पार गति जान शके(।) मनुष्य रूप हो सा(-) ० रा जगत मोहते हो (।) न तो तुम्हे हाथ है न पांव ० पर दिन रात चलते ही रहते हो(।)तुंम वे[4] आनं(-) ० द कन्द पूरण ब्रह्म हौ कि जिन के चरण कमल से ० निकल यह गंगा शिव ब्रह्मादिक को पवित्र करती ० है(।) सोई परमात्मा मेरे सामने निकट आय खडे ० हैं(।) कहा तक अपने भाग का वर्णन करूं (।) अव ध(-) ० नुषधारी बिशाल लोचन मानुस अवतार अति ०सुन्दर देही रामरूप नारायण को कि जिन के पां(-) ० व की धूर सदा श्रुति ढूढती है अरु नाभि कमल ० से ब्रह्मा उपजा(,)त्याग कर[5] दूसरे को न भजूंगी(।)

१. 'ले' होना चाहिए। २. शिला। ३. यहाँ 'कि' अनावश्यक है। ४. वह। ५. उसे त्याग कर।

वि(-) ० न्ही को दिन रात सुमरती हूं जिन के अवतार का च(-) ० रित्र विरंचि लोक मे आनन्द मगन हो नारद ब्रह्मा ० सरस्वती आदि गाया करते हैं अरु जो आदि आ(-) ० नंद जोति स्वरूप पुरुष पुरातन परमात्मा माया ० कर मोहनी मूरति हैं ओ उत्पत्ति पालन प्रलय के० आप ही एक कर्त्ता हैं(,) माया मे छिप व्रह्मा विष्णु म(-) ० हेश कहाते हैं (।) ऐसे कह फिर वोली (—) हे रामचन्द्र तु (-) ० म्हारे विन चरणों को जिन्हें लक्ष्मी हृदय लगाती ० हैं निर अभिमानी मुनि लोग ध्यावते हैं अरु जो ० स्वर्ग मर्त्य पाताल तीन ही डेगकर आये सदा मै ० नमस्कार करती हूं(।) तुम ही जगत के आदि अरु आ(-) ० श्रय हो सकल प्राणीन मे एक आप ही भासते हौ ० पर वचन से चाहिए कि कोई तुम्हें वता शके तो क्या ० सामर्थ्य है(,)अरु हे महाराज कार्य कारण कर्त्ता आ(-) ० दि जगत रूप हूए हो(,)आप की माया से मोहित म(-) ० नुष्य यह भेद नही ज़ानते ओ जो तुम निर्मल ० आकाश सा वाहर भीतर सव मे व्याप्त रहे हो अरु ० अचल असंग शुद्ध चैतन एक हौ तिन परमेश्व(-) ० र को मानुष कर मानते हैं(।) मै भी एकें तो स्त्री दूसरे ० अपढ हो तुम्हारा भेव[1] क्यूं कर पा शकूं(।) हे भक्तन व(-) ० त्सल नारायण तुम्हे अव ध्यान लगाय सैकरों ० प्रणाम करती हूं कि जहां कही मै रहूं तहां इन च(-) ० रणों की सदा मुजे उत्तम भक्ति होवे(।) इस भांति ० लछुमण समेत धनुष वाण से अति शोभित ० सकल संसार का भय हरन श्याम शरीर कमल ० लोचन रामचन्द्र की जो रतन जडित कुण्डल अ(-) ० रु कांचन वरण वस्त्र पहन कोटिन सूर्य से शोभा(-) ० यमान हो साक्षात आगे जा खड़े थे स्तुति प्रदक्षि (-) ० ण प्रणाम कर विन की आज्ञा पाय गोतम की भा(-) ० र्या निदान अपने पति के पास गयी(।) अहल्या का ० किया हूआ यह स्तोत्र जो नर प्रेम सें पढे सो सव ० पाप से छूट अन्त समय व्रह्म मे ज़ा मिले ओ राम ० को हृदय मे सुमर पुत्र के लिये एक वर्ष नित जो इ (-) ० स का पाठ करे तो वन्ध्या को भी अति श्रेष्ठ पुत्र हो(-) ० वे ओ राम कृपा से सकल मनोरथ पूजे वरन भो(-) ० ग निमित्त भाई व्राह्मण माता को भी जो वधे होऐ ० अरु चोर सुरापी सो भी नर भक्ति सें रघुपति का ० ध्यान कर नित्य जों इसे पढे तो मुक्त हो जावे अ(-) ० रु जो अपने आचार पर हैं तिन्ह की क्या बात है ० (।) इति श्रीरामचरित्रे वाल काण्डे सप्तमोध्यायः ७ (।) ० इतनी कथा सुना महादेव वोले(—)हे भवानी जव अ(-) ० हल्या निज स्वामी के ह्यां गयी तव विश्वामित्र ने राम लछुमण से कहा(—)लाल अव शीघ्र मि(-) ० थिला चलो (।) वहां राजा का महा यज्ञ देष फिर ० अयोध्या भी जाना है (।) ऐसे कह दोनों राजकु(-) ० मार कों सग लिये गंगा पार उतर भांति भां(-) ० ति के देश देषते हूए जनकपुर मे उस सभा ० मह वे जा पहुचे कि जहां देश देश के ऐक से ० एक राजवाडे[2] ओ वडे वडे ऋषि लोग पहले ० से आ आ कर ठट रहे थे (।) तव मुनि का आग ० मन सुनते ही राजा जनक वहुत हर्षाने तो तु(-) ० रत पूजा की सामग्री ले आचार्य के साथ हो ० निकट आ दण्डवत कर विधि से विन्हे पूज आ (-) ० सन पर बिठला यह वचन कहने लगे(—)महा(-) ० राज वडा भाग है जो आपका दर्शन भया अ(-) ० व अपने ज्ञान ध्यान तपस्या का कुशल क्षे (-) ० म कहिए (,) किसी वात की कुछ चिन्ता तो मन ०

---

१. भेद, २. रजवाड़े।

मे नही रहती अरु सकल विद्या पढ़ने का फ(-) ० ल ब्रह्मज्ञान है सो हो चूका (।) धन्य तुम हो कि जि(-) ० स को यहां से परलोक तक आनन्द मंगल है ० और हमे जो पूछिये तो इस संसार मे रह कर जव त(-) ० क ज्ञान शमता[1] वैराग्य ब्रह्म का वोध अरु साधु ० ने[2] के सतसंग सें हरि मे भक्ति नही हूई तव त(-) ० क कहां जी मे चैन ओ कुशल है(।) इतने मे सव ० लक्षण भरे राम लछुमण पर(,) जो ऐसे सुन्दर ० लगते थे कि मानो सब दिशा प्रकाश करते ० हूऐ दूसरे चन्द्रमा सूरय ही आय उगे होंऐ(,) दृ(-) ० ष्टि पर गयी तो निपट चकित हो पूछने लगे ० कि देव वालक अरु नर नारायण समान कि(-) ० स के ये लडके हैं जो मेरे मन को परम सुख दे(-) ० ते हैं(?) राजा जनक की इतनी वातें सुन हर्षित ० हो विश्वामित्र ऋषि वोले(—)ये दोनों भाई राजा ० दशरथ के पुत्र हैं(,) राम लछुमण इन्ह का नाम ० है मै अपना यज्ञ वचवने[3] के लिये अयोध्या सें इ(-) ० न को लाया हूं(।)वहां से पथ मे आवते हूए रघुनाथ ० ने सव को भषनेवाली[4] ताडका को मेरी आज्ञा पा(-) ० ए एक ही शर से मार डाला(,) तिस पीछे मेरे स्था(-) ० न पर आ मेरा यज्ञ विध्वंसनहार सुवाहु आदि ० राक्षसन को वध[5] मारीच को सागर मे फेंक दिया(।) ० निदान यहां आते हूऐ गंगा तीर गोतम के अ(-) ० ति पवित्र आश्रम मे अहल्या को देष नमस्का(-) ० र कर चरण से उसे छू श्राप से छोडाया (।) अव ० तुम्हारे मन्दिर मे सकल राजान से पूजित शिव ० का धनुष देषा चाहते हैं(,) तिस्से हे राजा किसी प्र(-) ० कार विसे मंगाय राम को देषा ओ(,) विलम्ब मत ० करो(,) क्यूं कि बहुत दिन भये अव अयोध्या जा पि(-) ० ता का दर्शन ये करेंगे(।) ऐसे कह फिर वोले(—)हे म(-) ० हाराज ये दोनों कुमार पूजने ही योग्य हैं(,) तुम ० अति आदर भक्ति कर श्रद्धा सें इन को पूजो (।) ० इतने वचन के सुनते ही महा आनन्द मे मगन हो ० विधि वे राम लक्ष्मण को अर्च राजा जनक ने अ(-) ० पने पुरोहित से कहा कि तुम शीघ्र जा धनुष उ (-) ० ठवा लाओ (।) ऐसे कह उसे भेज पुनि आप विश्वा (-) ० मित्र से कहने लगे कि हे महाराज(—)जों श्रीरामच(-) ० न्द्र धनुष उठा गुण चढ़ावें तो अपनी पुत्री सीता ० को मै इन्हे व्याह दूं(।) विन की यह प्रतिज्ञा सुन राम ० को मुस्कुराते देष ऋषि ने कहा कि अछा अव ० वहुत विलम्ब मत की जे(,)तुरत मंगाकर धनुष ० इन्ह को दषाईऐं[6](।)इतने मे वड़े वडे पांच सहस्त्र व(-) ० लवानों से विस धनुष को कि जिस मे अनगणि(-) ० त घूघुरू लगी थीं अरु भांति भांति के रतन जडे ० थे ओ जो अति सुन्दर वस्त्रन से लपेटा था उठ(-) ० वा लाकर पुरोहित ने राम के आगे जा रष दिया(।) ० तव सव नृपन के देषते ही झट जटा बांध काछ ० मार[7] अति हर्षा सहज ही मे रघुवर ने विस धनुष ० को वायें हाथ से उठा लिया ओ दाहिने कर से तौल ० गुण चढा कुछ एक षेंच ऐसा विसे तोडा कि विस ० का शब्द स्वर्ग मर्त्य पाताल अरु दिशा-दिशाओं ० मे जा पहुचा (।) तव अति अचरज मान आकाश मे ० आ आकर देवता सव लगे राम पर फूल वरसा(-) ० वने ओ ढोल दमामे वजा वजा स्तुति करने ओ ० अप्सरागण सव नाचने(।) तव धनुष दो खंड ० हूआ देष राजा जनक निपट जुडाने ओ श्री रघु(-) ० नायक कों गरे

१. इंद्रियों पर विजय। २. यहां 'ने' अनावश्यक है। ३. बचाने। ४. भक्षण करने वाली। ५. वध करके। ६. दिखाइए। ७. काछा भिड़कर, बद्धपरिकर होकर।

लगाय मारे आनन्द के लगे रोने ० अरु जितनी विन की रनिवांस थी सो सव अति ० विस्मित हो वहुत हर्षित भयीं (।) इतने ही मे मु (-) ० क्ता हार गरे अरु कानों मे सुवर्ण की तरकी पां (-) ० वों मह नेपुर[1] इन आदि नाना आभरण ओ (-) ० वस्त्र पहन लक्ष्मी समान वनठन दहिने हाथ ० मे कांचन की माला लिये हंसती हूई सीता सभा ० मे गयीं (।) वहां राम को जय माल पहना विसी प्र (-) ० कार फिर मन्दिर मे चली आयीं (।) तद जितनी ० रानियाँ थीं सो सव अटारीन पर चढ़ झरोषों ० से मोहन मुरति रामचन्द्र को निरषि निरषि व (-) ० डी हर्षित हूई (।) इस उपरान्त सुचित हो राजा ज (-) ० नक ने विश्वामित्र से कहा (—) महाराज अव यह ० सव समाचार चिट्ठी मे लिख तुरन्त अयोध्या ० आप भेजिए जो कुमारों को व्याहने के लिये ० स्त्री पुत्र मंत्रीन समेत राजा दशरथ अति ० शीघ्र यहां आवें (।) इन का इतना वचन सुन अ (-) ० छा कह वहुत वेग चल हार[2] दूतन को झट वु (-) ० ला पत्री दे ओं ही ऋषि ने दशरथ भूपाल के ० ह्यां भेजा (।) जव वे वहां जा पहुचे ओ श्री रामच (-) ० न्द्र का सकल शुभ वित्तान्त दशरथ को सुना ० चुके तव वे महा हर्षित हो तुरत मिथिला चल (-) ० ने के लिये मंत्रीन से कहने लगे कि तुम सव० अपने अपने लोग वाग समेत हाथी घोड़ों ० ओ पालकीयों पर चढ़ चढ़ इसी समय जनक (-) ० पुर चलो अरु मेरा रथ शीघ्र मंगा दो (,) अभी मैं ० सव साज वाज समेत प्रस्थान करूंगा अरु रा (-) ० म की माता के साथ हो निज स्त्री समेत वसि (-) ० ष्ट गुरु सव से पहले चलें (।) यिह सुन मंत्री तुर (-) ० त रथ लाया (।) तव सव को आगे कर भरत श (-) ० त्रुघ्न को ले महा सुन्दर रथ पर वैठ वड़ी सेना ० संग लिये अति धूमधाम सें राजा दशरथ ० अयोध्या से निकले तो थोड ही दिन मे जन (-) ० कपुर जा पंहुचे (।) तद समधी का आवना सु (-) ० न निपट हर्षा कर राजा जनक नाना भेंट ले ० सतानन्द पुरोहित के संग हो तुरत जा उन्ह से ० मिले ओ भांति भांति की बातें कह वडा शि (-) ० ष्टाचार करने लगे (।) इतने ही मे राम लछुमण०वहां आये तो चरण छू प्रणाम कर हाथ जो (-) ० ड पिता के आगे हो षडे भये (।) विन्हे देष परम ० सुख पा आशीस कर राजा दशरथ वोले (—) ० हे पुत्रो तुम्हारा विकसित मुख देख वहुत मैं ० हुलसित भया (।) विश्वामित्र जी के अनुग्रह ० से सव मेरा मनोरथ पूजा एँसे कह दोनों पुत्र ० को छाती लगा वार वार विन का मुह चूम रा (-) ० जा दशरथ महा हर्षित हूए ओ सव के साथ ० हो सकल भोग भरे जनकराय के मन्दिर मे ० जा उतरे (।) जव सुन्दर दिन मुहूरत आन पहु (-) ० चा तद समधी की आज्ञा पा ऋषिन समेत ० चारो पुत्रन को लिये राजा दरशथ सव कार[3] ० से शोभित विस मडवे में जा वैठे कि जहां चहुं ० दिश वन्दनेवारों से राजित चंदवे के नीचे रत्न (-) ० न के षंभन पर मानिक दीप वरते ओ मोति (-) ० नो ही के सुभग फूल फूले थे ओ सोनन्ह के ० आभरण पहने वडे वडे वैदिक व्राह्मण लोग उच्च स्वर से वेद पढ़ते ओ सुवर्ण से भूषित ० सोहागिन स्त्री सव मंगलगान गा रहीं थी ० अरु जहां अति सोहावन वाजों सहित मनो (-) ० हर गीत नाच हो रहा था तव सतानन्द पुरो (-) ० हित ने तुरत उठकर विचित्र चौके पर रतन ० जडित सोने की पीढ़े पै श्री रामचन्द्र को विठ (-) ० लाया ओ विन की वायीं दाहिनी दिश वसि (-) ० ष्ट

१. नूपुर। २. संभवतः 'चलनहार'। ३. प्रकार।

विश्वामित्र इन दोनों ऋषिन को आद (-) ० र मान सें वैठने को आसन दे विन को पूजा ० ओ मणिमय गहना पहनी हूई सीता को ० वहां मंगा विधि से अग्नि स्थापन कर व्याह ० का कर्म आरम्भ किया (।) तब रानी समेत रा (-) ० जा जनक वहां जा वैठे ओ श्री रघुनायक ० का पांव धो चरणोदक (,) जिसे व्रह्मा अरु मु (-) ० नि लोग सदा वन्दते हैं (,) माथे चढा अक्षत ० जल ले व्याह के विधान से हाथ पकड सीता ० को संकल्प ऐंसे मगन भये कि जैसें लक्ष्मी ० को विष्णु से व्याह सागर हरषाने इसी भांति ० उर्मिला नाम दूसरी निज कन्या लक्ष्मण को ० ओ श्रुत कीर्ति मांडवी नाम भाई की दो लड (-) ० कियां भरत शत्रुघ्न को राजा जनक ने दान क (-) ० र दीं (।) तिस समय पत्नी पाय राम आदि चा (-) ० रो नृप कुमार यों शोभने लगे कि मानों दूस (-) ० रे लोकपाल ही आ वैठे हैं (।) इस प्रकार से जन (-) ० क राय जद कन्या दान कर चुके तद नारद ० मुनि का कहा हूआ निज कन्या का सकल वृ (-) ० त्तान्त मंडपे ही मे विश्वामित्र से कहने लगे (—) ० हे महाराज यज्ञ के लिये मैं एक षेत जोताव (-) ० ता था वहां वीच हराई मे अचानक एक वडा ० सा घडा उखड आया तिस में जा देषा तो म (-) ० हा सुन्दरी एक कन्या जो राम को अव दी है ० चुपचाप वैठी थी (।) तव दयावश हो कलशे से ० निकाल वेटी कह ओंही विसे ला रानी को ० मैंने दिया (।) तिस उपरान्त कुछ दिन के बीतें ० वीणा वजा वजाय नारायण के उत्तम गुण गा (-) ० ते हूऐ फीरते फीरते कृपा कर नारद मुनि मे[1] ० ह्यां आन पहुचे तो प्रणाम कर वडे आदर से ० मैंने आसन पर विन को विठलाया ओ य (-) ० था उचित पूजा (।) तव उन्हो ने मुज से कहा (—) हे रा (-) ० जा सुनो (,) एक वात मैं तुम से कहने को आया ० हूं (,) पर जी ही मे रषिओ किसी को मत जनाइ (-) ० ओ (,) सो यह है कि रावण को मार निज भक्तन ० के दुख अरु देवतों के संकट हरने के लिये मा (-) ० या कर आप परमेश्वर राजा दशरथ के यहां ० राम आदि चार सरूप हो अवतरे हैं (।) विन हीं की ० योगमाया जिसे अव सीता कह पुकारते हो ० तुम्हारे घर आ उत्पन्न हूई हैं तिस्से सो उपाय ० करिओ कि जिस से यह कन्या श्री रामचन्द्र ० ही से व्याही जाये (।) ऐंसे बुझा समझा नारद ऋ (-) ० षि जद विदा भये तभी से मेरे जी मे चिन्ता उप (-) ० जी कि किस प्रकार से सीता को श्री रघुनाथ से ० अव मै व्याहूं (।) निदान शोचते शोचते ठहराया ० कि पुर नाम[2] दानव को जला मेरे दादा के घर मे ० शिव का रष्या हुआ एक वडा भारी धनुष पडा ० है (,) जो उसे उठा कर गुण चढ़ावे तिसी से जानकी ० का विवाह मैं करूं (।) यह प्रतिज्ञा कर सीता का स्व (-) ० यंवर ठाना तो कितने वीर हो हो गये पर तनि (-) ० क भी किसी से वह धनुष नही टकसा (।) सव का मान भंग हो गया (।) अव कृपा कर विसे देषा-व (-) ० ने के लिये राम को यहां आप लाये तो मेरा प्रण ० रहा ओ मनोरथ फला (।) सीता सहित एक ० आसन पर वैठ सूर्य समान शोभते हूए रघु (-) ० पति को देष अव मेरा जीवन जन्म सुफल हो ० चूका (।) इस प्रकार विश्वामित्र से कह राजा जन (-) ० क सन्मुख जा रघुनाथ की स्तुति करने लगे कि ० महाराज आपका चरणोदक लेते ही व्रह्मा ० को सृष्टि रचने की शक्ति भयी ओ दानवों का ० राजा वलि हूया अरु तुम्हारे पांव की धूर पड (-) ० ते ही स्वामी के श्राप

१. मेरे होना चाहिए। २. पुर नामक।

से छूट अहल्या तुरत ही ० मुक्त हो गयी (।) तुम से अधिक सुखदाय दुखह(-) ० र्ता दूसरा कौन है(।) तिस्से हे कृपानिधान जिन(-) ० के चरणों मे प्रीति कर मृत्यु सहित संसार का क(-) ० ष्ट योगी लोग जीत लेते हैं ओ जिन्ह का ना(-) ० म जपने ही से देवताओं की सकल पीर नशा(-) ० ती है (,) तिन्ही की शरण मे सदा मै रहा करूं (।) ० ऐसे कह दश सहस्र हाथी ओ रथ एक लाष ० चढयते(,)[१] करोर लोग(,) तीन सौ दासी(,) भांति भां(-) ० ति के कपडे(,) असंख्य रुपै(,) वर्त्तन और मुक्ता ० आदि रतन जडित एक से एक अधिक मोल(-) ० के सोनन्ह के अनेक हार प्रीति से दान दक्षि(-) ० णा दे यथा उचित मिल भेट अति हर्षित कर ० कन्या वर समेत राजा दशरथ को ओ वडी श्र(-) ० द्धा से बहुत पूज सन्मान कर वसिष्ट आदि ऋ(-) ० षिन को जनकराय ने विदा किया (।) तिस ० समय रोती हुई सीता को गरे लगाय लगाय विलप ० विलप माता सहित सव रानिवांस यह वात शि(-) ० षलाने लगी कि हे धिया भलीभांति से शास(-) ० शशुर ओ पति इन सवों की नित सेवा टहल क (-) ० रियो अरु हे वहन स्वामी से दिन दिन उत्तम ० प्रीति कीजो(,) तुम्हे वहुत सुख होगा(।) इसी प्रका(-) ० र उर्मिला आदि तीनों कन्याओं कों भी सव ० रानियों ने शिषला पढ़ा दिया (।) जव साजवाज ० वरात चल खडी भयी तव वर्ण वर्ण के वाजे ल(-) ० गे वाजने अरु ब्राह्मण लोग वेदधुनि करने(।) ० तिस वेरियां ऐसी शोभा हूई कि देष देष सुर न(-) ० र मुनि सव चकृत हो गये(।) इति श्री राम चरि(-) ० त्रे वाल काण्डे सप्तमोध्याय: ७[२] (।) इस प्रकार दु (-) ० लहा दुल्हिन को लिये जद मिथिला से वारह को(-) ० श राजा दशरथ वढ आये तद वहां कुछ वडा ० सा अस गुण देष निपट घवरा वशिष्ट के पास ० जा नम्र हो पूछने लगे (—) महाराज जहां मै ताक(-) ० ता हूं तहां उत्पात ही का योग लष पडता है(,) क्या ० होगा कुछ समझा नही जाता(।) आप इसका ० भेद वुझा कर कहिए जो मेरे मन का सन्देह ० जाये(।) उन्हने उत्तर दिया कि यह तो सव भय ० ही का लक्षण है पर निदान तुम्हारा कल्याण ० है क्यूं कि मंगल जनावनहारे मृग सव दहि(-) ० ने हो चले जाते हैं(।) यह कहते ही है कि एक ऐं(-) ० सी आंधी आई कि जिस मे मारे धूर के सव ० की आंखें भर गयीं(।) इतने ही मे नील मेघ स(-) ० मान सुभग ओ अति सुन्दर जटा वान्धे मंजी(-) ० ठ का रंगा हूआ कपड़ा पहने तूणी[३] कांधे ल(-) ० टकाये धनुष परसा हाथों मे लिये कार्त्तवी(-) ० र्य्य आदि दुष्ट क्षत्रियों को मार विध्वंस[४] साक्षा(-) ० त यम स्वरूप पवन[५] महाप्रतापी परशुराम दश(-) ० रथ के आगे वाट रोक अचानक आ षडे भये (।) ० विन को देषते ही राजा थरथर लगे कापने तो ० शिष्टाचार की सुधि भूल हाथ जोड त्राहि त्रा(-) ० हि कह दण्डवत कर यह वचन कहने लगे(—) दीन ० दयाल अव तो मेरे पुत्र कों प्राणदान कीजे(,) ० इक्कीश वेर इस पृथ्वी को आप निछत्री कर ० चूके(,) तुम्हारा तेज सगरे संसार मे वरता[६] है(।) इस ० प्रकार आरत हो राजा दशरथ वषानते ही र(-) ० है पै परशुराम ने विन की वातों का कुछ आद (-) ० र न किया(,) उलटे ही क्रोध से लाल लाल आं(-) ० षें कर श्री रामचन्द्र कों कडी कडी वैन सुनाने०

१. चढ़ावा। २. इसे वस्तुतः। 'अष्टमोध्यायः ८' होना चाहिए। ३. तूणीर। ४. ध्वंस कर। ५. पावन(?) ६. बलता है, प्रकाशमान् है।

लगे कि रे क्षत्रियों मे अधम तू मेरा नाम ध(-) ० रा वीर वना फीरता है(,) जो निरा छत्री है तो आ ० मेरे साथ हो लडाई कर (।) निपट सरा[1] ओ कित (-) ० ने एक दिन का पुराणा हूआ शिव चाप तो(-) ० ड वृथा शूर कहाता चलता है(,) वह तो आपे घु (-) ० न रहा था(,) विस मे पुरुषारथ क्या है(,) भला विष्णु ० के दिये हूए इस धनुष पर जों तू गुण चढ़ावे तो ० रघुवंशी जान तुज से मै लडूं(,) नही तो इसी पर(-) ० से[2] सें अभी मै तेरा शिर भुट्टा सा उडा दूंगा(।) स(-) ० कल क्षत्रियों को विनाशने के लिये मै ही उत्प(-) ० न्न हूआ हूं(,) तू मुझे नही पहचानता जो इत(-) ० नी ढिठाई किये चला जाता है(।) इस भांति गर्ज ० गर्ज परशुराम ने जव कहा तव पृथ्वी लगी ० कांपने अरु दशो दिशा के दिग्पाल थरथ(-) ० राने ओ चहुं दिश सें ऐसा अंधेरा हो आया ० कि सव कोइ को ठीक प्रलय का सकल योग ० आ लगा(,) किसी के मुह से कुछ वात न निकली (,) सव की चौकडी वंद हो गयी(,) निदान रा(-) ० मचन्द्र से रहा न गया तो रिसिया के झट विन(-) ० के हाथ से धनुष छीन वल से गुण चढा वाण ० विस पर रख कान तक षेंच यह वचन वोल उठे ० कि सुनो व्राह्मण देवता मुज से धनुष उठवा ० ना कुछ ठट्टा नही है(,) यह समझ मेरी आज्ञां ० से शीघ्र मुझे लक्ष्य वताओ(,) परलोक मे जो तु(-) ० म्हे सुख भोगना है विस पर कै इहां तीर्थों मैं[3] ० तो तुम्हें जाने का सामर्थ्य है विस पर इस अचू(-) ० क सर कों मै छोडूं क्यूं कि मेरा शस्त्र कधी नि(-) ० स्फल होने का नही(।) श्री रघुनाथ की इतनी ० वात के सुनते ही परशुराम का मुह काला ० ओ चुकिया सा हो गया तो चेत कर आगे का ० वृत्तान्त सुमर निपट लजा अहंकार तज य(-) ० ह वचन कहने लगे(—)हे राम महावली पुराण पु(-) ० रुष परमेश्वर आप को अब मैंने पहचाना तु(-) ० म्ही संसार की उत्पत्ति पालन प्रलय करन(-) ० हारे हो(,) मेरा अपराध क्षमा करिये(,) ऐंसे अने ० क प्रकार विनती कर परचय दिया कि हे महा ० राज एक वेर तपस्या से विष्णु को प्रसन्न करने ० के लिये लडकपन मे हठ चक्र नाम तीरथ ० पर मै गया वहां मन लगा नित तप कर ऐसा ० हरि को सन्तुष्ट किया कि वे शंख चक्र गदाधारी ० परमात्मा प्रसन्न हो मेरे पास आये ओ विहंस ० विहंस यह वचन कहने लगे कि लो उठो व्राह्म(-) ० ण जिस कारण इतना परिश्रम करते हो सो ० तुम्हारा मनोरथ फला(,) जाओ मेरा तेज पाय ० पहले हैहय वंशी कार्त्तवीर्य को जिसने तुम्हा(-) ० रे पिता को वधा तुरत जा मारो तिस पीछे इक्की(-) ० शवार निछत्री कर सारी पृथ्वी कश्यप को दे ० निश्चिन्त हो गाजो[4] (।) मै त्रेता युग मे दरशथ के ० यहां वडा पराक्रमी उपज राम नाम धराऊंगा ० तव मुजे फिर देषोगे अरु तधी अपना दिया ० हूआ तेज तुम से मै ले लूंगा तद इसी भाँ[5] संसा(-) ० र मे पुन महा उग्र तप किया करिओ ऐसे वुझा ० समझा निज प्रताप मुजे दे भगवाने के अ(-) ० न्तरधान भये पर सव काज मै कर चूका(,)अव ० मुझे सूर्त्त[6] हूई है कि व्रह्मा की प्रार्थना से वे ही ० परमेश्वर आप राम रूप हो अवतर हो अरु आगे ० का दिया हूआ नि[7] तेज मुज से हर लिये हो हे कृ(-) ० पा निधान विस नारायण का कि जिस का जन(-) ० म मरन हानि वृद्धि आति[8] नही होते अरु जो ० माया से अलग

१. सड़ा। २. फरसे। ३. में। ४. गाजो, आनंद मनाओ। ५. भाँति। ६. स्मृति। ७. निज। ८. आदि।

अचल पूरण ब्रह्म है ओ जि(-) ० स का दर्शन शिव ब्रह्मादि को भी दुर्लभ है पा क(-) ० र मेरा जन्म सुफल हो चूका(,) महाराज जव तक ० तुम्हारे चरणों के भक्तन का ऐसा सुख नही मी(-) ० लता तभी तक संसार का दुख भोगने मे आता ० है अरु जद साधुन के संग से भक्ति या तुम्हे पूजे ० तधी धीरें धीरें माया नाशती है ओ उत्तम ज्ञा(-) ० न वता वन हार सद्गुरु कि जिस के प्रताप से तुर(-) ० त ही मुक्ति होती है पाते हैं तिस्से हे कृपा निधा(-) ० न आप के पावों की भक्ति अरु संतों से संग कि ० जिन से माया निकट न आवे सदा ही मुजे होऐ ० ओ हे भक्त वत्सल करुणा वतार रामचन्द्र मैं तु(-) ० म को वार वार प्रणाम करता हूं इस लिये कि लो(-) ० गन को जीतने के निमित्त जो जो पुण्य मैने कि(-) ० ये है तिन्ही पर इस वाण को आप छोडिये (।) इतने ० वचन के सुनते ही निपट ठंढे हो श्री रघुनाथ जी० वोले(—)अछा अव मैं तुमसे वहुत सन्तुष्ट भया० जो तुम्हारे जी मे होए सो वर मुझ से मांगो(।) पर(-) ० शुराम ने विनती की(—)दीन दयाल इतना अनु ० ग्रह जों करते हो तो आप के चरण सदा मेरे म(-) ० न मे वसे ओ जो मनुष्य इस स्तोत्र को पढे ति(-) ० से ज्ञान अरु मरण समय तुम्हारा स्मरण हो(-) ० वे(।) निदान राम ने जव इस बात को माना तव वि(-) ० न्हे प्रदक्षिण प्रणाम कर विन की आज्ञा पा वि(-) ० दा हो परशुराम महेन्द्र नाम पहाड़ पर तप कर(-) ० ने को गया(,)विस के वहां से निकलते ही राजा द(-) ० शरथ महा हर्षित भये(,) तव रामचन्द्र को मानो ० यम लोक से फिर आया जान वार वार गरे ल(-) ० गाय ऐसे हर्षित हूऐ कि आंषन मे आंशू भर ० लाये(।) जद निचिन्त हो सव को लिये अयोध्या मे आन पहुंचे तद देवता समान चारे[1] विन के० पुत्र निज मन्दिर मे अपनी अपनी स्त्री समे(-) ० त आनन्द विहार करने लगे तिन मे माता पि (-) ० ता को हर्षित कर सीता के साथ रघुवर तो यों ल(-) ० गे विलसने जैसें लक्ष्मी को लिये वैकुण्ठ घ(-) ० र मे नारायण होवें(,) इस अनन्तर भरत का निज ० राज्य पर ले जाने के हेतु युवाजित नाम केकयी ० का भाई वहां आया तव वडा आदर मान कर रा(-) ० जा दशरथ ने युवाजित को अपने पास रष्षा(,) ० फिर कुछ दिन के वीतें भरत शत्रुघ्न को वुला ० अछी अछी बातें शिषला विस के संग विदा क ० र दिया इस प्रकार तीनों क[2] के नायक अरु सकल० असुरन को विनाशन हारे आनन्द मूरति प(-) ० रमेश्वर कि जिन का जनम मरण नही होता ० अरु जिन की प्रभुता का अन्त नही मीलता ० माया फयलाय राम रूप हो सीता को ले अव(-) ० धपुरी मे रह मानुष की चाल चलते(।) इती श्री ० रामचरित्रे वाल काण्डे अष्टमोध्याय:[3] समाप्त:(।) ० महादेव कहते हैं कि हे पारवती इस अनंतर किसी दिन निज मन्दिर मे रत्न के सिंहासन प(-) ० र सव आभरण पहने नील कमल से श्याम ० शरीर श्री रामचन्द्र जी बैठे थे ओ रतन की डंटी ० वाला चौंर डोला डोला आपस मे कौतुक व(-) ० ढा पान के वीडे लगा लगा सीता उन्ह को देती ० थीं(।) इतने मे शरत काल के चन्द्रमा समान०निरमल मूरति नारद ऋषि अचानक वहां ०आंन पहुचे(।) उन्हे दूर से देषते ही जानकी समे(-) ० त रघुनायक तुरंत उठ खड़े भये और शिर झु(-) ० काय प्रणाम

१. चारों। २. मूल पुस्तक के ऊपर छूट के चिन्ह-विशेष के साथ जो 'लो' अंकित है, वह यहां होगा। २. नवमोध्यायः।

कर कुशल क्षेम पूछ आसन पर वि(-) ० ठला प्यार कर यह वचन कहने लगे (—) महाराज दि(-) ० न रात विषय मे गडे हूएं मुज से संसारिकन को तु(-) ० म्हारा दर्शन वहुत दुर्लभ है पर मै अगले जन(-) ० म मे कुछ वड़ा ही सा पुण्य किया है कि जिस से मु(-) ० झ को आप का सत्संग आज हूआ(,) देषिये साधु(-) ० न के साथ ही से सिद्ध चारण गुह्यक गंधर्व दैत्य रा(-) ० क्षस आदि ओ अनेक मुनि लोग सहज मे सं(-) ० सार सागर पार उतर गये मै भी तुम्हारे दर्शन से ० अव कृतारथ हूआ(,) ऐसें कह फिर वोले (—) कहिए दी(-) ० न दयाल किस कारण यहां आवना हूआ सो मै ० आप की टहल करूँ(।) रघुनन्दन की इतनी वातें सु(-) ० न नारद जी वोले (—) धर्मावतार लोकाचार की वा(-) ० तों से क्यूं मुजको भरमाइये है ओ मै संसारिक हूं ० यह जो तुम ने कहा सो सच है क्यूं कि जगत की आ(-) ० दि माया आप की स्त्री है कि जो तुम्हारे निकट ० रह शिव व्रह्मादिक सरूप भांति भांति की प्रजा उपजाया किया करती है ओ तीनो लोक रूप ० महा घरम रमे[1] रहते हो(,) इस्से पक्के गृहस्थ वने ० हो(,) तुम ही व्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र चान्द सूरय ० अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुवेर आदि स(-) ० कल पुरुष हूए हो अरु सरस्वती लक्ष्मी भवाणी ० इन्द्राणी प्रभा स्वाहा संयमनी तामसी भार्गवी गति ० सम्पति नाम आदि जितनी उन्हो की स्त्रीयां हैं ० सोई नाना रूप सीता भयीं है(।) तीनों लोक मे तु(-) ० म विन दूसरा कोई नहीं दृष्ट आता है चर अच(-) ० र अनेक रूप जगत तुम ही से उपज निदान तु(-) ० म्हारे ही मे मिल जाता है(।) हे महाराज मै आप ० के भक्तन के भक्तों का दास हूं यह विचार मुझ ० को मत भरमाइए क्यूं कि जो व्रह्मा मेरे पिता हैं सो ० तुम्हारे नाभि कमल से उत्पन्न हुए हैं(,) इस ना(-) ० ते से मै आप का पोता लगता हूं(,) दया कर मुज ० को पालिये ऐसे कह बहुत प्रणाम कर मारे आ(-) ० नन्द के सजल नयन हो फिर ऋषि यह वचन ० कहने लगे (—) हे कृपा निधान तुम्हारे निकट व्र(-) ० ह्मा ने मुज को इस लिये भेजा है कि रावण को ० मारने के हेतु रघुकुल मे आप ने जनम लिया ० है और अव प्रजा की रक्षा के निमित्त राजा द(-) ० शरथ तुम्हें राज का तिलक देंगे पर राज का(-) ० ज मे लिपटा जों रावण को न हनोगे तो पृथ्वी का ० भार मिटाने की तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठ हो जाय(-) ० गी तिस्से जिस मे आप का प्रण रहे सो काज ० कीजे(।) नारद की इतनी वातें सुन श्री रामचन्द्र ० वोले (—) सुनो महाराज मै वह वात भूला नही जो ० प्रतिज्ञा की है सो अवश्य करूंगा पर अवस(-) ० र पाकर के ओ जव तक उन्हो का भोग न हो चूके(-) ० गा क्रम क्रम सव असुरन को मार पृथ्वी का ० वोझ उतारूंगा वरन इस कारण कल्ही मै ० दण्डकारण्य मे जाऊंगा अरु मुनि का वेष धर ० चौदह वर्ष वहां रह सीता के छल से कुल परिवा(-) ० र समेत रावण को वधूंगा(।) व्रह्मा को जा कहिऐ ० कि आप निश्चिन्त हो विराजिए(।) इस भांति राम ० की वातें सुन नारद मुनि वहुत प्रसन्न भये त(-) ० व तीन वार परिक्रमा दे प्रणाम कर विन की आ(-) ० ज्ञा पाय विदा हो व्रह्म लोक को गये(।) मुनि रघु(-) ० पति का यह संवाद प्रेम से जो नर सुने सुनावे ० सो तुरत मुक्त हो देवताओं कों भी अति दुर्ल(-) ० भ वैकुण्ठ मे जा गाजे(।) इति श्री रामचरित्रे अ(-) ० योध्या कांडे प्रथमोध्यायः (।)

---

१. भरमे।

इतनी कथा कह ० फिर महादेव वोले कि नारद मुनि के जाते ही रा(-) ० जा दशरथ एकान्त मे जा वैठे थे सो अपने कुल ० के आचार्य वशिष्ठ गुरु को वुलाकर कहने ल(-) ० गे(—) महाराज इस नगर के लोगन समेत वडे ० वडे महाजन ओ विशेष मेरे पुराणे मंत्री सव ० वार-वार राम की वहुत वडाई करते हैं तिस्से स(-) ० व गुण भरे कमल नयन श्री रामचन्द्र को क(-) ० ल्ह मै राज्य का तिलक दिया चाहता हूं क्यूं कि ० निपट वृद्ध मैं हूआ फिर क्या जानूं आगे कैसा ० होगा(,) इस समय शत्रुघ्न सहित भरत अपने ० नाना को देषने गये हैं(,) सव प्रकार यह अव स(-) ० र अछा है इस्से हर्षित हो जो जो सामग्री चा(-) ० हिए सो सो तुरंत आप मंगाइए ओ राम को ० जा जनाइये कि आज नेम आचार से रहें ओ ० चहुं दिश वर्ण वर्ण के ध्वजा पताका खडा करा ० मोतिन की लडीन से अति विचित्र वन्दनेवा(-) ० र द्वारों पर टंगाइऐ(।)इस भांति आचार्य को वु(-) ० झा समझा पुन सुमंत्र नाम मंत्री से कहा कि ० सुनो जो जो आज्ञा वशिष्ट मुनि करें सो सव ०सावधान हो तुम करो(।) होत सवेरे रघुनाथ को ० मै राज्य पर विठलाऊंगा(।) इतने वचन के सुनते ० ही महा हर्षित हो विस ने मुनि से कहा कि स्वामी०मै तो तुम्हारा दास हूं(,) जो जो वस्तु चाहिए सो सो शी(-) ० घ्र आप मुजे सुनाइए(।) वसिष्ट मुनि वोले वडे तड(-) ० के सोने के भूषण पहन सव सिंगार पटार कर वि(-) ० चली डेवढी मे आ सोरह कन्या नाना मंगलचार ० करें ओ सुवर्ण रत्न से शोभित ऐरावत कुल ० के चौदह चौदह वर्ष के हाथीयां ये[1] वहां आवें औ ० सकल तीरथों के जलों से भरे हूए कांचन के स(-) ० हस्र कलश वाद्य के तीन ठो चाम मुक्ता मणि वि(-) ० राजित सोने की डंटी के छत्र एक से एक अधिक ० मोल के कपडे गहने अरु फूलों की अनेक मा(-) ० ला यह सव सामग्री अभी से मंगा मंगा रष्षो ० ओ वेद के पढनहारे वडे वडे मुनि लोग हाथन ० मे कुश लिये रहें नाना वाजा वजा वजा गावने ० वालों के साथ हो भली भांति से वन ठन वेश्या सव ० राजा के मन्दिर में आ महा महोत्सव मचावें ओ हा(-) ० थी घोडों रथों समेत शस्त्र धारी अनेक लोग ये स(-) ० व गढ के द्वार पर जा खड़े रहें ओ सगरे नगर मे ० जितने देवताओं के मन्दिर हैं तिन मे भांति भांति ० की पूजा पाठ होवे ओ नाना भेट लिये राजा लो(-) ० ग शीघ्र यहां आन पहुंचें(।) इस प्रकार मंत्री को शि(-) ० षा पढा रथ पर आप चढ वसिष्ट मुनि राम के पास ० चले(।) जव तीन डेवढी हेल गये तव गाडी से उतर भूं(-) ० ये हो[2] धीरें धीरें भीतर को धसे(।) आचार्य जान कि(-) ० सी ने कुछ रोक टोक विन को न किया तुरत रामच(-) ० न्द्र के निकट चले आये(।) गुरु को आते देष दशरथ ० के लाल झट उठ खडे भये तो शिर झुका विन को ० दंडवत कर अति आदर से सिंहासन पर विठ(-) ० ला सीता से सोने की झारी मे जल मंगा उन के ० पांव धो माथे चढा जानकी सहित यह वचन क(-)० हने लगे कि आप के चरणोदक शिर चढा अव हम कृ(-) ० तार्थ हूऐ(।) यिह सुन हंस के वशिष्ट जी वोले तुम्हा(-) ० रा चरणोदक लेते ही महादेव सनाथ भये अरु मे(-) ० रे पिता जो ब्रह्मा कहाते हैं आप के पांव रूप तीरथ ० के जल से वडी पदवी को पहुचे(।) अव जो मुझ से ० ऐसा कहते हो तो लोगन को एक नीति शिषला(-) ० ते हो यद्यपि मै जानता हूं तुम मनुष्य नहीं परमे ०

१. हाथियां ये। २. पैदल।

ईश्वर हौ देवताओं के कार्य निमित्त भक्तन को भ(-) ० क्ति होने के लिये ओ रावण को मारणे के हेतु ल(-) ० क्ष्मी समेत आ अवतरे हो तो भी यह गुप्त वात०किसी से प्रकाश नहीं कर शक्ता हूं (।) हे महारा(-) ० ज तुम गुरुन के गुरू हो ओ देवता पितरों के पि(-) ० तामह अरु सव के अन्तर यामी परमेश्वर हौ(।) ० अपने मन से सात्विक देह धर माया फयला(-) ० य मनुष्य से लगते हो(।) को तुम्हारी अपरमपा(-) ० र गति जान शके(।) ऐसे कह फिर वोले (—) हे दीनद(-) ० याल यह पुरोहिताई कार्य निपट निषिद्ध है मै कधी ० मानता न था पर व्रह्मा ने मुझसे कहा कि इक्ष्वाकु ० के कुल में ईश्वर जनम लेंगे तुम विन का आचार्यी०वृत्ति स्वीकार करो(,) इसमें तुम्हारा वहुत भला है(,) ० तिस्से यद्यपि जजमानिका कर्म करना वुरा है पै ० तुम्हारा पुरोहित कहावने की आश से मैंने मा(-) ० न लिया अव मेरा मनोरथ फला पर देषिओ गु(-) ० रु का उद्धार जों कुछ चाहते हो तो सव को मोहन (-) ० हारी माया जो सदा आपकी वश मे रहती है जिसमे ० मुजे न मोहे सो उपाय तुम करना(।)यह सव प्रसंग ० पाकर कहा है आप किसी वात की चिन्ता न की ० जे मै दूसरे को न जनाऊंगा यों कह निदान खूले ० कि कल्ह तुम्हे राज्य का तिल' होगा(।) यही वात सु(-) ० नावने के लिये राजा दशरथ ने मुझको भेजा है(,) ० सीता सहित आज तुम विधि से उपवास व्रत क(-) ० रो ओ जितेन्द्रिय हो नेम आचार सें रह पृथ्वी ही ० पर शोना(।) यही जनावने के लिये मैं आया(,) अव ० राजा के पास जाता हूं(।) तुम वडे प्रभात ही आइ(-) ० ओ ऐसे वुझा समझा रथ पर चढ़ जव वसिष्ट मु(-) ० नि गये तव श्री रामचन्द्र विहंस विहंस लछुमण ० से कहने लगे(—)सुनो भैया कल्ह जों मुजको तिलक ० तो कहने का राजा मै हूंगा नाना भोग विला(-) ० श समेत सव तो काम काज तुम ही करोगे क्यूंकि ० मै तुम्हे प्राण समान मानता हूं(।) इस वात मे कधी ० सन्देह मत करो(।) इस भांति भाई को वहुत आसा(-) ० भरोसा दे निपट सन्तुष्ट कर गुरुका यथा भाषि(-) ० त संयम से आप रघुनायक रहे अरु वहां दशर(-) ० थके पास जद वशिष्ट मुनि जा पहुंचे ओ आपस ० मे राम को राज्य देने की चर्चा करने लगे तधी नग(-) ० र के किसी मनुष्य ने सुन के ओंही कौशल्या अरु ० सुमित्रा के समीप जा रघुवर को राज्य पर विठला(-) ० ने की वात जनाई(,) तव सुत का उदय सुनती ही नि(-) ० पट हर्षा कर दोनों रानियों ने सोने के आभरण वि(-) ० स को निछावर दिये अरु पुत्र कार्य के लिये कौश(-) ० ल्या तो तुरत लक्ष्मी ओ दुर्गा देवी कों पूजने लगीं(—) ० इस चिन्ता से अकुला करके कि राजा दशरथ ० हैं तो सत्यवादी(,) जो कहते हैं सो अवश्य निवाहते ० हैं(,) पर कामातुर हो सदा कैकेयी के वस रहते हैं(,) इ(-) ० स्से ऐसा न होए कि वात कहके विचल जांए (।) इत (-) ० ने मे देवताओं ने सरस्वती से कहा कि हे देवी व्रह्मा ० की वात रखने के लिये तुम शीघ्र अयोध्या मे जा ० पहले मन्थरा की मति फेरो तिस पीछे कैकेयी ० को छल राम के तिलक मे विघ्न करा तुरत स्वर्ग प(-) ० र चली आओ(,) इसमे हमारा वडा कल्याण होता ० है (।) यिह सुन पहले तो वह वहुत रिसियानी कि तु(-)० म सवनिपट क्रूर हो(,) पर का भला नही देष शक्ते(।) ० पर वडों का कहा टाल न शकी(,)

१. तिलक

ओं ही तुरत उठ२ खडी भयी तो जाते ही केकयी की लौडी मन्थरा की ० जो तीन जगह से टेन्ही ओ महाकुवरी थी ऐसी बु(-) ० द्धि हरली कि वह झट अटारी पर जा देषे तो चहुं ० दिश नगर महासोहावन हो रहा है(,) घर घर ध्वाजा ० फहराती है(,) भांति भांति के वन्दनेवारों से द्वारों की ० शोभा अति अद्भुत वनी है(,) सव ठांव गली गली ० कुंचों कुंचों मे लोग पानी छिडकते हैं(;) ऐसा उत्स(-) ० व हो रहा है कि जिस का कुछ वषान ही[1] किया जा(-) ० ता(।) तव वहुत चकित हो नीचे उतर धाय से लगी ० पूछने(—)अरे दायी सुन तो आज क्या है कि नगर ० मे वड़ी धूमधाम हो रही है ओ अति हर्षित हो ० कौशल्या किस लिये व्राह्मणों को कपडे रुपै लु(-) ० टावती हैं इसका भेव तू मुझे समझा कर कह ० जो मेरे मन का सन्देह जाये(।) वोली कल्ह राम को ० राज्य का तिलक होगा इस कारण सिगरे नगर ० का सिंगार होता है(।) ओ मारे आनन्द के लोग उ(-) ० छलते फीरते हैं(।) सुनती ही मन्थरा वहुत उदा(-) ० स हूई तो कहीं एकान्त मे केकयी पलंग पर लेट(-) ० ती थी तहां जा कहने लगी (—)ए दैमारी क्या निर्चि(-) ० त हो सो रही हो उठो वडा कुयोग आ लगा तु(-) ० म सदा रूप ही के घमंड मे रहती हो कुछ आगां पा(-) ० छा नही शोचती हो(,) राजा की कृपा से कल्ह राम ० को राज्य मिलेगा सव प्रकार अव तुम्हारी हानि ० है(।) इतने वचन के सुनती ही हडवडाकर कैकेयी ० उठ वैठी तो अति प्रसन्न हो रतन जडित अन(-) ० मोल सोने का नेपुर उतार शीघ्र उसको दे डाला ० ओ कहा कि ऐ निगोडी तू इस महाहर्ष मे क्या ० अमंगल वोलती है(,) मै तो भरत से भी अधिक ० रामचन्द्र को प्यार करती हूं अरु वे भी कौशल्या ० के समान ही मुजको मानते हैं(,) तुझे राम से क्या ० इतना लाग है जो उनका भला सुन के अकुला ० ती है सो मुझे वता(।) केकयी की इतनी वातें सुन ० अति दुख पा मुह फुलाय मन्थरा लगी कहने सु(-) ० नो रानी मुज को यिह अछा अछा नहीं लगता है कि रा ० जा दशरथ कामवश हो झूठ मुठ मीठी मीठी ० वातें कह उपर से तो ऐसा तुम्हे प्यार करते हैं ० कि जिसमे निदान दुख भरा है अरु भीतर से ० जिसमे कौशल्या का भला होए सोई कार्य क(-) ० रते हैं(।) जों यह वात असत्य है तो तुमही कहो ० शत्रुघ्न सहित भरत को नानीहार भेज करके ० राम को क्यूं राज्य पर विठलाते हैं(।) इसमे कुछ ० मेरा अकाज नही राम राजा होए कै भरत मु(-) ० झे क्या लौडी छोड मै रानी थोड़े ही हूंगी पर ० तुम्हारा अन्न खाती हूं इस कारण मुझसे ० अनीति नही देषी जाती अरु सुमित्रा को ० जों पूछो तो उनको इसमे वडा आनन्द है क्यूं(-) ० कि राम की सेवा मे सदा लछुमण रहते हैं वे ० तो यह चाहती ही हैं पर तुम्हारे पुत्र को अ(-) ० व राम का दास ही होना होगा नही तो यह जा ० न लो कि इस वस्ती से भरत को राम निकाल दे(-) ० गा कै तुरत मार डालेगा और कौशल्या के आ(-) ० गे लौंडी सी नित हाथ जोरें तुम रहोगी तनिक ० न आदर होगा(।) इस भांति सवति[2] की वश मे रह ० ने से वरन[3] मृत्यु अछा है जीना भला नही(,) तिस्से ० यही विचार है कि भरत को राज्य राम को चौदह व(-) ० र्ष वनवास जिसमे होवे सो उपाय शीघ्र तुम करो(।) ० इसमे प्रजा लोग भरत के वश मे हो जायेंगे फि(-) ० र चौदह वर्ष वीते जों राम आवेहीगा तो

१. संभवतः 'नहीं'। २. सौत। ३. बल्कि।

क्या ० उससे हो शकेगा यिह मेरा कहा हित समझो तो उ(-) ० ठो इसका यत्न करो(,) अभी अवसर है न[1] पीछे शि(-) ० र दे मारोगी तो भी कुछ होने का नहीं(।) यों कह फि(-) ० र वोली(—)इसका उपाय आगे से मैंने ठहरा रष्षा ० है सो मुज से सुन लो कि आगे देवताओं दानवों ० से जद वडी लडाई लगी तद सहायता के लिये इ(-) ० न्द्र की विनती से धनुष वाण ले तुम समेत रथ प(-) ० र चढ सैन्य लिये तुरत संग्राम पर जा राजा दशरथ ० लगे राक्षसों से युद्ध करने(,) इतने मे रथकी धूरी टू ० ट गयी पर राजा ने नही जाना तव साहस कर प(-) ० ति का प्राण बचाने के हेतु पहिए के छेद मे तुमने ० अपना हाथ डाल ओंही उसको पकड रष्षा जव ० सव दैत्यन को मार विघ्वंस दशरथ सुचित भये ० तव तुम्हारी करतूति देष अति अचरज मान तु(-) ० म्हे गरे लगा यह वचन कहने लगे हे रानी मै तुम ० से वहुत प्रसन्न भया जो चाहती हो सो मुज से मां(-) ० गो इसका पलटा दो गुणा मै दूंगा(।) तुमने उत्तर दि(-) ० या महाराज अभी यह दोनों वर थाती से आप ० ही के पास रहें जव मुझको काम होगा तव मै ले ० लूंगी(।) निदान हर्षित हो अछा कह पृथ्वीपति ० अपने घर आये (।) यह वृत्तान्त तुम्हारे ही मुह से ० मैंने सुना था अभी मुजे सुर्त्त आयी है तिस्से नि ० ज देह के सव आभरण अव तुम फेंक दो ओ मै (-) ० ला कपडा पहन अटवाट[2](-)खटवाट ले कोप भ(-) ० वन मे जा भूआं ही[3] चुपचाप सो रहो(।) जव मनाव(-) ० ने को राजा जायें तव भरत को राज्य राम को वन(-) ० वास यही तुम मांगियो (।) उनको देते ही वन आवे(-) ० गा[4] क्यूंकि दो वर देने को आगे स्वीकार कर चूके ० हैं(।) इस भांति जव कुवडी ने कहा तव विसकी वा(-) ० त हित मान निपट हर्षा कर केकयी वोल उठी(—)अ(-) ० रे मन्थरा यह कहां से तुजे बुद्धि हूई मै तो तुझे व(-) ० हुत भोली सी समझती थी पर आज जाना कि ० तुज सा बुद्धि सागर हितू दूसरा कोई नही मेरा है(,) ० सुन जों किसी प्रकार भरत को राज्य होगा तो चून ० चून के शौ गाव मैं तुझे दूंगी ओ सदा प्राण समा ० न मानूंगी यों कह रोसवढा वुस दासी सहित केक(-) ० यी वहां से तुरत कोपभवन मे गयी वहां सव गह(-) ० ने छितराय मैला वस्त्र पहन धरती पर शो रही ० ओ मंथरा से कहने लगी(—)सुन प्यारी यह जान ले ० कि जव तक वन मे राम न जायेंगे तव तलक पृ(-) ० थ्वी हू[5] पर मै पडी रहूंगी नही तो प्राण ही तज दूंगी(।) ० मंथरा बोली ऐसें ही ठानों इसी मे तुम्हारा कल्याण ० है(।) इस भांति आपस मे वतरा कुवडी तो विदा हो ० अपने घर को गयी रानी भी ओंही भूमि पर लेट ० रही(।) महादेव कहते है(—)देषो पारवती कैसा ही को(-) ० ई गुण वान दयालु होए ओ सकल विद्या पढ ० नीति ही पर चले तो भी दुष्टन के संग पाय वे भी वि(-) ० गड जाते हैं(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकांडे ० द्वितीयोध्यायः२(।) इतने मे रामचन्द्र को तिलक ० देने के हेतु मंत्री सहित सव अपने लोगन को स(-) ० कल वस्तु इकठे करने की आज्ञा दे अति हुलसि(-) ० त हो राजा दशरथ मन्दिर मे गये वहां केकयी को ० न देष निपट व्याकुल हो सोचने लगे कि जो आ(-) ० गे मुझको देषती ही हंसती हूई शीघ्र मेरे निक(-) ० ट आन

---

१. नहीं तो। २. हठ या क्रोध के कारण स्त्रियों का काम-धंधा छोड़ देना; तुलनीय,—खटपाटी लेना। ३. पृथ्वी पर। ४. देना ही पड़ेगा। ५. ही।

पहुचती थीं सो प्राण प्यारी आज कहां ० उढ गयीं(।) ऐसे वहुत कह निदान दासीन से पूछ(-)० ने लगे कि रानी जी कहां है(।) उन्होंने उत्तर दिया ० कि वे तो आज कोपभवन मे हैं(,) आपही जा उन(-) ० ने पूछिये इसका कारण(,) हम नही जानतीं(।) इत(-) ० ने वचन के सुनते ही राजा वहुत डर गये(।) निदा(-) ० न धीरें धीरें रानी समीप जा हाथों से विन की ० देह टटोल कहने लगे कि गहने उतार पलंग ० तज पृथ्वी पर क्यूं पडी हो(।) वोलो क्या चाहती ० हो सो तुम्हारा सव काज मै कर दूंगा(।) नारी कै[1] ० पुरुष को[2] तुमसे वैर रषता है(?) मै उसे डाडूं[3](,) न क(-) ० हो तो जी से मार डालूं(।) जिससे प्रसन्न हो सो अ(-) ० वश्य करूं(।) क्या नही जानती हौ जो मै तुम्हारी व(-) ० श मे सदा रहता हूं(।) क्यूं मुजे संताती हो(?) वृथा य(-) ० ह तुम्हारा परिश्रम है(।) उठो कहो किस दरिद्र ने ० तुम्हारा हित कार्य किया है मै उसे वडा धनवन्त(-) ० कर डालूं(।) न कोई भाग्यवान ही तुमसे कुछ ० लाग रषता है तो विसका तुरंत धन लूट लूं(,) ० ओ यह भी नही तो कहो किस को फांसी दूं कै ० कोई मारने जोग्य है पर तुम विसको वंचाया चा(-) ० हती हो सो भी कर वैठूं(।) ऐसें कह पुन राजा वो(-) ० ला कि सुनो क्या मुझे वहुत वकाती हो(;) मै तुम्हे जी ० देने को सदा उपस्थित रहता हूं ओ सुनो प्राण ० से भी अधिक राम को मै प्यार करता हूं तिसका ० शपथ है जों तुम्हारा हित न चाहता हूं(।) इस भांति ० वार वार पुत्र का शपथ खा जद पृथ्वी पति ने व(-) ० हुत समझाया तव धीरें धीरें आंष षोलकर ० केकयी लगी कहने कि जों तो तुम सचमुच वडे ० सत्य-वादी हो ओ राम की किरिया खाते हो तो ० जो वर मै मांगती हूं विसे अतिशीघ्र मुजे दो(,) सो यही है कि आगे देवता अरु दानवों की लडाई ० मे मैंने आपकी वड़ी रक्षा करी तद निपट संतु(-) ० ष्ट हो मुझको तुमने दो वर देन कहे पर विस्सम(-) ० समय[4] तुम्हारे ही पास मैंने रष छोडे(।) तिनमे से एक से ० तो मेरे प्राण प्यारे भरत को अव राज्य होए(,) पै जो ० सामग्री राम के लिये आयी है विसी सें(,) ओ दूस(-) ० रे वर से होत सवेरे रामचन्द्र दण्डकारण्य मे जां(-) ० ये(,) वहां मुनि का वेष वनाय जटा वल्कल धारण ० कर नित कन्दमूल खा चौदह वर्ष वसें(,) तिस पी०छे जी चाहे तो यहां आवेंगे(,) न[5] विसी वन मे कही ० रहें(।) जों तो इस वात मे तनिक विलम्ब करोगे त(-) ० द तुम्हारे आगे ही मै अपना प्राण तज दूंगी(।) के(-) ० कयी का यह दारुण वचन कि जिसके श्रवण ० से सगरे गात रोमांच हो आवे सुनते ही राजा दश(-) ० रथ यों धरती पर गिर पड़े जैसें वज्र का मारा हू(-) ० आ पेड(।) फिर कुछ एक चेत कर धीरें धीरें दृष्टि ० पसार जी मे कहने लगे(—)क्या मैंने दुःस्वप्न देषा(,) ० कै मुजे मतिभ्रम हो गया(,) यों शोच घाघनि सी ० आगे खड़ी हूई पत्नी से कहने लगे(—)अरे चंडा(-) ० लिन यह क्या वोलती है(,) तू मेरा जी लेने पर अव ० हूई(,) भला रामचन्द्र ने तुझ से क्या अपराध किया(,) ० पहले तो दिन रात उनका तू गुण ही गाया करती ० थी कि कौशल्या के समान समझ सदा मेरी सेवा ० टहल वे करते हैं(,)अब क्यूं ऐसा कहती है(।)अछा पु(-)० त्र के लिये सव राज्य पाट ले ले (,) इससे मै प्रसन्न हूं पर ० दया कर राम को घर मे रहने दे(,) उनसे किसी वात ०

१. या। २. वह कौन है जो। ३. दंड दूं। ४. उस समय। ५. नहीं तो।

का तुझे भय न हो गा (।) यों कह सजल नयन हो नि(-) ० दान राजा पावों पर गिर परे पै निश्शील केक(-) ० यी शान्त तो क्या होगी और भी आंखे लाल ला(-) ० ल कर यह वचन बोल उठी (—) क्या राजा जी तुम्हारी ० मति तो नही फीर गयी जो झुठमुठ यह वकते हो (,) ० सुनो अव जो निज प्रतिज्ञा से टलोगे तो अन्त स(-) ० मय अवश्य नरक भोगोगे ओ यह जान लो कि ० होत सवेरे मृग छाला कै फटा टूटा कपडा ओढ ० करके जों रामचन्द्र वन को न सिधारेंगे तो फांसी ० लगा कै विष खा कर तुम्हारे आगे ही मै मर जाऊँ(-) ० गी (।) सव सभा मे जा लोगन से व्यर्थ अपने को सत्य(-) ० वादी कहाते फीरते हो (,) तुमसा झूठा तो आज त(-) ० क किसी को मैंने नही देषा (।) इस प्रकार प्रिया की वा(-) ० तें सुन राजा दशरथ दुख के सागर में डूब गये ओ ० मूर्छा से अचेत हो पृथ्वी पर ऍसें षस परे कि जैसें ० कोई मृतक पडा होए (।) तिस समै उनके लेखें ए(-) ० क वरस मान[1] वह कष्ट की रैन वीती (।) यह तो यहां ० का समाचार है और वहां वाल जुवा वृद्ध जितने ० नगर मे लोग थे तिन्हो की आंषन में विस रात त(-) ० निक नींद न आयी (।) इसी आनन्द मे सव मगन ० थे कि कद यह रात निगोडी वीतेगी जो पीताम्बर ० सहित सकल आभरण पहने शिर मे मुकुट दिये ० राज्य का तिलक पा विकशित वदन श्याम शरीर ० रामचन्द जो शौंकरों[2] कामदेव से अधिक सुन्दर ० हो रहे हैं लक्ष्मण समेत हाथी पर चढ़ मन्दिर मे ० से निकलेंगे ओ हम सब विन को देषेंगे जो अ(-) ० पना जीवन जनम सुफल कर लेखेंगे (।) इसी चि(-) ० न्ता मे प्रातकाल होने पर आया तव मंगलामु(-) ० खी सव राज भवन मे आन पहुचे अरु उच स्व(-) ० र सें महीपति का यश वषान करने लगे पर केक(-) ० यी को जो रोस चढ आया था सो उन्हें काहे को ० अछा लगे (,) सव को वारन[3] कर भेजा (।) इतने मे प्र(-) ० भात हूआ जान ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ऋषि ० कन्या हाथी घोड़े छत्र चौर इन आदि और भी ० नगर के लोग अरु श्रेष्ठ श्रेष्ठ वेश्याये सव व(-) ० शिष्ट मुनि की आज्ञा पा विचली डेवढी मे आ(-) ० न पहुंचे (।) तिन को देषते ही सुमंत्र निपट आकुल ० भया कि अवतलक भी राजा नहीं उठे (,) सुभ मु(-) ० हूरत वीता चला जाता है (,) अब कव राम को तिल(-) ० क होगा (,) यों कह निदान जहां राजा दशरथ वै(-) ० ठे थे तहां धीरें धीरें चला (,) जब समीप जा पहुंचा ० तव शिर झुका राजा को प्रणाम किया ओ विन ० का निपट मलिन मुख देष चक्रित हो केकयी से ० पूछा (—) ऐ रानी यह क्या कारण है कि महा राज अ(-) ० थाह शोक शागर मे पडे हैं (,) इसका भेद आप मुजे ० वताइए जो मेरे मन का सन्देह जाये (।) वोली (—) रात सो(-) ० ये हैं नहीं (,) राम ही की चिन्ता मे रहें है (,) इस्से अपनी ० वश मे आज नही हैं (,) तुम शीघ्र जा रामचन्द्र को य(-) ० हां बुला दो जो इनका जी अव ठंढा होए (।) मंत्री ने उ(-) ० त्तर दिया कि विना महाराज की आज्ञा मैं नहीं ० जा शक्ता (,) इसमे आप मुज से कधी प्रसन्न न हों(-) ० गे (।) इतना वचन सुन निदान राजा ने भी हुंकार क(-) ० र कहा (।) तव सुमंत्र दौड़े सो विन रोंके टोके अटारी ० भीतर जा राम-चन्द से वोले (—) धर्मावतार शीघ्र आ(-) ० प चलिये (,) पृथ्वीपति तुमको देषा चाहते

१. के समान। २. संकड़ों। ३. वारण, मना कर दिया।

है (।) सुन(-) ० ते ही लक्ष्मण समेत रथ पर चढ रघुनायक वेग ० चल खडे भये तो वीच डेवढी मे वशिष्ट आदि ऋ(-) ० षिन के समाज ओ नगर के लोगन की वडी भीर ० देषते हूए तुरंत समीप जा गाडी से उतरे ओ च(-) ० रण छू पिता को प्रणाम कर हाथ जोर जों ० आगे हो खडे हूए कि तों ही झूक कर दोनों वाह प(-) ० सार दशरथ ने चाहा कि मै इन्हे गोदी मे विठला ० ऊं(,) पर राम राम कहते ही शोक से अचेत हो ओंही ० गिर परे(,) तव हाहा कर राम ने शीघ्र उन्हें अंक मे उ(-) ० ठा लिया(।) इतने मे राजा को मूर्छित देष जितनी व(-) ० हां स्त्रियां थी सो सव एकबारगी रो उठीं(,) तद रोयने ० का शब्द सुन निपट भैचक हो वशिष्ट मुनि भीत(-) ० र चले आये तो दशरथ की दशा देष वहुत दुखि(-) ० त भये(।) इससे आकुल हो राम ने राजा के दुख का ० कारण पूछा तव केकयी लगी कहने कि इनके दु(-) ० ख का कारण तुम हो(,) तिस्से जिसमे इनकी प्रति(-) ० ज्ञा रहै ओ सत्यवादी कहा वें वही काज करना तु(-) ० म्हे चाहि से[1] सो यह है कि सन्तुष्ट हो राजा ने दो व(-) ० र मुजे दिये हैं सो तुम्हारी वश मे हैं(।) लाज के मा(-) ० रे पृथ्वीपति आप नही तुमसे कह शक्ते(।)इस्सम(-) ० य पिता की रक्षा करनी ही तुमको उचित है क्यूंकि ० पुत्र ऐसा है कि नरक सें वाप का उद्धार लेता है(।) इ(-) ० स प्रकार केकयी की बातें सुन रामचन्द्र ऐसें दुखि(-) ० त भये जैसें किसी ने शूल से मारा होए(।) निदान ० आकुल हो कहने लगे(—)ऐ रानी तुम यह क्या वोल(-) ० ती हो(,) मै तो पिता के लिये अपना प्राण दूंगा अ(-) ० रु राज्य समेत सीता कौशल्या को भी तजूंगा(,) सु(-) ० त का यही धर्म है जो सदा वाप की आज्ञा मे रहे(,) ० ओ जो अपने मन से पिता के हित कार्य संवार ० लावे वह उत्तम पुत्र है अरु जो कहे पर करे सो म(-) ० ध्यम है ओ कहे से भी नही कर शके वह अघम ० पुत्रों मे गिणा जाता है(,) तिस्से जो मुजे राजा कहें० सो सव काम कर लाऊं(,) इसमे कधी संदेह मत क(-) ० रो(,) राम झूठ भाषने का नही(।) इस भांति जव रघु(-) ० वर ने प्रतिज्ञा की तव केकयी खुल कर कहने ० लगी कि सुनो रामचंद्र जो सामग्री तुम्हारे लि(-) ० ये आयी है विस्से भरत को राज्य होवे अरु दूसरे ० वन से चीर वस्त्र पहन जटाधारी हो पिता की आज्ञा ० से अभी तुम वन को सिधारो(,) वहां मुनि का अ(-) न्न खा के चौदह वर्ष वसो(,) वाप के ये दोनों का(-) ० ज करने ही तुम्हे जोग्य हैं(।) आप तुमको क(-) ० हते लजाते हैं(।) राम ने उत्तर दिया(—)अछा भर(-) ० ते ही राजा होए(,) मै दण्डकारण्य जाऊंगा पर ० राजा नहीं वोलते इसका कारण क्या है(?) राम(-) ० चन्द की इतनी बातें सुन महादुखित हो दश(-) ० रथ ने कहा(—)पुत्र क्या करूं मै स्त्री का वश्य हूआ(,) ० मेरी मति ठिकाने मे नही है कुचालियों के गिण(-) ० ती मे आया मुज को मार कर के यह राज्य तु(-) ०म ले लो(,)तुम्हे कुछ पाप न होगा ओ मै इस" "झू[2] मे[2](-) ०ठा न हूंगा(।) यों कह निपट आकुल हो राम को ग(-) ० रे लगा राजा पुकार पुकार रोने लगे कि हा रघु(-)० वर हा मेरे प्राण के आधार तुम मुज को छोड़ के ० क्यूं कर एकेले वन मे जा वसोगे(।) तव दो पट्टे सें पि(-) ० ता का मुह पोछ कर रामचंद्र लगे समझावने ० कि महाराज आप किस लिये इतने

१. 'चाहिए' होना चाहिए। २. " का संकेत है कि ऊपर अंकित 'मे' यहाँ आयगा।

आतुर हो(-) ० ते हैं(,)भरत राज्य करें(,) मै तुम्हारी प्रतिज्ञा निवाह ० के फिर यहां आऊं गा(,) किसी वात की चिन्ता मत ० कीजे(,) राज्य ते कोटिगुण अधिक सुख वन मे मुजे हो(-) ० गा (।) इसमे आपकी वात भी रहती है ओ केकयी प्र(-) ० सन्न होती है(,) मन का ताप इनका मिटता है(।) ऐसें ० कह पुन वोले अव मै मंदिर मे जाता हूं वहां मा(-) ० ता से विदा हो सीता को हित शिषा फिर यहां ० आकन चरण छू आपको प्रणाम कर लूंगा तव ० सुचित हो वन को सिधारूं गा(।) इस भांति रा(-) ० जा दशरथ को बुझा समझा श्री रामचन्द जी ० वहां से चले ओ जहां पुत्र को तिलक होने के ० निमित्त हरि की पूजा ओ होम कर ब्राह्मणों को ० धन दे मन लगा मौन हो कौशल्या रानी आ(-) ० नन्द कन्द विष्णु का ध्यान कर रहीं थी तहां वि(-) ० न के समीप आन पहुंचे(।) ० इति श्री रामचरित्रे (-) ० अयोध्याकांडे तृतीयोध्यायः ३(।) तव राम० को आगे खडे हूए देष सुमित्रा ने कौशल्या ० से कहा कि रघुवर की मा आंष षोलो रामचन्द ० आये हैं(।) सुत का नाम सुनती ही तुरत विन्हो दृ (-) ० ष्टि पसारी तो प्यार कर पुत्र को गोद विठला मा(-) ० थ चूंम सव गात छू यह वचन कहने लगी(—)वेटा ० भुष लगी है तो मिठाई भोजन करो(।) श्रीरामच(-) ० न्द्र बोले(—)माता किसे खाने पीने का अवसर है(,) मैं ० तो अभी दण्डकारण्य को चला(।) केकयी के क(-) ० हे सें सत्यवादी पिता ने भरत को राज्य दिया ० ओ मुझे कहा कि चौदह वर्ष मुनिन के साथ व(-) ० नवास तुम करो तिस्से मैं जाता हूं आप किसी ० वात की चिन्ता मत कीजे मैं शीघ्र आकर तुम्हा(-) ० रा दर्शन फिर करूंगा(।) इतने वचन के सुनते ही प(-) ० हले तो कौशल्या निपट मूर्छित भयी पुन कुछ ० एक चेतकर लगी कहने कि वेटा जों तुम सचमु(-) ० च वन जाओगे तो मुझ को भी साथ लिये चलो ० नहीं तो तुम्हारे विन क्षण भर भी न मै जीऊंगी ० क्यूंकि वछरू विन गाय की भांति प्राण समान पुत्र ० को कधी न तज शक्ती हूं(।) राजा वहुत प्रसन्न ० हैं तो भरत को राज्य ओ केकयी ही को अपना ० सरवश दे डालें पर भला तुमने विन से क्या अ(-) ० पराध किया कि जिस कारण वन मे खदेडते हैं(।) ० यों कह फिर बोली(—)सुनो यद्यपि पिता वडा है तो ० भी गर्भ मे रषती ओ पालती है इस हेतु विचा ० रिये तो सव प्रकार माता ही वडी ठहरती है ति(-) ० स्से मैं वरजती हूं तुम कभी मत घर से वाहर हो ० ओ मेरा वचन टाल करके राजा की आज्ञा ० निवाहने के लिये जों तुम हठ से निकलोगे तो ० यह जान लो कि मै वंचने की नहीं(,) अवश्य यम(-) ० लोक सिधारूं गी(।) इस भांति कौशल्या की वातें ० सुन लक्ष्मण ने भी रामचन्द्र से कहा(—)भैया ऐसे ० मतिमन्द्र ओ विक्षिप्त पिता की जो कामवश ० हो सदा केकयी के कहे मे रहते हैं भली आज्ञा ० आप लीये फीरते हैं(,) मै तो इन्हको वांध कर स(-) ० व भाई वन्धु ओ मामा समेत भरत को आज ही ० जा मार डालता हूं (।) तुम्हारे चरण का शपथ है जों ० इस टेक पर तीनों लोक न जला कर भस्म क(-) ० र डालूं(।) मेरा पराक्रम आज देष लीजे(।) आप ० चल कर राज्य का तिलक कराइऐ(,) धनुष वा(-) ० ण हाथ मे ले सवको मैं देष लेता हूं(।) को ऐसा वी(-) ० र है जो मेरे रहते हूऐ इस कार्य मे वाधा करेगा (।) ० मै विसका जी विनु लिये न छोड़ता हूं (।) इस प्र(-) ० कार लछुमण की वातें सुन प्यार कर विन्हे ग(-) ० रे लगा श्री रघुनायक वोले(—) भाई तुम किस्से कह ० ते हो मै नीके जानता हूं कि तुमसा मेरा हितू भाई ० ओ महावीर इस लोक

मे दूसरा कोई नहीं है जो चा(-) ० हो सो सव कर शक्ते हो पर किसलिये इतनी धूम ० मचावोगे क्यूंकि यह देह ओ राज्य आदि जितने ० तुम देषते हो सो जों सत्य होए तो परिश्रम तुम्हा(-) ० रा सफल है(।) ये तो माया के रचे हूए मृग तृष्णा स(-) ० मान हैं क्षण मे विला जाते हैं ओ इसी प्रकार मेघ ० मे विजली सा भोग भी निपट चंचल है(,) ज्ञानी लो(-) ० ग कधी न इसे चाहते(,) कितना दिन संसार में रह(-) ० ना है(,)आयुर्वल तो तावे पर पानी की वुन्द सा क्ष(-) ० ण का होता जाता है(,) तिस पर भी जैसें साप के मु(-) ० ह मे फंसा हुआ मेढक दंशों को निगलाने चाहता ० है वैसें ही कालरूप जो सर्प है विससे ग्रस्त हो वि(-) ० स भोग पर लोग चित दौड़ाते हैं कि जिसकी घड़ी ० भर भी रहने की आशा नही ओ विस के लिये दि(-) ० न रात कै दुखदायक काम उठाते हैं तिस्से जों ० यह देह किसी प्रकार अपनी नही तो कहो क्या को(-) ० ई भोग करेगा(।)माता पिता स्त्री सुत कुल परिवार ये ० कैसें है कि जैसें नदी मे वह वह कर तृण इकठे होते ० हैं फिर जहां के तहां चले जाते हैं ओ लक्ष्मी तार की ० छांह सा निपट चंचल(,) तरुणाई अध्रुव(,) स्त्रीन से वि(-) ० लास स्वप्न समान है (,)तो भी प्राणी को एत्ता अभीमा(-) ० न होता है(।)देषो लक्ष्मण सदा रोगन से आकुल स्व(-) ० प्न रूप संसार मे आकर मूढ़ लोग वहुत हर्षते हैं ओ ० सूरज के उदय अस्त से दिन दिन आयुष छिजता ० है इस दशा को ओ वुढापा मृत्यु को देषके तनिक न ० जी मे चेतते है(,) देषो वे ही दिन रात हैं कि जिन मे भोग(-) ० वश हो मनुष्य अकडे चलते हैं ओ यह नहीं सम(-) ० झते कि किसी न किसी समय इन्ही में काल हम ० को पछाड़ेगा(,) उलटा ही विसकाया को मांजे फिर(-) ० ते है जो पानी से भरा हूआ मिट्टी का कच्चा घड़ा सा ० क्षण से गल जाती है ओ जिसमे भांति भांति के व्या(-) ० धि भर रहे हैं(,) वाघ सा बुढ़ापा आगे हो जिसे नित्य डरा ० ती है(,)मृत्यु अपना अवसर लगा साथ ही फिरती ० है (,) यों समझ हाड चाम मल मूत्र लोहू पीव आदि ० से भरे हूऐ शरीर को जो निदान भस्म हो वेगा (,) कै ० जिसे कीडे ही खाजांयेगें (,) कहो कैसे निज कर मान(-) ० ते हो(।) देह को अपनी समझना यही अज्ञानता ० है ओ मेरी देह नही मैं चेतन सरूप ब्रह्म हूं इसी बु (-) ० द्धि को ज्ञान कहते हैं(।) अज्ञानता ही आवागमन ० का कारण है ओ ज्ञान विसका मिटावनसारा यह ० विचार के जो नर संसार सागर पार उतरा चाहते ० हैं तिन को सव प्रकार से उचित है कि ज्ञान शीष (-) ० ने में चित्त दें अरू काम क्रोध लोभ मोह ये विसके ० वैरी है इनसे अपने को सदा वंचायें रहें(।) यों तो चारो ० एकए[1] से प्रवल हैं पर मुक्ति होने मे विघ्नकरनहारा ० को पइन्ह मे वडा वली है जिसके वश हो यहां तक ० कि पिता माता भाई मित्र को लोग मार डालते हैं(।) इ (-) ० स हेतु मनमे ताप होने की जड ओ सकल दया ध(-) ० र्म विनाशनहारा एक वही है तिस्से हे लछमण ० मेरा कहा मान क्रोध तज संतोष कर शांत हो र(-) ० हो(।) को किसका शत्रु है(।) सुख दुख सव अपना अप(-) ० ना प्रारब्ध का भोग है यह मेरा उपदेश जों सदा ० जी मे रष्षोगे तो संसार के दुख मे फिर न कभी फं (-) ० सोगे (।) तुम भी माता इस बात पर सावधान रहोगी ० तो मेरे आवने की आश पर बहुत कष्ट न पाओ(-) ० गी(।) देषो पवन वश हो नदी

---

१. एक ही।

मे नाव की भांति नि(-) ० ज कर्म के फेर मे पर कोई प्राणी सदा इकठा नही ० रहता यह समझ शोक त्याग ईश्वर से मनाओ ० चौदह वर्ष क्षण समान वीत जायेंगे (।) इस डौल से ० जों तुम रहोगी तो मै भी सुख से वन मे वसूंगा (।) ऐं(-) ० से वुझा समझा श्री रामचन्द्र कौशल्या के चरणों ० पर गिर परे(।) विन्हे उठा अंक मे विठला कौशल्या ने आशीस दी कि हे पुत्र जहां जहां तुम फीरो वसो ० ओ सोओ वहां ब्रह्मा विष्णु महेश आदि देवताओं ० गन्धर्व तुम्हारी रक्षा जा करें (।) यों कह वार वार गरे ० लगा माता ने राम को विदा किया तद गिडगिडा क (-) ० र लछुमणजी भाई से यह वचन कहने लगे(—) महा(-) ० राज ज्ञान वता मेरे मन का वडा सन्देह आपने मिटा(-) ० या अव मैने क्रोध तजा तिस्से कृपा कर आज्ञा ० कीजे सेवा टहल के लिये मैं भी साथ चलूं ओ नही ० तो अपना प्राण मैं दूंगा(।) इस प्रकार से जब भाई ने ० वहुत हठ किया तव श्री रामचन्द्र ने माना ओ वि(-) ० न को संग लिये सीता से विदा होने को गये (।) जब नि(-) ० कट जा पहुंचे तब मुस्कुराकर सोने की झारी मे वे ज(-) ० ल ले आयीं ओ स्वामी के पांव धो विन्हे आसन ० पर बिठला यह बात लगी पूछने(—)नाथ क्या का(-) ० रण है कि सव लोग-बाग छोड़कर एकेले आप ० आये (?) कहिये कहां गये थे(?) स्वेत छत्र क्या हूआ ओ० शिर का मुकुट क्यूं उतार रष्षा अरु वाजे वाजते थे ० सो क्यूं वारण भया ओ राज्य का तिलक पाकर आ(-) ० दर मान से किस लिये मेरे पास न आये(?) इस भांति ० जव सीता ने पूछा तव मुस्कुरा के रामचन्द्र वोले(—) ० पिता ने मुझे दण्डकारण्य का राज्य दिया विन की ० आज्ञा रषने के लिये अभी मै वन को चला तुम ० निकट जा मेरी माता की सेवा मे नित्य रहिओ इ(-) ० सी मे तुम्हारा कल्याण है (।) यिह सुन निपट डर क(-) ० र फिर सीता ने कहा(—) क्या कारण है जो राजा ने ० आपको जंगल का राज्य दिया(?) रामचन्द्र वोले(—) ० किसी समय में प्रसन्न हो केकयी को दो वर देने क(-) ० हा था इस्से उनका अव हठ देष महादयालु ओ ० सत्यवादी पिता ने भरत को राज्य ओ मुझको ० चौदह वर्ष वनवास दिया इस हेतु तुरत मै जाऊं(-) ० गा इस मे कुछ विघ्न तुम मत करो स्त्री का यही ० धर्म है कि स्वामी की आज्ञा निवाहे(।) यह सुन प्री(-) ० ति से घवराकर जानकी ने विनती की (—)अछा महा(-) ० राज जों ऐसा ही है तो पहले मै, तिस पीछे आप व(-) ० न को सिधारिये(,) मेरे विन तुमको जाना कधी उचि(-) ० त नहीं है(।) यिह सुन वहुत सन्तुष्ट हो श्रीरघुनाथ (-) ० क लगे विन्हे समझावने(—)हे प्राणप्यारी मैं तुम्हे क्यूं ० कर वन मे ले चलूं(,) वहां वडे वडे एक एक ऐसे राक्षस हैं ० कि मनुष्य ही जिन्ह के आहार हैं अरु वाघ सिंह सां(-) ० पशू अर मृग आदि जहां देषो तहां येही दृष्ट आ ० ते हैं ओ भोजन के लिये भांति भांति के पकवान पु(-) ० री मिठाई तर्क्कारी वहां चाहो तो कही मिलने की ० नहीं(,) षट्टे तींते फल मूल हैं सो भी अव सर पर न पा(-) ० ओ गी अरु कांट कुश से भरा हुआ अति विकठ० वाट है कि जिसमे निवहना महा कठिन है अरु उ(-) ० स वन के कुंजों भीतर जों सुनो तो झिंगुर सव दि(-) ० न रात झंझकार शब्द करते हैं(,) दंश(-)मछड तो इत(-) ० ने भर रहे हैं कि देषते ही प्राणीन पर झुंड के झुंड ० टूट परते हैं (।) इस प्रकार दण्डकारण्य सदा नाना दुख ० का घर है(।) जाड घाम सहकर पांव पांव तुम क्यूं कर च(-) ० ल शकोगी(।) वन मे राक्षसों को देषती ही प्राण

तजो(-) ० गी तिस्से मेरा कहा मान घर मे तुम रहो फिर मुज(-) ० से भेट होगी(,) किसी वात का सन्देह मत करो(।)इतने ० वचन के सुनती ही सीता निपट दुखित हूंई तो कोप ० से ओठ फर फरा स्वामी से लगी कहने कि ऐं धर्मा(-) ० वतार क्या अपराध है जिस कारण मुझ को तजा ० चाहते हो(,) भला तुम्हारे विन दूसरा किसका भरोसा० मै रषती हूं जो आप के पीछे मेरी सुधि लेगा अरु ० आदर मान करेगा(,)तुम दीन दयाल हो मुजे ० मत छोड़ जाओ(,) आपके निकट जों मै रहूंगी तो को ० ऐसा दैत्य है जो मेरे सामने हो शकेगा आ[1] मेरे भो(-) ० जन के लिये तो तनिक चिन्ता जिन[2] की जे क्यूंकि ० जो जो कन्द फल तुम्हारा जूठा वंचेगा विसीसे मै ० अति तृप्त हूंगी अरु वही मुजे अमृत समान ल(-) ० गेगा ओ आपके साथ हर्षित हो चलती हूई मुझ ० को जो कांट कुश वाट मे मीलेंगे से मेरे लेखे फूलों ० की विछोने से भी अधिक सुखदायक होंगे(,) मै तु(-) ० म्हे किसी बात का दुख न दूंगी वरन जो कुछ काम ० कार्य होगा सो सव करूंगी(।) यों कह फिर बोलीं कि ० सुनिये लडकपण मे एक जोतिषी ने मुजसे कहा ० था कि कुछ दिन मे तुमको वन वास होगा सो जों ० मै साथ चलूंगी तो विस गण[3] की भी वात सत्य हो (-) ० ती है(—)ऐसें वहुत कह फिर जानकी ने पूछा भला क्यूं ० महाराज रामायन तो ब्राह्मणों से बहुत आपने ० सुने हैं पर सच कहिये किसी पोथी मे विना सीता ० के रामचन्द्र कभूं वन को सिधारे हैं जो मेरे चलने मे ० अव इतने घवराते हो(,) मुजे मत तजो तो सहायता के ० लिये अवश्य मै चलूंगी ओ हठ से जों मुझको त(,) ० जोगे तो तुम्हारे आगे ही मै अपना शरीर त्याग ० दूंगी(।) इस भांति जव सिया ने ठाना तव राम ने माना ० ओ कहा कि अछा वसिष्ट की स्त्री को निज आभ(-) ० रण सव उतार दो(,) हम भी ब्राह्मणों कों धन देक(-) ० र वन को प्रस्थान करेंगे(।) ऐसे कह सहस्रन गौ भां(-) ० ति भांति के अनमोल कपड़े भूषण ओ रुपै[4] रा(-)० मचन्द्र ने लछुमण से विप्रन को तुरत बुलवाय ० दान दिये(।) विसी प्रकार नगर के और जो भूपे लो(-) ० ग वहां थे उन समेत अन्दर के रहने वाले अप(-) ० ने ओ कौशल्या के जितने सेवक थे तिन्ह को भी ० वहुत धन दे सन्तुष्ट किया अरु स्वामी की आज्ञा ० पाती ही अति हुलसित हो सीता ने तो पुरोहिता(-) ० इन को तुरंत निज गहने दे डालें(।) इस भांति अने(-) ० क धन लुटा पटा सवसे मील भेट जानकी सहि(-) ० त जब श्री रामचन्द्र राजा दशरथ से विदा होने ० को चले तव सुमित्रा को कौशल्या के पास शौं(-) ० प हाथ मे धनुष ले लछुमण जी विन के साथ हो(-) ० ये(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्या कांडे चतुर्थोध्यायः ४(।) ० विन तीनों को वाट मे आते देष केकयी के चरित्र ० से निपट व्याकुल हो नगर के लोग सव आपस ० मे परस्पर यों वतराने लगे कि हा कामवश हो स्त्री ० के लिये प्राण समान पुत्र को राजा दशरथ वन मे ० खदेडते है(,) को विन को सत्यवादी कहेगा ओ उस ० चाण्डालिन क्रूर केकयी को कि उसकी आंषों मे ० तनिक शील नही को अव भला कहेगा जो ऐसे ० वालकन को वन मे भेजती है (।) हे पंचों इस वस्ती ० में अव रहना उचित नहीं(,) हम लोग भी वहां च(-) ० लें जहा स्त्री भाई समेत रामचन्द जाते हैं(,) देषो ० तो जिस महा सुन्दरी सीता का रूप वाहर केकि(-) ० सी लोगन

१. और। २. वही। ३. गणक, ज्योतिषी। ४. रुपये।

को स्वप्ने हूं मे न कधी दृष्ट आया होगा ० सो राजकुमारी अव सव के वीच मे हो मुह षोलें ० पांवचारे चली जाती है ओ हाथी घोडे रथ आ(-) ० दि सव तज कर कव रामचन्द्र भूंए भूंए चले हैं(,) ० सव को विनाशनहारी केकयी राक्षसिनी उत्प(-) ० न्न हूई जो इन्हों को महासंकट भोगना परा(,) इसमे ० ईश्वरेछा ही प्रवल है(,) मनुष्य का यतन कुछ काम न ० आता (।) इस भांति जव आपस मे सव बहुत पछताने०लगे तव वामदेव मुनि जो उनके पास खड़े थे अकु(-)० लाकर यह वचन वोल उठे(—)अरे लोगो सीताराम के ० लिये तनिक मत तुम जी मे चिन्ता करो(,) इन्हका भेद ० मै कहता हूं(,) सावधान हो सुनो(—)रामचन्द्र मानुष न ० ही हैं(,) आदि नारायण हैं कि जो रज तम सत्व ती(-) ० नो गुण धारण कर ब्रह्मा विष्णु महेश कहा सृष्टि ० की उत्पत्ति पालन संहार किया करते हैं(,) मत्स्य का ० अवतार हो वेद का उद्धार इन्हीने आगे किया स(-) ० मुद्र मथन के समय जद मन्दराचल पहार अररा ० के नीचे को चला तद तुरन्त कछप की देह धर अप(-) ० ने पीठ पर उसको ले निवाहा(,)महाप्रलय मे रसात(-) ० ल जाती हूई इस पृथ्वी को वाराह स्वरूप हो निज दां(-) ० त पर उठा लिया (,) नृसिंह की देह धर प्रहलाद का दु(-) ० खदुर कर करने लिये तीनों लोक के महा कंटक हिर (-) ० ण्यकशिपु का उदर नखों से विदार(,)पुत्र का राज्य(-) ० हरण हुआ देष अदिति की वडी विनती से वामन ० अवतार ले राजा वलि को छल इन्द्र को फिर अप(-) ० ने राज्य पर विठलाया(,) धरती के भार समान दुष्ट ० क्षत्रियों को संहारने के लिये परशुराम स्वरूप भये(,) ० अव रावणादि कोटिन राक्षसों को मारने के लि(-) ० ये राम रूप हो अवतरे हैं(,) विष्णु को पुत्र करने के नि(-) ० मित्त राजा दशरथ ने आगे वडी तपस्या करी इ(-) ० स्से आप भगवानइन्ह के घर मे आ जनमे हैं राव(-) ० ण आदि दैत्यन को विनाश के कारण लक्ष्मण स(-) ० मेत अभी वन को जायंगे ओ सीता को जो देष(-) ० ते हो सो संसार की उत्पत्ति पालन प्रलय करन हा(-) ० री हरि की माया हैं(,) लछ्मण जी शेषनाग हैं(,) यह ० समझ राजा रानी का इसमें कुछ दोस न जाना(,) ० यिह तो होनी ही थी तिस पर पृथिवी का वोझ उ(-) ० तारने के लिये कल्ह आके नारद मुनि ने वहुत प्रा(-) ० र्थना राम से की(,) विन्ह को आप ये वचन दे चूके हैं कि ० अछा[1] (,) होत सवेरे[2] अवश्य मै वन को प्रस्थान करूं(-) ० गा(,) इस्सेहे मूर्खो इन्हकी चिन्ता तनिक मत तुम क(-) ० रो क्यूंकि जो मनुष्य राम राम नित्य जपते हैं तिन्ह(-) ० का सव दुख दूर हो जाता है ओ राम ही को कष्ट हो ० गा सो किस प्रकार से ये तो राजा दशरथ की श्रद्धा ० पुरावने के लिये ओ कलियुग मे राम नाम ही से ० लोगन को गति मुक्ति देने के हेतु रावण के विघा(-) ० त निमित्त ओ भक्तन को अपने मे प्रीति करा व(-) ० ने के कारण माया कर मानुष की देह धरे हैं(।) ऐसे ० वुझा समझा जव वा.देव ऋषि चुप हूए तव नग(-) ० र के लोगन समेत जितने ब्राह्मण सव थे सो सु(-) ० नकर रामचन्द्र को ईश्वर पहचान अपने अपने ० मन का संदेह त्याग निपट आनंद मे मगन भये ० ओ राम ही का ध्यान सव करने लगे (।) सीता पति का ० यह भेव जो नर चित मे रष्वे विसे श्री रघुना ० यक मे ज्ञान समेत उत्तम भक्ति होवे(।)

१. 'अच्छा' ('स्वीकार है') ऐसा कह चुके हैं। २. सवेरा होते ही

इतने ० ही मे जानकी लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र ० पिता के भवन मे जा पहुचे तो उन्हे सुनाकर ० केकयी से कहने लगे माता वन मे जाने के ० लिये हम तीनों एकमत हो आये हैं अब म(-) ० हा राज अपने मुह से आज्ञा करें जो हम लो(-) ० ग शीघ वन को सिधारें(।) इतने वचन के सुन (-)० ती ही अति हुलसित हो हठसे झट केकयी ० उठ खड़ी भयी ओ आप जा तुरन्त चीर वस्त्र(-) ० ला अलग अलग उन्हको पहनने को दिया(,) ० तब राम लछुमण ने तो निज कपड़े उतार तु(-) ० रन्त चीरों को पहन लिया ओ सीता विसका ० ढव[1] जानती नही इस्से हाथ मे विसे ले संको(-) ०च से राम का मुह लगी निहारने (,) तव श्री रघुना ० थ जी ने उस चीर कों ले जानकी के वस्त्रों हीं पर लपेट दिया सो देष जितनी वहां रनिवांस थी ० सो सब चारों दिशा से एक वारगी रो उठीं(,) तद रो(-) ० वने के शब्द सुन महाक्रुद्ध हो वसिष्ट मुनि डांट ० कर केकयी से कहने लगे अरे निश्शील राक्ष(-) ० सिनी तूने तो राजा से एक राम को वनवास मां(-) ० गा है(,) भला सीता को अब किस लिये ऐंसा ल(-) ० त्ता पहनने को देती है(,) इन्ह परतेरा वल कुछ ० काम न आवेगा तिस्से जों यह पतिव्रता जा(-) ० न की सेवा टहल करने को स्वामी के साथ जाती ० है तो सदा अछा सुन्दर कपड़ा भूषण पहन ० संग मे रह पति को सुख दे कि जिसमे उनको ० वनवास का कष्ट न होवे(।) इतने मे राजा दश(-) ० रथ ने विलषा[2] कर सुमंत्र से कहा कि अव रथ तु (-) ० म मंगा दो जों ये तीनों तपसी वन को प्रयाण करें(।) ० यों कह सीता समेत राम लछुमण को देष निपट ० दुखित हो धरती पर गिर परे ओ ऐंसे रोने लगे ० कि आंशुन से सगरे गात भीं गये तव तलक मं(-) ० त्री ने रथ ला आगे षडा कर दिया तव देषती ० ही पहले सीता उस पर चढ़ीं तिसके पीछे पिता ० को प्रदक्षिणा प्रणाम कर रामचन्द्र ओ धनुष ० तूणी[3] सहित दो खड्ग ले लक्ष्मण जी विस गा(-) ० डी पर जा बैठे ओ सारथी से कह ऐसा घोडों ० को दौडाया कि वायुवेग समान वहां से चले(।) ० तिस समय व्याकुल हो जों जों दशरथ खड़े हो[4] ० खडे हो सुमंत्र को पुकारें तो तो वढ़ो वढो कर रा(-) ० मचन्द्र की आज्ञा से अतिशीघ्र रथ को वह ले ० उडा तो क्या वालक क्या युवा क्या वृद्ध क्या ब्राह्म(-) ० ण आदि जितने विस नगर के लोग थे सो सव ० रघुवर के पीछे पीछे चल खड़े भये यिह कहते हू(-) ० ऐ कि महाराज हमे भी साथ लिये चलो जव रा(-) ० मचन्द्र का रथ कुछ दूर निकल आया तव वि(-) ० न के मोह से निपट व्याकुल हो राजा दशरथ(-) ० रती पर गिर परे (,) निदान वडी वेर तक रो कलप ० सेवकों से कहने लगे अव मुझे रामचन्द्र की ० मा के पास पहुंचा दो(,) कुछ घड़ी वहां वचूं तो व(-) ० चूं फिर विसके उपरान्त विना राम को देषे मै व(-) ० चने का नही(,) ऐसे कह उन्होंके[5] साथ हो कौश(-) ० ल्या के घर मे गये तो वहां ऐंसे मूर्छित हूऐ जो ०[6] जो किसी के चेताये भी न चेते और वहां रामचन्द्र ० चले चले तमसा नाम नदी तीर जा उतरे(,) वहां ० आहार तज पानी ही पी संध्या समय ऐक वृक्ष ० तले सीता सहित जा चुपचाप सो रहे (,) तहां धनु(-) ०ष वाण ले सुमंत्र समेत लछुमण जी लगे चौकी ० देने ओ नगर के लोग सव भी ओहीं विन के ० निकट ही

१. ढंग (चीर पहनने का)। २. बिलखकर, रोकर। ३. तूणीर, तरकस। ४. 'खड़े हो, खड़े हों', 'रुको, रुको'। ५. यह 'के' अनावश्यक है। ६. यह 'जो' अनावश्यक है।

आउत रे(,) इसलिये कि दशरथ के ० लाल जों फिरें तो फिरें न हम लोग भी इनके ० संग चल वसें(।) विन्हो की यह प्रतिज्ञा सुनकर० श्री रघुनाथ ने जी मे शोचा कि अव जों घर को० मै नही चलूं तो ये सव निपट वहुत दुख पावेंगे ० तिस्से कुछ उपाय किया चाहिये कि जिस्से इ(-) ० न को कष्ट न होवे(।) इतने ही मे प्रभात होने पर ० आयी तव सारथी को राम ने बुलवाकर कहा ० कि सुमंत्र अब चलने की वेला भयी(,) तुम शीघ्र ० रथ लादो सो सुन तुरत विसने घोडों कों रथ मे ० जोता(,) विस पर रामलछुमण सीता तीनो चढ़ क(-) ० र पहले तो कुछ दूर अयोध्या के सामने पीछे ० को हट आये फिर वहां से घूमकर पेड़ों की ओ(-) ० ट हो दण्डकारण्य को चले(,) विनके वहां सें निक(-) ० लते ही प्रातःकाल हूआ जान साथी लोग हड(-) ० वडा सव के सव उठे ओर रघुनाथ को न देषकर अ(-) ० ति निपट दुखित भये(,) निदान वाट मे पहिये का ० चीन्ह देष आपस मे ठहराया कि रामचन्द्र घर ० को फिर गये यिह निश्चय कर कुछ एक हर्षि(-) ० त हो अवधपुरी को फिर आये तो इस भांति ० उदास भये कि दिन रात सीताराम ही का ध्या(-) ० न लगे जी मे करने अरु वहां सुमंत्र ने ऐसा ० रथ दौडाया कि वडे वडे देश देषते हूऐ श्री रा(-) ० मचन्द्र जी तुरत श्रृंगवेरपुर के निकट गंगा ० तीर जा पहुचे(,) तहां गाडी से उतर गंगा को प्रणाम० किया अरु स्नान पूजा से सुचित हो किसी शीसो[1] ० के पेड तले जा डेरा लिया(,) तव राम का आगमन ० लोगों से गुह नाम केवट ने सुना तो सखाजान ० अति हर्षाय भक्तिवश हो मधु समान मीठे मी(-) ० ठे फल ओ अछे सुगन्ध फूल ले स्वामी को देष(-) ० ने के लिये घर से शीघ्र चला(,) जव समीप आन प(-) ० हुचा तव फल फूल आगे रष दण्डवत कर उ(-) ० नके चरणों पर जा गिर परा(,) देषते ही भक्तवत्स(-) ० ल रघुनाथ ने तुरत उठा के वुसको गरे लगा लि(-) या ओ कुशल क्षेम पूछ वडी आवभगति कर ० अपने निकट विठलाया(,) तव अवसर पा हाथ ० जोर गुह उन्हसे यह वचन कहने लगा(—)हे पति(-) ० त पावन कृपानिधान धन्य मेरा भाग्य है जो आ(-) ० प का दर्शन भया(,) तुम्हारे अंग के स्पर्श से आ(-) ० ज मुझे वडा आनन्द हूआ(,) मै दास हूं(,) यह मेरा रा(-) ० ज्य आप ही का है तिस्से उचित है कि यहां ही रह ० कर हम लोगों को पा लिये(,) इस भांति बहुत अधी(-) ० नताई कर फिर धीवर वोला(—) महाराज अव चल ० के घर समेत मेरा नगर पवित्र कीजे ओ वडी श्र(-) ० द्धा से यह फूल फल ढूढ लाया हूं दयाकर इसे ० लीजे(,) मै आपका किंकर हूं (,) इस प्रकार गुह की ० मधुर वातें सुन बहुत प्रसन्न हो श्रीरघुवीर क(-) ० हने लगे(—)सुनो मित्र तुम जो कहते हौ सो सव स(-) ० च है इसमे कुछ सन्देह नहीं(,) पर चौदह वर्ष न ० तो मै किसी के गांव घर मे जाऊंगा न किसी का कु(-) ० छ फूल फल अन्न लूंगा(,) तुम्हारा यह राज्य मे(-) ० रा ही है(,) तुम मेरे प्राण समान सखा हो(,) यों बुझा ० समझा गुह को सुचित कर विस्से वड का दू(-) ० ध मंगा लछुमण सहित रामचन्द ने शिर मे ० जटा वनाके वांधी ओ सीता समेत जल ही ० पीकर कुश अरु पत्तों का विछोना विछाय ० अति सुख मान ऐसे शो रहे कि मानों अटा(-) ० री पर जानकी के संग अछे सुथरे पलंग पै पौ ० ढें होंए ओ आगे की भांति धनुष वाण लिये ० गुह के साथ लक्ष्मण जी

---

१. सीसम।

चारो ओर दृष्टि पसा(-) ० र लगे विन की रक्षा करने(।) इति श्रीरामच-(-) ०रित्रे अयोध्या काण्डे पंचमोध्यायः५(।) इतने मे राम को नीन्द वश देष अति व्याकुल हो पछ(-) ० ता पछता धीवर लगा लछुमण से कहने(—)भैया देषते हो जो रघुनाथ वहुत सुन्दर भ(-) ० वन मे अछे सुथरे सुवर्ण के पलंग पर सी(-) ० ता सहित सुख से शोते थे सो राजकुमार ० अव घास पात बिछा कर जानकी समेत ० अनाथदीन से लेट रहे हैं(।) हा केकयी को वि ० धाता ने रामचन्दके दुख के कारण उपजाया ० जो विसने ऐसा पाप किया है (।) विन्होने उत्त(-) ० र दिया(—) सुनो मित्र(,) को किसके दुख सुख का निमि(-) ० त्त है(,) इनका हेतु अगले जनम की अपनी अपनी कमाई है(,) इस विन सुख दुख का देने ० वाला कोई दूसरा है यह समझना ही अज्ञा(-) ० नता है क्यूंकि निज कर्म रूप डोरे मे आपसे आ(-) ० प प्राणी गुथ रहे हैं(,) इष्ट मित्र भाई वंधु हितू ० वैरी उदासी आदि जितने हैं सो सव अपने भ(-)०ले बुरे कर्म ही नाना सरूप हो निज वश मे रष ० प्राणी को भांति भांति के सुख दुख दिया कर ० ते हैं(,) यों समझ जब जैसा आपडे तव तैसा ० भोगिये इससे भोग विलास के होने जाने मे ० मुझे हर्ष शोक कुछ होता नही(,) मेरे लेंखे दो(-) ० नो समान हैं (,) इसलिये कि कपाल मे विधाता ० ने जो लिखा सो यहां तक अटल है कि देवता ० ओ असुरों से भी मिटाये नही मिटता(,) मनुष्य ० किस गिणती मे हैं (।) इन्हको तो दिन रात की भां(-) ० ति सुख के वीते दुख अरु दुख के वीते सुख ल(-) ० गा ही रहता है तिस्से ज्ञानी लोग सम्पत विपत ० के होने मे कधी हर्ष विषाद नहीं करते वरन मा(-) ० या ही की सव करतूति विचार सदा आनन्द मे ० मगन रहते हैं (।) ० इस प्रकार से धीवर ओ लछुमण ० जी को आपस मे अनेक ज्ञान चर्चा करते कर(-) ० ते एक बारगी प्रभात हो गयी(।) तव श्री रामचन्द्र ० उठ वैठे ओ जल मंगाय मुह हाथ धो आचम(-) ० न कर हरि का नाम ले रथ सहित सुमंत्र को व(-) ० हां से अयोध्या को फेर सुचित हो गुह से कह ० ने लगे(—)सखा अव चलने की वेला हो चुकी(,) तुम ० शीघ्र एक अच्छी दृढ़ नाव हमे मंगा दो जो सुख ० से गंगा पार हम उतर जाए (,) यिह सुनते ही आ(-) ० प वह दौडा सो विन की ज्योग्य ही नाव ला निकट ० जा वोला(—)महाराज मै आपकी आज्ञा जोगा ला(-) ० या अब मिलकर चढिए तो जाति भाई समे[1] ० मै नाव को खेऊं(।) तव हर्षा कर श्री रघुनाथ ० ने पहले सीता को चढ़ाया तिस पीछे गुह ० का हाथ पकड आप ओ शस्त्र लिये ल(-) ० क्ष्मण जी दोनों विस पर जा वैठे ओ भाइयों ० के साथ गुह लगा डांड खेवने(,) जव वीच मे नाव आ चु(-) ० की तव कर जोर जानकी ने वहुत वहुत प्रार्थना करी कि हे ० गंगा देवी मै प्रणाम करती हू जों कुशल क्षेम से मै व(-) ० न से फीरूंगी तो नाना सामग्री ले लछुमण ओ स्वा ० मी सहित अति आदरकर मन लगा तुझे पूजूंगी(।) ० इतने ही मे नाव इस पार आय लगी ओ धीरें धीरें ० उस पर से सव उतरे तव हाथ जोर गुह ने राम से क(-) ० हा नाथ आज्ञा कीजे मै भी साथ चलूं नहीं तो मै अ(-) ० पना प्राण दूंगा रघुवर ने उत्तर दिया कि चौदह वर्ष ० दण्डकारण्य मे रह फिर मै आकर मिलूंगा(,) तुम किसी ० वात का संदेह मत करो(,) राम कधी झूठ कहने का नही(,) ० ऐसे वुझा समुझाय मिल भेट[2] वार वार

१. समेत। २. भेंट, मिलकर, आलिंगन कर।

आज्ञा भरो(-) ० सा दे कर गुह को राम ने विदा किया तद रोता कलप(-) ० ता किसी किसी प्रकार से वह घर को चला आया औ ० राम विस दिन तीर ही पर वस गये तो वहां एक पवि(-) ० त्र मृग मार ला उसे पकाकर आधा तो आग मे होम कि(-) ० या अरु आधा सीता लछुमण समेत भोजन कर सु(-) ० चित हो सांझ समय किसी वृक्ष तले जा निन्द वश[1] हो ० सुख से विस रात्रि को विताया (,) निदान होत सवेरे फि(-) ० र वहां से उठे (,) सोचले चले भरद्वाज मुनि के आश्रम प(-) ० र आ वाहर ही खड़े हो गये(,) तहां एक विद्यार्थी को देष ० समीप वुलाकर कहने लगे कि ऋषि के पास जा हमारा सं (-) ० देसा तुम जना दो कि जानकी लछुमण सहित राजा ० दशरथ के पुत्र द्वार पर आये हैं(,) शुनकर ओं ही वह ० दौडा सो निकट जा जों[2] भरद्वाज मुनि से कहा कि महा(-) ० राज स्त्री ओ भाई को संग लिये रामचन्द्र वाहर खड़े ० है कि त्यों ही सव काम काज विसरा हडवडाकर तुर(-) ० त वे उठ खडे हूये ओ पूजा की वहूत सामग्री ले समीप ० विनजा विधि से[3] तीनों को पूज अति हर्षित कर यह वच (-) ० न कहने लगे(—) कृपानिधान वडा अनुग्रह किया आ(-) ० पके दर्शन से हम निपट कृतार्थ भये(,) अव चल के पां(-) ० व की धुर से मेरे आश्रम को पवित्र की जै (,) ऐसे कह स(-) ० व को भीतर ला भक्ति सें वडा शिष्टाचार कर आस(-) ० न पर विठला फिर लगे विनती करने कि धर्मावतार आ(-) ० प के आगमन से आज हमारी सव तपस्या पूरण हो ० चूकी तुम घट घट वासी सव के ईशवर हो (,) माया फयला ० मानुष वने हो(,) व्रह्मा की आगे की[4] विनती से जिस लिये ० अवतार लिये हो ओ वन मे आ जो जो काज करोगे ० सो विस ज्ञान दृष्टि से सव हम जानते हैं जो तुम्हा(-) ० रे नाम जपने से हूई है[5] (।) अधिक कहां तक कहे(,) तुम मा(-) ० या से अलग आदि अविनाशी पुरुष हौ(,) आपको दे(-) ० षकर सव प्रकार हम सनाथ भये(।) ऋषि की इतनी ० वातें सुन वहुत नम्र हो रामचन्द्र वोले(—)आप वडे हौ(,) ० क्षत्रियों पर अनुग्रह करते हौ(,) इस भांति आपस ० में वतरा ज्ञान चर्चा ही से सारी रात विता वडे तडके उ(-) ० ठ विदा हो सीता लक्ष्मण समेत श्री रघुवीर जमुना(-) ० तीर गये(,)तहां मुनि के शिष्यों की रची हुई वेडे पर चढ़ ० वुस नदी को पार हूए ओ भरद्वाज मुनि की वताई हू(-) ० ई वाट मे हो फिर चले(,) सो कुछ वेर मे चित्रकूट नाम प(-) ० हार पर अनेक ऋषिन से सेवित ओ वारहोमास फू(-) ० लने फलने वाले नाना वृक्षन से शोभित ऐसे वा (-) ० ल्मीक मुनि के अति सोहावन आश्रम पर आन ० पहुचे तहां ऋषि को देष शिर झुका जव राम ने प्रणा(-) ० म किया तव जानकी ओ लक्ष्मण को साथ लिये शिर(-) ० र मे अद्भुत जटा बांधे कन्दर्प्य हूते अधिक सुन्दर राम ० को देषते ही निपट चकित हो तुरन्त वाल्मीकि मुनि ० उठ खडे भये ओ उन्हे गरे लगा मील[6] भेट महाहर्षि(-) ० त हूए ओ आवभगति कर विधि से पूज सुन्दर आ(-) ० सन पर विन तीनो[7] विठलाया ओ मधुर मधुर फल ० ला भोजन कराया अरु ऐसा प्यार किया कि जिस ०

१. निद्रावश होकर,। २. ज्योंही। ३. यहाँ 'विन' होगा। ४. पहले की गई। ५. हुई है, जो ज्ञान-दृष्टि मैंने प्राप्त की है। ६. मिलकर। ७. तीनों को।

का कुछ वर्णन ही[1] किया जाता (।) तव ऋषि को वहुत ० प्रसन्न देष हाथ जोर विनय कर रामचन्द्र ने कहा (—) म (-) ० हाराज पिता की आज्ञा निवाहने के लिये दंडका (-) ० रण्य मे हम आचू के (,) यह जों ज्ञान दृष्टि से आप जान ० ते ही हौ तो अपने आगमन का कारण फिर क्या ० सुनावे (,) अव कृपा कर एक स्थान वता दीजिये तो सी (-) ० ता लछुमण सहित कुछ दिन सुख से वहां हम वसें (।) ० राम की इतनी वातें सुन मुस्कुरा कर वाल्मीकि जी ०ने उत्तर दिया (—) यों तो सकल जीव जन्तु को रहने ० का उत्तम भवन तो तुम ही हो ओ तुम्हा रहेंगे केवे सव घर है पर जानकी सहित वसने का विशे (-) ० स जगह जो पूछते हो तो जो मनुष्य शान्त ओ सम (-)० दर्शी हो (,) सव धर्माधर्म तज जी लगा तुमही को नि (-) ० त्य जपते हैं अरु अभिमान त्याग शान्त मन करन (-) ० तो किसी से प्रेम चाहते न विगार (,) सदा तुम्हारा नाम ० जप सुवर्ण मिट्टी को समान ही समझ सकल वस्तुन ० की आशा छोड़ एक तुमही मे मन लगा सव दिन सं (-) ० तुष्ट रहते हैं ओ सव माया है यह विचार कधी कुछ ह (-) ० र्ष शोक नहीं करते वरन घट घट वासी चेतन रूप तुम ० को ज्ञान से देष संसार के चलन से अलग हो तुम्हारे ० नाम के कीर्त्तन ते सव पाप से छूट सुख दुख को तुल्य ० कर मानते हैं (,) तिस्से हे नाथ सीता सहित विसी स्था (-) ० न मे जा वसिये (।) तुम्हारे नाम की महिमा कहा तक ० कोई जान शके कि जिसके प्रभाव से मै व्रह्मर्षि हू (-) ० आ (।) इस भांति हंस हंस कहके फिर वाल्मीकि जी अ (-) ० पना पूर्व समाचार राम को लगे सुनावने कि आगे व (-) ० हुत दिवस तलक मै भीलों के संग रहा ओ उनही लो ० गों के साथ वडा भया (,) कहने को मेरा जनम व्राह्मण ० घर था पर सदा शूद्रों ही का आचार मैं करता था ओ ० वुन ही के घर मे रहता (,) तहां कामवश हो शूद्र की स्त्री ० से अनेक पुत्र मैने उत्पन्न किये (,) विन के आहार के ० लिये जव और कुछ नही वन पडा तव चोरों वटमारों ० से मिल कर धनुष वाण ले यम समान निर्दयी हो दू (-) ० र दूर जा लगा मै लोगों को मारने (,) निदान एक वेर ते (-) ० ज मे ठीक सूर्य्य तुल्य मरीचि आदि सातो ऋषि अ (-) ० पनीनुचि से किसी सघन जंगल मे हो कहीं को चले ० जाते थे (,) विन्ह की झोरी मात्रा लेने के निमित्त खडे ० हो खडे हो वुन को पुकारता हूआ[2] पीछे से मै दौडा (,) ज (-) ० द निकट जा पहुंचा तद वे सव खड़े हो गये ओ ० मुझे देखकर यह वात पूछने लगे (—) क्यूं रे अधम किस ० कारण तू चला आता है (।) मे वोला कि जों अपना जी ० वंचाया चाहते हो तो जो कुछ तुम्हारे पाह है सो इहां ० डाल दो (,) मेरी स्त्री ओ लडके बहुत भूषे हैं (,) विन की ० रक्षा के हेतु परवत पर परवत वन वन मै फिरा फिरता ० हूं (।) सुन कर ऋषियों ने उत्तर दिया कि अच्छा तू प (-) ० हले अपने घर जा अलग अलग सव वेगतिन[3] से ० पूछ आ कि जो जो पाप नित्य मै करता हूं तिसके भा (-) ०गी तुम लोग हौ कै नही (।) तब तक हम सव निश्चय (-) ० हां ही रहेंगे अरु तभी तेरा कहा करेंगें (।) साधुन के मुह ० से इतने वचन के निकलते ही ओं ही मै फिरा तो जो कु (-) ० छ उन्होने कहा था सो गृह मे जा सवसे मैने पूछा पर ० कोई नहीं वोला कि हां मै तुम्हारे पाप का साथी हूं औ (-) ० र भी कानों पर हाथ दे कहा कि तुम्हारा पाप तुमही को ०

१. नहीं। २. 'खड़े हो' खड़े हो,' इस तरह पुकारता हुआ। ३. व्यक्तियों से, कुटुम्बियों से।

रहे(,) हम सुख के भागी सदा हैं(,) सो सुन संसार से मैं निप(-) ० ट उदास हूआ तव अपने पर वहुत धिक्कार माना मा(-) ० रे लाज के नीचे शीर कर किसी किसी प्रकार पुन विन ० दयालु सप्तर्षियों के पास मैं आन पहुचा तो विन्हो ० के दर्शन से मेरा मन वहुत शुद्ध हो गया (,) तव धनुष ० वाण तज दण्डवत कर मैं वुन के आगे जा गिर पडा ० ओ कहा कि महाराजो मेरा अपराध क्षमा करो अ(-) ०रु किसी प्रकार नरक सें मुज को वंचा लो(,) यों कह विन० के चरणोंपर लगा मैं लोटने तद उठाकर विन्होने मु(-) ० झे कहा कि जा तुजे सतसंग फला अव कुछ ऐंसा तु (-) ० झे मंत्र वता देते हैं कि जिस्से सव पाप से छूट तू मुक्त ० हो जायेगा(।)यह सुना हेठ उपर मुझको निहार पहले ० तो चाहा कि यह वडा अधम है इसको दूर ही करना ० भला(,) हित वतावना उचित नही(,) निदान शरणाग(-) ० त जान दयावश हो ठहराया कि अव तो वचन हार चू(-) ० के तिस्से मुक्त होने का उपाय वता इसकी रक्षा ही की(-) ० या चाहिए(,) इस प्रकार वडी वेर तक आपस मे वतरा हे ० रामचन्द्र तुम्हारा उलटा नाम विन्हो मुजे वताया ओ क(-) ० हा इहां ही रहकर मन लगा मरा मरा नित्य तू जप(,)जव ० तक हम सव फिर आंवे तव तलक इसी का जप तू कि(-) ० या कर ऐंसे शिषा पढ़ा वहुत आशा भरोसा दे ऋषि ० लोग तो जहां जाते थे तहां चले गये ओ मैं वहां ही ए(-) ० क पेड तले जा वैंठ कर लगा जप करने तो जपते जप(-) ० ते वाहर की सव मेरी सुधि भूल गयी ओ निपट स्था(-) ० वर समान मैं हो गया(,) निदान वहुत वर्ष जब बीत चूके ० ओ दियको न[1] मेरे शरीर के उपर घर वनाया तव फि(-) ० रते फिरते सप्तर्षि लोग पुन वहां आन पहुचे ओ जैं(-) ० से मुजको पुकारा कि वचा अब वाहर आओ तैंसे ही ० महातेजस्वी हो विस टील्हे मे से ऐंसा मैं निकला कि ० मानो उदया-चल पहाड से सूर्य ही उदय लेवें(,) तव दे(-) ० षते ही वहुत प्रसन्न हो मुनियों ने मुज से कहा कि ० वल्मीकि ते निकल तुमने आज दूसर जनम पाया ० तिस कारण तुम्हारा नाम अव हमने बाल्मीकि मुनि र(-) ० ष्षा यों कह हर्षित हो वे लो[2] स्वर्ग को गये सो हे महाराज ० तुम्हारे नाम के प्रभाव से मैं ऐंसा भया(,) अव सीता लछु(-) ० मण समेत आपको साक्षात देष निसन्देह मैं मुक्त हू(-) ० आ(,) चलिये वसने को एक जगह आपको वनवां दूं(।)यों ० कह विन तीनों को आगे कर सब शिष्यों को साथ ले गं(-) ० गा ओ पर्वत के बीच मे जा पूरव पछिम मुख दो घर की ० एक अछी सुथरी शाला वाल्मीकि मुनि ने वनवा दी ० तिस मह एक मे तो लछुमण जी जा उतरे ओ दुसरे मा(-) ० ह जानकी साथ वस करके ऐंसे रामचन्द्र हर्षित हूए ० कि जैंसे इन्द्राणी संगलिये इन्द्र हर्षायें ओ नित ० नित जा वाल्मीकि ऋषि उन्हो की पूजा लगे करने (।) ० इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकाण्डे षष्टोध्याय: ६(।) ० इहां तो यो हो रहा था ओ वहां सुमत्र जी अयोध्या ० मे संध्या समय जा पहुंचे तो राम विन सारा नगर ही शू(-) ० न्य देष कपडे से मुह छिपा गढ के द्वार पर जा रोते ही र(-) ० थ से उतरे ओ विसे वहां ही छोड़ राजा को देषने के लिए(-) ० ये भीतर गये (।) जब समीप जा प्रणाम कर खडे भये तव ० व्याकुल हो राजा दशरथ ने पूछा(—)सुमंत्र कहो राम लछु(-) ० मण सीता को तुम कहा छोड़ आये(,)

१. दीमकों ने। २. लोग।

मुज पापी निर्दयी ० को विन ने क्या कहा सो सुनाओ (।) यों कह लगे बहुत वि(-) ० लाप करने कि हा राम हा गुण निधान हा सीता तुम दु(-) ० ख के सागर मे मुज को डूबते हुए तनिक भी न देषते हौ (।) ० इस प्रकार वडी वेर तक राजा के रोते कलपते देख क(-) ० र निदान हाथ जोड के मंत्री वोला (—) महाराज रामलछु (-) ० मन सीता तीनों को रथ पर चढ़ा यहां से श्रृंगवेरपुर ० के निकट गंगा तीर तक संग मै गया (,) तहां गुह नाम के(-) ० वट ने कुछ फल ला आगे रष्षा पर रामचन्द्र ने प्रीति ० से छू दिये (,) लिये नही (,) ओ विस्से वड का दूध मंगा शि(-) ० र मे जटा वन्धवा रात भर साथ रष्षा (,) होत सवेरे मुजसे ० कहा कि सुमंत्र अव तुम यहां से फिरो (,) राजा से कहि(-) ० ओ मेरे लिये शोक न जी मे करें (,) अयोध्या से भी अ ० धिक सु्वन मे मुजको होगा ओ माता को भी ० निके[1] शिषाइओ कि जिस्से तनिक न मुजको जी ० मे लावें अरु राजा वृद्ध हैं तिस्से वुझा समझा ऐसा ० विन को सुचित करें कि जिसमे वे आकुल नही होवें (।) ० इसी भांति निपट दुखित हो राम की ओर निहार आंखों ० मे आसू भर नीचे शिर कर सीता भी गिडगिडा के वोलीं ० शासु शसुर से मेरा वहुत प्रणाम कहिओ (।) ऐसे कह वि(-) ० लकते ही नाव पर चढ़ जव तक वे सव गंगा पार हो गये ० तव तलक तो मै वहां ही खड़ा था तिसके पीछे महा आ(-) ० तुर हो यहां फिर आया (।) इस प्रकार जव सुमंत्र ने सुना(-) ० या तव रो रो कौशल्या लगीं राजा से कहने कि अपनी ० प्राणप्यारी केकयी ही से जो आप वहुत प्रसन्न है तो ० विन्ही को सव राजपाट दे डालते पर मेरे पुत्र का क्या ० अपराध कि जिस्से देश निकाला दिया (,) सव करतू(-) ० ति आपही कर अव क्यूं झूठमूठ रोते हौ (।) कौशल्या ० की इतनी बातें सुन राजा दशरथ ऐसे दुखित भये ० कि जैसे घाव के ऊपर आग ही किसी ने रख दी होए (,) ० निदान शोक से आकुल हो रानी से कहने लगे कि ए(-) ० क तो आपे मेरा प्राण जाता है दूसरे तुम क्यूं मुजे मा(-) ० रा चाहती है (,) इसमे मेरा कुछ दोस नही (,) आगे एक(-) ० ऋषिने मुज को श्राप दिया था तिसी का यह कर्म है सो ० समाचार ऐसा है कि जद मै युवा था तद अहेर खेल(-) ० ने मे मुजे वडी श्रद्धा थी सो एक वेर आखेट के निमित्त ० धनुष वाण ले रात को जो मे निकला सो चला चला ए(-) ० क महावन मे नदी के तीर कहीं ओट मे जा छिप र(-) ० हा तहां आधी रात के समय तृषा से निपट पीडित हो ० ओ मारे प्यास के माता पिता को वहुत व्याकुल देष पा(-) ० नी लेने के लिये श्रवण मुनि आन पहुचे (,) जब लगे ज(-) ० ल भरने तव भभक भभक उसका शब्द सुन मैने जा(-) ० ना कि कोई हाथी पानी पीता है (।) यों विचार धनुष पर ० रष एक ऐसा वाण विसको मारा कि ओंही वह लगा ० लोटने अरु पुकार पुकार कहने कि हा विधाता मै तो ० किसी का वैरी न था (,) विन अपराध किस निर्दयी ने मु(-) ० झे मारा (,) इस वेरियां प्यास से आकुल हो माता पिता ० मेरी वाट निहारते होगे (।) इस प्रकार मानुष की वोली ० सुनते ही पहले तो मारे डर के मै सुख गया फिर ढाढ(-) ० स कर धीरें धीरें निकट जा वुससे कहा (—) स्वामी मै दश(-) ० रथ हूं (,) अनजाने यह चूक मुजसे हूई है ऐसे गिडगि(-) ० डा गिडगिडा कह निदान चरणों पर जा मै गिर पडा त(-) ०

१. नीक ही, अच्छा ही।

द चेत कर ऋषि यह वचन वोल उठे (—) अरे राजा तूं डर ० मत ब्रह्म हत्या से वंचा (,) मै जाति का वैश्य हूं (,) लडकपण ० से तपस्या मे मै मगन था (,) मेरे पिता माता भूष प्यास से ० मरते होंगे तिन्हो को तुरत जा पानी दे (,) इसी मे तेरा क (-) ० ल्याण है (,) नही तो जों वे क्रुद्ध होंगे तो तुझे विन भस्म ० किये न छोड़ेंगे तिस्से शीघ्र जा जल दे (,) अधीनता (-) ० ई कर अपना यह सव कर्म उन्हें जना आओ मे (-) ० री देह से इस वाण को निकाल ले (,) मारे पीडा के अब ० मै प्राण तजता हूं (।) इतने कचन[1] के सुनते ही जो मैने ० शर खैंच लिया है कि त्यों ही विन का प्राण निकल ग (-) ० या (,) निदान अछता पछता तुरत भर घडा पानी ले ० ओंही मै वहां दौडा कि जहां अन्धा अन्धीविसके ० पिता माता भूष प्यास से व्याकुल हो आपस मे यों व (-) ० तरा रहे थे कि अतलक[2] पुत्र जल नही लाया क्या का (-) ० रण है विस विन किस प्रकार हमारा निवाह होगा (,) जों ० कहिए कि हमे वृद्ध देष छोड भागा तो सो भी नही क (-) ० ह शकते क्यूंकि हम विन उसको कधी कल नही प (-) ० डती (,) इसी चिन्ता मे मेरे पांव की धुनि सुन वुस का पि (-) ० ता लगा कहने कि वेटा क्यूं वडा विलम्ब किया (;) आओ ० पानी दो (,) तुम्भी सुचित हो पीओ (,) इतने ही मे डरता ० कांपता किसी किसी प्रकार समीप मै जा पहुंचा ओ विनके चरणों पर विनय कर यह वात मै लगा कहने (—) ० महाराज मै तुम्हारा पुत्र नही अयोध्या का महा पा (-) ० पी राजा दशरथ हूं मृगों का अहेर खेलने के लिये आ (-) ० ज रात को घर सें जो मै निकला सो एक नदी तीर निरा (-) ० ले मे जा वैठ रहा (,) तहां पानी भभक भभक शव्द ० सुन जों मैने एक वाण चलाया तों ही वहां से यही धु (-) ० नि सुनने मे आयी की हा अव मरे (,) तव भय से घवरा ० निकट जा देषा तो मुनि का वालक अचेत हो लोट (-) ० ता है (,) निदान पांव पड जद मै लगा विनती करने तद ० वे वोले कि डरो मत व्रह्म हत्या तुझे नही होगी पर ० जो अपना जी वंचाया चाहते हो तो मेरे पिता माता ० को शीघ्र-जा जल पिलाओ अरु निज अपराध क्ष (-) ० मा कराओ (,) ऐसे कह आपके पुत्र तो वैकुण्ठ धाम ० को पहुचे (,) सो कृपा निधान अव तो यह अपराध० मुज से हो चूका (,) अव शरणा-गत जान जिसमे मे (-) ० री रक्षा हो सो आप कीजे (।) इतने वचन के सुनते ही ० वहुत रो कलप अन्धा अन्धी ने कहा कि रे अधम जहाँ ० हमारा पुत्र पडा है तहा शीघ्र हमे ले चल (।) यह सुन विन ० के सुत के पास जद मैने विन दोनों को पहुचा दिया तद हाथ से ० टटोल वाल[3] को छाती लगाय वहुत विलाप कर मुज ० से कह तुरत चिता रचाय आग लगा मृतक समेत भ (-) ० स्म होवे दोनों स्वर्गलोक को गये (,) तिनमे बुढे ने मर (-) ० ण समय मुजको श्राप दिया कि जाओ पुत्र के शोक ० से इसी प्रकार तुम्भी एक दिन मरोगे (,) सो हे रानी वि (-) ० सी शाप का काल यह आन पहुचा (,) किसी से मिटा (-) ० ये न मिटेगा (।) ऐसे स्त्री को समझा शोक से निपट आ (-) ० कुल हो हा राम हा लछुमण हा सीता केकयी के दि (-) ० ये हूए तुम्हारे वियोग से अब मै मरता हूं यों कहते ० ही प्राण त्याग राजा दशरथ अमरपुर को गये (।) तव ० कौशल्या आदि

१. 'वचन' होना चाहिए। २. 'अब' होना चाहिए। ३. बालक।

जितनी स्त्रियां थी सो छाती पी (-) ० टपीट सव लगी रोने (।) इतने मे प्रभात हो गयी तद मं (-) ० त्रिन समेत वशिष्ट मुनि तहां आन पहुचे तो भ (-) ० ली भांति से रानियों को वुझा समझा राजा को तै (-) ० लद्रोणी मे रष दूतों को वुला कर यह वचन करने ल (-) ० गे कि तुम लोग वेग चलनहार घोड़ों पर चढ़ युवाजित ० के नगर जा शत्रुघ्न समेत भरत को वहां से तुरंत वुला ला (-) ० ओ (—) यों कह के कि गुरु की आज्ञा से अयोध्या चल राजा ० ओ केकयी का दर्शन आपकी जे (।) इतने वचन सुनते ही "घोड़ों पर चढ़ ० ओं ही वे उडे सो चले चले युवाजित के पास जा प्रणाम क (-) ० र भरत शत्रुघ्न से कहा कि महाराज वसिष्ट मुनि ने तु (-) ० म को तुरत बुलाया है तिस्से हमारे साथ अभी आप ० प्रस्थान करिये (,) इसमे विलम्ब करना उचित नहीं (।) इ (-) ० स भांति घर का संदेशा सुनते ही मारे डर से वहुत ० घवरा भरत लगे शोचने कि हो न हो राजा ओ राम ० चन्द्र पर कुछ भारी संकट है नही तो काहे को इतना ० शीघ्र वुलाते निदान सवसे मिल भेंट दूतन संग दो (-) ० नों भाई वहां से विदा भये (।) जव अयोध्या मे आन ० पहुँचे तव नगर को महा उदास अरु उत्सव वि (-) ० हीन देष ओ जो लोग आनन्द मदमात इकठे हो ० नाना विहार आगे करते थे तिन्हो को अति उद्वि (-) ० ग्न लष शोभा रहित राज मन्दिर मे जा देषें तो आ (-) ० सन पर केकयी वैठी है (,) तद चरण छू शिर झूका ० प्रणाम कर विन के पास जा खड़े भये (।) देषती ही प्रेम ० वश हो वहुत हर्षा भरत को विन्हने अंक मे लगा लि (-) ० या ओ वार वार मुह चूम निकट विठला लगी नैहरे का स (-) ० माचार पूछने कि कहो पुत्र मेरे पिता माता भाई वंधु ० सव भले चंगे है (,) ओ किस लिये इतने दिन वहां रहे (,) तुम्हा (-) ० रे विन मेरा जी वहुत अकुला रहा था था (,) अव भाग से तु (-) ० मको कुशल देष मुजे वडा आनन्द हूआ (,) तद आ (-) ० तुर हो भरत वोले (—) हां वे लोग सव अछे हैं (,) तुम कहो ह (-) ० मारे पिता कहां है ओ यहां एकेली तुम क्यूं बैठी हो (,) ० तुम्हारे विन तो वे कधी एकान्त मे न र ते[1] थे (,) क्या कार (-) ० ण जो आज विन्हे देषते नही (,) वताओ किस जगह ० मे है (,) उनको देषे विन वहुत दुख ओ भय हमको हो (-) ० ता है (।) केकयी ने उत्तर दिया (—) वेटा अव घवराने से कु (-) ० छ होने का नही (,) तुम्हारे पिता विस वैकुण्ठ धाम को ० गये कि जहां अश्वमेध आदि यज्ञ करनहारे ध (-) ० र्मात्मा लोग जाते हैं (।) माता की इतनी वातें सुन भर (-) ० त पृथ्वी पर गिर पडे ओ हा हा कर रो रो कहने लने लगे (—) हा ० पिता दुख के सागर मे मुझे डाल ओ विन रामचन्द्र को ० हाथ धराये कहां आप सिधारे अव आपकी भांति ० को मेरी रक्षा करेगा ओ हित अनहित समझावेगा (।) ० इस भांति शिषा छितरा शिर पीट पीट सुत को कलप (-) ० ते देष केकयी ने उठा विठलाया ओ अंचले से विसकी आं (-) ० खे पोछ वहुत आशा भरोसा दे यह वात कहने लगी (—) पु (-) ० त्र किस लिये तुम इतना आतुर होते हो (,) मैंने तुम्हारा ० सव काज संवार रष्षा है (,) तुम किसी बात की चिन्ता म (-) ० त करो (।) भरत ने पूछा कि मरण समय पिता ने क्या क (-) ० हा सो मुजको सुनाओ (,) निडर होकर वह वोली कि हा ० राम हा सीता हा लछुमण यही वार वार कह वहुत ० विलाप कर

१. 'रहते' होना चाहिए।

देह तज स्वर्ग को गये तव भैचक[1] होकर ० भरत ने फिर पूछा (—) क्या राम लक्ष्मण सीता ये सव घ(-) ० र छोड़ कही वाहर गये हैं (।) ० केकयी वोली (—) राम को राज्य ० देने के निमित्त तुम्हारे पिता ने वडी ओतावली की ० तद तुमको राज्य होने के लिये विस काय[2] मे मैंने विघ्न डा(-) ० ल दिया (,) तिसका कारण यह है कि पृथ्वी पति ने आगे ० मुज को दो वर देने कहा थे सो अव मैंने मांगे कि विन ० मे से एक से तो भरत को राज्य अरु दूसरे से रामचन्द्र को व(-) ० नवास होवे (,) इस्से सत्यवादी राजा ने तुमही को राज्य दे र(-) ० घुनाथ को वन भेजा (,) तिनकी सेवा के हेतु सीता भी ० साथ गयी ओ अपनी प्रीति देषावने के अर्थ लक्ष्म (-) ० ण विन के संग हो लिये (,) जद वन मे सव जा चूके तव वि(-) ० न्हो की चिन्ता से निपट व्याकुल हो हा राम हा राम कह ० राजा स्वर्ग लोक को गये (।) इस प्रकार माता की वातें सु ० न मूर्च्छित हो धरती पर ऐंसे भरत गिर पड़े कि मानो व(-) ० ज्र का मारा हूआ पेड (।) तद पुत्र को अचेत देष अति दु(-) ० ख पा फिर कैंकेयी ने कहा (—) वेटा एत्ता वडा राज्य पा के ० शोक क्यूं करते हो (,) अव तुम्हें क्या दुख है जो इतना घव(-) ० राते हो (,) तव कुछ एक चेत कर कोप से लाल हो भरत ० वोले (—) रे हत्यारिन स्वामी को वध तू मेरी हितू कहाया ० चाहती है (,) तुझसे तो वातचित करना उचित नहीं (,) तेरे ० गर्भ से उत्पन्न हो मै भी आज कलंकी हूआ (,) अव ० आग मे जल कै विष खा कर निज प्राण मैं तजूं (-) ० गा तू भी इस पाप से अवश्य नरक पडेगी (।) इस प्रकार ० माता को वहुत डांट डपट वहां से उठ कौशल्या के पा(-) ० स जव गये तव भरत को देष गला षोल कर लगी व(-) ० ह पुकार पुकार रोने ओ विन के पांव पड वे भी लगे वि ० लाप करने (।) तव भरत को अंग लगा कौशल्या ने क(-) ० हा (—) पुत्र तुम्हारे पीछे जो कुछ करतूति केकयी ने ० की है सो तो विन ही से तुमने सुना होगा मै अधिक ० क्या कहूं (,) मुजे दुख के सागर मे डाल स्त्री भाई समेत ० चीर वस्त्र पहन जटा वान्ध देश निकाला ले रामचं(-) ० द्र वनवासी भये (।) ऐंसे कह फिर लगी रोने कि हे राम ० हे रघुनाथ पूरण व्रह्म होकर तुमने मुज मे अवता(-) ० र लिया तो भी दुःख ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा (,) विधाता ० तुम वडे प्रवल हो (।) इस भांति मोह से अति व्याकुल ० हो वार वार कलपती हूई कौशल्या को देष पांव प(-) ० कड भरत लगे कहने (—) सुनो माता राम को राज्य हो(-) ० ने मे कैकेयी ने जो कर्म किया है सो कै विस आदि ० और कुछ जों मै जानता हूं अथवा विस को मै ल(-) ० गा दिया हूं[3] तो सैकरों व्रह्म हत्या का पाप मुझको ० होवे (,) वरन अरुन्धती सहित वशिष्ट मुनि को ख(-) ० ड्ग से मारने का पातक लगे (।) इस प्रकार कठिन श(-) ० पथ खा जव भरत का गला भर आया तव छाती ० मे वुसे लगा कौशल्या ने कहा (—) पुत्र तुम मत घ(-) ० वराओ मै तुम्हे भले जानती हूं इसमें तुम्हारा कु(-) ० छ दोस नही (।) इतने मे भरत का अगमन सुन मं(-) ० त्रीन सहित वसिष्ट मुनि वहां आन पहुचे ओ भ(-) ० रत को रोते देष आदर साथ लगे वुसे समझाव(-) ० ने कि राजा दशरथ सत्यवादी ओ ज्ञानी थे

१. भौंचक। २. 'काज' ('य' को 'ज' पढ़ना चाहिए)। ३. उसे या उस आदि के बारे में अगर में जानता हूँ, या उसके संबंध में मैंने कुछ किया है।

इस ० लोक का उत्तम उत्तम सव सुख भोग वृद्ध हो अ(-) ० श्वमेध आदि यज्ञ कर वहुत दान दक्षिणा दे पूर(-) ० ण व्रह्म रामचन्द्र को सुत पा अन्त समय स्वर्ग मे ० जा इन्द्र का आधा आसन वुन्होंने पाया(,) तुम वृथा ० शोक करते हो (,) वे तो मुक्त हो गये ओ जिस जीव ० के लिये इतना कलपते हो तिसका तो कधी ज(-) ० नम मरन नही होता(,) यह शरीर ही वार वार उप(-) ० ज नष्ट हो जाता है (।) यह समझ वहुत मोह करना ० तुम्हे नही चाहिऐ क्यूंकि पिता कै पुत्र आदि जो ० कोई मरता है तो छाती पीट पीट मूरख सव वहुत ० रोते हैं ओ ज्ञानियों का जों पूछों तो संसार मे उ(-) ० दास हो निपट सुख से रहते हैं(।) यह विचार करके ० कि जैसें इस लोक मे प्राणी जनमता है तैसे ही ० विसके साथ मृत्यु भी हो लेती है तिस्से किसी प्र ० कार मरण से प्राणी का चांव[1] होने का नहीं(,) यों शोच स(-) ० मझ चित्त को तनिक मत व्याकुल करो(,) देखो को(-) ० टिन व्रह्माण्ड नष्ट हो गये(,) सागर सव शुख जाते ० हैं(,) क्षण समान इस जीवन मे कहो किस का ठहरा(-) ० व है ओ पीपल के पत्ते की फुंनगी पर लटका हूआ ० पानी की वुन्द सा टपकनहार इस आउर्वल[2] का ० कैसे विश्वास करते हो(।) ऐंसे कह फिर वशिष्ट मुनि ० वोले(—)जैसे पुराण कपडा तज नया वस्त्र पहरते ० हैं वैसी ही इस शरीर की चाल है(,) यह विचार तुम ० वृथा शोक करते हो क्यूंकि चेतन ओ आनन्द स(-) रुप यह आत्मा न तो कभी मरता न जनमता है ० और न वढता न घटता(,) सदा जों का तो ही रहता है(।) कधी इसकी हानि नही होती(,) तिस्से आत्मा ० को अविनाशी जान मोह त्याग तैलद्रोणी से पि(-) ० ता को निकाल मंत्रिन को साथ ले जो कुछ उन्ह (-) ० की उचित क्रिया चाहिए सो करो(।) इस प्रकार जब ० गुरु ने वहुत प्रवोधा तव सब मोहतज मंत्रिन ओ ० भाईन को संग ले विधि से भरत ने पिता को दाह ० दिया (,) जव इगान्हवां दिन आन पहुचा तव भली ० भांति से काम काय[3] कर वेद के पढ़न हार सहस्र (-) ० न व्राह्मणों को आदर कर जे माया अरु पिता के ० निमित्त वहुत धन(,) अनेक गौ(,) सहस्र गांव अन(-) ० गणित रत्न द्विजन को दान दिया(,)जव कि विस का(-) ० यं से सुचित भये तव वशिष्ट भाई अरुमंत्रिन के ० साथ हो निज घर मे आ रामचन्द्र विन निपट उदा[4] ० हो भरत सव से यह वचन कहने लगे कि सीता० लक्ष्मण सहित राम के वन गये पर राक्षसिनी स (-) ० मान इस केकयी को देष मेरा सारा आंग जल उ(-) ० ठता है ओ यह राज्य पाट तनिक नहीं मुजको ० भावता है(,) इस्से अभी वन मे जा जानकी सहित ० श्री रघुनाथ की सेवा मै करूंगा(,) यहां रहने से मुझे ० कोई नहीं वषा नेगा(।) इति श्रीरामचरित्रे अयो(-) ० ध्याकाण्डे सप्तमोध्याय: ७ (।) इतने वचन के सु(-) ० नते ही जितने नगर के वडे वडे लोग और मुनि मं(-) ० त्री सव वहां थे तिन के साथ हो वांह पकड़ वसिष्ट ० ने तुरत भरत को उठा लिया अरु राजसभा मे ले ० जा आसन पर वैठा विसदेश ओ समय का उचित ० यह वचन कहने लगे(—)हे पुत्र दशरथ की आज्ञा सें ० अव मै तुम्हे

१. 'बचांव' यहाँ पढ़ें। २. आयुर्बल। ३. काज ('य' को 'ज' की तरह पढ़ना चाहिए)। ४. उदास।

राज्य का तिलक देता हूं क्यूंकि तुम्हारे ० लिये केकयी ने जद राजा से वर मांगा तद प्रतिज्ञा ० कर तुम ही को वे राज्य दे गये हैं(,) इस्से ऋषिन समेत ० वेद के विधि से मैं तिलक देता हूं(।) भरत ने उत्तर दिया(—) ० महाराज मुजको इस्से क्या काम(,) महाराजाधिरा(-) ० ज रामचन्द्र हैं मै तो विन क[1] दास हूं(,) होत सवेरे राम ० को लाने के लिये मै वन जाऊंगा(,) एक केकयी राक्ष(-) ० सिनी विन सव रानिवांस समेत तुम सव भी मेरे सा (-) ० थ चलो(।) क्या करूं स्वामी का वध करनहारी केकयी ० को तो अभी मैं जीव से मार डालता परस्त्रीघात क(-) ० रन हार मुजे जान रामचन्द्र मेरा आदर नहीं करेंगे(।) ० यों कह फिर बोले कि तुम लोग चलो तो चलो नही तो ० शत्रुघ्न समेत वडे तडके मैं दण्डकारण्य को जाऊंगा (,) ० जिस प्रकार से रामचन्द्र वन को गये वैसें ही चीर व(-) ० स्त्र पहन फल मूल आहार कर जटाधारी मैं हूंगा ओ ० जवतलक रामचन्द्र नहीं फिरेगें तव तक शत्रुघ्न सहि(-) ० त वहां पृथ्वी ही पर शोऊंगा(।) इस भांति प्रतिज्ञा कर ० जव भरत चुप भये तव धन्य धन्य कर र्हषित हो स(-) ० वों ने विनकी वहुत वडाई करी(,) निदान होत प्रभा(-) ० त जव भरत चल खड़े भये तव हाथी घोडे सहित ० सव सेना ओ कौशल्या आदि सकल रनिवांस व(-) ० शिष्ट आदि व्राह्मण जितने थे सो सव सुमंत्र की ० आज्ञा पा भरत को वीच मे कर एँसे वहां से चले जो ० पृथ्वी को छा लिया(,) जद शृंगवेरपुर के निकट गं(-) ० गा तीर जा शत्रुघ्न की आज्ञा पा डेरा डाल दिया तव व(-) ० डी धूमधाम से भरत का गमन[2] सुन गुह के जी मे ० सन्देह हूआ कि इतनी वडी सेना साथ लिये भर(-) ० त आया है तो हो न हो राम को एकेला जान मारने ० को चला है(,) तिस्से पहले तो चल कर इसे देषें जो तो[3] ० जी का सीधा होवेगा तव तो गंगा उतरने पावेगा न(-) ० ही तो अपने जात भाईयों को कह देगें कि जितनी ० नावे है तिन्होको षैंच ले जा अवघट लगा दो ओ ० सव शस्त्र वांधे चहुं दिश निहारते रहो भरता का को(-) ० इ लोग विनके निकट न आने पावे एँसें शोच सम(-) ० झ सव से एक मत हो वहुत भेट की सामग्री ले ओ ० शस्त्रधारी अनेक जात भाइयों को आगे कर नि(-) ० ज घर से निकला तो धीरें धीरें समीप जा शत्रुघ्न ० ओ मंत्रीन समेत वैठे हूए भरत के आगे भेट रष दि(-) ० या अरु जटा मुकुट धरें चीरवस्त्र पहने ओ राम ० ही की चिंता मे मगन अरु राम ही को वार वार रट(-) ० ते हूए विनको देष कर बहुत सन्तुष्ट हूआ ओ शि(-) ० र झुका वुन्हे प्रणाम किया ओ कहा(—)महाराज मेरा ० नाम गुह है आपसे मीलने को मैं आया(,) इतने व(-) ० चन के सुनते ही भरत तुरत उठ खडे भये ओ वडी ० आव भगति कर गुह को गरे लगा लिया ओ राम ० का सखा जान कुशलक्षेम पूछे यह वचन वुस से कह ० ने लगे(—)एँ भैया रामचन्द्र के साथ तुम ही यहां रहे थे(,) ० धन्य तुम्हारा भाग है कि जिससें प्रसन्न होकर करु(-) ० णा भरी आंषन से निरषकर श्रीरघुनाथ ने वातची(-) ० त की(,) इस भांति वहुत वडाई कर फिर पूछने लगे(—)मि(-) ० त्र जहां सीता लक्ष्मण समेत रामचन्द्र को तुमने दे(-) ० षा ओ जानकी सहित जहां वे सोये थे विस जगह ० को चल कर मुजे देषा दो(,) श्री रघुनाथ के तुम सेवक ० ओ वड़े मित्र हो (,) तुम्हारे भाग का कहां तक वषान ०

१. विनका। २. आगमन। ३. यदि।

करूं(।) इस प्रकार राम को सुमर सुमर रो रो कह करके ० गुह के साथ हो भरत चले तो जहां कुश विछा के रा(-) ० मचन्द्र रात को सोए थे ओ जो सीता के गहनो के उ(-) ० खडे हूऐ चिन्हो से अति शोहावन हो रहा था विस ० स्थान को देष के जी मे निपट दुख पा विलषा विल(-)० षा कहने लगे कि देषो जो राजा जनक की वडी सुकु(-) ० मारी लडकी सुथरी सी अटारी मे रत्न के पलंग पै अ(-) ० ति कोमल विछोने पर राम समेत सुख से सोती थीं ० सो इन कुशों पर पति सहित क्यूं कर पौढी होगी(,) ० हा धिक् है मुज को केकयी को कोष मेरा जनम ० हूआ नही तो काहे को वुन्हे इतना दुःख होता अ(-) ० हो लक्ष्मण का जीवन जन्म सुफल हो चूका० क्यूंकि हर्षित हो वन मे भी जा सदा राम की सेवा ० टहल करते हैं इसी प्रकार जोंतो राम के दासों का दास मै हूंगा तो मेरा भी जनम सुफल होगा(।) ० ऐसे कह फिर वोले(—)भैया जो तुम जानते हो तो मु(-) ० झे वताओ जहां रामचन्द्र है तहां जा हठ से मै वि (-) ० न्हे लाऊंगा(।) यह सुन भरत को निपट सीधा जान ० नेह कर गुह लगा कहने (—)धर्मावतार तुम धन्य० हो कि जिसे सीता लछुमण समेत श्रीरघुनायक ० मे ऐसी प्रीति है(।) मै तो कभी नही वतवता पर देषता हूं ० कि तुम्हारे जी मे कुछ छलछिद्रम नही है इस्से ० सुनो(,) प्रसन्न होकर अव वतावता हूं कि चित्रकू(-) ० ट के निकट गंगातीर मुनिन के आश्रम मे स्त्री० भाई समेत सुख से महाराज विराजते हैं(,)चलो गंगा ० उत्तर मै भी तुम्हारे साथ चलता हूं(,) यों कह पांच शौ ० नांवे मंगा पहले सव सैन्य को गुह ने नदी पार क(-)० राया तिसके पीछे एक पर केकयी आदि रानियों० को ओ दूसरी नाव पर भरत शत्रुघ्न को ओ व (-) ० शिष्ट सहित कौशल्या को चढा आपही नाव ० खेवकर गंगा पार हूआ(।) जव कि मिलजुल के व(-) ० हां से सव चले ओ भरद्वाज मुनि के आश्रम के ० समीप जा पहुंचे तव सेना दूर ही रष भाई को सा(-) ० थ ले मुनि के पास भरत गये ओ तेज मे अग्नि ० समान उनको देष के साष्टांग दंडवत किया त(-) ० व राजा दशरथ के पुत्र जान वहुत प्यार कर ऋ(-)० षि ने उनका वडा आदर किया ओ कुशल क्षे(-) ० म पूछा(।) जब शिर मे जटाओ छिलके का लंगो(-) ० ट देषा तव चकित होकर लगे कहने(—) ऐ भरत ० राजकाज मे रहके यह क्या वेष वनाये हो औ मु(-) ० निन से सेवित इस महावन मे किस लिये तुम आ ० ये(।) भरद्वाज की इतनी वातें सुन निपट विलषा ० कर वे वोले(—)महाराज आप सव के मन की वातें ० जानते हो तो भी पूछते हो तो हम लोगों पर दया ० करते हो(।) देषिये आपके चरणों का शपथ खा(-) ० ता हूं कि जों राम को राज्य होने मे ओ विन को वन भे(-) ० जने मे जो कर्म केकयी ने किया है सो जो मेरे जा(-) ० नने मे हूआ होऐ(।) राम के रहते हूए मुझे राज्य से ० क्या काम(।) मै तो विनका दास हूं(,)इस्से पास जा पां(-) ० व पड सव राज्य का भार उन ही को दूंगा ओ वसिष्ट ० आदि नगर के लोगों समेत हट[1] से विनको मै अ(-) ० योघ्या फेर लाऊंगा अरु दास की भांति आप मै ० विनकी सेवा टहल करूंगा(।) इस प्रकार भरत की ० वातें सुन भरद्वाज मुनि वहुत प्रसन्न हूऐ ओ वु(-) ० नका मुह चूंम वडाई कर कहने लगे (—)भरत यह तो ० ज्ञानदृष्टि से आगे ही मैने जान लिया (,) तुम क्यूं ० घबराते हो(,)

---

१. हठ।

तुम तो लछुमण से भी अधिक राम ० के भक्त हो(।) ऐसे बहुत बुझा समझा ठंढा कर पु(-) ० नि बोले कि आज तुमको यहां रष्षा चाहता हूं ० सव सैन्य समेत मेरे ह्यां भोजन कर लो फिर होत ० सवेरे राम के पास जाइओ(।) जब भरत ने इस बात ० को माना तव भरद्वाज ऋषि अपने होम के घर मे ० जा बैठे ओ आचमन कर मौन साध ज्यों काम धे(-) ० नु गौ का ध्यान किया त्यों ही सव सामग्री वर्षावन(-) ० हारी तुरत ऋषि के आगे वह आ प्रगट भयी ओ ० सेना सहित भरत को इछा भोजन कराने के ० लिये खाने पीने की अनुठी अनुठी जोजो वस्तु ० ऋषि चाहते थे सो सव एक पलक मे इतनी सृज ० दी कि जिससे वे सव नांकों नाक भर जावें(।) तव ० तो हर्षा कर घर से वाहर हो विधि से पूज पहले भर(-) ० द्वाज ने वशिष्ट मुनि को अमृत पदारथ भोजन ० कराया तिसके पीछे सेनासमेत भरत को अति ० संतुष्ट किया(।) इस भांति स्वर्ग समान विस आश्र(-) ० म मे भोजन कर एक दिन रह वडे तडके ऋषि को प्रणाम क(-) ० र विनकी आज्ञा पा सव समेत विदा हो राम के पा ० स भरत चले(।) जद त्रि[1] चित्रकूट पहार के निकट आ ० न पहुचे तद सेना दूर ही रष शत्रुघ्न मंत्री ओ गुह ० को साथ ले राम कें दर्शन करने के लिये धीरें धी(-) ० रें समीप जा तपस्वीन की वडी भीर भार देष के ख(-) ० डे हो गए ओ राम का घर नही पाकर के सव से लगे ० पूछने कि महाराज जो सीता लक्ष्मण समेत श्री ० रघुनाथ जी यहां किस जगह मे रहते हैं दया कर हमे ० वता दो(।) विन्होने कहा(—) इसी पहाड के उत्तर दिश श्री ० रामचन्द्र का देषो वही स्थान है जहां कटहल कद (-) ० म्व ताल केला चंपा कचनार आम ओ अशोक ० के फूले फले सुन्दर सुन्दर अनेक गाछ दृष्ट आते ० हैं(।) इस भांति जव ऋषियों ने वताया तव देष कर ० भरत वहुत हर्षानि ओ भाई मंत्रीन को साथ लि(-) ० ये उस भवन के ओर चले कि जहां ऊंची सी डाढ प(-) ० र श्री रामचन्द्र के कपडे सुखाते थे ओ कोकि(-) ० ल कपोत कीर आदि अनेक पंछी सव वोल र(-) ० हे थे(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकांडे अष्ट(-) ० मोध्याय: ८(।) जव घर के पास जा पहुचे तव सी(-) ० ताराम के अतिपत्र[2] ओ सुन्दर चरणों के वज्र ० अंकुश ध्वजा के सव ठांव उषडे हूए विन्हो को देष कर[3] लगे वहां की धूर का वन्दना करने ओ नि(-) ० पटहर्षित हो कहने कि अहो जिन्हे शिव व्रह्मा(-) ० दिक सदा ढूंढते हैं तिन धूर को शिर चढ़ा अव ० हम निहाल भए(,) कहां तक अपने भाग का व(-) ० र्णन करें(।) इस भांति अति अद्‌भुत नेहजी मे उप(-) ० जा मारे आनन्द के रोते हूऐ धीरें धीरें रामचन्द्र ० के पास भरत जा पहुचे ओ जटामुकुट धरें ची(-) ० र वस्त्र पहने श्याम शरीर प्रसन्न मूरति विन ० को (,) ओ हंस हंस कर सीता जी से वातचीत कर र(-) ० हे थे ओ लछुमण जी जिन के पांव दावते थे(;) देष ० ते ही अति हर्षित हो चररणों[4] पड गिड पडे तव ० भैचक होकर श्रीरामचन्द्र उठ वैठे ओ वांह प(-') ० सार भाई को गरे लगा मोहवस हो ऐसे लगे रो(-) ० ने कि सारी आंग भिं[5] गयी(।) इतने मे जैसें प्यासी ० हूई गायें पानी को धावें वैसें ही श्री रघुवर को ० देषने के लिये

१. 'त्र' अनावश्यक है। २. पवित्र। ३. राम-सीता के वज्र-अंकुश-ध्वज आदि चिह्नों को भूमि पर अंकित देखकर। ४. चरणों। ५. भींग।

भिं गयी (।) इतने मे जैसें प्यासी ० हूई गायें पानी को धावें वैसें ही श्री रघुवर को ० देषने के लिये आतुर हो कौशल्या आदि सब ० रानिवांस आन पहुचीं तद मा को देषते ही रघु (-) ० नायक तुरत उठ खड़े भये ओ चरण छूकर वु (-) ० न्हे प्रणाम किया तव पुत्र को छाती लगा गला ०षोल के वे लगी वहुत रोने (।) इसी प्रकार के कयी आ (-) ० दि जननी को जों राम ने प्रणाम किया तों ही सव समेत ० वसिष्ट मुनि आन पहुचे तो मगन हो दण्डवत ० कर पहले विनको आसन पर राम ने विठलाया (।) ० तिसके पीछे जो जिस जोग्य था विसे वैसा ही ० वैठने को आसन दे सुचित कर पुन वसिष्ट के ० पास जा पूछने लगे (—) महाराज कहिए हमारे पिता ० को कुशल है (,) चलने की वेरियां दुखित हो क्या आ (-) ० पसों वुन्होने मुझे कहा (।) वोले (—) तुम्हारे वियोग से ० अति व्याकुल हो हा राम हा लछुमण हा सीता ० यों वार वार कह देह त्याग स्वर्गधाम को गये (।) इतने ० वचन के सुनते ही हाहा कर लक्ष्मण सहित रामच (-) ० न्द्र लगे पृथ्वी पर लोटने (।) ० तद दोनों भाई को आकुल ० देषकर रानीन समेत जितने लोग थे सो सव रोने ० पीटने लगे ओ सीता समेत लछुमण यह वचन क (-) ० हने (—) हा पिता हमे अनाथ कर आप कहां सि सिधारे (,) ० अव को हमको प्यार करेगा ओ भला बुरा वता (-) ० वेगा (।) यिस भांति आतुर देष ज्ञान की अनेक वातें ० कह निदान वशिष्ट ने सव को शान्त किया ओ मोह ० मिटाया तव मिल युल[1] के मंदाकिनी नाम गंगा मे ० सवों ने जा स्नान किया ओ राजा दशरथ को ति (-) ० लांजलि दिया अरु जल से वाहर आइंगुदी नाम ० वृक्ष के फल मंगाय गुद्दे निकाल मधु विने मे दे वे (-) ० द के विधि से राम लछुमण ने पिण्डे पारे अरु फिर ० स्नान कर सवके साथ हो रोते पीटते स्थान पर आ (-) ० ये तिस दिन तो उपासे ही रहे उसके दूसरे दिवस ० पुनि नहा आ जव सुचित हो कर रामचन्द्र वैठे ० तव हाथ जोड के भरत लगे विन से कहने (—) महारा (-) ० ज आप वडे भाई पिता समान हैं तिस्से उचित ० है वाप की गादी पर बैठकर प्रजा की रक्षा कीजै (,) ० उन्हो को पालना ही क्षत्रियों का धर्म है ओर य (-) ० ज्ञ कर पुत्र उत्पन्न करिए (,) जव वे वडे होंगे तद विन ० को राज्य पाट दे निचिन्त हो फिर वन को जाइऐं (-) ० गा (,) अभी वहां जाने का आपका समय नही है (,) ० मुज पर प्रसन्न हूजियें (,) केकयी की करतूति पर ० मत जाइऐ यों कह प्रेम से आंषों मे आंसू पर ० निदान वुनके चरणों पर गिर पडे तव उठा कर भ (-) ० रत को उन्हने छाती लगा लिया ओ मारे प्रीति के ० रो रो यह वचन कहने लगे भाई जो तुम कहते हो ० सो सव सच्च पर पिता की आज्ञा है कि चौदह व (-) ० वर्ष वन मे रह के पीछे अयोध्या आइओ तव तल (-) ० क यहां का राज्य भरत को मैंने दिया (,) तिस्से अ (-) ० योध्या का तुम्हे ओ दण्डकारण्य का मुझे पिता ० ही राज्य दे गये हैं यह मझ[2] हम दोनों कों उचित ० है कि जिसमे विनकी वात रहे सोई काम करे क्यूं (-) ० कि पिता की आज्ञा उमे[3] कर अपनी रुचि जो च (-) ० लता है सो जीवता ही मृतक वन अन्त मे नर (-) ० क भोगता है (,) इस्से मै दण्डकारण्य जाता हूं (,) तुम ० जा राज्य करो (।) भरत वोले (—) सुनियें जो कामवश ० हो सदा स्त्री के कहने मे रहे विस मतिमन्द पिता ० की कभी न वात मानियें क्यूंकि उसका कहने ० का भला क्या ठेकाना,

१. 'जु'। २. समझ। ३. उमेठ कर, उल्लंघित कर।

विसकी तो बुद्धि मारी ग (-) ० यी है (।) राम ने उत्तर दिया (—) न तो वे मूढ़ थे न कामी ० ओ न सदा स्त्री के कहा करते (,) आगे केकयी से ० वचन हार चूके थे तिस्से सत्यवादी पिता ने तुम ० को राज्य (,) मुजको वनवास दिया (,) वडों का यही स्व (-) ० भाव है कि नरक ते भी अधिक झुठ से डरते हैं (,) य (-) ० ही समझ कर केकयी सों जो मैने कहा विसे अ (-) ० वश्य निवाहूंगा क्यूंकि राम कहा कर अपना वच (-) ० न क्यूं कर झूठ करूं (,) इसमे लोग मुझें क्या कहेंगे (।) भ (-) ० रत वोले (—) जों ऐसा ही है तो चीर पहन आपकी ० संती[1] चौदह वर्ष मै ही वन मे वसूंगा (-) आप जासु (-) ० ख से राज्य कीजे (।) राम ने फिर समझाया कि पि (-) ० ता तुमही को राज्य अरुमुज को वनवास दे गये ० हैं अव जों मै विसे उलटूं तो लोग सव मुझ को नि (-) ० पट झूठा कहेंगे (,) निदान आकुल होकर फिर भ (-) ० रत वोले (—) अछा पर लक्ष्मण की भांति मै भी सा (-) ० थ चलकर आपकी सेवा करूंगा जों यह भी न मा (-) ० निएगा तो मै अपना प्राण दिये विना न रहूंगा (।) ० इस प्रकार भरत का हठ देष निपट चकित हो राम ० चन्द्र ने गुरु वशिष्ट की ओर आंष की सैन की त (-) ० व निराले मे जा पास वोला कर भरत से वे लगे क (-) ० हने (—) सुनो वावा यह रामचन्द्र आपरूप नारायण ० हैं रावण को मारने के लिये इनके निकट जा आ (-) ० गे व्रह्मा वहुत गिडगिडाने (,) इस कारण दशरथ के ० ह्यां ये आ जन्में है ओ जनक की लड़की सीता ० को जो देषते हो सो योगमाया है अरु राम के स (-) ० दा आज्ञाकारी लछुमणजी शेषनाग हैं (,) राव (-) ० ण के विनाश के हेतु अवश्य इन्हो को वन मे जा (-) ० ना है (,) केकयी ने जो राजा से वर मांगा ओ कडुआ ० वचन कहा सो सव देवतों की करतूति समझो ० नहि तो राम को केकयी कव वनवास देती ति (-) ० स्से श्रीरघुनाथ को फेर ले जान[2] का हठ छोड़ दो ० रानीन समेत सव सेना साथ लिये तुम अयोध्या ० को जाओ (,) कुल परिवार सहित रावण को मार वि (-) ० ध्वंस तुरन्त रामचन्द्र फीरेंगे (,) इसमे कुछ सन्देह मत मानो (।) इस प्रकार गुरु की वातें सुन अति अचर (-) ० य[3] मान मारे हर्ष के भरत फूल उठे तो राम के निकट (-) ० जा कहने लगे (—) महाराज अपने पांव की खराऊं अ (-) ० व मुझे दीजे (,) आपके जगह यही गादी पर रहेंगी (,) ज (-) ० व तलक न आपका आगमन होगा तब तक इन्ही ० की सेवा मै करूंगा ओ जो कुछ राज काज करूंगा सो ० सव इनको जनाऊंगा (,) यों कह सुन्दर खराऊं मंगा रा (-) ० म के पावों मे झट पहरा ही दी (,) निदान नेहवश हो ० श्रीरामचन्द्र ने हंस दिया ओ अछा कह रत्नजडि (-) ० त दोनो खराऊं भरत को निकाल दी (,) तव तीन वेर प (-) ० रिक्रमा दे वार वार प्रणाम कर निपट गिडगिडा गि (-) ० डगिडा भरत ने राम से कहा (—) चौदह वर्ष के वीते पन्द (-) ० रहवे के पहले दिन मे जों न तुम आवोगे तो आग ० लगा मै जल मरूंगा (।) जद इस वात को राम ने माना ० ओ विनकी आज्ञा पा विदा हो वसिष्ट मंत्री समे (-) ० त सव सेना आगे कर भरत चलने पर भये तव ऐ (-) ० कान्त मे जा हाथ जोड रो रो केकयी लगी कहने (—) हे रा (-) ० मचन्द्र मायावश हो अज्ञानता से तुम्हारे राज्य हो (-) ० ते मे जो कुछ विघ्न मैने किया सो सव क्षमा करो (,) तुम ० आपरूप परमेश्वर हो (,)

१. के बदले। २. जाने। ३. अचरज।

माया फयला मानुष वन ० सारा जगत मोहते हो(,) तुम्हारी वश हो भला वुरा का(-) ० ज लोग करते हैं(,) अपनी कुछ नहीं वश है(,) जैसे का(-) ० ठ की पुतलियां नट की इच्छा से नाचतीं है वैसे ही ० तुम्हारी आज्ञावश हो नाना रूप धर माया नाचती ० है(।) अव जाना गया कि देव काज के लिये तुम्हीं ने मे(-) ० री मति हर ली कि जिस्से मेरे जी मे पाप वसा अव ० मैंने तुम्हे पहचाना(,) देवता सव भी तुम्हारा भेद नहीं ० पाशकते(,) है हे परमेश्वर अन्तरयामी अव मै आप ० को वार वार प्रणाम करती हूं इसलिये कि धन संता(-) ० न आदि मे नेह रूप जो एक फांसी है विसे ज्ञान के ० शस्त्र से काटिये(।) केकयी की इतनी वातें सुन मुस्(-) ० करा के रामचन्द्र वोले(—)जो कहती हो सो सव सच है ० इसमे कुछ सन्देह नहीं(,) देवकाज के लिये मेरी हि सै(-) ० न पा सरस्वती ने तुम्हारा ज्ञान हर लिया जिस्से तुम(-) ० ने मुजे वनवास दिया(,) यह सव मेरी ही करतूति है तु(-) ० म्हारा कुछ दोस नही(,) अव घर जाओ(,) सव का मोह ० त्याग भक्तिभाव से दिनरात मुझी को जी मे सुमरो(,) ० संसार से तुरत मुक्त हो जाओगी(,) जो जितना मुझे भ(-) ० जता है विसे ओतना ही मै चाहता हूं(,) न तो मेरा को(-) ० ई वैरी है न हितू(,)मेरे लेषें सव समान है(,)माया से मो(-) ० हित नर सुख दुख भोगनहार मुझे मानुष कर मा(-) ० नते है(,)मेरा भेव तनिक भी नही जानते(,)धन्य तुम्हा(-) ० रा भाग है जो सव दुख मेटावनहार मेरा ज्ञान तुम ० को हूआ(,) अव से घर जा मेरा ध्यान नित करती र(-) ० हिओ(,) कर्म के वंधन मे फिर न कभूं फंसोगी(।) इस ० भांति जद राम ने कहा तद निपट आनन्द मे मगन ० हो शौकरो[1] विन्हे प्रणाम कर केकयी अपने घर को ० चली(।) तव मंत्रीन समेत गुरु के साथ जा भाई से वि(-) ० दा हो सिगरे वाट विन्ही के गुण गावते हूए भरत भी ० अयोध्या को फिर आये तो वहां नगर ओ देश के ० सव लोगों को वुला भेजा औ जैसा जिसे चाहिये वि(-) ० से वैसा ही काम दे सुचित हो आप नन्दी नाम गांव ० मे आ वसे(,) तहां राज सिंहासन पर रामचन्द्र को दो(-) ० नों खराऊ रष नेम अचार कर अक्षत चंदन फूल ० पान से नित लगे वुन्हे पूजने ओ सव भोग विला(-) ० स तज जटाधारी हो चीर वस्त्र पहन फलाहार ही ० नित्य करने ओ व्रह्मचारी वन शत्रुघ्न समेत कुशा ० सन ही पर शोवें अरु जो कुछ राजकाज करें सो दो(-) ० नो खराऊन को जा सुनावें ओ राम के आवने के दि(-) ० न गणते गणते ओ विन्ही का ध्यान करते करते ० ऐसे हो गये कि जैसे कोई व्रह्मज्ञानी मुनि होए औ(-) ० र वहां श्रीरामचन्द्र जी चित्रकूट पर सीता लछुम(-) ० ण समेत कुछ दिन और ह[2] गये(,)जब देषा कि वडी ० श्रद्धा से हमारे दर्शन के लिये अयोध्या के लोग ० सव नित्य आकर यहां भीर मचाते हैं(,) इसमे इनको वहुत दुख होता है तव विस पहाड को त्याग स्त्री भाई ० सहित श्री रघुनाथ जी दंडकारण्य को चले तो आ(-) ० ते आते कुछ वेर मे अत्रि मुनि के अति सोहावन ० ओ निपट सुखदायक आश्रम पर आन पहुचे(,) ० तहां जिनके तेज से सगरे जंगल प्रकाश हो रहा था (।) ० ऐसे विन महामुनि को दूर से देषते ही वुन्होने दंड(-) ० वत किया ओ कहा(—)महाराज मेरा नाम राम है(,) पिता ० की आज्ञा पा दण्डकारण्य को चला हूं(,) भाग से आप ० का दर्शन

---

१. सैकड़ों। २. रह।

हूआ(,) अब मैं कृतार्थ भया (,) यह सुन ईश्व(-) ० र पहचान अत्रिमुनि वहुत हर्षाने तो बडी आव(-) ० भगति कर सीता लछुमण समेत राम को विधि से पू(-) ० जा ओ अमृत समान फल मंगा भोजन कराया(।) ० जब सुचित होकर सब बैठे तब ऋषि ने कहा कि ० मेरी भार्य्या जो अब निपट बुढ़िया हो रही है ओ ० जिसका अनसूया नाम प्रसिद्ध है वहुत दिनों से ० तप कर रही है(,) सीता को कहिए कि भीतर जा वि(-) ० से देष आवे(।) इतने वचन के सुनते ही विन्हने जान(-) ० की से कहा जाओ प्रणाम कर तुरत चली आओ(,) ० तुम्हारा कुछ वहुत भला होने वाला है(,) इस भांति ० पति की आज्ञा पा ओंही वे उठीं सो निकट जा ज(-) ० व दंडवत किया ओ अपना नाम ठेकाना वताया ० तव देषकर अनसूया अति हर्षित हूई तो ग(-) ० रे लगा वहुत प्यार कर सीता को विठलाया अरु वि(-) ० श्वकर्म्मा के वनाए हुए रत्न के सुन्दर दो कुंडल(,) ० अनमोल दो ठो कपडे विनको पहनने को दिये ० ओर वाट चलते चलते जानकी की आंग मली(-) ० न देष के मलिये मे थोडा सा अनूठा उवटन उ(-) न को ला दिया और कहा(—)धिया[1] इस के लगाने से ० तुम्हारी देह की शोभा ज्यों की त्यों वनी रहेगी वरन् ० दिन दिन अधिक वढती जायेगी(,) तुम किसी वात का संदेह मत करो(,) तुम्हारे समेत वन से होकर कर के कु(-) ० शलक्षेम से श्रीरामचन्द्र फिर अयोध्या जायेंगे(,) इ(-) ० नकी टहल मे कभू मत चूकिओ(,) स्त्री का यही धर्म ० है कि पति की सेवा मे सदा ही मगन रहे(,) यों कह राम ० लछुमण को अपने पास वुला लिया तव विन के स(-) ० हित सीता को कुछ अमृत पदार्थ भोजन कराया(,) ० जव खा पी सव सुचित भये तव हाथ जोड़कर अ(-) ० नसूया ने राम से कहा(—)महाराज स्वर्गमर्त्य पाताल ० तीनों भुवन को तुमी ने वनाया है और उनकी रक्षा ० के लिये सुर मनुष्य आदि नाना रूप होते हो पर सं(-) ० सार की चलन से सदा न्यारे हो(,) सव को मोहन हा(-) ० री माया एक तुम्ही से डरती है(।) इती श्री रामचरित्रे अयोध्याकाण्डे नवमोध्यायः समाप्तः।(।) इस ० भांति रात भर रह करके वडे तडके रामचन्द्र ने अ(-) ० त्रि मुनि से कहा(—)महाराज अव हम दण्डकारण्य ० को जायगें(,) शिष्यों को आज्ञा होए कि कुछ दूर ० साथ चलके हमे वाट देषा देवे(,) इतने वचन सुन हं(-) ० सके ऋषि बो-ले(—)सव को पथ वतावनहारे तुम हो (,) ० तुम्हे मार्ग देषावने वाला कौन है(,)पर हां लोक की ० यह रीति है इस कारण पूछते हो तो अछा मैं आज्ञा ० जोगा लाऊंगा(,) ऐसे कह सव शिष्यों को वुला के आगे कर दिया ओ कुछ दूर पहुचा आने लिये ० आप भी साथ साथ चले(,) निदान राम की विनती ० से अत्रिमुनि तो अपने आश्रम पर फिर आये ० ओ सब समेत श्री राम च द्र वहां से चले सो कोश ० भर निकल आये तहां एक वडी भयावन सी न(-) ० दी देष ऋषि के चेलों से लगे कहने(—)महाराज जो इ(-) ० स को पार होने का कोई उपाय है कै नही(,) बोले कु(-) ० छ सन्देह जिन कीजे(,) वहुत सुन्दर एक नाव है(,) ० हम क्षणभर मे आपको पार कर देते हैं(,) यों कह ० सीता लछुमण समेत राम को नाव पर चढ़ाय ० ऋषि के कुमारों ने तुरत नदी पार उतार दिया ० ओ उनकी आज्ञा पा विदा हो अत्रि मुनि के पा(-) ० स के समीप

---

१. बेटी।

एक किसी पेड तले जा जो लगे वि ० श्राम करने कि देषते क्या हैं कि जिस्से शंकरों ० जीवन का विघात किया था उस शूल को हाथ ० मे लिये हाथी (,) वाघ (,) वनभैंसे पकर पकर ० खाता हूआ अति महावली ओ निपट डरावन ० ऐक दानव चला आता है (,) तद रामचन्द्र ने ल (-) ० छुमण जी से कहा (—) भाई यह कोई वडा राक्षस ० आन पहुचा (,) देखो हमारे सामने निशंक हो ० जीवन को मारता ओ भय देषाता चला आ (-) ० ता है (,) तुम धनुष पर गुण चढ़ायें रहो ओ हे ० सीता तुम मत डरो मैं इस दुष्ट को विन मारे ० न छोड़ता हूं (,) ऐसे कह वाण हाथ मे ले दशर (-) ० थ के लाल ओंही तुरत पहाड से उठ खडे हो ० गये कि इतने मे वह निकट आन पहुंचा ओ ० इनको देषते ही पहले तो ऐसा खिलखिला ० स सव चले आये अरु श्री रामचन्द्र जी विस म (-) ० हा भयावन दण्डकारण्य को चले जहां झींगुर ० सव झंझकार शब्द करते ओ नाना मृग भरे थे ० अरु जो वाघ सिंहन से निपट डरावन हो रहा था ० ओ जहां ऐक ऐक ऐसे राक्षस रहते थे कि जि (-) ० नके सुमरने से सगरे गात रोमांच हो आवे (।) जव ० कि विस के भीतर जा घसे तव रघुनायक ने ल (-) ० छुमण से कहा (—) भैया यहां से धनुष पर गुण च (-) ० ढा सीता को वीच मे कर वाण हाथों मे लिये च (-) ० हुं ओर दृष्टि पसारें सावधान हो मेरे साथ चलो (,) ० यही दण्डकारण्य है जहां वडे वडे राक्षस सव व (-) ० सते है (।) यों कह विसी प्रकार से कोश पांछ ऐक ० और निकल आये तहां वर्ण वर्ण के फूले हूए ० कमलों से अति सोहावन एक तालाव था वि (-) ० स मे निर्मल पानी देष के उसके तीर पर जा उ (-) ० तरे ओ स्नान पूजा कर जल पी सुचित हो उ (-) ० इस वन को छोड़कर ऋषि सव भागे भागे फीरते ० हैं (,) तुम जों अपना जी बचाया चाहते हो तो आयु (-) ० ध हाथ से गिरा दो ओ सीता को त्याग कर शीघ्र] य (-) ० हां से भागो (।) इसीमे कल्यान है नही तो अभी मैं तु (-) ० म्हे खा जाता हूं (,) यों कह सीता को लेने को दौडा तव ० हंसते हंसते श्रीरामचन्द्र ने विसके दोंनो हाथ सर ० सें काट लिये (,) तद तो मारे क्रोध के मूर्छित हो भया (-) ० वन मुह वाकर जों वह रामचन्द्र पर दौड़ा कि तों ही उ (-) ० न्हने दोनों पांव उसके काट डाले सो लोगन को ० वडा अचरज सा लगा (,) निदान अजगर होकर ० निगलने को लपका तव अर्द्धचन्द्राकार एक ० वाण ऐसा षेंच के उनने मारा कि विस दानव का ० शिर तन से अलग हो गिर पडा ओ लोहू लोहा (-) ० न होकर वह पृथ्वी पर लोट गया (,) तव अति हुल (-) ० सित हो गरे लगा सीता लगी राम को बहुत वषा (-) ० नने ओ अधर[१] मे आ आ ढोल दमामे वजा व (-) ० कर हंस उठा कि जैसा वादल गरजे (,) निदान डां (-) ० ट कर पूछा कि रे जटा वल्कल धारण किये मु (-) ० निका भेष बनाये धनुष वाण हाथ मे लिये स्त्री ० संग लगाये वडे अभिमानी ओ निपट सुन्दर तु (-) ० म दोनों कौन हो अव आओ (,) कमल की भांति मे (-) ० रे मुख मे पैठो (,) अजगरों से भरे हूए इस महाव (-) ० न मे क्यूं जीव देने आये (।) मुसकुराकर श्री राम (-) ० चन्द्र वोले मै तो राम हूं ओ लछुमण नाम ये मेरे ० भाई हैं अरु प्राण प्यारी यह सीता मेरी भार्या ० है (,) पिता की आज्ञा निवाहने के लिये ओ तुम से ० दुष्टन को शिष देने के हेतु हमलोगो यहां

१. आकाश।

आये ० हैं(।) इतने वचन के सुनते ही फिर वह हंसा ओ रि(-) ० सियां के दोनों हाथ से एक शिसो[1] का बडा सा पे(-) ० ड उखाड लिया अरु मुह वाकर लगा कहने(—)क्या ० लाला तुम मुझे नहीं जानते कि जिस का विरा(-) ० ध नाम लोक मे विख्यात हो रहा है(,) मेरे ही डर से ० फिर बोला हे(—)आनन्द मूरति सीता पति भगवान ० मै तुम्हे नमस्कार करता हूं(,) मेरी रक्षा कीजै मैं आ(-) ० पकी आज्ञा से देव लोक जाऊंगा(,) सब को मोह न(-) ० हारी तुम्हारी माया फिर न कभूं मुझे आय घेरे(।) ० इतना वचन सुन बहुत प्रसन्न हो श्री रामचन्द्र ० बोले (—)अच्छा विद्याधर जाओ तुम मेरे दर्शन से ० मुक्त भये (,)अब से माया तुम्हारे समीप न कभूं ० जा शकेगी क्यूंकि मेरी भक्ति होनी दुर्लभ है सो ० जिसे हूई वह संसार मे वार वार के आवागमन ० से वंचा(,)इस्से अव परम पद को सिधारो(।) यह वि(-) ० धि नाम के प्रसाद से राक्षस की देह तज श्राप से छूट ० विद्याधर हो निदान(।) विर ध स्वर्ग लोक को गया ० इतिरामचरित्रे अरण्यकाण्डे प्रथमोध्या(-) ० यः ॥१॥ जव वह वैकुण्ठ धाम को गया सीता रा(-) ० म लछुमण तीनों वहां से उठे सो चले चले सदा सबकोउ सुखदायक शरभंग मुनि के आश्रम ० जा देवता सब लगे उपर से फूल वरसावने अरु ० अप्सरा नाचने गन्धर्व किन्नर सब गाने ओ रत्न ० जडित सुवर्ण के गहने ओ विसी भांति कपडे प(-) ० हने विराध की देह से अति सुन्दर एक विद्या ध(-) ० र निकला सो अधर मे जा विन राम को साम्हने ० हो जो सकल दुख मिटावनहारे ओ करुणा की ० मुरति हैं प्रणाम कर यह वचन कहने लगा(—)हे क(-) ० मलनयन कृपानिधान मैं विद्याधर हूं(,)दुर्वासा मु(-) ० नि के जो निःकारण कोप की मूरति वने रहते ० हैं श्राप से मैं राक्षस हुआ था आपने मेरा उद्धा(-) ० र किया(,) मैं बहुत आनन्द मे मगन भया (,) अब कुछ ० ऐसी कृपा की जै कि जनन मरन के दुख से वचने ० के लिये आपके चरणों का ध्यान अरु उन्ही की ० पूजा ओ तुम्हारे ही नाम का कीर्त्तन सदा मैं कि(-) ० या करूं (,) वरन् कान मेरे आपही की कथा सुने ओ ० शिर मेरा तुम्हारे ही पांव को प्रणाम करे(।) ० यों कह ० ल मे है जिसने चित्त लगा दिन रात सुमरने का मेरा प(-) रिश्रम जान आप आ दर्शन दिया(,) अव देवन ० हू के देव के देषते हूए मे अपना शरीर जला क(-) ० र शुद्ध हो ब्रह्मलोक को जाऊंगा(।) इस भांति अति ० हुलसित हो विन तीनों को जो आगे जा खडे थे ० प्रणाम ध्यान कर आग लगा पांच भौतिक देह ० जला दूसरा सुन्दर शरीर धारन कर निदान श(-) ० रभंग योगी परमपद को पहुंचा(,) इस अनन्तर द(-) ० ण्डकारण्य के जितन[2] ऋषि लोग थे सो सब बडी श्र(-) ० द्धा से रामचन्द्र को देषने के लिये वहां आन पहु(-) ० चे तद देषके अति हर्षित हो सीता लछुमण समे(-) ० त श्रीरघुनायक ने जो माया कर मानुष हूए थे ० शिर झुका ऋषिन को प्रणाम किया ओ बडी ० आव भगति कर आसन पर विठलाया तद आशी ० सू दे वहुत हर्षित कर तपस्वी लोग यह वचन लगे ० विन से कहने(—)हे कृपानिधान पृथ्वी का वोझ उता(-) ० पर आन पहुचे तद इनको देषते ही अति हुल (-) ० सित हो तुरन्त शन उठ खडा भया ओ निकट जा० दोनों भाई को प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ आ(-) ० दर साथ आसन पर विठलाया ओ कन्दमूल भोज (-) ० न करा

१. सीसम। २. जितने।

सुचित कर यह वचन विन से कहने लगा(—) ० महाराज तप के लिये वहुत दिनों से मै यहां वसा ० हूं(,) विस तप का यही फल चाहता था कि किसी प्र(-) ० कार आपका दर्शन पाऊं सो मेरा मनोरथ सुफ(-) ० ल हूआ(,) अव मुजे संसार मे रहने का कुछ काज ० नहीं(,) इस्से अपना सव पुण्य तुमको देकर अभी ० मै मुक्तिधाम को जाऊंगा(।) यों कह ओंही निज पु(-) ० ० ण्य संकल्प कर हठ से चिता पर जा वैठा ओ घटघ(-) ० टवासी श्यामसुन्दर सीतापति को प्र-णाम ध्यान ० कर इस आनन्द मे मगन हूआ कि सुमरनहारों ० के लेखें मानो कामधेनु ऐसे जो श्री रघुनाथ है वि(-) ० न से अधिक दयालु दूसरा कौन इस जगती त(-) ० जो मेरे मन का सन्देह जाऐ(।) ऋषियों ने उत्तर दि(-) ० या कि अपने समाधि मे मांते हूऐ मुनिन को ० राक्षस सव आ आ खा गये(,) विन्ही के ये माथे हैं(।) ० इतने वचन के सुनते ही श्री रामचन्द्र वहुत दु(-) ० खित हूऐ(,) निदान सकल राक्षसन को मारन की ० प्रतिज्ञा करी(,) तव सव वनवासी मुनिन से पूजि(-) ० त हो सीता लछुमण सहित कुछ वर्ष वहां वे वस ० गये(।) इस क्रम से उस महावन मे जहां तहां रह ० ऋषिन के सगरे आश्रम देषते हूए निदा(-) ० न अगस्त्य मुनि का शिष्य सुतीक्ष्ण नाम वडा ० प्रसिद्ध ऐक ऋषि था जो राम की उपासना मे ० लवलीन था(,) उसके अति सोहावन ओ सदा ० सुखदायक स्थान के निकट वे आन पंहुचे(,) तद ० सुन कर वह वहुल आनन्द मे मगन हूआ औ(-) ० र आगे जा अपने घर ला विधि से पूजकर यह ० वचन लगा विनसे कहने(—) हे सकल गुण निधा(-) ०रने के लिये व्रह्मा की प्रार्थना से तुमने मानुस०अवतार लिया है ओ हम सव भले जानते हैं ० जो आप परमेश्वर हैं औ जानकी लक्ष्मी हैं ल(-) ० क्ष्मण जी शेषनाग हैं ओ तुम्हारे शंखचक्र ये ० ही दोनों भरत शत्रुघ्न भये हैं(,) अव उचित है ० कि पहले ऋषि के दुख आप मिटाइऐ(,) जों यह ० रुचे तो स्त्री भाई समेत हमारे साथ हो क्रम क्र(-) ० म इस वन को सगरे चल कर देषिये इसमे हम ० लोग पर आपकी वडी दया होती है (।) इस भांति ० गिडगिडा कर जव ऋषियों ने निहोरा किया त(-) ० व दीनदयालु श्री रामचन्द्र ने अंगीकार किया ० ओ विन के संग होकर वन देषने को चले(।) जद ० कुछ दूर जा पहुंचे तव वाट मे जहां तहां पडे हूऐ ० वहुत से शिर जो शुख कर हाड रह गये थे देष ० कर निपट दयावन्त हो पूछने लगे(—)क्यूं महारा(-)० ज ये किन के माथ पडे हैं तुम समझा कर कहो ० ध्यन को को जो अज्ञानता से अंधे हो रहे हैं व्रह्मा वि(-) ० ष्नु महेश आदि नाना नूप होकर कैसा तुम दृष्ट ० आते हौ जैसा पानी के भाजनों मे अनेक सूर्य(।) ० यों कह फिर वोला(—)हे दीनदयाल मैंने विस जनम ० मे वडीप[1] तपस्या की है जिस्से साक्षात आ(-) ० गे आ खडे हूए(,) आपके चरणकमल का दर्शन ० पाय अव मैं तुम्हे प्रणाम करता हूं ओर यही ० चाहता हूं कि नील कमल सा श्याम ओ काम(-) ० देव हू से अधिक सुन्दर यह आप का रूप सदा ० मेरे जी मे वसे(।) इस प्रकार सुतीक्ष्ण की विनती ० ओ स्तुति सुन हंस कर श्रीरामचन्द्र वोले महा(-) ० राज मै जानता हूं मेरी उपासना से तुम्हारा मन ० वहुत निर्मल हूआ इसलिये मै तुम्हे देषने को ० आया क्यूंकि सकल वस्तु की आश त्याग मेरे ० उपासक हो जो नर एक मुजी को निज शरण ० जानता

---

१. 'प' अनावश्यक है।

है विसीको नित जा दर्शन देता हूं(,) मेरे ० न सीतापति मैं तुम्हारे दासों का दास हूं(,) धन्य मेरा ० भाग है कि जो संसार सागर पार उतारने के लिये ० मानो नाव ही है और शिव ब्रह्मादिक देवता सव ० जिन्हे सेवते हैं ऐसे आपके चरणों का दर्शन आ(-) ० ज मुझे भया अव मैं निहाल हूआ तुम सा दया(-) ० लु कौन होगा क्यूंकि स्त्री सुत गृह आदि रूपनि(-) ० पर अंधेरे कुंएे मे माया मोह के डाले हूएे मुज ० को जान कर दयावश हो मेरा उद्धार करने के लिये आ ० पसे आप आन पहुचे है(,) इससे जाना गया कि ० यद्यपि सकल घटवासी हौ पर तो भी जो मनु ० ष्य तुम्हारा मंत्र नहीं जपते विन्हो को माया ० मोह मे फंसाते हौ और जो तुम्हारे उपासक ० हैं तिनको विस्से वंचा लेते हो इसलिए कि जो ० जैसा तुम्हे चाहता है विसे वैसा ही फल देते हो(,) ० हे महाराज इस सृष्टि की उत्पत्ति पालन प्रल[1] ० के तुम्ही हेतु हौ तुम्हारी माया से मोहित मनु(-) ० विन दूसरे किसी की आराधना उत्तम नही है(।) जो ० मनुष्य तुम्हारा किया हूआ इस स्तोत्र को जो मु(-) ० जे परम सुखदायक है सुचित होकर पढेगा विसे ० मुजमे प्रीति ओ निर्मल ज्ञान होगा(।) ऐसे कह पु(-) ० न विसे आशीस दी कि तुम मेरी उपासना से स(-) ० व प्रकार मुक्त हो अन्त समय मुझी मे मिल जा(-) ० ओगे इस भांति वुझा समझाकर फिर राम ने ० कहा(—)अव मुझे अगस्त्य मुनि को जो सव ऋषि(-) ० न के नायक ओ तुम्हारे गुरु हैं देषने की इछा ० है ओ कुछ दिन विनके पास वसने को मेरा जी ० चाहता है तिस्से किसीको साथ कर दो तो मै वहां ० जाऊं(।) सुतीक्ष्ण मुनि वोले(—)अछा आज तो कृपा ० कर यहां रहिएे कल्ह मैं ही तुम्हारे संग चलूंगा ० क्यूंकि वहुत दिनों से विन का दर्शन नही पाया ० है(।) इस भांति जद ऋषि ने वहुत हट[2] कर कहा त(-) ० व श्री रघुनायक रात भर वहां रह गये(।) जव प्रभा(-) ० त हो चूका तव सीता लक्ष्मण समेत सुतीक्ष्ण के ० साथ हो वडी श्रद्धा से अगस्त्य मुनि के पास चले ० तो धीरें धीरें पहलें अगस्त्य मुनि के भाई के आ(-) ० श्रम पर आये(।) इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे ०द्वितीयोध्याय:२(।)इस प्रकार स्त्री भा(-) ० ई समेत सुतीक्ष्ण को संग लिये श्री रघुनाथ ० जी अगस्त्य मुनि के भाई के स्थान पर दोपह(-) ० र को आन पहुचे ओ विस्से पूजित हो कन्द मू(-) ० ल भोजन कर सुख से रात भर रह के वडे तडके ० विदा होए सव समेत फिर वहां से उठे सो चले च(-) ० ले अगस्त्य मुनि के विस स्थान पर आन पहुचे ० कि जहां वर्ण वर्ण के वृक्ष सव सदा फूले फ(-) ०ले रहते थे ओ नाना मृग सव वसते ओ जो भां(-) ० ति भांति के पक्षीन की सोहावन वोलीन से नंद(-) ० नवन सा लगता था ओ वाहर भीतर देवर्षि व्र(-) ० ह्मर्षियों से सेवित हो ऐसा शोभ रहा था मानो ० दूसरा व्रह्मलोक ही आ वसा है(।) तव वाहरे ही ख(-) ० डे होकर सुतीक्ष्ण से राम ने कहा महाराज अव तु(-) ० म शीघ्र जा ऋषि से हमारा आगमन जनाओ(।) इ(-) ० तनी वात के सुनते अति हर्षित हो वडा अनुग्रह मा(-) ० न ओंही वह भीतर गया तो वहां देषा कि वडे वडे ऋ(-) ० षिन समेत अगस्त्य मुनि वैठे हैं ओ प्रीतिकर रा(-) ० म भक्तन सों राम के मन्त्रों का कीर्त्तन कर रहे हैं(।) त(-) ० व दूर से देषते ही सुतीक्ष्ण ने गुरु को शिर झुका दं(-) ० डवत किया ओ आथ जोडकर कहा

१. प्रलय २. हठ।

महाराज सी(-) ० ता लक्ष्मण समेत दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र ० वाहर खडे हैं आज्ञा होए तो यहां वुला लाऊं सुन(-) ० ते ही अति हर्षित हो अगस्त्य ने कहा अभी ला(-) ० ओ वे तो मेरे प्राण के आधार ओ जीवन मूल हैं ० मै तो विन ही का ध्यान करता ओ उन्ही की वाट ० निहार रहा हूं(।) ऐसे कहते ही विसके साथ आप ० भी तुरत उठ दौडे ओ राम के समीप जा प्रणाम क(-) ० र यह वचन कहने लगे(—) आएइ कृपानिधान वडा ० भाग है जो आपका आगमन हूआ तुम से पाहु(-) ० ने के आवने से आज का मेरा दिन सुफल भयां(।) ० यह सुन अति प्रसन्न हो सीता लक्ष्मण समेत ० श्रीरामचन्द्र ने दण्डवत किया तद अशीसू दे ऋ(-) ० षि ने तुरत श्री रघुनाथ को गरे लगा लिया ओ मा(-) ० रे आनन्द के आंषों मे आंशू भर लाये ओ हाथ ० पकड आश्रम के भीतर ला अछे[1] सुन्दर आस(-) ० न पर विठला मन लगा विधि से उनको पूजा अरु ० अमृत समान अनेक पदार्थ भोजन कराया(।) ० जव कि खा पी कर श्री रामचन्द्र सुचित भये त(-) ० व एकान्त कर हाथ जोड अगस्त्य मुनि यह वच(-) ० न लगे विनसे कहने(—) महाराज पृथ्वी का भार उता(-) ० रने के लिये ओ रावण आदि राक्षसन को मार(-) ० ने के अर्थ क्षीर समुद्र के तीर जा ब्रह्मा ने आगे तु(-) ० म से वडी विनती करी तभी से तुम्हारे दर्शन की ० आश लगा ऋषिन समेत मैं यहां तप कर रहा ० हूं ओ आपही के ध्यान मे मगन हो रहा हूं(।) तुम्ही ० ब्रह्मा होकर सृष्टि उपजाते हो कि विष्णु हो के पा ० लते हो रुद्र वन संहारते हो (।) हे कृपानिधान आ(-) ० प के दर्शन से अव मैं निहाल हूआ ओ जो कु(-) ० छ जप तप नेम आचार मैंने किये सो सव सिद्ध ० भये (।) हे महाराज अव मै आपसे यही वर मांग(-) ० ता हूं कि चलते फीरते ओ सोते हू से मुजे सदा ० तुम्हारी ही सुर्त्त रहै (।) इस प्रकार स्तुति विनती क(-) ० र वहुत प्रसन्न हो रत्न जडित अति सुन्दर एक ० खड्ग ओ राम के लिये इन्द्र का आगे का रष्षा[2] हू(-) ० आ तूनी[3] वाण समेत एक धनुष तुरत अग(-) ० स्त्य मुनि ने राम को ला दिया ओ कहा कि पृथ्वी ० के भार हूए राक्षसन को अव जा मारिये इसी लि ० ये माया कर मानुष अवतार लिये हो(।) ऐसे कह ० फिर वोले(—) हे महाराज यहां से आठ कोश पर गौ(-) ० तमी नाम एक नदी है विसके तीर पर अति पवि(-) ० त्र वन से शोभित पंचवटी नाम एक आश्रम है ० तहां ही चल के आप वसिऐ वनवास के और ० जितने दिन रह गये हैं तिन्हे वहां ही वैठ के विता(-) ० इए ओ देवतों के वहां ही सव काज कीजे(।) इतने ० वचन के सुनते ही श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने ओ ० अछा कह मुनि से विदा हो पंचवटी को चले (।) ० इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे तृतीयोध्या ० यः ३(।) जवकि कुछ दूर वढ आये तव वीच वाट ० मे पहाड का शृंग समान ऐक वडे से गीध को वै(-) ० टा हूआ देष कर अति विस्मित हो झट धनुष ० पर वान चढा राम ने लछुमण से ऊंचे कहा(—)भैया ० यह तो ऋषिन को षाने वाला कोई राक्षस आ(-) ० गे बैठा है तुम देषते रहो मैं अभी इसे मार डाल ० ता हूं(।) यह भनक गीध के कान मे जा पडी तो मा(-) ० रे डर के घवरा कर वोला उठा(—)महाराज मैं राक्षस ० नहीं हूं मेरा नाम जटायू है मैं तुम्हारे पिता का वडा ० प्रेमी हूं निरपराध मुजको मारना आपको

१. अच्छे। २. रक्षा। ३. तूणीर, तरकस।

उचि ० त नही है मै तुम्हारी भलाई के लिये अब से पंचवटी ० मे जा वसूंगा ओ अहेर के लिये आपके पीछे ल(-) ० छुमण के वाहर निकलने पर भरशक्य[1] सीता जी ० की मै रषवारी करूंगा(।) जब पक्षी ने यों कहा दया(-) ० वन्त होकर श्रीरामचन्द्र वोले(—)अछा मै तुम्हे छो(-) ० डा पर आज से ओर कि किसी दूर जंगल मे मत र(-) ० हो पंचवटी के वहुत निकट यह स्थान है इसी ज(-) ० गह मे मेरे समीप वसकर मेरी चौकी किया करो (।) ० ऐंसे वुझा समझा विस्से मील भेंट विदा हो सी(-) ० ता लछुमण समेत राम जी गौतमी के तीर पं(-) ० चवटी मे आन पहुचे तो वहां गंगा के उत्तरतट ० जहां केला आदि भांति भांति के वृक्ष सव ० लगे थे ओ किसी मनुष्य का गम्य न था जाक(-) ० र भाई से एक अछा सुथरा मंदिर वनवाया ति(-) ० स मे सीता सहित रहकर ऐंसे आनन्द विहार ० करने लगे कि मानो कोई दूसरा लोकपाल ही ० आ विहार करें और लक्ष्मण जी विन दोनों को ० नित अछे अछे कन्द मूल आहार के लिये ला ० दिया करें ओ धनुष वाण लिये सारी रात जागें ० ओ पानी का जों कुछ काज लगे सो वेही नित ० भर भर लावें ओ आलस छोड़ हर्षित हो सव ० सेवा टहल करें ओ तीनों नित गौतमी मे जा न(-) ० हांये पर सीता दोनों भाई के वीच मे होके सदा ० जाया आया करती थी(।) इस प्रकार विन के व(-) ० हां रहते हूए जव तीन मांस वीत गये तब एक ० वेर एकान्त मे जा नम्र हो लछुमण जी ने राम ० चन्द्र से पूछा(—)महाराज मै तुमसे थोडे ही मे मुक्ति ० होने का उपाय जाना चाहता हूं तिस्से ज्ञान ० विज्ञान ओ भक्ति सहित वैराग्य दया कर जों ० वताइए तो मुजे वडा आनन्द होए इसलिए ० आपसे पूछता हूं कि तुमसे कहने वाले इस भरे ० पृथ्वी तल मे कोई मुजको दूसरा नही मीलेगा(।) ० श्री रामचन्द्र प्यार कर वोले(—)भैया यह वात कि ० जिसको जानने से अपना ओ पराया यह भ्रम ० तुरते ही मीट जावे गुप्त से भी अति गुप्त है सा(-) ० वधान हो सुनो तुम्हारे नेहवश हो मै कहता हूं(।) ० ऐंसे कह फिर वोले कि पहले तो माया का सरू(-) ० प मै कहूंगा तिसके पीछे भक्ति वैराग्य समेत ० ज्ञान का साधन कि जिसे जानने ही से सकल ० भय का विनाश होता है(।) सो यह है कि धन संता(-) ० न ओ शरीरादिक को जो कभू अपना नही(,) ० जिस्से निजकर मानते हैं वही बुद्धि माया है ओ ० वही संसार का जड है(,) सो माया दो प्रकार की ० है(,) एक तो अविद्यासरूप जो यहां से व्रह्मलोक ० तक छोटा वडा नाना जड सरूप हो रही है(,) दूसरी ० विद्या सरूप जिस्से यद्यपि जगत स्वप्न समा(-) ० न झूठ है पर देषने मे सच्च सा लगता है(,) तिस्से हे ० लछुमण जो परमात्मा आकाशरूप आदि ० अनन्त है विसमे रस्सी माह सांप का भ्रम(-) सामा(-) ० या ही ने संसार रचा है इस्से जो कुछ देषते सून (-) ० ते ओ सुमरते हो वह विचारने मे कैसा है कि जै(-) ० सा सपना ओ मनोरथ(।) इस प्रकार माया का स(-) ० कल भेद कह फिर रामचन्द्र ज्ञान का साधन ० वतावने लगे(-) इस रीति से कि मन वच कर्मसे(-)सद्गु ० रु को नित जा सेवना ओ निन्दा स्तुति समा(-) ० न कर सव टेढी त्याग वाहर भीतर मन शुद्ध कर ० सत्कर्म मे सदा जी लगाना ओ अहंकार विसा(-) ० र जनम मरण ओ बुढ़ापे पर ध्यान रषना स्त्री ० पुत्र धनादिक से मन षैंच कर सव

---

१. भरसक।

के सरूप मु(-) ० जमे सदा चित्त न[1]देना ओ शुद्ध देशों मे जा वस(-) ० ना नीचों से नेह न करना ईश्वर को पहचानने ० मे तत्पर हो वेदान्त शास्त्र का अर्थ विचारना य(-) ० ही ज्ञान है। ओ इसका उलटा अज्ञान(।) तिस्से ० वुद्धि प्राण पन देह अहंकार इससे सदा अल(-) ० ग चेतन सरूप जो परमेश्वर हैं विसको जिसने ० पहचाना तिसही को मेरा ज्ञान हूआ औ वि(-) ० सी को वह ज्ञान भी होता है कि जिसके होने से ० विस ईश्वर को आपसे आप पहचान लेते हैं जो ० सव मे व्याप रहा है ओ आनन्द सरूप हैं अरु ० जो अद्वितीय हैं असंग हैं ओ नाना वर्ण हो०कर आप से आप प्रकाश हो रहें हैं(।) श्री राम ० चन्द्र कहते हैं(—) हे लछुमण ज्ञान विज्ञान ओ ० वैराग्य समेत मोक्ष का सरूप जो तुमने पूछा ० सो सव मैंने कहा पर मेरी भक्ति हीन लोग(-) ० न को यह ज्ञान कैसा दुर्लभ है जैसा आंष वा(-) ० लों को भी रात को नीके नही सूझता ओ जो ० मेरे भक्त है विन को सहज मे प्रकाश होता है(।) ० यों क[2] फिर वोले हे लक्ष्मण अव मै अपनी भक्ति का का(-) ० रण कहता हूं सुचित हो सुनो(।) ऐसे समझा क(-) ० र रामचन्द्र वोले(—)मेरे भक्तन से संग मेरी सेवा ० ओ एकादशी आदि व्रतों मे उपवास ओ मेरे ० पर्व्वों मे उत्सव मेरी कथा सुनने सुनावने[3] सदा ० प्रेम मेरी पूजा मे निश्चय ओ मेरे नाम का सदा ० कीर्त्तन इन काजों मे जो नर तत्पर रहते हैं ति(-) ० न्ही को मेरी भक्ति होती है ओ तव यह तक ० महिमा को वे पहुंचते हैं कि मानो सव उत्तम का(-) ० ज कर चूके कुछ अवशेष नही रह ओ मेरी भ(-) ० क्ति के प्रताप से वैराग्य समेत ज्ञान विज्ञान ० पाय तुरंत संसार से मुक्त हो जाते हैं(।) रामचन्द्र ० कहते है(—)हे लक्ष्मण तुम्हारे प्रश्न के अनुस्वार ० से यह सव मुक्ति मार्ग मैंने तुमसे कहा जो म(-) ० नुष्य इसमे जी लगाता है सो मुक्ति का भागी ० होता है(।) इस प्रकार वुझा समझा निदान राम ० चन्द्र ने भाई को जता दिया कि देखिओ जो लो(-) ० ग मेरी भक्ति विमुख हैं तिन्हे यह भेद कभूं मत व(-) ० ताइओ अरु जो मेरे भक्त हैं विनको वुला कर ० कहिओ जो नर इस सम्वाद को श्रद्धा से पढेगा ० वह ज्ञान पा सव पाप से छूट मुक्तिधाम को पहुं(-)० चेगा(।) इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे चतु(-)० र्थोध्याय: (।)४(।)इस प्रकार आपस मे नित अनू(-) ० ठी अनूठी ज्ञान चर्च्चा कर विन्हो के वहां रहते हूऐ जन स्थान की रहने वाली एक महा राक्ष(-) ० सिनी कि जो जैसा चाहे वैसा अपना रूप वना ० शके विस जंगल मे ओर दिनों की भांति फी(-) ० रने के लिये निज घर से एक वेर निकली सो फी(-) ० रती फीरती गौतमी तीर पंचवटी के समीप आ ० निकली(।) तहां श्रीरामचन्द्र के अति सोहावन चर(-)० णचीन्ह जिनमे वज्र अंकुश पद्म इन का मनो(-) ० हर चीन्ह शोभ रहा था जहां तहां उपडा हूआ ० देष कर निपट काम मोहित हो ओंही लगी शो(-) ० चने कि जिसके ऐसे अद्‌भुत पांव है न जाने वह पुरुष ० कैसा सुन्दर होगा(।) निदान षोजती षोजती धीरें ० धीरें रामचन्द्र के आश्रम पर आयी(।) तहां सीता स(-) ० हित कन्दर्प समान बैठे हूऐ रघुनायक को देष क(-) ० र काम से अचेत हो लगी पूछने(—)ऐ प्राण प्यारे तुम ०

१. यहां 'न' अनावश्यक है। २. कह। ३. सुनने-सुनाने में।

सच कहो किसके लडके हो और कौन जात हो ० ओ जटा वल्कल धारण किये किस कार्य के ल(-) ० ये यहां आये हो (।) यह समझा कर मुजे वताओ (।) मै ० सकल राक्षसों का जो राजा है विस महावली राव(-) ० ण की वडी दुलारी वहन हूं(।) सूर्पनखा मेरा नाम है ० खर नाम भाई के साथ इसी वन मे सदा रहती हूं ० ओ राजा की आज्ञा पाय मुनिन को पकड पकड ० नित्य खाती हूं(।) अव तुम कहो कौन हो यह मै जाना ० चाहती हूं(।) रामचन्द्र वोले(—)मै राजा दशरथ का पुत्र ० हूं ओ राजा जनक की सुन्दरी यह लडकी सीता ० मेरी भार्य्या है ओ अति सुभग लछुमण को जो ० देषती हो सो मेरे लहुरे भाई हैं पर हे सुन्दरि तुम्हे ० मुजसे क्या काज है सो षुल कर कहो(।) इस भांति ० राम की वातें सुन महा कामार्त्त हो सूर्प नखा ने ० कहा(—)तुम मेरे पति होने के योग्य हो तिस्से आओ ० इस पहाड पर अति सोहावन ओ वहुत ऐकान्त ० वन है वहां मेरे साथ चलकर मुजसे विहार करो(।) ० इस्समय हे कलमनयन मारे कामदेव के अचे(-) ० त होकर मैं तुमको छोड नहीं शकती हूं(।) जव वि(-) ० सने यों सुनाया तव रामचन्द्र मुस्कुरा कर सीता ० कों कनखी दे यह वचन लगे उस्से कहने कि सच है पर देषो मेरी यह भार्या अभी विद्यमान है इस ० के रहते हूए हे सुन्दरि नित सवति का दारुण दु(-) ० ख सह के क्यूं कर मेरे संग रह शकोगी जो ऐंसी ह(-) ० लकी वातें कहती हो भला तुमही इसका न्याव क(-) ० रो(।) जो तुम्हे अवश्य पति की इच्छा है तो अति सु(-) ० न्दर मेरे भाई लछुमण वाहर खड़े हैं वे ही तुम्हारे०दुल्हा होने जोग्य हैं तिस्से मेरा कहा मान कर विन्ही० को साथ ले जा भली भांति से विहार करो(।) राम की इ(-) तनी वातें सुन ओंही वह लछुमण के पास आयी ० ओ कामातुर हो लगी विनसे कहने कि हे सुन्दर तु(-) ० म भाई की आज्ञा से मेरे स्वामी वन अभी मुज से ० विहार करो(।) लक्ष्मण जी ने उत्तर दिया(—)हे पतिव्र(-) ० ता मै तो विनका दास हूं मुजे पति पाकर जो उनकी ० लौडी तुम वनोगी तो कहो कैसा तुम्हे दुख होगा ० तिस्से अपना भला विचार कर उचित है कि विनी ० महाराज से जा भिडो क्यूंकि वे राजा हैं ओ सव के ई(-) ० श्वर हैं(।) इतनी वात के सुनती सुपनखा जी मे वहु(-) ० त रिसियानी (।) निदान चूपके हो क्रोध से भरी हूई ० राम के पास फिर आयी और आती ही यह वात ल(-) ० गी विनसे कहने(—)क्यूं लाला मुझसे तुम ठठा करते हो ० तुम्हारे देषते ही अभी मै सीता को खा जाती हूं क्या ० मुजे नहीं जानते(।) ऐंसे कह भयावन रूप वना सचमु(-) च जानकी पर दौडी(।)तव तक राम की आज्ञा पा ओंही ० हाथ मे खडग ले वडे पराक्रमी लक्ष्मण जी ने पकड क(-) ० र विसके दोनों कान ओ नाक तुरन्त काट लिये तद ० तो सारी आंग लोहू लोहान होकर चिल्ला चिल्ला रो(-) ० ती ओ कलपती हूई वहां से गिरती पडती खर के आ(-) गे जा वह गिड पडी ओ वार वार लगी विसे धिरकारने(।) ० चकित होकर विसने विस्से पूछा कि वहन किसने ० तुम्हारी य दशा की है उसे मृत्यु ने आय घेरा तुम ० शीघ्र वताओ जों वह यम समान होगा तो भी मै वि(-) ० सका जी लिये विन न छोडूंगा(।) तव सुसक सुसक कर ० सुपनखा लगी कहने कि सीता लछुमण को संग०लिये सगरे दण्डकारण्य निर्भय करते हूऐ रामचन्द्र० ने गोदावरी तीर आ डेरा लिया है तिन्ही के लगावने ० से विन के भाई ने यह मेरा गंजन किया है जों तुम्हें ० अपने कुल की कुछ लाज है ओ वीर हो तो अभी ० जा विन दुष्टों को मारो मै उनका

लोहू पीऊंगी ओ ० विन दोनों को खाऊंगी (।) तुम मेरी प्रतिज्ञा निवाहो ०नही तो प्राण त्याग कर मै यमलोक सिधारूंगी (।) ० इतनी वात के सुनते ही मारे क्रोध के मूर्छित हो ० रामलछुमण को मारने के लिये वडे वडे पराक्रमी चौ (-) ० दह सहस्र दानवन को तुरन्त खर ने राम पास भेजा ० तिसके पीछें नाना शस्त्र वान्धे दूखन ओ त्रिशि (-) ० रा नाम राक्षसों को साथ लिये आप भी राम पर उ (-) ० ठ दौडा (।) जव निकट सव जा पहुचे तव इन्हो की रौ (-) ० ला सुन कर श्री रामचन्द्र ने लछुमण जी से कहा (—) ० भैया यह जो वडा रौर सुनते हो तिस्से जनाता है ० कि अवश्य राक्षस व[1] आये मुजसे वडी लडाई ० होगी किसी षोह मे सीता को यहां से तुम ले जा ० ओ अरु वहां ही रहो मै ऐक एक कर सव राक्षसों ० को मार लेता हूं (।) तुम्हें मेरा शपथ है जो तुम इसमे ० कुछ वोलो (।) इतने वचन के सुनते ही सीता को आ (-) ० गे कर लछुमण जी तो तुरन्त वहां से उठे सो एक ० कन्दरे मे जा धसे ओ श्रीरामचन्द्र ने शिर मे जटा स (-) ० भांर के वान्धी ओ दो कछा मार धनुष पर वाण च (-) ० ढा झट उठ खडे भये ओ लगे इधर उधर वाट नि (-) ० हारने कि इतने मे दल वाद साजे वडी धूमधाम ० से राक्षस सव आन ही पहुचे ओ आते ही दात ० कट कटा कर नाना आयुध लगे राम पर चलाव (-) ० ने पर महावली राम चन्द्र ने खेल की भांति निज ० वाणन से विनको क्षण में खंड खंड कर डाला (।) नि (-) ० दान क्रुद्ध होए चारों दिश से जव मार मार कर स (-) ० व एक ही वेर दौडे तव सहस्रवाण से सकल राक्ष (-) ० सों के शिर काट आधे पहर मे त्रिशिरा समेत ० खर दूषण को राम ने मार गिराया तव तो सीता को ० लिये पहाड मे से लक्ष्मण जी वाहर निकस राम ० पास आये ओ जानकी को विन्हे समर्प्य राक्षसों ० को जो रण मे मारे गये देष निपट चक्रित भये औ (-) ० र हर्षित हो सीता ने राम को गरे लगा लिया ओ ० उनके देह मे जहांकही वाण लगा था तहां अप ० ने हाथों से लगी पोछने (।) इस अनन्तर खर दूषन ० आदि वडे वडे दानवन को रण मे यूझे[2] हूए देष ० कर मारे शोक के अति दुखित हो सुपनखा रोती ० हूई लंका मे गयी तो वहां वीच सभा मे जा रावण ० के पावों पर गिर पडी ओ पुकार पुकार लगी रो (-) ० ने (।) तव वहन की महा दुर्दशा देष वहुत दुख पा वह ० लगा कहने कि वहन उठो उठो सच कहो क्या इंद्र ० वरुण कुवेर यम इनमे से किसी ने यह तुम्हारा अं (-) ० ग भंग किया है (।) तुम विस का नाम वताओ मै अ (-) ० भी जा विसे भस्म कर डालूं (।) राक्षसिनी वोली (—) तुम ० अपने घमण्ड से मात कर[3] पूरे मूढ वन रहे हो ० ओ स्त्री साथ लिये मदिरा मे सदा गडक्क[4] होए ० सव प्रकार शठ समान लष पडते हो न जाने चा (-) ० र[5] रूप जो तीसरी ऐक आंख हैं तिसविन किस प्र (-) ० कार तुम राजा वने रहोगे (।) संग्राम मे त्रिशिरा समे (-) ० त खर दूषन आदि चौदह सहस्र वडे वडे राक्षसों ० को क्षण मे मार कर असुरन के वैरी रामचन्द्र ने मु (-) ० निन के लिये सगरे जन स्थान निर्भय कर डाला ० तुम अपनी मूढता से अनवधा[6] हो काहे को जा ० नोगे (।) इसी कारण मै तुम्हे शठ कहती हूं (।) रावण ने ० पूछा (—) वह राम कौन है ओ किसलिये राक्षसन को ० मारा यह समझा कर मुजे

१. सब। २. जूझे। ३. मत्त होकर। ४. गर्क, डूबे। ५. गुप्तचर।
६. अनवधान, असावधान।

कहो जो विस की जड ० ही जा काट डालूं(।) तव सूर्प्पनखा षुलकर लगी क(-) ० हने कि जन स्थान से ऐक वेर मै निकली सो चली ० चली गौतमी तीर जा पहुंची तो वहां पंचवटी ० नाम एक स्थान है कि जिसमे अनेक मुनि लोग ० आगे रहते थे(।) तिस आश्रम मे धनुषवाण लि(-) ० ये ये जटा वल्कल धारण किये राजीवन[1] महासुभ(-) ० ग राम को ओ वैसे ही निपट सुन्दर विनके छोटे ० भाई लक्ष्मण को मैने देषा अरु विशाल नयनी ० राम की भार्या रूप में कैसी मुजे वहां दृष्ट आयी ०कि मानो दूसरी लक्ष्मी होए कि जिसके रूप से ० आसपास के जंगल सव शोभ रहे हैं(।)वैसी सुन्दरी ० स्त्री आज तक देव गन्धर्व नाग मनुष्य ० इनमे देषी तो क्या मैनें किसी की सुनी भी नही(।) तिसको दे(-) ० षकर मैने विचारा कि यह किसी प्रकार से रावण ० की भार्या होए निदान तुम्हारे पास लावने के लि(-) ० ये ज्यों मै विसे पकडने को दौडी कि त्यों ही राम के ० भाई महावली लक्ष्मण ने विनकी आज्ञा पा ० मेरी नाक ओ कान तुरन्त काट लिये तिस दुख से ० वहुत रोती हूई मै खर के पास गयी तो मेरी दशा ० देषते हो मारे क्रोध के लाल हो वडे वडे दानवन ० को साथ ले ओंही वह राम पर उठ दौडा और ० जाते ही लगा लडाई करने तद महा-पराक्रमी रा(-) ० मचन्द्र ने खर समेत जितने वहां राक्षस थे तिन ० मे एक को भी नही छोडा सव को मार गिराया(।) जों वे मन करें तो आधे पल मे निस्सन्देह तीनों लो(-) ० क भस्म कर डालें ऐसा मुझको भासित होता है(।) ० जों कमल नयनी सीता विनकी भार्या जो सकल ० लोक मे एक सुन्दरी गिणी जाती है किसी प्रका(-)० र तुम्हारी स्त्री होए तो तुम्हारा जीवन जन्म सु(-) ० फल हो जावे तिस्से जिसमे वह हाथ आवे सो ० उपाय करो(।) पर साक्षात् राम के आगे चाहिए ० कि तुम ठहर शको यह घमण्ड तो कधी मत जी ० मे रष्षो(।) हां एक है कि माया से राम को मोहित क(-) ० रो तो सहज मे विसे पा शकत्ते हो(।) सुन कर रावण ० वहुत पछताना निदान आव भगति कर मी(-) ० ठी मीठी वातें कह वहन को वुझा समझा सु(-) ० चित कर आप घर के भीतर जा पलंग पर लेट ० रहा(।)विस रात मारे अकुलाहट के विसकी आं(-) ० षों मे तनिक नीन्द न आयी(—)इस चिन्ता से कि ० एत्ते वडे वीर ओ युवा ऐसे मेरे भाई खर को (स-) ० व सेना समेत क्यूं कर मनुष्य होकर ऐकेले ही रा(-) ० मचन्द्र ने मारा है(।) वे मनुष्य नही हो न हो ईश्वर हैं(,) ० व्रह्मा की प्रार्थना से रघुकुल मे मनुष्य अवतार ० ले मुजे मारने को आये हैं (।) अछा जों मै विन के हा ० थों से मृत्यु पाऊंगा तो अवश्य वैकुण्ठ जा राज्य ० करूंगा ओ नही तो वहुत दिनों तक यहां राक्ष(-) ० सों का राजा वना रहूंगा ओ नाना भोग विलाश ० करूंगा(।) ऐसे शोच समझ राम को परमेश्वर ठहरा(-) ० य निदान रावण ने ठाना कि अव तो होनी है सो ० हो पर लड़ाई ही से विन हरि मे जा मीलिये क्यूं(-) ० कि भक्ति से वे शीघ्र प्रसन्न नही होते(।) इति ० श्रीरामचरित्रे अरण्यकण्डे पंचमोध्यायः।५। इस प्रकार सारी रात जी मे विचार कर वडा वुद्धि(-) ० मान रावण प्रभात होते ही उठा ओ अपने का(-) ० ज के लिये समुद्र तीर मारीच के विस घर पर ग(-) ० या कि जहां जटा वल्कल

१. राजीवनयन।

धारण किये मुनि का ० भेष बनाये निर्गुण परमात्मा का मन से ध्यान ० वह कर रहा था(।) जब कै एक घडी के वीते समाधि ० टूट गयी तव रावण को गृह मे आया देषकर मा(-) ० रीच तुरन्त उठ खडा भया ओ गरे लगा मील भे(-) ० ट जैसा कुछ चाहिए वैसा खाने पीने का शिष्टा(-) ० चार कर आसन पर विठला यह वचन लगा विस्से ० कहने (—) महाराज एक रथ के साथ आपके यहां आ ० वने से यह जान पड़ता है कि किसी काज के लि(-) ० ये तुम्हारे जी मे बड़ी चिन्ता है पै मुजसे मत छिपा ० ओ शीघ्र सुनाओ जिससे तुम प्रसन्न होगे सो(-) ० ई मैं करूंगा पर ऐसा जिन कहिओ कि जिसके ० लिये से मेरे शिर पाप चढे (।) रावण वोला (—) अयोध्या ० का पति दशरथ नाम एक राजा है विसने महा(-) ० वली ओ वनवासियों को अति प्यारा राम ० नाम अपने वडे वेटे को वनवास दिया है सो अव ० निज भाई लक्ष्मण को अरु सव को मोहानहा(-) ० री[1] मृगनयनी सीता नाम अपनी स्त्री को साथ ० लिये पंचवटी नाम महावन मे डेरा ले विना अ ० पराध सूर्पनखा नाम मेरी वहन के कान नाक ० काट कर ओ खर दूखण समेत वडे वडे राक्षस(-) न को मार कर निडर होकर गाजता है(।) इसका ० रण मै तुम्हारी सहायता से राम की प्राण प्यारी ० सीता को विसके पीछे हर लाया चाहता हूं(।) तुम ० मेरे लिये पंचवटी मे जा माया का मृग वनकर रा(-) ० म को देषाई दो(।) मारे लालच के जब वह तुम्हे पक ० डने को दौडेगा ओ लक्ष्मण विसके पीछे निक(-) ० लेगा तव तलक तुम इधर उधर दौडे फिरि. (-) ० ओ कि जव तलक सीता को मै न वहां से उठा ला ० ऊं(।) इतना मेरा काम करके फिर तुम अपने हरि ० का ध्यान यहां आ किया करिओ(।) इस प्रकार रा ० वण की वातें सुन जी मे वहुत दुख मान मारीच ० लगा विस्से कहने कि तुम्हारा जड काटने वाला ० किस दुष्ट ने यह उपदेश तुमको वताया है(।) ० वही शत्रु है इस्से जो तुम्हारा नाश चाहता है उ(-) ० सी को मारना उचित है और राम से वैर वेसाहना ० भला नही विनका पौरुष सुमर कर अव तल[2] ० भी मै कांपता ही रहता हूं तिसका कारण यह ० है कि यग्य की रक्षा के लिये लड़कपण मे एक वेर ० बिश्वामित्र के पास गये थे तहां एक ही वाण ० से ऐसा मुज को विन्होने मारा कि वहां से चार शौ ० कोश पर समुद्र मे जा मै गिरा तव से मै डरा ही र(-) ० हता था(।) निदान वह वैर लेने के लिये मृग का रू(-) ० प धर अपने समान वहुतेरे साथीन को संग लि(-) ० ये दण्डकारण्य मे भी मै ऐक बेर फिर राम के पा ० स गया और चोषे चोषे सींगन से सीता लक्ष्म ० ण समेत विन पर जो मारने को टूटा तो ही षेंच क(-) ० र एक ऐसा वाण विन्हे[3] जडा कि मेरे हृदय मे आ ग(-) ० ड गया तद लोहू उगलता हूआ भागा भागा सा(-) ० गर तीर आ मै गिर पडा(।) तव से हे रावण इसी स्था(-) ० न मे छिपा रहता हूं औ राम का वह पराक्रम सुम ० रते सुमरते अव ऐसा भया कि विन्ही को मै सव ० ठांव देषता हूं इस्से दिन रात उनी का ध्यान कि(-) ० या करता हूं ओ निपट कांपता रहता यहां त(-) ० क कि जव कभी उनका समाचार मुजे कोई आ ० सुनाता है तव ऐसा जी मे भय होता है कि मानो ० रामचन्द्र यहां आन पहुंचे(।) इस त्रास के मारे वा ० (-)हर के जितने कुछ काम काज थे तिन सवसे मै ० हाथ धो बैठा ओ नीन्दवश हो जव जव मैं

१. मोहने वाली। २. तलक। ३. उन्होंने।

सौ(-) ० ता हूं तव तव स्वप्ने मे राम को देषकर उठ बैठता ० हूं मारे डर के तनिक सोने भी नही पाता(।) तिस्से ० हे रावण जो राक्षस का कुल युगों से चला आ(-) ० ता है विस को कुछ दिन रष्षा चाहते हो तो राम(-) ० चन्द्र से कधूं ईर्षा मत करो वे मनुष्य नहीं ईश्व(-) ० र हैं(।) यह हित शिषावन जों तुम्हे अछा लगे तो ० मेरा कहा मान भक्ति से विन को भजो ओ झु(-) ० ठ मुठ वैर मत वढाओ इसी मे कुशल है(।) ऐंसे व(-) ० हुत कह निदान मारीच ने जताया कि ऋशि(-) ० न के मुह से सुना है कि आगे विष्णु से व्रह्मा ० ने वडी प्रार्थना करी तव प्रसन्न होकर विन्होने ० इनसे कहा हे प्रजापति तू क्या चाहता है सो मै ते(-) ० री वांछा पूरण करूं(।) विरंचि वोला (—)आप पृथ्वी ० मे जा रघुकुल मे मानुष अवतार ले दशकन्ध(-) ० र कों जीव से मारिऐ यही मै तुमसे मांगता हूं(।) त(-) ० द अंगीकार कर परमेश्वर अन्तरधान हो गये(।) ० सोई जगद्गुरु नारायण रामचन्द्र मानुष नहीं साक्षा(-) ० त भगवान हैं धरती का भार उतारने के लिये ० माया कर मानुष वेष किये वन मे आ गाजते ० हैं(।) तुम सुख से अपने घर पर जा आनन्द विहा(-) ० र करो ओ झुठ मुठ राम से रीस मत बढ़ाओ(।) ० रावण ने उत्तर दिया कि जों रामचन्द्र ईश्वर हैं ० अरु व्रह्मा की की[1] विनती से मानुष हो मुजे मारने ० को आये हैं तो सोवे शीघ्र करे हींगे क्यूकि सत्य(-) ० वादी हैं विन की प्रतिज्ञा कधी झूठ होने की न(-) ० ही पर मै क्यूं चूकूं यत्न कर सीता को लाऊंगा इ(-) ० स मे राम के हाथों से जों मेरी मृत्यु हुई तो अव(-) ० श्य परमपद को जाऊँगा ओ नहीं तो संग्राम मे ० राम को मार कर निर्भय हो सीता को अपने व(-) ० श मे रषूंगा(।) तुम मेरा कहा मान कर उठो ओर ० एक अद्भुत मृगवन समीप जा सीता लक्ष्मण ० समेत राम को देषाई दो अरु कुछ ऐंसा उपाय ० वहां करिओ कि जिसमे जानकी को एकेली छो(-) ० ड कर भाई सहित वे तुम्हारे पीछे दौडे इसमे फि(-) ० र जों मुझे डराओगे तो देषो इसी चोषे खड्ग से ० अभी मै तुम्हारा शिर काट डालूंगा(।) इस प्रकार ० जव रावण ने कहा तव सुन कर क्षण ऐक मारि(-) ० च चुप रहा ओ जी मे शोचा कि दोनों ओर से मे(-) ० रा क्षय है पर राम के हाथों से जों मरूं तो संसा(-) ० र सागर सहज में तर जाऊं नही यह दुष्ट जों ० मुजे मारेगा तो निश्चय नरकवास होगा ति(-) ० स्से उंचित है जो राम की[2] के पास चल मरिऐ(।) इस ० भांति श्री रघुनाथ ही से अपनी मरण ठहरा ० निदान मारीच तुरन्त उठ खड़ा भया ओ राव(-) ० ण से कहा(—)अछा महाराज मै आपकी आज्ञा ० करूंगा(।) ऐसे कह तुरन्त रथ पर चढ राम के पास ० चला(।) ० जव निकट जा पहुंचा तव गाडी से उतर ० पडा ओ कुन्दन का एक ऐंसा विचित्र मृग वन ग(-) ० या कि जिसकी देह मे ठांव ठांव अति सोहावन ० रूप के वुन्दे लगे झलकने ओ मूंगे के दोनों शी(-) ० ग हीरे की चारों खुर नीलमणि की अपनी आं(-) ० ष वनाये विजली सा चमकता हूआ विस वन ० मे इधर उधर फिरता फिरता निदान राम के आ(-) ० श्रम के समीप जा सीता के सामने हो क्षण मे ० तो दौडे ओ क्षण मे खडा हो जाए अरु क्षण मे ० विन के निकट जा फिर भाग चले(।) इस प्रकार ० माया कर अद्भुत मृग का भेष वनाये मारीच ल(-) गा सीता को लोभावने (०) इति श्रीराम-

१. एक 'की' अनावश्यक है। २. 'ही' होना चाहिए।

चरित्रे ० अरण्यकाण्डे षष्टोध्याय:(।)६(।) इतने मे वह ० सव रावण की करतूति जान एकान्त मे ले जा ० रामचन्द्र ने सीता से कहा(—)हे जानकी अव को(-) ० ई घडी मे भिषार का भेष वनायें तुम्हारे पास ० रावण आ चला तिस्से ऐसा ही तुम अपना ए(-) ० क दूसरा रूप वनाओ अरु विसे इस आश्र[1] ० मे रषकर मेरी आज्ञा से वर्ष दिन तक तुम ० आग मे जा छिप रहो(।) ० जव रावण का वध हो ० चूकेगा तव आगे की भांति फिर मुजे आ मि(-) ० लिओ (।) प्रभु की इतनी वातें सुन तुरंत सीता ने ० माया का एक दूसरा अपना सरूप वनाया ओ ० उसे वाहर आप जा आग मे गुप्त हो गयी ० तव माया की सीता माया के मृग को देषकर हंस(-) ०ती हूई राम के पास जा नम्र हो यह वचन कहने ल(-) ० गी कि नाथ देषिये तो नाना रत्न से भूषित ओ वि (-) चित्र वून्दन से निपट सोहावन काञ्चन का यह ० क्या सुन्दर हरन निडर होकर मेरे साम्हने चरता है ० आप इसे पकड कर शीघ्र मुज को ला दीजिये मैं खे(-) ० लने के लिये इसको पालूंगी तद मुस्कुरा कर अ(-) ० छा कह तुरत धनुष वाण ले उठ खडे हो श्री राम(-) ० चन्द्र ने लक्ष्मण से कहा(—)देषिओ भैया इस वन मे ० वडे वडे मायवी ओ देषने मे अति भयावन अ(-) ० नेक दानव सव रहते हैं तिस्से वहुत सावधान हो ० कर मेरी प्राणप्यारी सीता को तुम यतन से यहां ० रषिओ(।) मैं इस मृग को पकडने जाता हूं(।) लक्ष्मण ० जी ने उत्तर दिया(—) ऐं महाराज आप किस भ्रम मे ० पडे हैं यह तो निसन्देह मारीच है आगे की भांति ० फिर हम लोगन को ठगने आया है रामचंद्र वो(-)० ले कुछ चिन्ता नही जों मारीच हैं तो मैं इस्से[2] विन मा(-) ० रे न छोडता हूं ओ नही मृग है तो सीता के लिये ० मैं इसको अभी वांध लाता हूं(।) तुम सचेत होकर ० जानकी की रक्षा कीजो(।) इस प्रकार भाई को वु(-) ० झा समझा श्री दशरथ के लाल विस मृग पर दौ(-) ० डे(।) महादेव कहते हैं पारवती से कि देषो जिनका ० आश्रय पा जगत सरूपिणी माया सकल सं(-) ० सार को मोह मे डालती है सो परमेश्वर रामचन्द्र ० यद्यपि निर्विकार ओ चेतन सरूप पूरण व्रह्म हैं ० ओ जैसा कुछ मृग था विसे भलें पहचानते भी ० थे(,)तथापि राम भक्त वत्सल हैं इस वचन को स (-) ० त्य करने के लिये सीता के नेह से उस पर दौडे न ० ही तो जो सदा पूरण मनोरथ हैं ओ अपने को कभी ० नही भूलते तिन रघुनायक को मृग से कैं[3] स्त्री ० से कैं ओर किसी से क्या काज वे तो आप परमा ० त्मा है(।) यों कह फिर सदाशिव लगे कथा कहने कि ० जव कुछ दूर हरन[4] को रामचन्द्र रगेद लाये तव क(-) ० भी वह निकट जा विन को देषाई देवेंओ कभू दूर ० ओ कभी छिप जाऐ कभी भाग चले(।) इस प्रकार ० जव लगा मारीच माया फैलावने तद राम ने जा ० ना कि हो न हो यह सचमुच दानव है निदान तका ० कर ऐक ऐसा शर मारा कि ओंही वहा राक्षस हो पृ(-) ० थ्वी पर गिर पडा ओ लगा राम की भांति पुकार(-) ० ने कि हा अव मैं मारा गया हे महावली लक्ष्मण ० तू शीघ्र आ मुजको वचाले इस प्रकार राम की ० भांति पुकार कर अरु मुह से ववक ववक लोहू उ(-) ० गल कर मारीच तुरन्त मर गया(।) तव लोग सव देष(-) ० ते ही है कि उसकी देह से लूक समान कुछ तेज नि(-) ० कला ओ श्री रामचन्द्र मे जा मिल गया(।) सो अच(-) ० रज देष निपट चकित

१. आश्रम। २. इसे। ३. अथवा। ४. हरिण।

हो देवता सब जो कौतुक ० देषने के लिये बीच अधर मे आ खडे थे आपस ० मे लगे बतराने (—) देषो मुनिन को मारने वाला इस ० महापापी मारीच ने कैसा कर्म किया ओ कैसी ० गति पायी (।) यह रामचन्द्र की महिमा है नही तो ० इस महादुष्ट का भला कभूं उद्धार होता (।) तिनमे ० एक यों बोला कि जब राम के बाण से पहले यह घा (-) ० हल हूआ तब से मारे डर के कभी उनको भूला नही ० सदा जी मे ध्यान करते करते आगे ही से निष्पाप हो रहा था अब अन्त समय राम के हाथ मृत्यु पा ० विन्ही मे जा मिल गया तिसका कारण यह है कि ० क्या ब्राह्मण क्या राक्षस क्या पापी और क्या धर्मा (-) ० त्मा कैसा ही कोई होवे पर मरण समय जो कोई ० ईश्वर को सुमरेगा वह परमपद को जाहीगा इ (-) ० समे कुछ सन्देह नही (।) इस भांति आपस मे बत (-) ० रा देवता सब अपने अपने स्थान को गये ओ ज (-) ० ब मारीच मर गया तब रामचन्द्र ने बिचारा कि मर (-) ० णे कि बेरियां इस अधम असुर ने मेरी भांति पु (—) ० कारा कि हा लक्ष्मण दौडे तिस्से मेरी बोली समा (-) ० न इसका पुकार सुन कर सीता कैसी डर गयी हो० गीं इस्से अब शीघ्र चल कर उन्हे देषिऐ (।) ऐसे शोच ० समझ कर वे तो तुरत अपने आश्रम को फिरे ० ओ वहां मारीच का पुकार सुन कर भय से निपट ० व्याकुल हो सीता लगी लक्ष्मण से कहने (—) तुम शी (-) ० घ्र जा देषो तुम्हारे भाई को असुर बहुत संतावता ० है और हा लक्ष्मण दौडो यह बिनकी बोली क्या ० नही सुनते जो निश्चित हो बैठे हो (।) उन्हने उत्तर ० दिया (—)ऐ महारानी तुम क्यूं वृथा घबराती हो यह ० तो जो राक्षस मारा जाता है बिसका पुकार है राम ० चन्द्र की यह कधी नही बोली है वे जों अभी क्रुद्ध ० होकर चाहें तो एक क्षण मे तीनो लोक भस्म कर ० डालें सो निपट कातर सा भला किसलिये मुजे पु (-) ० कारेंगे तुम्ही इस बात का बिचार करो। (।) इतनी बात ० के सुनते ही सीता बहुत रिसिआ उठीं ओ आं (-) ० षों मे आंशू भर यह बचन कहने लगी अरे मं (-) ० दबुद्धि लक्ष्मण तू काहे को जायेगा तू तो अप (-) ० ने भाई की मृत्यु चाहता है (।) अब मैंने जाना है कि ० बिनको मार के मुझे लेने के लिये भरत ने तुझे ० भेजा है पर कधी न मुझे पा शकेगा क्यूंकि जों श्री ० रघुनाथ जी नही तो मै जी के क्या करूंगी मै तो आ (-) ० ज ही अपना प्राण तजूंगी ओ चाहिऐ कि रामच (-) ० न्द्र बिन भरत को मैं छूऊंगी सो कभूं होने का नहीं (।) ० हा रामचन्द्र तुझको नही जानते थे कि मेरी स्त्री ० को यह हरने आया है (।) ऐसे बहुत कह के निदान ० दोनों हाथों से छाती पीट पीट पुकार पुकार लगी ० वह रोने ओ शि[1] धूनने तद सुन कर लक्ष्मण जी ० ने अपने दोनों कानों पर हाथ दिये ओ निपट दुखि (-) त हो कहा (—)अरे कर्कशा धिक्कार है तुझे जो मुह से ० ऐसा बचन निकालती है अब तेरा नाश होने प (-) ० र हूआ यों कह बिसकी बातों से कोहां कर ओंही ० उसे बन देवीन को समर्प दिया ओ आप रोते क (-) ० लपते राम के षोज मे गये (।) इतने मे अन्तराल पा ० कर भिषार का भेष बनायें हाथों मे सुन्दर डण्ड (-)क (-) ० मण्डल लिये जानकी के निकट रावण आ पहुं (-) ० चा (।) तब अतिथि को देष कर बिन्हने प्रणाम किया ० ओ क्षेम कुशल पूछ बडा शिष्टाचार कर आस ० न पर उसे बैठलाया ओ कन्द मूल ला बिसके आगे रष दि (-) ० या ओ

१. शिर।

यह वचन कहा (——) महाराज कृपाकर इसे भो(-) ० जन कर लीजे ओ जी चाहे तो कुछ घडी यहां वि(-) ० श्राम कीजे मेरे स्वामी अभी आ चले वे तुमको ० वहुत प्यार करेंगें(।) ० दण्डी वोला तुम कौन हो अरु तु(-) ० म्हारा पति कहां का रहने वाला है ओ राक्षसन से ० सेवित इस महावन मे किसलिये आवसा है यह ० सव समझाकर मुझ से कहो जो मेरे मन का संदे(-) ०ह जाए (।) सीता ने उत्तर दिया कि अयोध्या के पति ० दशरथ नाम एक राजा हैं तिनके वडे वेटे श्री राम(-) ० चन्द्र हैं ओ राजा जन[1] की वेटी सीता नाम मैं विनकी ० व्याही स्त्री हूं ओ प्राण प्यारे लक्ष्मण जी विन के ० लहुरे भाई है(।) पिता की आज्ञा पा दण्डकारण्य ० मे चौदह वर्ष बसने के लिये दोनों भाई आये हैं अ(-) ० व आप कौन हैं सो मुझे सुनाइऐ (।) हंस कर भिषा(-) र वोला मैं तो पुलस्त्य मुनि का पोता हूं ओ सकल ० राक्षसों का राजा अरु रावण मेरा नाम है तुम्हारे ० रूप से कामवश हो तुमको लेने के लिये आया हूं ० अब उचित है कि वन का दुख तज मेरे साथ च ० ल कर नाना भोग विलास करो(।) मुनि के भेषधारी ० राम के संग मत रहो(।) तुमसे सुन्दरी को विससे क्या ० काज(।) इतनी वात के सुनती ही पहले तो सीता ० कुछ एक डर गयीं निदान क्रुद्ध होकर यह वचन ० कहने लगी(——)अरे दुष्ट जों तू ऐसा वचन मुजसे क(-) ० हता है तो रामचन्द्र के हाथ तेरा विनाश होवेगा ० भाई समेत अभी वे आ चले जों तू वडा वीर है तो ० क्षण भर षडा रह विनके रहते हूए किसका इतना ० सामर्थ्य है जो मुजसे ढिठाई कर शके मैं साक्षा(-)० त् नारायण की भार्या हूं तू क्या मुझे समझता ० है जा शीघ्र यहां से भाग नही तो रामचन्द्र के वा (-) ० णों से खंड खंड होकर धरती पर गिर पडेगा(।) इस ० भांति जव सीताने कहा तव सुनकर क्रोध से मूर्छित हो रावण ने काला मेघ ओ पर्व्वत समा(-) ०न अपना वह शरीर देषाया जिसमे दश मा(-) ० थ ओ वीश भुजा ऐसे भयावन थे जिन्हको ० देषते ही वनदेवियां ओ जितने वहां जीव ज(-) ० न्तु थे सो सव लगे थर थर कांपने (।)निदान दे(-) ० षा कि मारे त्रास के सीता भी अव चित्र समान हो ० गयी तव जिस वेदी पर वे वैठीं थी तिसे विन समे ० त नषों से दशकन्धर ने उषाड लिया ओ हाथों ० से तौल कर रथ पर विसे रष आकाश पथ मे हो ० लंका को चला(।) तद तो दीन की भांति हा राम हा ० लछुमण कर सीता लगी पुकार पुकार रोने ओ ० ऐसी डर गयीं कि पृथ्वी ही पर दृष्टि किये चलीं इ(-) ० तने मे विन का विलाप सुनकर पछिओं का राजा ० जटायु शीघ्र उठ दौडा ओ खडा हो खडा हो कह (-)० ता हुआ निकट जा रावण से लगा कहने(——)सुन ० अधम जैसे मंत्र का पवित्र किया हुआ षीर य(-) ० ग्य मे से कुत्ता ले भागे वैसें ही इस शून्य वन मे से ० त्रिलोकनाथ की भार्य्या चोरायें तू मेरे आगे से ० कहां जा शकता है(।) क्या तू नही जानता की[2] इन ० की चौकी मे जटायु रहता है अछा देष अब मैं ० तेरी क्या दशा करता हूं (।)यों कह चोषे चोषे चोंचन[3] ० से विसके रथ को काट खंड खंड कर डाला ओ वि(-) ० सी प्रकार से विसके घोड़ों को मार गिराया अरु न(-) ० खों से सारी उसकी देह चूरन कर डाली(।) तव क्रो(-) ० ध से अचेत हो सीता को त्याग रावण खड्ग ले दौ(-) ० डा ओ पछिराज के दोनों पक्ष काट मरणदशा ० को पहुचा धरती पर गिरा दिया ओ आप फिर ०

१. जनक। २. 'की' इस रूप से प्रतीत होता है, 'कि' अभिप्रेत है। ३. नख।

सीता को ले दूसरे रथ पर चढ हर्षित हो अपने पु(-) ० र को चला(।)० तव निपट अनाथ हो पुन राम राम क(-) ० र सीता लगी रोने ओ ऐसा किसी को नही पावें जो ० अपने को विस्से बंचा शके इस कारण वार वार य(-) ० ही पुकारती वहां से चलीं कि हा राम हा जगन्ना(-) ०थ इस दुष मे फंसी हूई मुजको नही देषते जो रा(-) ० क्षस लिये जाता है कहां हो शीघ्र आकर अपनी ० स्त्री को वंचा लो ओ हे लक्ष्मण इस समय तू मेरा ० त्राण कर मै सव प्रकार अपराधिन हूं मेरी वातों ० पर मत ध्यान कर अरु वचन रूप वाणों से मैने ० जो तुजे मारा सो मेरा अपराध क्षमा कर तू मेरा ० प्राणप्यारा देवर हूँ इस भांति राम के आने के अ (-) ० र्थ रोती हूई सीता को लिये हूए वायुवेग समान ० जव कुछ दूर रावण निकल आया तव सीता तो ० नीचे शिर किये अधर मे जाती ही थीं सो एक प(-) ० हाड के उपर देषा कि चार वादंर वैठे हैं तद साडी मे ० अपना सव गहना लपेट कर विन्होके आगे उप(-) ० र से गिरा दिया इसलिये कि ये सव मेरा समाचार रामचन्द्र ० से जा कहें ओ विश्वास के लिये यही चीन्ह विन ० को देवें(।) इस अनन्तर कुछ घडी में समुद्र पार हो ० लंका मे आ अपने मन्दिर माह रावण आन प(-) ० हुंचा ओ अशोक वन मे जा एक किसी एकान्त ० स्थान माह अनेके राक्षसिनीन के वीच मे सीता ० को रष दिया ओ जी मे माता समान मान कर ल(-) ० गा उन्हे पालने(।) इति श्रीरामचरित्रे आरण्यका ० ण्डे सप्तमोध्याय: (।) ७ (।) इस प्रकार लंका मे आ रा ० क्षस राक्षसिनीन के वृन्द मे अवश हो सीता लगी रहने तो आकुल हो दिनरात हा राम हा राम य(-) ० ही विलाप किया करें अरु विनकी चिन्ता से सव ० सिंगार पटार-भूलकर निपट कृश हो गयीं ओ ० वदन विनका शुष गया(।)यह तो वहां का वृत्तान्त ० है अरु यहां विस मायावी राक्षस को जो नाना स(-) ० रूप हो शकता था मार कर श्रीरामचन्द्र अपने ० आश्रम को फिरे तो क्या देषते हैं कि लक्ष्मण ० जी चले आते हैं ओ दौडते दौडते इनका मुह शुष ० गया है इस्से निपट विकल हो रहे हैं तव जी ही मे ० लगे शोचने कि जो माया की सीता वनाकर मै रष ० आया था तिसका भेद लक्ष्मण नही जानता ति(-) ० स्से जानकर भी अनजान हो इसे छल कर सीता ० के लिये अव ऐंसा शोक करूं जैसा कोई अज्ञा(-) ० नी मनुष्य होवे ओ नही उदास हो जों मै चुप चा(-) ० प जा घर मे वैठ रहूं तो कोटिन राक्षसों का क्यूंकर ० वध होगा तिस्से यही है कि कामातुर की भांति ० जानकी का वहुत शोक सन्ताप करूं और क्रम ० क्रम विन्हे षोजते षोजते असुरन के स्थान पर ० जा कुल परिवार समेत रावण को मार अपनी रषी ० हूई सीता को आग मे से निकाल लेकर आलस्य ० छोड अयोध्या कों चलूं ओ यद्यपि इन्ही काजों ० के लिये व्रह्मा की विनती से मै मनुष्य भया हूं तथा(-) ० पि इन कामों से सुचित हो कुछ दिन वहां चल कर ० वसूं तो माया मनुष्य का मेरा चरित्र सुन कर सहज ० मे लोगन की मुक्ति होगी(।) ऐंसें शोचते ही हैं कि ल(-) ० छुमण समीप आन पहुचे तव राम ने विन से कहा(—) ० अरे भाई तुम मेरी प्राणप्यारी जनकनन्दिनी को ० एकेली छोड़कर क्यूं चले आये अव हो न हो राक्ष(-) ० सों ने विसे खाया कैं[1] उठा ले गये(।)तव सुन कर लक्ष्म(-) ० ण ने रो दिया ओ हाथ जोड कर सीता का दुर्वा(-) ० च्य भाई को सुनाया

---

१. अथवा।

कि महाराज आपकी भांति हा ० लक्ष्मण कर यम राक्षस ने पुकारा तद सुन कर ० सीता लगीं रोने ओ वार वार मुजसे कहने कि तुम ० शीघ्र जा राम को देषो किसी संकट मे वे पडे हैं मैने ० उत्तर दिया रामचन्द्र की यह् वोली नही है तुम ० अपने घर मे जा सुचित हो वैठ रहो औ झुठमुठ क्यूं ० घबराती हो किसी वात की चिन्ता नही इस प्रकार व(-) ० हुत मैने समझाया पर विन्हो न माना उलटे ही ० जो तुम्हारे आगे कहने योग्य नही सो वचन मुझ ० को कहा तद मुजसे रहा न गया आपको ढूढने ० के लिये कान मुंद कर तुरन्त मै वहां से निकला(।) ० रामचन्द्र वोले(—) यद्यपि उन्होने तुम्हे कटु वचन क(-) ० हा तथापि तुमने अनुचित किया जो स्त्री की ० वात का विश्वास कर विसे छोड आऐ अव होन ० हो राक्षसों ने सीता को खाया कै उठा ले गये इसमे कु(-) ० छ सन्देह नहीं(।) ऐसें वहुत अछता पछता निदा(-) ० न भाई समेत तुरत अपने आश्रम पर आकर ० देषें तो सचमुच सीता नही है तव अति दुखित ० हो लगे विलाप करने कि हा प्राणप्यारी तुम कहा ० गयी आगे की भांति आज आश्रम मे नही हो ० अथवा मुजको वियोग देने के लिये कै ठट्टा के ० लिये कहीं जा छिप रही हो तो शीघ्र आ प्रगट हो ० जो मेरा जी ठंढा होवे(।)इस भांति अति व्याकुल हो ० श्री रामचन्द्र सगरे वन षोजते फिरे पर सीता को ० कहुं नही पाया तव निपट आतुर हो सवसे लगे ० पूछने कि हे वनदेवियां तुम वताओ मेरी प्राण प्यारी सीता कहां है ओ हे मृगो हे पक्षियों ओ हे वृक्षो तुम जानते हो तो मेरी प्रिया को देषा दो(।) इस ० प्रकार श्री रघुनाथ जी विलाप करते फिरे पै सी(-) ० ता का भेद किसी ने नही वताया(।) महादेव कहते ० है(—)हे भवानी देषो यद्यपि श्री रामचन्द्र सर्वज्ञ हैं ० ओ सव को देषनेवाले तो भी जानकी को नही ० देषा अरु आनन्द मुरति है ओ अचल तथापि ० स्त्री का वहुत वियोग किया ओ विसके लिये ज(-) ० हां तहां दौडे फिरे अरु निरहंकार है आनन्द स्व(-) ० रूप है तद भी सीता को अपनी स्त्री जान कर व(-) ० हुत रोये कलपे सो है क्या कि यद्यपि श्री रघुना (-) ० थ सव माया मोह से निर्लज्ज हैं तथापि मायाव(-) ० श हे मूढो को तो संसारिक से लगते हैं पर ज्ञानी(-) ० न के लेखे पूरण व्रह्म है(।) ऐसे कह फिर सदाशि(-) ० व वोले(—) निदान सव जंगल ढूढते ढूढते भाई स(-) ० हित जव रामचन्द्र कुछ दूर निकल आये तो वहां ० देषते क्या हैं कि कहीं तो पृथ्वी पर टूटा हुआ र(-) ० थ पडा है ओ कहूं छत्र कहूं वाण कहीं धनुष ओ ० कहूं रथ का जुआ तव लक्ष्मण जी से राम ने क(-) ० हा देषो कोई राक्षस सीता को लिये जाता था ति(-) ० स्से किसी दूसरे ने यहां छिन लिया इतने मे कुछ ०दूर आगे फिर देषा कि पर्वत समान एक प्राणी ० पडा है ओ सारी विसकी देह लोहू से भींग रही है ० तव रामचन्द्र ने पुन लक्ष्मण से कहा देषो भैया ० यह राक्षस है सीता को खाकर अतितृप्त हो सो ० रहा है शीघ्र धनुषवाण मुजे ला दो मै अभी इस ० दुष्ट को मार डालता हूं (।) इस भांति जव राम ने कहा ० तवसुन कर जटायु वहुत डर गया ओ यह वचन ० लगा कहने महाराज आपका जय जय होए ० मुजे मत मारिए मै अपने कर्म से आपे मरता हूँ ० तुम क्यूं अपयश लेते हो मेरा नाम जटायु है तु(-) ० म्हारी स्त्री को रावण चुराऐ लिये जाता था तिस ० से दौड कर मैने वडा युद्ध किया ओ धनुष वाण ० समेत उसके रथ को खंड खंड कर डाला ओ घो(-) ० डों को मार गिराया अरु विसकी देहको चूर्ण कर दिया(-) ० तव महाक्रुद्ध हो खड्ग लेकर वह दौडा ओ मु(-) ०

जको मारकर धरती पर लोटा दिया अव निकट ० आ के मुझे देखिए मै प्राण त्याग कर वैकुण्ठ धा(-) ० म को जाऊंगा(।) सो सुन विस दीन को जो कंठगत ० प्राण हो रहा था समीप जा रामचन्द्र ने हाथों से ० पोंछा ओ आंषों मे आशू भर भर लगे पूछने क(-) ० हो जटायु वह कौन राक्षस था जो मेरी भार्य्या को ० ले गया हा मेरे काज के लिये तुम मारे गये इस्से ० तुम मेरे हितू भाई हो इस भांति जद राम ने कहा त(-) ० द मुह से लोहू उगलता हूआ धीरें धीरें वह वोला म(-) ० हा पराक्रमी रावण नाम एक राक्षस है सो सी ० ता को लिये यहां से दक्षिण दिश गया इसके आ(-) ० गे कहने का अव मुजे सामर्थ्य नही आपके आ(-) ० गे अभी मै प्राण त्याग कर मरूंगा(।) भाग से इस ० मरण समय तुम्हारा दर्शन भया तुम साक्षा(-) ० त परमात्मा हो माया कर मनुष्य हूए हो अन्त ० काल मे तुम्हे देष कर अव मै संसार से मुक्त भया० आप कृपा कर निज कर कमलों से तनिक मु(-) ० ज को फिर छू दीजे तो मै परमपद को जाऊं(।) इत(-) ० नी वात के सुनते ही मुस्कुरा कर रामचन्द्र ने पु(-) ० न विसके अंग पर जों हाथ फेरा कि तों ही प्रा ० ण तज पृथ्वी पर वह गिर पड़ा(।) तव विसके लि(-) ० यें श्री रामचन्द्र ने वहुत विलाप किया ओ भा(-) ० ई वंधु समान रोये अरु लछमण से लकडियां ० मंगा तुरत विसको फूंक दिया ओ भाई समे(-) ० त स्नान कर वन मे से एक मृग मार ला अनेक ० खंड कर अलग अलग घासों पर मांस छितरा ० दिये ओ कहा कि इन्हे पंक्षी सव खांये जो जटा[1] संतु(-) ० ष्ट होंए(।) यों कह फिर रघुनाथ जी वोले हे जटायु ० सव लोग कौतुक देषें तू मेरा स्वरूप हो मेरे धाम ० को जा(।) इतने मे सुन्दर शरीर धारण कर विमा(-) ० न पर चढ तेज मे सूर्य समान हो वीच अधर मे ० आ राम के साम्हने वह खड़ा भया ओ शंखचक्र ० गदा पद्म लिये शिर मे मुकुट धरें पीताम्बर प(-) ० हने साक्षात ईश्वर स्वरूप वन औ वैसे ही विष्णु ० के चारो गणों सहित वडे वडे सिद्धों से पूजित हो ० हाथ जोड लगा राम की स्तुति करने इस प्रकार ० से कि विन परंब्रह्म रामचन्द्र को मै वारवार प्रणा(।) ० म करता हूं ओ वे ही मेरी शरण हैं जो सकल सं(-) ० सार की उत्पत्ति पालन प्रलय के कारण हैं अ (-) ० रु जिसके गुणों का कुछ पारावार नहीं मिलता ० ओ जो आदि अनन्त है लक्ष्मी की कृपा दृष्टि ० से इन्द्र व्रह्मादिक के दुख दूर करते हैं मनवांछि- ० त फलदायक हैं तीनों भुवन मे एक सुन्दर हैं ० अशरण शरण हैं संसार रूप वन के दावान(-) ० ल हैं शैकरों सूर्य से प्रकाश हैं सुख के सागर हैं ० दया की खानि हैं सकल दानव को विनाशन हा(-) ० रे हैं श्याम सरीर हैं संसार से उदास हूए मुनि(-) ० न को सदा दर्शन देनेवाले हैं गौरी लक्ष्मी के ० हृदय मे सव दिन वसनहारे हैं गोवर्द्धनधारी हैं ० कोटीन कंदर्प्प से सुन्दर हैं यतीन के मनभाव(-) ० न हैं ओ जो मनुष्य परधन परस्त्री को नहीं चा (-) ० हते पर के गुण धन देष कर जी से हर्षित होते ० हैं ओ सवके हितू हैं तिन साधुन से जो सदा से (-) ० वित हैं विन रघु-नाथ को मै पुन पुन नमस्कार ० करता हूं (।) इस प्रकार जब जटायु स्तुति कर चूका ० तव प्रसन्न होकर श्री रामचन्द्र वोले(—) अछा अ(-) ० व तू मेरे धाम को जा तेरा किया हूआ इस स्तो(-) ० त्र कों जो नर चित्त दे पढेगा ओ लिख लेगा ० वह अन्त समय मुजमे आ मिल जायगा

---

१. जटायु ।

इ (-) ० स भां[1] विनकी वातें सुन वह बहुत हर्षाना ओ ० विन से विदा हो परमधाम को गया० इति श्री ० रामचरित्रे अरण्यकाण्डे अष्टमोध्याय: (।) ८ (।) ० जद जटायु जा चूका तद उदास होकर राम ल (-) ० क्ष्मण वहां से किसी और वन मे गये ओ फिर सी (-) ० ता को लगे ढूढने कि इतने मे चार चार कोश के ० दोनों हाथ पसारें वीच वाट पर वैठा हूआ स (-) ० व जीव जन्तु को मारने वाला विन आंष पांव का ० ओ ऐसा अद्भुत सरूप जिसका वीच छाती मे ० मुह कवन्ध नाम एक राक्षस देषने मे आया ० और फीरते फीरते विसके वांहो के मध्य मे भ्रम ० से दोनों भाई जा फंसे (।) जव नीके जाना कि यह दा (-) ० नव है तव हंस कर रामचन्द्र ने कहा (—) देषो लक्ष्मण ० विन शिर पांव का यह राक्षस है छाती मे इस ० का मुख है हाथों से जिस जिसको पाता है विसे ० खाता रहता है हम भी इसके हाथों मे आ फंसे यहां ० से अन्यत्र जाने का कहूं वाट नही देषते अव कहो ० क्या करना (।) कहीं ऐंसा न होए कि हमलोग को ० यह खा डाले (।) लक्ष्मण जी वोले (—) महाराज इसका ० और कुछ विचार नही है हम दोनों एक एक कर इसके दोनों ही हाथ काट लें ० इसी मे कुशल है (।) इस भांति आपस मे वतरा खड्ग ० ले रामचन्द्र ने दहना ओ लक्ष्मण ने वायां तुर (-) ० न्त विसका हाथ काट डाला तव तो वह वहुत च (-) ० कित हूआ ओ लगा पूछने (—) अरे भाइओ सच ० कहो तुम दोनों कौन हौ मेरा हाथ काटनेवाला ० इस लोक मे तो क्या देवताओं मे भी कोई नही ० है (।) तव राजीव नयन रामचन्द्र हंस कर वोले (—) अ (-) ० योध्या के पति दशरथ नाम एक वडे राजा हैं ति (-) ० न्ही का मै पुत्र हूं राम मेरा नाम है ओ यह लक्ष्म (-) ० ण मेरा भाई है राजा जनक की पुत्री सीता ना (-) म जो तीनो लोक मे एक सुन्दरी गिणी जाती ० है मेरी स्त्री थी विसको घर मे छोड़कर हम दो (-) ० नो भाई अहेर खेलने को गये तद हमारे पीछे ० कोई राक्षस विसे उठा ले गया उसी को षोजते षो (-) ० जते इस महावन मे हम आये जव तुम्हारे वा (-) ० हों के घेराव मे पडे तव प्राण वचाने के लिये हम ० ने तुम्हारे दोनों हाथ को काटा अव अति अद्भुत (-) ० स्वरूप तुम कौन हो यह हम जाना चाहते हैं (।) ० इस प्रकार जब राम ने कहा (,) कवंध वोला (—) कृपा (-) ० निधान मै धन्य हूं जो निकट आकर आपने द (-) ० र्शन दिया अव मै कृतारथ हूआ (।) यों कह फि (-) ० र लगा अपना समाचार विन्हे सुनाने (—) महा (-) ० राज मै विस जन्म मे सकल गंधर्वों का राजा ० था अपने रूप यौवन के मद से मात कर सव ० लोको मे फिरता था ओ मेरी तपस्या से संतु (-) ० ष्ट हो व्रह्मा ने मुझको वर दिया था कि जा तू कि (-) ० सी से न मारा जायगा इस्से और भी मै चौकस ० था निदान एक दिन अष्टावक्र मुनि को देषकर ० मै हंस उठा तव क्रुद्ध ३[2] होकर उन्हने मुझको श्राप ० दिया (—) रे मतिमन्द जा तू राक्षस हो सो सुनकर मै ० विनके पांवों पंर जा गिर पड़ा तव दयावन्त हो फि (-) ० र वे वोले त्रेता युग मे दशरथ के ह्यां आप नाराय (-) ० ण अवतार लेगें तद योजन भर के लम्वे लम्वे ते (-) ० रे दोनों हाथों को आकर वे काटेंगे तव इस श्राप से ० मुक्त हो आगे की भांति फिर गंधर्वों का राजा तू ० होगा (।) इतनी वात के

१. भाँति। २. 'द्ध ३' से संकेतित है कि मूल की तीसरी पंक्ति में चिह्नित स्थान पर 'द्ध' छूट गया है; 'द्ध' अलग से मूल प्रथम पंक्ति के ऊपर मुद्रित है।

सुनतें ही महा भयावन मैं रा(-) ० क्षस हो गया फिर[1] कुछ दिन के बीतें एक वेर कोप ० कर इन्द्र पर मै दौडा तव वे वहुत क्रुद्ध हूऐ अरु वज्र ० से ऐसा मुझे मारा कि शिर समेत मेरे दोनों पांव ० कट कर मेरी छाती मे जा लटक गये पर ब्रह्मा का ० वर था विसके वल से मैं मरा नही तद मेरी दशा ० देष निपट दयावश हो सव देवताओं ने मेरे लिये ० इन्द्र से कहा(—)महाराज यह दीन मुख विन किस प्र(-) ० कार भला जीवेगा इस्से जिसमे खाने पीने का कुछ ० दुख न इसे होवे सो उपाय कीजे तव विन्हने मुज ० से कहा जा तुजे छाती ही मे मुख होए ओ चार चा(-) ० र कोश के लम्वे तेरे दोनों हाथ होवें(।) ऐसे कह देव(-) ० ताओं समेत सुरपति अपने पुर को गया अरु मैं ० वैसा होकर यहां वस रहा ओ हाथों से इस वन के ० जीव जन्तुन को पकड पकड नित्य लगा खाने(।) अ(-) ० व मेरे हाथ आपने काट डाले तो वडा अनुग्रह की (-) ० या अव मैं प्राण त्याग करूंगा तिस्से कृपाकर एक ० गडहा खन इन्धनो से भर विस पर रष आप मुझ० को जला दीजे तो आग मे भस्म हो अपना पहला ० सरूप धारण कर मैं तुम्हारी स्त्री का भेद वताऊँ(।)इ(-) ० तनी बात के सुनते ही रामचन्द्र ने लक्ष्मण से तुर(-) ० न्त एक गडहा खनवाया ओ काठों से भर विसमे ० विसे रष आग लगा कर जला दिया तव तो उस दे (-) ० ह से निकल कन्दर्प समान सुन्दर शरीर प: आगे ० की भांति गन्धर्व वन नाना अलंकारों से भूषित हो रा(-) ० मचन्द्र के आगे आ वह खडा भया ओ दण्डवत प्र(-) ० दक्षिणा कर पहले इतना कह लिया कि महाराज ० अव मैं कुछ आपकी स्तुति किया चाहता हूं त(-) ० व गिडगिडा कर यह वचन लगा विनसे कहने महा(-) ० राज तुम पूरण व्रह्म हो तुम्हारा आदि अन्त नही ० मिलता ओ यद्यपि आपका सूक्ष्म रूप ऐसा अ(-) ० व्यक्त है कि न तो मन से देष पडता न वचन से क(-) ० हा जाता पर स्थूल जो तुम्हारा रूप है वि(-) ० स के विचार से यही ठहरता है कि व्रह्माण्ड मे जितनी व(-) ० स्तु हैं सो सव तुम ही हो ओ लोक तुम्हारे अंग है ति(-) ० न मे पाताल तुम्हारा तलवा है महातल तुम्हारी ० ऐडियां है और रसातल तलातल तुम्हारी घुट्टि(-) ० यां है सुतल वितल यह तुम्हारी पिडडी ओ जांघ ० है ओ हे रामचन्द्र तुम्हारा जघन पृथ्वी है ओ नाभी ० आकाश तेज तुम्हारी छाती है महर्लोक जन ० लोक सत्यलोक ये ही तुम्हारा गला वदन ओ ० शिर है इन्द्रादि लोकपाल वांह दिशा कांन ० अश्विनीकुमार दोनों नांक अग्नि मुख सूर्य ० आंष मन चन्द्रमा ओ तुम्हारी भोंह की चाल ० यही काल है वुद्धि तुम्हारी वृहस्पति हैं अहंका(-) ० र रुद्र ओ वेद ही तुम्हारे वचन हैं नक्षत्र दांत ओ ० सव को मोहनहारी माया तुम्हारी हंसी है कन(-) षी चलाना ही सृष्टि है धर्म तुम्हारा पीठ है नि(-) ० मेष अनिमेष यही रात ओ दिन हैं सातो समुद्र ० ही पेट हैं नदी सव तुम्हारी नाडियां हैं वृक्ष औ(-) ० षधीय ही तुम्हारे रोम हैं वृष्टि वीज हैं ओ महि(-) ० मा ज्ञान यही तुम्हारा सामर्थ्य है जो नर तुम्हारे ० इस स्थूल शरीर का ध्यान करता है वह सहज ० मे मुक्त होता है इस्से हे रामचन्द्र मै तुम्हारे स्थू(-) ल ही सरूप को सदा सुमरता था पर अव से वि(-) ० से छोड कर इस श्याम सरूप का ध्यान करूंगा ० जो धनुष वाण लिये जटा वल्कल धारण किये ल(-) ० क्ष्मण को संग लिये सीता को ढूढता फिरता ०

१. 'फिर' अनावश्यक है।

है ओ है महाराज यह तुम्हारा सरूप मेरे हृदय ० मे सदा वसे कि जिसका ध्यान पारवती सहित ० आप सदाशिव सदा किया करते हैं ओ जो म(-) ० नुष्य काशी मे जा मरते हैं तिनको राम राम यह ० मंत्र उपदेश कर तार लेते हैं(।) इस्से हे जान ० कीनाथ तुम निश्चय परमात्मा हो माया से मो ० हित मनुष्य तुम्हे नही पहचान शक्ते तुम मे(-) ० रा त्राण करो मैं तुमको वार वार प्रणाम करता हूं ० इसलिये कि तुम्हारी माया मे फिर न कभूं जा मै ० फंसू(।) इस प्रकार जव गंधर्व ने कहा तव श्री राम ० चंद्र प्रसन्न हूएे ओ वोले हे गंधर्व मै तेरी स्तु(-) ० ति से वहुत संतुष्ट भया तू अव मेरे विस परम ० स्थान को जा कि जहां योगियों का गम्य है ओ ते(-) ० रे इस स्तोत्र को मन देकर जो नर पढेगा वह ० ज्ञान पा मुक्ति धाम को जावेगा ओ माया मोह ० मे फिर न कभी फंसेगा ० इति श्रीरामचरित्रे ० अरण्यकाण्डे नवमोध्याय:(।) ९(।) इस प्रकार जव ० रामचन्द्र ने कहा तव गंधर्वराज वोला(—) महाराज ० इहां से थोडी दूर आगे शवरी नाम ऐक भिह् ल[1](-) ० न रहती है वडी भाव भक्ति कर आपके चरण क(-) ० मल का ध्यान कर रही है विसके आश्रम पर जा(-) ० इएे सीता का सव भेद आपको वह वतावेगी(।) ० यों कह राम से वह विदा भया ओ तेज मे सूर्य ० समान विमान पर चढ विष्णुधाम को गया त (-) ० द वाघ सिंह आदि वन जन्तुन से निपट डरा ० वन विस महावन को छोड़कर धीरे धीरे श्रीरा(-) ० मचन्द्र जी शवरी के स्थान को चले(।) जव समी(-) ० प जा पहुचे तव उनको देष कर निपट हर्षित ० हो तुरन्त वह उठ खडी हूई ओ आगे जा चरणों ० पर गिर पडी और मारे आनन्द के आंषो मे ० आंशू भर क्षेम कुशल पूछ आश्रम के भीत (-) ० र ले जा आसन पर विठला भक्ति से वुनके पांव धो ० चरनोदक लिया अरु विस जल को अपने सग(-) ० रे आंग पर छिडका ओ सुगंध सुगन्ध फूल ला ० विधि से दोनों भाई को पूजा और अमृत समा(-) ० न मीठा मीठा फल जो उनके लिये चुनचुन कर ० आगे से ला रष्षा था भोजन कराया(।) जव खा पी ० कर लक्ष्मण समेत सुचित हो श्रीरामचन्द्र वैठे ० तव हाथ जोड नम्र हो शवरी यह वचन विनसे ० लगी कहने(—) महाराज इस आश्रम मे महर्षि लो(-) ० ग आगे रहते थे वे ही मेरे गुरु थे मैंने विनकी से(-) ० वा टहल कै सहस्र वर्ष तक की अव वे लोग व्र(-) ० ह्म पद को पहुंचे पर जाने की वेरियां इतनी वा(-) ० त मुजे कह गये कि मन को स्थिर कर अभी तुम ० यहां ही रहो अविनाशी परमात्मा राजा दशर(-) ० थ के ह्यां अवतरे हैं राक्षसन को मारने के लि(-) ० ये ओ ऋषिन की रक्षा के निमित्त यहां आ(-) ० वेगें तुम विनके ध्यान मे तत्पर रहो अभी आ ० कर चित्रकूट पर वे वसे हैं जव तलक न उनका ० आगमन होवे तव तलक तो तुम अपने श(-) ० रीर को रष्षो जद वे यहां आवेगें तद विनका ० दर्शन कर भस्म हो विष्णुधाम को जाइओ (।) ० तव हर्षित हो मैने उनकी वात अंगीकार की ० ओ तुम्हारे ध्यान मे मगन हो लगी तुम्हारा ० वाट निहारने अव विन्हो का कहा मुझे फ(-) ० ला(।) आपका दर्शन वडे वडे ऋषि लोग भी ० नही पा शक्ते मै किस गिणती मे हूं क्यूं ० कि एकें तो मै स्त्री दूसरे मूढ तीसरे नीच जा(-) ० ति मे मेरा जन्म तिसको तुमसे

१. प्रतिलिपिकार ने स्पष्ट प्रतिलिपि नहीं की है; 'मिहजन' या भिह् लन' पढ़ा जा सकता है, परंपरानुसार दूसरा ही ठीक प्रतीत होता है। —सं०

साक्षात पुर(-) ० ण ब्रह्म का दर्शन होवे यह वहुत आश्चर्य्यं ० है(।) महाराज मै क्या करूं मुजे इतना सामर्थ्यं ० नही जो आपका कुछ स्तुति करूं पर आप द(-) ० यालु हैं मुझसे प्रसन्न हूजिऐ(।) रामचन्द्र ने उत्त(-) ० र दिया न तो मेरे भजन मे स्त्री कारण है न पुरुष ० ओ न जाति न आश्रम मेरे भजन मे भक्ति का(-) ० रण है उस विन कितने ही यज्ञ दान तपस्या को(-) ० ई करे वेद पढ़े पर चाहिए कि मेरा दर्शन पा शके सो ० कभी होने का नही(।) यों कह फिर वोले (—) मै भक्ति व(-) ० श हूं तिस्से थोडे ही मे विसका साधन मै कहता ० हूं तुम चित्त देकर सुनो(।) एक तो सत्संग ही भक्ति ० का प्रथम साधन है दूसरा मेरी कथा सुनना ओ ० सुनावना तीसरा मेरे गुण का कीर्त्तन चौठा उप(-) ० निषत् का व्याख्यान पांचवा गुरु की सेवा ओ मे(-) ० रे तुल्य विन्हे समझना पुण्य काजों मे लवलीन ० होना हिंसा द्वेष न करना ब्रह्मचर्य से रहना यो(-) ० ग कामना नेम आचार सन्तोष तपस्या ओ ईश्व(-) ० र का ध्यान नित्य करना छठा मेरी पूजा मे तत्पर र(-) ० हना सातवां मेरे मंत्र की उपासना आठवां मे ० रे भक्तजन को अधिक पूजना इन्द्रियों को रो(-) ० कना सव से उदास रहना सकल जीव जन्तु मे ० मुझे देषना नवां व्रह्मविचार ये नव प्रकार के भ(-) ० क्ति साधन क्या स्त्री क्या पुरुष क्या किसी नीच ० से भी नीच को है विसी को वह भक्ति होती है कि ० जिसके होते ही अनुभव ज्ञान पा विसी जन्म मे ० प्राणी मुक्त हो जाता है(।) तिस्से मोक्ष का कारण ० केवल भक्ति ही है औ यद्यपि नव प्रकार के भ(-) ० क्ति साधन हैं पर प्रथम साधन जिसे हूआ उ (-) ० सको क्रम क्रम भक्ति ज्ञान मुक्ति सव होते हैं ० ओ तुम तो मेरी भक्ति पा कृतार्थ हो रही हो य(-) ० ही सुनकर मै तुम्हारे पास आया अव मेरे दर्श(-) ० न से तुम मुक्त हो चुकीं इसमे कुछ सन्देह नही(।) यों ० कह फिर रामचन्द्र ने पूछा(—)जों तुम जानती हो तो ० कहो मेरी प्राणप्यारी सीता कहां है ओ कौन वि(-) ० न को ले गया (।) शवरी वोली(—) महाराज तुम सर्वज्ञ ० हो सव जानते हो पर लोक की यह चलन है इस ० कारण पूछते हो तो अछा सुनिऐ सीता को रा(-) ० वण हर ले गया और अव वे लंका मे है जों उनको ० लाया चाहते हो तो यहां से थोडी दूर पर पम्पा ना(-) ० म एक सरोवर है विसके निकट ऋष्यमूक नाम ० एक वडा सा पहार है उस पर चार मंत्री संग लियें ० सकल वांदरन के राजा ओ वडे पराक्रमी सुग्रीव ० रहते हैं ओ ऋषि के भय से वाली का वहां गम्य न (-) ० ही है आप वहां जाकर विनसे मित्रता कीजे वे स(-) ० व तुम्हारा कार्य करेंगे पर हे कृपानिधान एक क्षण ० भर आप खडे रहीऐ मै तुम्हारे आगे अपना श(-) ० रीर भस्म कर परमपद को जाऊंगी ऐसे कह स(-) ० चमुच वह आग मे तुरंत कूद पडी ओ पांच भौ(-) ० तिक देह को जलाकर रामचन्द्र के प्रताप से दुर्ल (-) ० भ मुक्तिधाम को गयी(।) महादेव कहते हैं पार्वती ० से कि जों भक्तवत्सल श्री रामचन्द्र प्रसन्न होवें ० तो क्या नही हो शकत्ता है यहां तक कि महाअधम ० जाति शवरी सो भी मुक्त हूई और जो उत्तम व्रा(-) ० ह्मण लोग हैं ओ रामचन्द्र के भक्त हैं वे परमगति पा ० वे तो क्या आश्चर्य है इस्से ज्ञानी लोगन को ० उचित है कि श्याम सुन्दर श्री रामचन्द्र को सदा ० हृदय मे सुमरे ओ विनके चरणकमल की भ(-) ० क्ति मे जो गति मुक्ति देन हारी है नित्य तत्पर र(-) ० हे० इति श्री रामचरित्रे अरण्यकाण्डे दशमो ० ध्यायः(।) १०(।) समाप्तः(।) जव शवरी वैकुण्ठधाम ० गयी लक्ष्मण समेत श्री राम

चन्द्र जी धीरें धीरें ० वहां से पंपातीर आये ओ अति सुन्दर विस स(-) ० रोवर को जो कोशभर का लम्बा था अरु अथा(-) ० ह जल से भरा और वर्ण वर्ण के कमल कुमुद ० जिसमे फूल रहे थे हंस सारस वक्रवाक[1] पन(-) ० डूवा वकुला आदि पंक्षी सव अति सोहावन वो(-) ० लियां वोल रहे थे तीरों मे नाना प्रकार के वृक्ष फ(-) ० ले थे औ सज्जन का मन समान अति निर्मल ० जिसमे जल था देषकर दोनो भाई वहुत चक्रि(-) ० त भये औ पंथ का श्रम मिटावनहार विस का शीत(-) ० ल पानी पी ठंढे हो ऋष्यमूक के पास जा धनुष वाण ० लिये जटा वल्कल धारण किये लगे इधर उधर ० फीरने ओ नाना प्रकार के वृक्षों की अरु विस प(-) ० हार की अद्‌भुत शोभा लगे देषने(।) इतने मे चार मंत्री ० समेत उस पर्वत के उपर सुग्रीव जो वैठे थे सो इ(-) ० न को जाते हूऐ देष कर मारे डरके और भी गिरि के ० उपर चढ़ गये अरु हनुमान से कहने लगे(—) सखा देषो ० तो ये दोनों वीर कौन हैं तुम व्राह्मण का रूप धर वि(-) ० द्यार्थी वन समीप जा इन्हो से कुछ वातचीत करो ० और देषो इनके जी मे क्या है जों तो ये मन के षों(-) ० टे होवें तो उंगली से सैन हमे करिओ अरु नही ० सीधे होंऐ तो हमारे ओर मुह कर तनिक हंस दी(-) ० जिओ(।) इतने वचन के सुनते ही विद्यार्थी वन कर ० हनुमान जी श्री रामचन्द्र के पास चले आये और ० दण्डवत कर नम्र हो यह वचन लगे विनसे कह(-) ० ने कि सव पुरुषन मे वडे श्रेष्ठ ओ वीर तुम दोनों ० जवान कौन हो ओ अपने तेज से सूर्य की भांति ० चारो दिशा प्रकाश करते हूए किस काज के लि(-) ० ये यहां आये मेरे जी मे तो यह प्रतीत होता है कि ० तीनों लोक को सृजने वाले तुम आदिपुरुष हौ मा(-) ० या कर मनुष वन आनन्द विहार करते फिरते हो ० ओ धरती के भार उतारने के लिये प्रजा लोग को ० पालने के निमित्त क्षत्री सरूप हो मानो नारा य(-) ० ण आ अवतरें ऐसे मुजे लक्षित होते हौ औ ० जगत की उत्पत्ति पालन प्रलय यह तो हंसी मे ० करने को उपस्थित हौ अरु सदा आत्मवश हो ओ ० घट घट व्यापी हौ सव को संसार मे डालनेवाले ० साक्षात ईश्वर हो और नही तो नर नारायण अ(-) ० वतार ले संसार मे फीरते हौ यह मुजे भासित हो ० ता है(।) सुनकर श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि भै(-) ० या इस विद्यार्थी को देषो मुझे जान पड़ता है कि ० इसने व्याकरण नीके पढ़ा है क्यूंकि इसके मुह से ० जो वचन निकलता है सो शुद्ध ही निकलता है(।) यों ० कह फिर विसे अपना परिचय लगे देने कि मै द(-) ० शरथ का पुत्र रामचन्द्र हूं ओ ये लक्ष्मण मेरे छो(-) ० टे भाई हैं पिता की आज्ञा पा सीता नाम अपनी ० स्त्री समेत घर से आकर मै दण्डकारण्य मे वसा ० सो वहां से कोई राक्षस सीता को हर ले गया इस ० कारण विसे ढूढते ढूढते हम दोनों भाई यहां आ(-)० ये अव तुम कौन हो और किसके छात्र हो यह मु(-) ० झे सुनाओ(।) वह वोला कि सकल वानरों के अधि (-) ० पति ओ वडे ज्ञानवान् सुग्रीव नाम एक राजा हैं ० सो चार मंत्री समेत इस पहार के उपर रहते हैं ओ ० वाली नाम उनका एक वडा भाई है विस महापापी ० ने वुनकी स्त्री को छीन लिया है ओ घर से विन ० को निकाल दिया है इस कारण वाली के डर से भा(-) ० ग कर अव वे ऋष्यमूक पहार पर रहते हैं(।) मै वि(-) ० नका मंत्री हूं हनुमान मेरा नाम विख्यात है अरु ०

---

१. चक्रवाक।

वायु का मै पुत्र हूँ अंजनी मेरी माता है(।) यों कह ० फिर हनुमान जी बोले(—)महाराज जों सुग्रीव से ० आप मित्रता कीजे तो जो तुम्हारी स्त्री को हर ले ० गया है विसको मारने के लिये वे आपके सहाय ० होंगे जों यह वातरूचे तो आइए मेरे साथ विन ० के पास चलिऐ मै अभी वहां जाता हूं(।) रामचन्द्र ० ने कहा(—) मै भी विनसे मित्रता करने को आया हूं ० अरु विन मित्र का जो कुछ काम काज होगा सो ० मै भी करूंगा इसमे तुम कुछ संदे[1] मत करो तव ह(-) ० नुमान ने अपना सरूप देषाया ओ कहा अछा ० अव आओ मेरे कांधों पर चढो जहां वाली के ० भय से मंत्री समेत पहार के उपर सुग्रीव हैं वहां ० मै जाता हूं(।) इतनी वात के सुनते ही राम लक्ष्मण ० विस के काधों पर चढ गये तद संभाल कर ऐंसा ० वह उछला कि एक पल मे पर्वत के उपर जा पहुं(-) ० चा ओ राम लक्ष्मण को एक पेड की छांह मे रष क(-) ० र आप सुग्रीव के पास जा हाथ जोड यह वचन ० कहने लगा(—)महाराज अव तुम्हारा भय गया राम ० लक्ष्मण आये चलो उठो विनसे मिलो मैंने तुम ० से मित्रता होने की सव बात विनसे की है अव इत(-) ० ना ही है कि अग्नि साक्षी कर आप शीघ्र विन से वचा(-) ० वन्ध कीजे[2] (।) इस भांति जव पवनकुमार ने कहा ० तव राजा सुग्रीव वहुत आनन्द मे मगन भये ० ओ राम पास तुरन्त चले आये और दण्डव[3] ० प्रणाम कर गले लगाके विनसे मिले अरु अप(-) ० ने हाथों से पेड की डाट तोड वैठने को उन्हे आ(-) ० सन दिया विसी प्रकार हनुमान ने लक्ष्मण ० को ओ लक्ष्मण ने सुग्रीव को वृक्ष की शाखा वै(-) ० ठने को आसन दिया(।) जव महा हर्षित होकर स(-) ० व वैठे तव जिस प्रकार से वनवास भया ओ सी(-) ० ता का हरण हुआ सो सव राम का वृत्तान्त एक ० ओर से लक्ष्मण ने सुग्रीव को सुनाया (।) तद ० विन्हने रामचन्द्र से कहा(—)महाराज आप कु(-) ० छ चिन्ता मत कीजे सीता का षोज मै करूंगा ० ओ जिसमे तुम्हारा शत्रु का वध होगा वैसी ० आपकी सहायता करूंगा(।) यों कह फिर सुग्री ० व वोला कि एक दिन जो कुछ मैंने देषा सो तु(-) ० म सुनो मै कहता हूं कि एक वेर मंत्रीन समेत ० पहार के उपर और दिनों की भांति जों मै जा वै (-) ० ठा तों ही राम राम कर पुकारती हुई एक महा ० सुन्दरी स्त्री को आकाश पथ मे होकर कोई राक्षस लिये जाता था सो पर्वत के उपर हमे दे(-) ० ष के उस नारी ने अपना आभरण सारी मे ल(-) ० पेट कर तुरत हमारे आगे गिरा दिया और ० आप विसी प्रकार दानव के साथ चली गयी ० तद गहना समेत विस कपडे को लेकर मैंने क(-) ० न्दरा मे रष दिया उसे देषिये तो आपका है कैं[4] ० नही ऐसे कह विस गंठरी को मंगाकर तुरंत ० सुग्रीव ने राम के आगे रष दिया वुसे देषते ही ० रामचन्द्र ने छाती मे लगा लिया और वार वार ० हा सीता हा सीता कर ऐंसें रोने पीटने लगे कि ० जैसें कोई अज्ञानी मनुष्य होवे तव लक्ष्मण ० ने उन्हे वहुत समझाया ओ कहा महाराज ० आप क्यूं इतना खेद करते हैं राजा सुग्रीव की ० सहायता से रण मे रावण को मारकर शीघ्र ० आप सीता को पावेंगे(।) इसी भांति सुग्रीव ने ० भी कहा(—)हे रामचन्द्र मै प्रतिज्ञा करता हूं कि ० संग्राम मे रावण को वध कर जानकी को मै ० तुम्हे ला दूंगा इतने मे विन दोनों के आगे ह(-) ० नुमान

१. संदेह। २. प्रतिज्ञा कीजिए। ३. दण्डवत्। ४. या।

जी आग लहराकर ले आये तव अ(-) ० ग्नि साक्षी कर हाथ पसार सुग्रीव ओ रामचन्द्र ० उठ कर मिले ओ भरशक्य परस्पर सहायता के ० लिये आपस मे बचावंध किया[1] इस अनन्तर ० राम के निकट सुग्रीव जा वैठे ओ नम्र होकर ० अपना वृत्तान्त लगे विन्हे सुनावने इस प्रका(-) ० र से कि हे सखा अव मेरा समाचार तुम सुनो ० कि जो वाली ने आगे किया था सो यह है कि म(-) ० यासुर का वेटा मायावी नाम एक महा अहं(-) ० कारी दानव था वह पराक्रम के मद से मात ० कर एक दिन किष्किधा नाम नगरी के समी(-) ० प गया ओ सिंह सा गर्ज गर्ज वाली को वाहरे ० ही से लगा ललकारने कि जों तू वीर है तो आ ० मुझसे अव लड(।) तव वाली से सहा नही गया ० तो मारे क्रोध के लाल लाल आषें कर तुर(-) ० न्त विसके पास जा पहुचा ओ जाते ही एक ० ऐसा दृढ मुक्का उसे जडा कि विस मार से व्या(-)कुल होकर अपनी कन्दरा की ओर वह भागा ० तद वाली ने विसे रगेदा और मै भी उसके साथ ० दौडा(।) जव हम दोनों भाई समीप जा पहुचे तव कंद ० रा मे वह घुस गया तव रिसियाकर वाली ने मु(-) ० जसे कहा तुम तो वाहर खडे रहो मै भीतर ० जा अभी इसे मार डालता हूं यों कह विस गुहा ० के भीतर आप भी पैठ गया सो हे महाराज ए(-) ० क मांस हो गया तव तलक भी वह नही निक(-) ० ला ओ मांस के वीते पर विस कन्दरा मे से वहु(-) ० त लोहू लगा निकलने विसे देषकर मैंने जा (-).० ना कि हो न हो वाली अव मारा गया निदान ० वहुत अछता पछता उस कन्दरा की द्वार पर(-) ० एक शिला रषकर मै अपने घर मे आया ० तव कन्दरा मे राक्षस ने वाली को निश्चय मा(-) ० रा यह सुनकर विसके मंत्री लोग वहुत दुखि भ(-) ० यें ओ यद्यपि मै नही चाहता था तथापि वि(-) ० न्होने मुजी को राज्य का तिलक दिया तो कुछ ० दिन तक मैंने राज्य किया(।) इस अनन्तर देषता ० क्या हूं कि वाली आन पहुचा और आते ही म(-) ० हा क्रुद्ध होकर वहुत मुझको धमकाया ओ ० कठिन कठिन गालियां दीं और यहां तक कि ० एक घुसा मुजे मारा तद मारे डर के विस नगर से० मै निकला ओ भागा भागा सव लोक मै फिर० आया पर अपना वंचाव कहूं नही देषा तव ० ऋष्यमूक पर ऋषि के श्राप के भय से वाली ० नहीं आ शकत्ता ह[2] यह जान जानकर इस पहार प(-) ० र मै आ रहा तद से वह महा अधम वाली मेरी स्त्री ० से आप भोग करता है वुस लाज से मै निपट ० व्याकुल था ओ स्त्री समेत घर द्वार सव मुझ ० से छूटे इस चिन्ता से अति आतुर(।) पर अव ० तुम्हारे चरण कमल के यहां आने से मेरे स(-) ० व कष्ट गये और मै वहुत सुखी हूआ इस भां(-) ० ति मित्र का वृत्तान्त सुनकर श्रीरामचन्द्र नि ० पट पीडित भये ओ यह वचन कहने लगे(—) मित्र ० तुम किसी बात का सन्देह मत करो तुम्हारी ० भार्य्या को जिसने हर लिया है विस वैरी को मै ० शीघ्र मारूंगा(।)इस प्रकार जव राम ने प्रतिज्ञा ० की तव सुग्रीव वोले महाराज जो कहते हो ० सो करोगे पर वाली वडा वलवान है किस प्र(-) ० कार विसे मारोगे वह तो देवताओं से भी नही ० मारा जावेगा(।) वुसका पराक्रम सुनो मै तुम ० से कहता हूं कि एक समय महा भयावन व(-) ० डा सा भैंसा वर कर[3] दुंदुभी नाम महावली ० दानव किष्किधा मे रात को आया ओ युद्ध के

१. प्रतिज्ञा की। २. है। ३. बनकर ?।

लिये वाली को पुकारा सो सुन कर विस्से ० सहा नही गया तो निपट रिसिया कर तुरंत ० वहां चला आया ओ आते ही दोनों सिंह ० पकड कर भैंसे को पृथ्वी पर दे पटका ओ ए(-) ० क पांव से विसकी देह दवा दोनों हाथों से विस ० की मुंडी को मरोर कर ऐसा खेंचा कि तन से ० वह अलग हो गया तद हाथ से तौलकर वि (-) ० से ऐसा फेंका कि वहां से चार कोश पर मतंग मु(-) ० नि का आश्रम था विसके समीप वह माथ ० जा गिरा ओ वुस ऋषि के सगरे स्थान मे रक्त ० के छीटे पर गये सो देष क्रोध से मूर्छित हो म(-) ० तंग मुनि ने वाली को जा कहा अव से जो तू मे(-) ० रे पर्वत पर कभी आवेगा तो इसी भांति तेरा भी ० शिर कट जावेगा ओ तू मर जायेगा इस प्रकार ० जव ऋषि ने श्राप दिया तव से ऋष्यमूक पर वा(-) ० ली नही आ शकत्ता(।) यह जान निर्भय होकर ० यहां मै रहता हूं आप दुंदुभी का शिर जो पर्वत ० समान है चलकर देषिए जों तो उठाके विसे फें(-) ० क शको तो मै जाना कि वाली को अवश्य तु(-) ० म मारोगे(।) यों कह सुग्रीव ने राम का हाथ पक(-) ० ड लिया ओ पहार के पास जहां वह माथ पडा हू(-) ० आ था तहां वुन्हे ले जाकर विस शिर को देषा दि(-) ० या तव देष कर श्री रामचन्द्र मुस्कुराने ओ पांव ० के अंगुठे से उठाकर विसे ऐसा फेंका कि दश यो(-) ० जन पर वह जा गिरा सो देष के लोग सव चक्रत ० ये[१] ओ मंत्रीन समेत सुग्रीव ने वहुत धन्य धन्य ० किया ओ भक्तन के हितकारी रामचन्द्र से पुन ० यह वचन कहा हे महावीर ये तार के सातो पेड ० जो साम्हने दृष्ट आते हैं वडे सारिल[२] है ऐक ऐक कर ० हिला के सहज मे विन पत्ते के इनको वाली करता ० है[३] जों एक ही वाण से इन सातों को आप छेद डा ० लिये तो मुजे और भी वडा विश्वास होए कि हां ० वाली का विनाश निश्चय तुम कर शकत्ते हो(।) इत(-) ० ने वचन के सुनते ही रामचन्द्र ने तुरन्त धनुष ० उठा लिया ओ विस पर रष कर ऐसा एक वाण मा(-) ० रा कि विन सातों पेडन को काट फिर वह वाण आ(-) ० कर राम की तूणी[४] मे पैठ गया तव सुग्रीव वहुत च ० कित भये ओ निपट हर्षा कर यह वचन कहने ल(-) ० गे(—)महाराज तुम देवता हौ ओ जगत के नाथ प(-) ० रमात्मा हो इसमे कुछ सन्देह नही मैंने विस ज(-) ० न्म मे शायद वहुत पुण्य किये जो आपसे संग (-)हू ० आ संसार के आवागमन से छूटने के लिये महा(-) ० त्मा लोग तुम्ही को भजते हैं तुम गति मुक्ति के दा(-) ० यक हो तुम्हे पाकर इस लोक का सुख मै क्यूं मा(-) ० गूं स्त्री पुत्र धन राज्य ये जितने हैं सो सव तुम्हा(-) ० री माया के रचे हूए हैं ओ कभी अपने नही हैं इ(-) ० स्से हे देवन हू के देव मै इन्हे कभूं नही चाहता मुझ ० पर प्रसन्न हूजिऐ(।) आप आनन्द कन्द ओ अनु(-) ० भव ज्ञान के मुरति हो वडा भाग है जो निर्धन मनु ० ष्य को धन की राशि समान मुजे मिले हो(।) अव मै(-) ० ने जाना कि विषयों मे वासनारूप जो मेरा वन्ध(-) ० न था विसे आपने काट डाला कितने ही यज्ञ दा(-) ० न तपस्या कोई करे ओ तलाव इन्दरा आदि ख(-) ० नावे पै संसार का आवागमन विनसे भी नही छी(-) ० जता और भी अधिक वढ़ता ही जाता है(।)

१. भये। २. जब वृक्ष पुराने पड़ जाते हैं, तब और मजबूत हो जाते हैं, ऐसे वृक्ष को बिहारी बोलियों में 'सारिल' कहते हैं, जिसका विपरीतार्थक होता है—'असरा'। ३. इन्हें बिना पत्ते का करता है, अर्थात् हिला कर पत्ते गिरा देता है। ४. तूणीर, तरकस।

तुम्हा(-) ० रे चरण के दर्शन से निसन्देह उसका नाश होता ० है(।) हे राम जी आधा क्षण भी जिसका चित्त तुम ० मे लवलीन रहता है विसकी अज्ञानता का जड ० ततक्षण तुम काटते हो इस कारण मै यही चाह ० ता हूं कि मेरा मन सदा तुमे' लगा रहे क्यूंकि जो ० नर मधुर स्वर से एक क्षण भी राम राम कर गाता ० सो कैसा ही पापी होवे यहां तक कि ब्राह्मण व(-) ० ध किया होए कै सुरापी होए तो भी सव पाप से छू(-) ० टता है तिस्से हे रामचन्द्र न तो मै जय चाहता न ० स्त्री पुत्र राज्य संसार के वन्धन से छोडावनहा (-) ० री तुममे मुजे भक्ति होवे यही सदा चाहता हूं(।) ० आपकी मायावश होकर संसार मे फंस रहा ० हूं पर हे कृपानिधान मै तुम्हारा हूं अव उचित है ० कि अपने चरण की भक्ति दे संसार के संकट ० से मुझको वंचा लीजे तुम्हारी माया से जद मै अं(-) ० धा था तद हितू वैरी उदासी आदि अनेक प्र(-) ० कार के लोग मुझे दृष्ट आते थे और अव तुम्हा(-) ० रे चरण कमल के दर्शन से सव ब्रह्म ही मुझको ० भासित होता है हितू वैरी कोई अव मेरा नही है(।) ० तिसका कारण यह है जव तलक माया मे प्राणी ० वंधा हूआ रहता है तव तक चर अचर नाना ० स्वरूप तुम विसको देष पडते हो ओ जव ० तक तुम नाना प्रकार हौ तव तलक अज्ञानता ० है और तभी तक उस प्राणी को मृत्यु का भय है ० फिर जव माया नष्ट हो जाती है तव वुसे उत्त(-) ० म ज्ञान होता है ओ तुममे नहे अधिक(।) हां' तक ० कहूं स्त्री पुत्र आदि रूप जो वंधन है विसका ज(-) ० ड माया ही है दयाकर उसे आप काटिए वह तु(-) ० म्हारी दासी है ओ ऐसा अनुग्रह कीजे कि आ(-) ० प के चरण कमल मे मगन हो कर मै सदा तुम्हा(-) ० रा निर्मल यश गाया करूँ ओ मेरे हाथ तुम्हारी ० सेवा पूजा मे नित्यतत्पर रहें ओ तुम्हारे भक्तों ० ओ मन्दिरों को मेरी आंषें देषें ओर गुरु का द(-) ० र्शन नित्य करें ओ तुम्हारे विन चरणों को मेरा ० सिर सदा प्रणाम करे कि जिन्हे शिव ब्रह्मादि(-) ० क सदा वंदते हैं ० इति श्री रामचरित्रे किष्कि(-) ० धाकाण्डे प्रथमोध्याय:(।) १(।) इस भांति जव देषा ० कि सुग्रीव को निज अंक मे लगाने से अव दि(-) ० व्य ज्ञान भया तव अपने काज के लिये श्री राम(-) ० चन्द्र ने मोह करावनहारी माया को उन्ह पर फ(-) ० यला दिया ओ मुस्कुरा कर कहा(—)ऐ सखा जो ० तुम कहते हो सो सव सच है पर लोग मुजे यह ० कहेंगे कि देषो अग्नि साक्षी रष मित्रता कर रा(-) ० म ने सुग्रीव का क्या भला किया(।) इस भांति संसा(-) र मे निसंदेह मेरी हंसी होगी तिस्से गति मुक्ति ० की वात तुम अभी रहने दो ओ यहां से जाकर ० युद्ध के लिये वाली को पुकारो जद आकर तुमसे ० वह लडने लगेगा तव यह जान लो कि एक ही वा(-) ० ण सें विसे मार कर मै तुमको राजा करूंगा(।) इतनी ० वात के सुनते ही राम साथ हो तुरन्त सुग्रीव वहां से चले ओ ० किष्किधा के निकट जा वडे गर्ज कर वाली को ० पुकारने लगे कि आ मुज से युद्ध कर(।) तव भाई की वो(-) ० ली सुन वह महाक्रुद्ध हूआ ओ झट घर से निक(-) ० ल कर जहां सुग्रीव खडे थे वहां जों आन पहु(-) ० चा तों ही दौड कर विसकी छाती मे विन्हने एक ० घुसा लगाया तद कोप से महामूर्छित हो वाली ० ने भी विन्हे दोनों हाथों से दो मुक्के मारे इस भां(-) ० ति निपट क्रुद्ध हो आपस मे ऐसे वे दोनों लडने ०

---

१. तुममें। १. कहाँ।

लगी कि एक रूप हो गये कोई पहचाना न गया(।) ० तव अलग से देष कर श्रीरामचन्द्र वहुत विस्मि(-) ० त हुऐ ओ वाण नही छोडा इसलिये कि कहूं सुग्रीव को न शर लगे निदान लोहू उगलते हू (-) ० ए डर कर सुग्रीव तो वहां से भागे ओ वाली भी ० अपने घर को आया(।) तव इकठे हो कर सुग्रीव ० लगे राम से कहने(—)ऐ महाराज भला सुनिए तो ० भाई रूप जो शत्रु है विसके हाथों से क्यूं मेरा प्रा(-) ० ण लीजिए है जों मारने ही की इछा है तो आपे ० क्यूं न मुजे मारिए(।) ऐसें विश्वास दे ओ महा स(-) ० त्यवादी कहा कर किसलिये मुझ को त्यागते ० हो मै तो आपका शरणागत हूं(।) यह सुन श्री रा(-) ० मचन्द्र की आषें भर आयीं तो सुग्रीव को गरे ० लगा कर यह वचन कहने लगे (—) मित्र डरो मत तु(-) ० म दोनो का एक सरूप लष मैने वाण नही छोडा इसलिये कि तुम न वधे जाओ पर अव भ्र (-) ० म मिटने के लिये तुम्हारी देह मे एक चिन्ह मै क(-) ० र देता हूं तुम फिर जा वाली से लडो अव की वे(-) ० र रण मे मारा ही हूआ विसको देष लोगे मै तु(-) ० म्हारा शपथ खाता हूं कि अव जों उसे विन मा(-) ० रे मै छोडूं तो आज से फिर न कभी राम कहा(-) ० ऊं(।) इस प्रकार सुग्रीव को वहुत वुझा समझा सु(-) ० चित कर श्री रघुनाथ ने लक्ष्मण से कहा कि फू(-) ल की माला पहना कर वाली के पास इन्हे भेज ० दो(।) इतनी वात के सुनते ही लक्ष्मण जी ने तुर(-) ० न्त उठ कर विन के गरे मे एक माला डाल दी ० ओ कहा कि मित्र यह वहुत सुन्दर मुहूर्त्त है तु(-) ० म इसी समय प्रस्थान करो(।) इस भांति राम ल(-) ० क्ष्मण की आज्ञा पाय फिर सुग्रीव किष्किधा ० के निकट गये ओ महाशब्द कर वाली को पु(-) ० कारा सो सुन कर वह निपट विस्मित भया ओ म(-) ० हा क्रोधवश हो दो कछा मार ओंही उठ खडा ० हूआ(।) तव तारा ने विसको हाथ पकड कर रोका ० ओ कहा हे नाथ मै पांव पडती हूं अव तुम विस्से ० मत जा लडो मेरे जी मे शंका होती है क्यूंकि तुम्हा(-) ० रे हाथ से अधमूआ होकर अभी वह भाग ग (-) ० या था फिर जों तुरन्त आया है तो निश्चिय वि(-) ० से कोई वडा वलवान सहाय मिला है (।) वाली वो (-) ० ला झुठमुठ तुम डरती हो चलो जाओ मेरा हा(-) ० थ छोड दो शत्रु को मार के मैं अभी चला आता ० हूं(।) को ऐसा है जो विसका सहाय होएगा ओ स(-) ० हाय ही होगा तद भी विसका प्राण लेकर के एक ० क्षण मे मै आन पहुचता हूं तुम किसी वात का ० सन्देह जन करो शूर कहा के क्यूं कर मै घर मे रहूं ० (—)तिस पर शत्रु पुकारता है यह सुन कर (।) तिस्से तु(-) ० म कुछ संदेह मत करो वैरी को मार कर मै अभी ० चला आता हूं(।) इस भांति जव स्वामी ने कहा त(-) ० व तारा फिर लगी उसे समझावने (—) महाराज ए(-) ० क वात और भी मुज से सुन लीजे फिर जैसा ० जी चाहै वैसा कीजै सो यह है कि एक दिन अंग(-) ० द नाम मेरा पुत्र अहेर खेलने को कहीं गया ० था सो वहां से सुन कर विसने मुझसे कहा कि ० दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो अयोध्या के राजा हैं ० लक्ष्मण नाम अपने भाई को संग लिये ओं सी(-) ० ता नाम निज स्त्री के साथ हो पहले दण्डकार(-) ० ण्य मे आ उतरे तहां सीता का हरण हूआ तव ० भाई समेत उसे षोजते षोजते ऋष्यमूक पहार ० पर आय सुग्रीव से वे मिले वहां अग्नि साक्षी क(-) ० र वु न दोनों भाई से सुग्रीव ने मित्रता की तद वि(-) ० न्होने यह प्रतिज्ञा करी है कि रण मे वाली को मा(-) ० र कर तुमको हम राजा करेंगे सो हे महाराज तु(-) ०

म निश्चय जान लो कि सुग्रीव के साथ वे ही दो(-) ० नो सहाय आये हैं नही तो जो अभी तुम से हा(-) ० र गया है सो फिर क्यूं लडने को आता तिस्से अ(-) ० व यही सम्मत हैं कि सव वैर तज किसी प्रकार ० से सुग्रीव को जा मना लाओ अरु यौवराज का ० उसे तिलक दे शीघ्र रामचंद्र की शरण मे तुम जा ० पहुचो(।) इसमे अंगद सहित मुझे ओ कुल परि ० वार समेत अपने राज्य को तुम वंचा लेते हो औ(-) ० र यह भी मुझ से सुन लो कि ऋष्यमूक के निक (-) ० ट दुंदुभी का जो वडा सा शिर रष्षा था विसे एक ० ही अंगुठा पर उठा कर दश योजन पर रामचन्द्र ने फेंका है ओ एक ही वाण से सातो तार को का(-) ० ट गिराया तिस्से इसी मे कल्याण है कि विन से तु(-) ० म जा मिलो(।) ऐसे वुझा समझा निदान पति ० के पांवो पर तारा गिर पडी ओ हाथों से विसके ० चरणों को पड[1] कर मारे डर के लगी रोने तव वाली ० ने उठाकर उसे गरे लगा लिया ओ प्यार कर क(-) ० हा कि स्त्री स्वभावश[2] हो करके वृथा तुम डर(-) ० तीहो मुझे कुछ भय नही है(।) जो लक्ष्मण समेत ० रामचन्द्र आये होंगें तव तो निसन्देह उन से ० मुजे प्रीति ही होगी क्यूंकि मैने सुना है कि धरती ० के भार उतारने के लिये रामरूप होवे साक्षात ० नारायण अवतरे हैं उन्हे अपना पराया को(-) ० ई नही है तिस्से पांव पकड कर मै अपने घर ० विन्हे लाऊंगा वे करुना निधान हैं जो जैसा वुन्हे भ(-) ० जता है विसे वैसा ही वे चाहते हैं इस-लिये कि भक्ति ० वश हैं ओ परमेश्वर हैं विनके लेखें सव समान ० है और जों एकेला आप सुग्रीव ही आया होवे(-) ० गा तो एक क्षण भर मे उसको मै मार डालता हूं तु (-) ० म वहुत हठ मत करो मैं कधी न विसे मनाऊंगा ० ओ न यौवराज्य का तिलक दूंगा क्यूंकि सव लो(-) ० गो ने जिसे एक वीर ठहराया है सो वाली उस श(-) ० त्रु से जो लडने को बुलाता है निपट दीन ताई ० की वातें भला क्यूं कर इस समय कहे(।) इसमे लो ० ग क्या कहेंगे तुम ही इसे शोचो(।) तिस्से हे सुन्द(-) ० रि शोक तज सुचित हो तुम अपने घर मे जा ० वैठो मेरे लिये कुछ सन्दे[3] जिन करो(।) इस भांति ० तारा को वुझा समझा कर आप सुग्रीव से लडने ० को गया तव फूलकी माला गर मे डाले हूऐ म ० हा पराक्रमी सुग्रीव ने वाली को देषते ही दौ(-) ० ड कर दोनों हाथों से पहले दो घुसे जडे ओ ० विसने भी वैसें ही विन्हे मारा इस प्रकार आप(-) ० स मे वे महायुद्ध लगे करने तिस मय[4] रह रह ० कर राम की ओर सुग्रीव निहारें तव एक वृ (-) ० क्ष के ओट मे जा अदेष हो महाप्रतापी श्री रा(-) ० मचन्द्र ने तूणी मे से निकाल कर वज्र समान ० वह वाण धनुष पर चढ़ाया जो इन्द्र का दिया ० हूआ था ओ कान तक विसे षैंच तका के ऐं(-) ० सा वाली को मारा कि विसकी छाती मे शर ० गड गया ओ चिल्लाता हूआ उछल कर ऐ(-) ० सा वह गिरा जो धरती लगी कांपने तद क्षण ० एक तो अचेत रहा फिर कुछ एक सचेत हो आं(-) ० ष षोल कर देषे तो धनुष वाण लिये जटा मु(-) ० कुट धारण किये चीर वसन पहने गले मे अ(-) ० द्भुत वन माला डाले सुग्रीव लक्ष्मण को संग ० लिये श्याम सुन्दर श्री रामचन्द्र जी आगे आ ० षडे हैं तव नीचे से ऊपर तक निहार कर धीरें ० धीरें वाली लगा विन्हे धिरकारने इस प्रकार ० से कि ऐ रामचन्द्र भला सुनो तो मैने क्या अप(-)० राध किया जो तुमने मुझे मारा(?)

१. पकड़। २. स्वभाववश। ३. संदेह। ४. समय।

क्या राजधर्म ० कुछ भी नहीं जानते जो ऐसा निन्दित कर्म ० किया इसमे क्या तुम्हारा नाम होगा जो पेड ० के ओट मे जा चोर वटमार की भांति छिपकर ० मुझ पर वाण चलाया मैं तव जानता कि सच ० तुम वडे वीर हो ओ क्षत्रियों के जात भाई हो ० ओ मनु के कुल मे उत्पन्न हो जों साम्हने ० हो कर मुज से तुम लडते तव विसका फल पा(-) ० ते(।) सुग्रीव ने क्या तुम्हारा उपकार किया ओ ० मैंने नही जो मेरे वैरी हूऐ मैं सुनता हूं कि व(-) ० न मे से सीता को रावण हर ले गया है तिस ० कारण सुग्रीव की शरण मे तुम आये हो(।) क्या ० मेरा पराक्रम नही जानते जो सगरे लोक मे ० विख्यात हो रहा है(?) मैं चाहूं तो कुल परिवार स(-) ० मेत रावण को ओ सीता सहित लंका को उ(-) ० खाड के एक क्षण मे तुम्हारे आगे ला रष दूं(।) ० तुम किस लिये मुजसे विगडे(?) इस लोक मे तो ० वडे धर्मात्मा तुम कहाते हो पर व्याधा की भांति(-)० छिप कर वानर को मारने से कहो क्या पु(-) ० ण्य तुम्हे होगा(?) यह भी नहीं कि खाओगे सो ० तो वांनर का मांस अभक्ष्य है मुझे मार कर ० क्या करोगे(?) इस प्रकार जव वाली ने वहुत कहा(,) ० श्रीरामचन्द्र वोले(—) सच है पर धर्म का मैं रक्षक ० हूं इस कारण धनुष-वाण लिये फिरता हूं ० ओ जहां कही अधर्मी प्राणी को पाता हूं उ(-) ० से ओं ही मार कर अपने धर्म को पालता हूं(।) ० मेरे जानने मे वेटी वहन पतोहू ओ भाई की ० भार्या ये चारो समान है जो मूढ इन को कुदृ० ष्टि से देखता है वह महापापी है विसे राजा लो(-) ० ग विन मारे कभी नही छोडते यह प्रसिद्ध है ति(-) ० स पर भी तुम अपने छोटे भाई की स्त्री को व(-) ० ल से भोगते हो इस हेतु धर्म समझ कर मैंने ० तुम्हे मारा है तुम वानर हो इस्से सच है कि तुम ० कुछ नही जानते पर महात्मा लोग जो संसा(-) ० र को पवित्र करते हैं वहुत विचारते हैं विनकी ० निन्दा कधी न कीजे(।) इतनी वात के सुनते ही ० वाली निपट डर गया ओ रामचन्द्र ओ ईश्व(-) र जान प्रणाम कर यह वचन कहने लगा(—)दी(-) ० न दयाल मैं जानता हूं कि तुम परमे-श्वर ० पर भुल चू[1] कर मैंने तुमको कटुवचन क(-) ० हा है सो मेरा अपराध क्षमा कीजे धन भा(-) ० ग है जो आपके वाण से घाहल होकर औ ० विशेष आपके आगे मै अपना प्राण तज ० ता हूं(।)तुम आदि पुरुष हो ओ सीता जी ल(-) ० क्ष्मी है व्रह्मा की प्रार्थना से रावण को मारने ० के लिये रामरूप हो अवतरे हो अव आज्ञा ० करो मैं तुम्हारे उत्तम पद को जाऊं(।)यों कह फि(-)० र वोला कि हे कृपा निधान मेरे तुल्य पराक्र(-) ० मी अंगद है उस पर दया रषियो ओ अरु ० अपने शीतल कर से तनिक मेरा हृदय छू दी(-) ० जे तव रामचन्द्र ने कहा वहुत अछा ओ विस ० की छाती मे से वाण षैंच लिया ओ जों वुस ० पर हाथ फेरा तों ही वांनर की देह तज देवता ० का शरीर धारण कर वैकुण्ठधाम को वह ग(-) ० या (।)०इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा कांडे ० द्वितीयोध्याय:(।) २(।) महादेव कहते है(—)हे पार(-) ० वती जव रण मे वाली मारा गया विसके सा(-) ० थ के वांनर सभ डर करके किष्किन्धा को ० भाग गये ओ वहां तारा से कहा कि संग्राम मे ० वाली मारे गये तुम मंत्रियों से एकमत हो के शी(-)० घ्र अंगद को राजा करो हम सब चारो द्वारों मे क(-) ० वाड लगा के नगर की चौकी[2] जा करते हैं(।)वानरों

१. चूक। २. रक्षा, निगरानी।

का राजा अंगद को तुम तुरन्त करो(।) इस प्रकार ० जद उन्होंने कहा तव वाली का मरण सुन कर ० शोक से तारा मूर्छित हूई ओ छाती पीट पीट व(-) ० हुत लगी रोने ओ कहने कि अव मुझे अंगद ० ओ राज्य से क्या काम ओ नगर धन से क्या प्रयो(-) ० जन मैं अभी जा स्वामी के साथ अपना भी प्रा(-) ० ण तजती हूं(।) यों कह शिर के वार छितरायें रोती ० हूई तुरन्त तारा वहां जा पहुची कि जहां लोहू ० लोहान होकर ओ धूर मे लोट कर मूआ हूआ ० वाली पडा था तव देषकर उसके पावों पर गिर प(-) ० डी ओ नाथ नाथ कर लगी वहुत रोने और पी(-) ० टने (।) इतने मे श्री रघुनाथ पर विसकी दृष्टि पड ० गयी तो महा विलाप कर यह वचन लगी विन ० से कहने कि हे राम जिस वाण से वाली को तुम ० ने मारा है उससे मुझे भी मार डालो जो मैं भी प्री(-) ० तम के साथ जा रहूं ये अपने संग मुजको ले जा(-) ० या चाहते है मेरे विन स्वर्ग मे भी इनको सुख नही ० होवेगा(।)स्त्री का वियोग तुम नीके जानते हो इ(-) ० स्से मुजे मार कर तुम वाली के पास भेज दो(।) तुम्हे स्त्री(-) ० दान किये का फल होगा ओ इस धर्म से तुम्हा(-) ० री भी भार्या मिलेगी(।) ऐसे वहुत रो कलप पुनि सु(-) ० ग्रीव से कहने लगी कि वाली को मारनहारे राम (-) ० चन्द्र ने सहज मे तुम्हे राज्य दिला दिया अव मे(-) ० रे साथ हो इस निकंटक राज्य को भोगो तुम्हारा ० मनोरथ पूरण हूआ(।) इस भांति वहुत रो रोकर० जव तारा लगी कहने तव दयावन्त हो ज्ञान की ० अनेक वातन से श्री रामचन्द्र लगे विसे सम(-) ० झावने कि सुनो जिसका कभूं न मोह कीजे उ(-) ० स पति के लिये क्यूं व्यर्थ शोक करती हो क्या प(-) ० डी हूई यह देह तुम्हारा पति है कै[1] इसमे जीव ० था वह यह नीके मुजे समझाओ हां जों कहो कि ० कलेवर मेरा पति है तो यह अज्ञानता है क्यूंकि ० चाम मांस लोहू हाड इनसे भरी हूई पांच भौ(-) ० तिक देह जो जड सरूप है कर्मवश होकर सुख ० दुख भोगने के लिये वार वार उत्पन्न हूई क(-) ० रती है फिर नष्ट हो जाती है सो तो अव भी तु(-) ० म्हारे आगे पडी है विसमे एत्ता नेह क्या करना ० ओ जों जीव को अपना स्वामी मानती हो तो ० वह तो अविनाशी है न तो वुह जनमता न म(-) ० रता न कही चलता न वैठता ओ न वह स्त्री पु(-) ० रूष नपुंसक है वह तो एक है ओ सव ठांव व्या(-) ० प रहा है आकाश सा निर्लेप है ओ शुद्ध ज्ञान ० सरूप अरु सनातन है विसका शोक क्या(।) ० तारा वोली कि जों देह काठ सा जड है ओ जीव ० चेतन सरूप तो भला कहो सुख दुख का भोग(-) ० ने वाला कौन है(।) रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि देह ० ओ इन्द्रियो के संग से आत्मा अपने तंई भू(-) ० ल जाता है ओ अहंभाव उसे होता है कि जि(-) ० ससे शरीरादिक को निज कर मान लेता है तव ० तलक संसार के जो सव प्रकार मिथ्या है सुख दु(-) ० ख उसी को होता है ओ आप से नही छूटता(।) ० जैसा विषय मे जिनका चित्त है उन्हें स्वप्ने मे रा(-) ० ज्यादिक लाभ तभी तक है जव तक वे सो(-) ० ऐ हूऐ हैं तिस्से यह जान लो कि देह ओ इन्द्रि(-) ० न के साथ रहते-रहते आत्मा निज रूप भूल जा(-) ० ता है ओ अहं-भाव उसे होता है वुस अहंभाव ० से उपजा हूआ यह संसार जो राग द्वेष से भर र(-) ० हा है निपट झूठ है ओ सच पूछो तो विसकी उ(-) ० त्पत्ति का कारण मन है कि जिसका सरूप हो

१. या।

सु(-) ० ख दुख का भागी आत्मा होता है ओ उसके व(-) ० न्धन से आप वद्ध होता है जैसा स्फटिक आ(-) ० प निर्मल है पर नील पीत आदि रंग के झलक ० पडने से वह भी वैसा ही दृष्ट आता है(।) इसी प्रका(-) ० र देह इन्द्रियों के संग से आत्मा को वल से सुख ० दुख भोग होता है(।) जव किसी पुण्य के प्रभाव से मे(-) ० रे भक्तन से संग होवे तव प्राणी को मुज मे प्रीति ० होए ओ मेरी कथा सुनने मे अति दुर्लभ श्रद्धा ० तव देह इन्द्रिय मन प्राण इन सवसे अलग आ(-) ० नन्द सरूप आत्मा को जो एक है सहज मे जान ० कर तुरन्त प्राणी मुक्त होवे(।) यह सच मैंने तुमसे ० कहा है जो इसे जी लगा कर शोचता है विसे सं(-) ० सार का दुख कभी न होगा तुम भी मेरी वात को ० जों मन देकर विचारो तो कभूं न क्लेश पाओगी ० और कर्म के वन्धने से छूटोगी विस जन्म मे तु(-) ० मने मेरी वडी भक्ति करी इससे तुम्हें मुक्त कर ० ने के लिये मैंने अपना सरूप देषाया अव से ० दिन रात मेरे सरूप का ध्यान करती रहोगी ओ ० जो मैंने कहा विसे विचारती रहोगी तो संसार ० के कर्म बन्धन मे फिर न कभी फंसोगी(।) इस भांति ० श्री रामचन्द्र की वातें सुन तारा वहुत चकृत ० भयी ओ देह के अभिमान से उत्पन्न हूए शो(-) ० क को त्याग रामचन्द्र को प्रणाम कर ओ क्षण ० भर के विनके[1] संग से निष्पाप हो संसार का दुख तज जी(-) ० वन मुक्त हूई ओ श्रीरघुनाथ की वातें सुन स(-) ० व अज्ञान तज सुग्रीव भी वहुत सुचित भये (।) ० इस अनन्तर रामचन्द्र ने विन से कहा कि अ(-) ० व देषते क्या हो वड़े भाई का जैसा कुछ पार लौ(-) ० किक काज करना उचित है सो सव अंगद से ० ज़ा कराओ(।) इस भांति जव राम ने कहा तव श्रे(-) ० ष्ठ वानरों से वाली को उठवा कर पुष्प(-) ० क समान वाहन पर राजों की रीति से तुरन्त ० सुग्रीव ने रष लिया ओ नगर के प्रधान जित(-) ० ने वांनर थे तिन समेत तारा ओ अंगद को सा(-) ० थ ले मंत्रीन सहित ब्राह्मणों के संग हो भेरी द(-) ० मामे आदि वाजे आगे कर विसे वहां से ले जा ० शास्त्र के विधि से फूंक दिया ओ स्नान कर मं(-) ० त्रीन समेत फिर निकट आ रामचन्द्र को चर(-) ० ण छूकर प्रणाम किया ओ हर्षित हो कर यह ० वचन कहा कि महाराज अव उचित है कि वांन(-) ० रों का राज्य जो लक्ष्मी से भर रहा है आप अंगी(-) ० कार कीजे ओ मैं आपका दास हूं इस्से लक्ष्म(-) ० ण की भांति तुम्हारे चरण की सेवा टहल करूं(।) ० श्री रामचन्द्र मुस्कुरा कर वोले कि मित्र हम तु(-) ० म एक ही हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं तिस्से तु (-) ० म शीघ्र किष्किन्धा में जा राज्य पर बैठो चौदह वर्ष तक किसी नगर गाँव मे मै जाने का नहीं मेरा भाई लक्ष्मण तुम्हारे ह्यां जागा[2] अंगद ० को यौवराज्य का तिलक तुम दीजो ओ आद ० र साथ विसे रषिओ तुम्हारे निकट ही पहार ० पर भाई समेत वरस दिन मै रहूंगा तव तक सु(-) ० चित हो कुछ दिन पुर मे रह के सीता का षोज ० तुम करिओ(।) इस प्रकार जब रामचन्द्र ने आ ० ज्ञा की तव सुग्रीव ने उन्हे दण्डवत किया ओ ० कहा कि अछा महाराज जो आप आज्ञा क(-) ० रते हैं सोई मै करूंगा(।) यों कह लक्ष्मण समेत ० विदा हो सुग्रीव किष्किन्धा मे आये तो जित(-) ० ना कुछ रामचन्द्र ने कह दिया था सो सव कर ० धर लक्ष्मण को विधि से पूज लगे राज्य काज ० करने तव लक्ष्मण

१. उनके क्षणभर के, अर्थात् क्षणिक, संयोग से। २. आयेगा।

जी विससे विदा हो तुरंत ० राम के पास आये तद दोनो भाई वहां से उठे ओ ० प्रवर्षणनाम गिगिवर[1] पर गये तो वहां जिसके ० आसपास मे वहुत से कन्द मूल थे और वात ० वर्षा धूप इन्होका जहां ओट था ऐसी स्फटि[2] ० की अति सोहावनी एक कन्दरा देष कर वहु(-) ० त हर्षित हूए ओ विसमे जा सुख से रहने लगे० इति श्री ० रामचरित्रे किष्किन्धा काण्डे तृतीयो ध्याय: (।) ० जव लक्ष्मण समेत श्री रामचन्द्र विस पहाड ० पर आये ओ कन्द मूल आहार कर सुख से ० लगे रहने तव[3] जितने वहां ऋ(-) ० षि थे सो सव अति हृर्षा कर पछी मृग हो हो कर विन के चहुं(-) ० दिश आय आय दौडें ओ उन्हे देष दृष्टि पसा(-) ० र कर ऐसें खडे होए कि जैसें ध्यान लगायें ० मुनि सव होवें (।) इस प्रकार जद श्री रामचन्द्र व(-) ० हां वसे तद एक वेर पूजा अर्चा से सुचित हो ० कर एकान्त मे वैठे हूऐ विनसे लक्ष्मण जी ० नम्र हो कर कहने लगे (—) महाराज आपने जो ० आगे कहा था उस वचन से मेरे हृदय का सं(-) ० देह जो अज्ञानता से भया था सव नष्ट हू(-) ० आ पर व्राह्मण आदि चारों वर्ण को मोक्ष(-) ० दायक ओ स्त्री शूद्रों को भी तारने वाली ० जो आपकी पूजा है वुसे अव मै जाना चाह(-) ० ता हूं कि जिस भांति से योगी लोग करते हैं ० ओ नारद व्यास व्रह्मा ये सव उसी को भक्ति ० साधन कहते हैं (।) मै तुम्हारा भक्त हूं और भा (-) ० ई इससे कृपा कर मुजे वताइए इसमे लोगों ० का वहुत उपकार होता है (।) श्रीरामचन्द्र वो(-) ० ले कि मेरे पूजन के विधि तो इतने हैं कि उ(-) ० नका अन्त नहीं पर तो भी जैसा कुछ आ(-) ० गे से चला आता है सो मै तुमसे संक्षेप कर कहता ० हूं कि जो अछे कुलीन हैं ओ वैसे ही गुरू से ० मंत्र पाय मेरी भक्ति भाव मे लवलीन हैं वे ० जो विधि वतावे उससे चाहे हृदय ही मे मुझे ० पूजे चाहे प्रतिमा जल आग शालग्राम आ(-) ० दि इनमे इस प्रकार से कि पहले तो देह शुद्ध ० के लिये प्रात स्नान करे तव नित्य कर्म से सु(-) ० चित हो निज मनोरथ पूरण होने के लिये सं(-) ० कल्पकर भक्ति भाव से पहले अपने गुरु को ० पूजे ओ मेरे तुल्य जाने ओ विसके अभावें[4] ० ध्यान से वुसकी आराधना करे ओ प्रतिमा ० शिला को जो अर्चा चाहे तो आगे विसे स्ना(-) ० न करावे तद अक्षत चन्दन गंध धूप दीप नै(-) ० वेद्य पान सोपारी उस पर चढावे ओ विभव ० होवे तो नाना अलंकार वस्त्र पहनावे ओ ० अगर चन्दन कपूर आदि से पूजे ओ विधि ० से होम करे ओ कुन्दन सी मेरी मूरति का विस[5] ० कुण्ड मे ध्यान करे अरु मेरे लिये नृत्य गा(-) ० न करे ओ यह वचन कहे कि हे दीनानाथ इस ० संसार मे तुम मेरी रक्षा करो (।) इस प्रकार से ० जों मेरा भक्त दिन दिन मुजे पूजे तो संसा(-) ० र का सब भोग विलास कर अन्त समय मु(-) ० जी मे आय मिले इस परम पवित्र रहस्य को ० जो सनात[6] है ओ जिसे साक्षात आप राम ० ने कहा है जो नर सदा पढता ओ सुनता है ० विस को नित्य पूजा किये का फल सहज मे ० होता है (।) इस भांति लक्ष्मण जी से पूजा का वि(-) ० धि कहकर के निदान मनुष्य की भांति माया ० फैला हा सीता हा सीता कर श्री रामचन्द्र ल(-) ० गे विलाप करने ओ ऐसे व्याकुल भये कि वि(-) ० स रात विन को नींद न आयी (।) यहां तो यों ही ० रहा था औ वहां किष्किन्धा

१. गिरिवर। २. स्फटिक की। ३. मूल पुस्तक में कुछ लिखा था, जो फिर काट दिया गया है। ४. अभाव में। ५. उस। ६. सनातन।

मे किसी दिन ह() ० नुमान जी ने सुग्रीव को एकान्त मे ले जाकर ० कहा कि सुनो राजा जी (-) श्री रामचन्द्र ने तुम्हा () ० रा वडा उपकार किया पर मै जानता हूं कि कृ() ० तघ्न की भांति तुम उन्ह को भुल गये देषो ० जो वाली तीनो लोक मे एक वीर गिणा जाता ० था तिस को तुम्हारे लिये वुन्होने मारा ओ ० तुमको राज्य पर विठलाया ओ विनही के पुण्य ० प्रताप से तुमने तारा को पाया सो रामचन्द्र ० भाई समेत पहार पर वसे हैं ओ सीता को ढू() ० ढने के लिये तुम्हारी वाट निहारते हैं पर तु() ० म्हारा जो वांनर का स्वभाव है विस्से स्त्री वश ० होकर काहे को विनकी सुधि लोगे (।) प्रतिज्ञा ० भी करते हो पै सीता का कुछ षोज नही क (-) ० रते तुम निपट कृतघ्न हो (।) मैं जानता हूं कि ० वाली सा एक दिन तुमको भी श्रीरामचन्द्र ० निश्चय मार डालेंगे (।) इस प्रकार जव हनुमा () ० न ने कहा तव तो सुग्रीव वहुत डर गया ओ ० कहने लगा कि हनुमान तुमने सच कहा ० अभी मेरी आज्ञा से दश सहस्त्र वांनर जो ० वेग चलने वाले हैं दशो दिशा को तुम भे () ० जो जो सातो द्वीप के वांनरन को वे सव यहां ० वुला लावें ओ एक पक्ष मे आवें ओ जो ए () ० क पक्ष मे नही आवेगा सो जीव से मारा जा () ० वेगा (।) यों कह सुग्रीव तो अपने मन्दिर मे ग () ० य तव विन की आज्ञा पा हनुमान ने तुरंत ० सव वांनरों को कि जो पवन से भी अधिक ० शीघ्र चलने वाले थे ओ जिनका पराक्रम ० का वषान ही किया जाता दशो दिशा मे भे ० जा (।) इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा का (-) ० ण्डे चतुर्थो-ध्यायः (।) ४ (।) यह तो यहां का वृत्ता () ० न्त है और वहां सीता के वियोग से श्री रा () ० मचन्द्र निपट आकुल हूए तो भाई से कह () ० ने लगे कि देषो लक्ष्मण मेरी सीता को वल ० से राक्षस हर ले गया पर अव तलक भी मै ० निश्चय नही जान शकता हूं कि वह मर ग () ० यी कै जीवती है इस समय जों मुझे कोई ० कहे कि सीता अभी जीवती है तो विस का ० मैं वहुत गुण मानूं ओ जो मैं जानूं कि वह ० जीती है तो जहां कहीं वह होऐ तहां से ऐसा ० मैं विस को वल से हर लाऊं कि जैसा समुद्र ० मे से अमृत मैंने लाया था (।) यों वहुत कह फि (-) ० र वोले कि सुनो भाई लक्ष्मण मेरी प्रतिज्ञा ० कि जो दुष्ट मेरी भार्या को चोरा ले गया है वि (-) ० से कुल परिवार समेत मै भस्म कर डालूंगा हा ० सीता तुम मेरे विन राक्षस के घर मे रह के क्यूं ० कर जीती होगी तुज विन यह पापी चन्द्रमा ० भी मेरे लेखें सूर्य सा तपता है हा इस समय ० सुग्रीव भी निर्दयी हूआ जो इस दुख मे मुजे दे () ० षता भी नहीं अहो लक्ष्मण वह निपट कृतघ्न ० है क्यूंकि निकंटक राज्य पा कामवश हो स्त्री () ० न को संग लिये एकान्त मे जा भोग विला (-) ० स करता है और यह वर्ष वीता चला जाता ० है यह देष कर भी मेरी भार्या को षोजने के लिए (-) ० ये नही आता है (।) वह दुष्ट मेरा उपकार भुल ग () ० या अव वाली की भांति भाई वन्धु समेत वि (-) ० स दुष्ट को भी मार डालता हूं ओ उसका नग (-) ० र चल कर फूंक देता हूं (।) इस प्रकार जव श्री ० रामचन्द्र क्रुद्ध हूए तव लक्ष्मण जी ने विन से ० कहा कि महाराज मुजे आज्ञा कीजे अभी ० सुग्रीव को मार कर मै आक[1] के पास चला आ () ० ऊं (।) यों कह तुरन्त खड्ग समेत धनुष वाण ले स (-) ० चमुच वे चल खडे भये (।) तव श्री रघुनायक ने ० कहा कि

---

१. आप ।

सुनो लक्ष्मण (—)सुग्रीव मेरा वडा मित्र ० है तिस्से वुसे मारना नही पर जाकर के डरा(-) ० ओ कि वाली सा आज मैं तुम्हारा भी संहार क(-) ० रूंगा(।) यों कह सुग्रीव को जता कर अभी तो तु ० म चले आओ पीछे जो कुछ उचित होगा ० सो किया जावेगा(।)इस भांति श्री रामचन्द्र की ० आज्ञा पाय महापराक्रमी लक्ष्मण जी नि(-) ० दान क्रुद्ध होकर किष्किन्धा को ऐसे चले कि मानो जाते ही सव वांनरों का संहारकरडाले०गें(।)जवकि निकट जा पहुंचे ओ विन्हको डरा(-)० वने के लिये धनुष का भयावन शब्द लगे क(-) ० रने तव क्षेत पर लक्ष्मण को देषते ही सव ० वांनर कि जो उनको पहचान ही शक्ते थे ० किच किचा उठे ओ पाषाण पेड ले ले मार मा (-) ० र कर विन पर दौडे तव तो वांनरों कों देषते ही ० लक्ष्मण जी बहुत रिसियाने तो ओं ही धनु (-) ० ष पर वाण चढा कर सकल वांनर को निर्मूल करने को ० उपस्थित हूए इतने मे लक्ष्मण जी का आ(-) ० गमन जान अंगद तुरन्त आन पहुचा ओ वां(-) ० नरों को वरज समीप जा लक्ष्मण के चरणों प(-) ० र गिर पडा तव गरे लगा कर वे इससे मिले ओ ० कहने लगे कि सुनो अंगद मुजे श्री राम च(-) ० न्द्र ने कुद्ध होकर भेजा है तुम शीघ्र जा अप(-) ० ने चाचा से मेंरा आगमन जनाओ(-) इतने व(-) ० चन के सुनते ही अंगद ने तुरन्त सुग्रीव से ० आय कहा कि हे महाराज पुर के द्वार पर ल(-) ० क्ष्मण जी खडे हैं ओ मारे कोप के दात पीस ० रहे हैं किसी प्रकार से विन्हे जा मनाइए इसी ० मे कुशल है (।) इस भांति अंगद की वातें सुन ० सुग्रीव वहुत घवराने तो मंत्रीन मे श्रेष्ठ हनु(-) ० मान को बुला कर कहने लगे कि तुम अभी ० अंगद के साथ जाओ अरु नम्र हो मना कर ० लक्ष्मण जी को यहां ले आओ(।) यों कह हनु (-) ० मान को भेज के फिर सुग्रीव ने तारा के पास ० जा कहा कि तुम भी जाओ अरु मीठी मीठी ० वातों से लक्ष्मण जी को शान्त कर पहले यहां ० ले आलो[1] तिस पीछे मुज से भेंट कराइओ(।) इ(-) ० स प्रकार राजा की आज्ञा पा निदान तारा भी ० वहां से चली ओ विचली डेवढी मे आन पहु(-) ० ची तव तलक अंगद को साथ लिये लक्ष्मण ० के पास हनुमान जी जा पहुचे ओ शिर झुका ० प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ यह वचन वि(-) ० नसे कहने लने कि आइऐ महाराज यह घ(-) ० र द्वार सव आप ही का है तिससे भीतर च(-) ० ल के रानी समेत सुग्रीव से पहले भेट क (-) ० र लीजे फिर जो कुछ आज्ञा कीजेगा सो स(-) ० व हम करेंगे यों कह प्रीति से हाथ "पकड लक्ष्म(-) ० ण जी को हनुमान जी घर के भीतर ले चले(।) ० जव वीचली डेवढी मे आ चूके तव सव सिंगा-० र पटार किये चन्द्रमुखी तारा लक्ष्मण जी के ० आगे जा खडी हूई ओ प्रणाम कर मुस्कुरा ० मुस्कुरा यह वचन लगी विन से कहने कि ० आओ देवर तुम किस लिये सुग्रीव पर रु(-) ० ष्ट हो वे तो तुम्हारे दास ओ भक्त" हैं वहुत दिन ० तक दुख मे रहे हैं पर तुम ही ने विस संकट से ० उन्हे वंचा लिया है अव तुम्हारे प्रताप से व(-) ०हुत सुख पाते हैं ओ आज काल्ह श्री रामच(-) ०न्द्र के कामकाज के भीर भार से निपट आकु(-) ० ल रहते हैं इससे विनकी सेवा मे नही पहुंच ० शके और देश देश से वडे वडे वांनरों को वुला ० ने के लिये दश सहस्र वांनर विन्हने भेजे हैं ज ० द वे आवेंगे तद उनको संग लिये तुम्हारे सा ० थ हो आप सुग्रीव लंका मे जागें ओ रावण स ० मेत

---

१. आओ।

सव दैत्यन को मारेगें इस भांति तारा की ० वार्तें सुन लक्ष्मण जी कुछ एक ठंढे हूऐ तो ० विन्हके साथ धीरें धीरें विस मंदिर के भीतर ० चले कि जहां रुमा नाम अपनी स्त्री को लि ० ये राजा सुग्रीव पलंग पर बैठे थे जद समीप ० ज पहुचे तद लक्ष्मण को देष कर वे वहुत डर ग ० ये ओ तुरन्त पलंग से उतर प्रणाम क ० र हाथ जोड विन के आगे जा खडे भये तव ० सुग्रीव को देषते ही लक्ष्मण जी निपट क्रुद्ध ० हो विनसे कहने लगे(—) "क्यूं रे दुष्ट तू श्री रामचन्द्र ० को भूल गया मै जानता हूं कि जिस वाण से ० वाली मारा गया विस शर से अव तू भी मा(-) ० रा जाया चाहता है (।) इस प्रकार जव कडी कडी ० वातें लक्ष्मण जी कहने लगे तव हनुमान जी ० वोले(—)महाराज आप किस लिये ऐसा वच(-) ० न मुह से निकालते हैं ये तो तुमसे भी अधि(-) ० क श्री रामचन्द्र के भक्त हैं विनके काज की चि(-) न्ता से सदा आकुल रहते हैं यहां तक कि सो(-) ० ते भी नहीं उन को भला क्यूं कर ये भूलेंगें देषि(-) ० ए चहुंदिश से कोटि वांनर सव ये ही आन ० पहुचे इन को संग ले करके सीता को ढूढने के ० लिये अभी ये जावेंगे और जो कुछ श्री राम(-) ० चन्द्र का काज होगा सो सव कर लावेंगे आ(-) ० प किसी वात का सन्देह मत कीजे(।) इस भाँति हनुमान की वातें सुनि निदान लक्ष्मण व(-) ० हुत लजाने तव अर्घ पदार्घ कर सुग्रीव ने ० विधि से उन्हे पूजा ओ गरे लगा कर कहा (—) महाराज मै तो श्रीरामचन्द्र का दास हूं उन्हो(-) ० ने वडे संकट से मुझे वचाया वे ऐसे प्रतापी पु(-) ० रुष है कि अपने तेजें[1] से आधे क्षण मे सव लो(-) गन को जीत लेगें(।) वांनरो समेत मै तो कहने ० को विन का सहाय होऊंगा(।) यह सुन लक्ष्मण ० वोले(—)अहो सुग्रीव तुम रामचन्द्र के वडे भक्त ० हो मैने क्रोध से जो कुछ तुम्हे कहा सो मेरा अ(-) ० पराध क्षमा करो अव मै श्रीरामचन्द्र के पास ० जाता हूं वे वन मे ऐकेले ही हैं ओ सीता के वि(-) ० रह से वहुत आकुल हो रहे हैं(।) इतनी वात के ० सुनते ही अच्छा कह विन समेत तुरन्त रथ ० पर चढ सकल वांनरों को साथ लिये सुग्रीव ० श्रीरामचन्द्र के पास चले तो भेरी मृदंग आ(-) ० दि वर्ण वर्ण के वाजों समेत भाल वांनरों की ० वडी सेना लिये छत्र चामरन से शोभित हो नील ० अंगद हनुमान आदि ये प्रधान सव भी वि(-) ० न के साथ हो लिये(।) इति श्री रामचरित्रे कि(-) ० ष्किन्धा काण्डे पंचमोध्याय: (।) ५(।) जव सुग्रीव ० निकट जा पहुचे तव कन्दरा के द्वार पर चीर ० वस्त्र पहने शिर मे अद्‌भुत जटा वान्धे श्याम श(-) ० रीर विशाल नयन श्री रामचन्द्र को जो सीता के ० विरह से अकुला रहे थे ओ नाना मृग पक्षीन ० को देषते थे देषकर लक्ष्मण समेत तुरन्त रथ ० पर से उतरे ओ विनके चरणों पर जा गिरे तव ० श्री रामचन्द्र उठकर विन से मिले ओ कुशल ० क्षेम पूछ आदर समेत अपने समीप उन्हे ० विठला लगे शिष्टाचार करने तब नम्र होकर ० राजा सुग्रीव ने विनसे कहा(—)देषिए महाराज य(-) ० ह वांनरों की महासेंना आन पहुची(।) इनमे ० कितने एक तो कुलाचल नाम पहार पर के र(-) ० हने वाले हैं ओ कितने मेरु ओ मन्दराचल ० के वसने हारे इस प्रकार नाना द्वीप नदी पर्व(-) ० त ओ जंगलों मे से ये सव चले आते हैं ओ असं(-) ० ख्य हैं ओ जैसा चाहें वैसा अपना सरूप वना श(-) ० कत्ते है इसलिए कि देवता के अंस से हूऐ हैं ओ ० युद्ध मे वडे निपुन हैं ओ देषने

---

१. 'जं' के बदले 'ज' होना चाहिए।

(मे) पर्वत से हैं ओ व(-) ० ल मे जो पूछिए तो कितने तो हाथी के तुल्य हैं ० ओ कितने एक दश हाथी के समान ओकित(-) ० ने ऐसे हैं कि विन्हे दश सहस्त्र नाग का पराक्र (-) ० म है ओ वहुतेरे ऐंसे हैं कि जिन्हो का वल का कु(-)०छ (अ)न्त नही मिलता और कितने तो काले काले ० हैं कितने कांचन के रंग से हैं कितने स्फिटक से ० उजले हैं ओ कितने राक्षस से डरावन हैं युद्ध ० के लिये चहुंदिश से गर्जते हूए चले आते हैं ओ ० ये सव आपके आज्ञाकारीहैं और फल मूल ० इनका आहार है अरु ऋक्षो के नायक ये जो ० जाम्ववान हैं सो मेरे मंत्रीन मे श्रेष्ठ ओ वडे वु(-) ० द्धिमान हैं औ वायु के पुत्र महापराक्रमी ये ह(-) ० नुमान जो विख्यात हो रहे है सो भी मेरे मंत्री हैं इ(-) ० न की वुद्धि अपरम्पार है इसी प्रकार नल नील ० गवय गवाक्ष गंधमादन शरभमैन्द गज ० पवन वलीमुख दधिमुख सुषेण तार औ(-)०र हनुमान के पिता केशरी नाम ये सव एक सें ०एक महावीर हैं और पराक्रम मे इन्द्र के तुल्य हैं ० ओ कोटीन झुण्डों के राजा हैं(।) ये सव आपके ० आज्ञाकारी हैं ओ देवता के अंश से उत्पन्न ० हूए हैं ओर यह जो वाली का सुत अंगद है सो ० वल मे अपने पिता ही समान है अरु राक्षसों ० के लेखें तो साक्षात यमसरूप है(।) इन आदि ० और भी वहुतेरे हैं जो तुम्हारे लिये जी देने को०उपस्थित हो रहे हैं ओ लड़ाई में ऐंसे निपुण ० हैं कि अभी पहार से भी होवे तो उनसे भी जा ० युद्ध करें(।) तिस्से हे महाराज अव आप आज्ञा ० कीजिये सव तुम्हारे वश मे हैं (।) इतनी वात के सु(-) ० नते ही श्री रामचन्द्र उठकर सुग्रीव से मिले ओ ० हर्ष से आंषो मे आशू भर भर यह वचन लगे विनसे कहने (—)अहो सुग्रीव तुम मेरा काम सव ० जानते हो तिस्से सीता को ढूढने के लिये जो ० जिस दिशा के योग्य हैं वुन्हे वहां भेजो(।) यह सु(-) ० न अति हर्षित हो तुरन्त राजा सुग्रीव ने दि(-) ० शा दिशा मे वांनरों को जो वडे पराक्रमी थे भे(-) ० जा और अंगद जांववान हनूमान नल सुषे(-) ० ण शरभ मैन्द-दिविद-इन महावीरन को ० यत्न कर दक्षिण दिशा मे भेजा ओ चलने के वेर वुन सवन सें यह वचन कहा कि सुनो भा(-) ० इओ तुम सव मन लगा करके एक मास मे सी(-) ० ता का समाचार लाओ अरु यह जान लो कि ० वुन्हे विन देषे एक मास के उधर एक दिन के ० भी वीते जो यहां आवेगा सो जी से मारा जावे(-) ० गा यही विसका दण्ड होगा(।) इस प्रकार वडे व ० डे पराक्रमी वांनर को भेज कर सुग्रीव पुन रा(-)० म को प्रणाम कर उनके पास आ खडे हूऐ ओ च(-) ० लने की वेरियां श्री रामचन्द्र ने हनुमान से क(-) ० हा कि सुनो वायुकुमार तुम जाते हो "तो विश्वास ० के लिये यह अंगूठी कि जिसमे हमारा नाम लि(-) ० खा है लिये जाओ अरु सीता को दीजो(।) इस ० काज मे तुम्हारा ही भरोसा है तुम्हारा वल ह(-) ० म जानते हैं जाओ वाट में तुम्हे शुभ होवे(।) इ(-) ० स प्रकार सुग्रीव ओ रामचन्द्र की आज्ञा पा(-) ० य अंगद आदि वांनर सव सीता को षोजने ० के लिये चले तो जहां तहां विसे ढूढते ढूढते ० निदान विन्ध्याचल पर सव आन पहुंचे तो ० वहां देषते हैं क्या कि पर्वत समान महा भया(-)० वन एक राक्षस वैठा" है ओ मृग पक्षीन को प(क)ड०प(क)ड खाता है तव हो न हो यही रावण है य(-) ०ह ठहरा किचकिचा कर सव उस पर जा टूट परे ओ०लगे घुसों से उसे मारने ओ दांतो से काटने(।) ० जव कि जाना कि यह रावण नही है उसे छो(-) ० ड कर वहां से उठे ओ दूसरे किसी महावन मे ० गये तहां षोजते षोजते मारे प्यास के ऐसे व्या(-) ० कुल भये

कि कंठ ओ तालू लगे शुषने ओ ० कहूं पानी देषने मे न आवे इतने मे घास औ ० लताओं से छिपा हूआ पर्वत का वडा सा ए(-) ० क षोह देषने मे आ[1] कि जिसमे से पानी के भीं(-) ० गे हूऐ हंस ओ वकुले सव वाहर निकल नि(-) ० कल पक्ष सुखाते थे(।) तद सव वांनरों ने विचा(-० रा कि इस कन्दरे मे अवश्य जल है चलो भी(-) ० तर जाकर के पीवें(।) यों कह विस अंधेरे षोह ० मे आगे हनुमान जी पैठे तिसके पीछे परस्प(-) ० र एक का एक हाथ पकड कर सव वांनर भी घुस गये(।) जद वहुत दूर जा पहुचे तद देषें तो अ(-) ० ति निर्मल जल से भरा हूआ ओ कल्पद्रुम ० के समान एक महा सुन्दर तलाव है वुसके ० तीरों पर पक्के पक्के ओ मघु से मीठे मीठे फलों ० के भार से झूके हूऐ अति सोहावन वृक्ष स(-) ० व लगें हैं ओ नाना मणि वस्त्रन से ओ खाने ० पीने की भांति भांति की वस्तुन से भरे हूऐ सु(-) ० वर्ण के घर हैं पर कोई मनुष्य उन्हमे नही है (।) ० तव चकित होकर पहले वुस सरोवर पर सव ० गये निदान धीरें धीरें विन मंदिरों के भीतर ० पैठें तो एक भवन मे देषते क्या हैं कि चीर वस(-) ० न पहने तेज मे सूर्य समान एक योगिनी ० आसन मारे वैठी है ओ व्रह्म के ध्यान मे मग(-) ० न हो रही है तद डर कर सवों ने भक्ति से वि(-) ० से प्रणाम किया कि इतने मे वांनरन को देष ० कर वह वोली कि तुम सव कौन हो ओ किस ० के दूत हो ओ वल से किसलिए मेरे स्थान मे ० आये(।) यह सुन हनूमान जी लगे कहने कि ० सुनो माता वात यह है कि अयोध्या के पति ० दशरथ नाम एक राजा थे विन के जेष्ठ पुत्र श्री ० रामचन्द्र हैं सो पिता की आज्ञा सें स्त्री भाई स(-) ० मेत दंडकारण्य मे आये तहां से विनकी भा(-) ० र्य्या को दुष्ट रावण हर ले गया तव वे दोनों भा(-) ० ई सुग्रीव पास गये तद अति हर्षित हो सुग्रीव(-) ० ने उनसे मित्रता करी औ हमसे कहा कि ० तुम सव जानकी को जा ढूढो (।) तव प्रभु की ० आज्ञा पाय तुरन्त हम सव निकले ओ वि(-) ० से षोजते षोजते तृषातुर हो इस महा कंद(-) ० रे मे पैठे तो संयोगन यहां आन पहुचे(।) अव ० कहो तुम कौन हो ओ किसलिए यहां रह(-) ० ती हो(?) योगिनी सुनकर वहुत हर्षानी ओ ० वोली कि अछा तु(म) सव भर पेट फल मूल खा ० अमृत समान पानी पी सन्तुष्ट होकर मेरे ० पास आओ तद एक ओर सें मै अपना वृ(-) ० त्तान्त तुम्हे सुनाऊंगी(।) इतनी वात के सुनते ० ही वे सव उस घर मे से निकले ओ वाहर जा खा० पी अति तृप्त हो फिर योगिनी के पास आ हा(-) ० थ जोड़ कर सव खड़े हूऐ तव हनुमान से वह ० लगी कहने कि आगे विश्वकर्मा नाम गंध(-) ० र्व की हेमा नाम एक पुत्री थी विसके नृत्य से ० अति प्रसन्न होकर महेश ने विश को यह ० महा अद्भुत नगर वसने को दिया तव वह य(-) ० हां ही आ लगी रहने ओ दिव्य गंधर्व की पु(-) ० त्री दिव्य प्रभा नाम मै विसकी सखी थी ज(-) ० व लाषों वरस के वीतें व्रह्मलोक को वुह चली ० यह वात मुज से कह गयी कि तुम अभी इ(-) ० सी शून्य नगर मे वसी रहो जव कि त्रेता युग ० आवेगा तव राजा दशरथ के ह्यां आप ना(-) ० रायण अवतार लेगें ओ धरती के भार उ(-) ० तारने के जंगलों में फीरेंगे तद विन की भा(-) ० र्या को ढूढते हूऐ वांनर सव तुम्हारे कन्दरे मे ० आवेगें(।)तव समाचार पा निकट जा श्री राम(-) ० चन्द्र

---

१. आया।

को पूज यत्न से उनकी स्तुति कर विष्णु(-) ० धाम को कि जहां योगिओ का गम्य है तुम ० जाइओ तिस्से श्री राम के पास तुरन्त मै यहां ० सें जाऊंगी तुम अपनी अपनी आषें मूंदो ० तो सहज मे इस कन्दरे के वाहर जाओगे(।) इ(-) ०तनी वात के सुनते ही वांनर सव जों आंष ० मूद चूके कि तों ही वुस षोह मे से वाहर वन मे ० सव आन पहुचे तद विस मन्दिर मे से तुरन्त ० निकलकर वुह योगिनी भी श्री रघुनाथ के ० निकट गयी ओ सुग्रीव लक्ष्मण समेत उ (-) ० न्हे देष प्रदक्षिणा प्रणाम कर नम हो यह ० वचन लगी विनसे कहने(—)महाराज मै तुम्हा(-) ० री दासी हूं आपके दर्शन करने के लिये आ(-) ० यी हूं लाषों वरस कंदरे मे मैने महा कठिन ० तपस्या करी सो अव मेरा तप फला जो आ(-) ० प का दर्शन हूआ(।) मै तुम्हे प्रणाम करती हूं तु(-) ० म माया से रहित आदि पुरुष हौ वाहर भीत(-) ० र सव मे व्याप रहे हो ओ जैसे नट भेष वना(-) ० ता है वैसे ही माया कर मानुष सरूप हुऐ हो ० पर अज्ञानता से लोग तुम्हे पहचान ही[1] श(-) ० कत्ते अपने भक्तन के हृदय मे भक्ति उप (-) ० जाने के लिये अवतार लिये हो(।) स्त्री होकर ० मै क्यूंकर तुमको पहचान शकूं(।) संसार मे तुम्हारा भेद कोई जाना करे पर हे कृपानिधा(-) ० न मेरे हृदय मे आपका यही सरूप सदा व(-) ० से(।) वडा भाग है कि जिनके दर्शन से संसार सा(-) ० गर फिर कभी दृष्ट आने का नही ओ हि (-) ० य मे सुमति उपजाती है ऐंसे जो मुक्ति दाय ० क आपके युगल चरण हैं विनका दर्शन मु(-) ० जे कराया है(।) महाराज स्त्री पुत्र धन इनके म ० द से माते हूए जो मुज से लोग हैं तिनसे तुम्हा(-) ० री स्तुति कुछ न हो शकत्ती तुम निर्गण सगुण दो(-)० नो सरूप हो मै तुम्हे वार वार प्रणाम करती हूं तुम्हा (-) ० रा आदि अन्त नही मिलता तुम सर्वव्यापी ओ ० काल सरूप हो मै तुम्हे आदि पुरुष मानती हूं(।) म(-) ० हाराज तुम्हारी गति को जान शके (।) न तो तुम्हे ० कोई मित्र है न वैरी पर तुम्हारी माया से मोहि(-) ० त मनुष्यन को तुम वैसे हि सुझते हो(।) यों कह फि(-) ० र योगिन वोली कि अपनी कथा का जो श्रवण ० है उसका फल लोगन को देने के लिये तुम अ(-) ० वतरे हो कितने तो तुम्हें यों कहते हैं ओ कि(-) ० तने यों वोलते हैं कि राजा दशरथ की तपस्या ० सुफल करने के हेतु(,) ओ वहुतेरे ऐसा कहते हैं ० जो कौशल्या की प्रार्थना से तुम जन्म लिये हो(,) ० ओ कितने यह कहते हैं कि दुष्ट राक्षसन को ० मार धरती का वोझ उतारने के निमित्त व्रह्मा ० की विनती से तुम मानुष स्वरूप हूए हो(।) तुम्हा(-) ० री कथा जो नर सुनता ओ गाता है तिनही को ० तुम्हारे इन चरणों का जो भव सागर पार उतार(-) ० न हारे हैं दर्शन होता है (।) रज तम सत ये जो तुम्हा(-) ० री माया के गुण हैं तिनमे मै वद्ध हूं ओ तुम इन ० से अलग हो इस कारण मै तुम्हे क्यू कर पहचा(-) ० नूं जो आपकी स्तुति करूं तिस्से लक्ष्मण सु(-) ग्रीव सहित धनुष वाण लिये यह जो सांवली ० तुम्हारी मुरति है तिसको मै सदा प्रणाम करती ० हूं(।) तुम घट घट वासी पूरण व्रह्म हो(।) इस भांति ० अतिनम्र होकर जव वह स्तुति कर चुकी प्र(-) ० सन्न हो के श्री रामचन्द्र वोले कि तेरे मन मे कि(-) ० स वस्तु की लालसा है सो मुज से मांग तव उ(-) ० सने कहा कि मै जहां कही रहूं तहां तुम्हारे चर(-) ० णों की मुझे भक्ति

---

१. नहीं।

होए ओ आपके भक्तन ० के संग और मेरी जीभ प्रीति से सदा राम राम ० कहती रहै ओ धनुष वान लिये जटा धारण ० किये पीत वसन अरू कौस्तुभ आदि नाना अलं(-) ० कार पहने सीता लक्ष्मण को साथ लिये श्या(-) ० म सुन्दर जो आपकी मूरति है विसका सदा ० मै ध्यान करती रहूं यही वर मै मांगती हूं (।) श्री ० रामचन्द्र वोले(—)अछा वदरिकाश्रम मे तुम ० जाओ अरु वहां ही मुजे स्मरण करती हुई ०इस देह को तज कर मुजी मे मिल जाइओ(।) इ(-)० स भांति जव श्री रघुनाथ ने कहा प्रणाम क(-)० र योगिन विन से विदा हूई ओ तुरन्त वदरि(-) का श्रम मे जा मन से राम का ध्यान करती हू(-)० ई कुछ दिन तो वहां रही निदान देह तज कर प(-)० रमपद को गयी० इति श्री रामचरित्रे कि (-) ० ष्किन्धा काण्डे षष्टोध्याय: (।) ६ (।) वहां विस० षोह मे से निकल कर जव वांनर सव वाहर आ ० ये तव सीता को ढूंढते ढूंढते एकें तो दुवले हो ० ही रहे थे निदान विसकी चिन्ता से निपट व्या(-) ० कुल हूए तद अगंद जो वुन मे वडा प्रधान ० था सव वांनरों से लगा कहने कि जंगलों मे फि(-) ० रते हूए हम लोगन को यह मांस अव - निश्च(-) ० य वीता न तो सीता का उद्देश मिला ओ न रा(-) ० जा की आज्ञा रही(।) जों किष्किन्धा को चलें तो ० सुग्रीव हम लोग को जी से मार डालेगा तिस ० मे मुजे तो वह कधी छोड़ने का नही(।) वुसे मुझ ० मे क्या प्रीति(?) रामचन्द्र ने मेरी रक्षा की है सो वि(-) ०न का काज नही भया मैं विनसे झूठा हूआ ० तिस्से सुग्रीव मेरा निश्चय प्राण लेगा विस ० दुष्ट को लाज दया धर्म का डर कुछ है ० नहीं क्यूंकि भाई की स्त्री मा तुल्य है तिस्से भो(-) ० ग करता है इससे विस अधम के पास मैं जा(-) ० ने का नही वरन जिस डौल से होगा विस डौ(-) ० ल से यहां ही मैं अपना प्राण तजूंगा (।) इस प्र(-) ० कार विलक विलक जद अंगद ने कहा तद ० दूने दुखित होकर सव वांनर न लगे उससे कहने कि०एँ महाराज तुम किसलिये इतने घवराते हो ० तुम्हारे प्राण के रक्षक हमलोग हैं तुम्हारे लिये ० इसी षोह मे जो सव प्रकार के सुखदायक ओ ० इन्द्रपुरी के समान है हम सव वसेंगे तुम तनि(-) ० क भय मत करो(।) इस भांति जव वांनर सव ल(-) ० गे कहने तव सुन कर हनुमान ने अंगद को ० गरे लगा लिया ओ कहा तुम किस लिये ऐ(-) ० से कातर होते हो तुम तारा के पुत्र हो राजा सु(-) ० ग्रीव तुम्हे वहुत प्यार करते हैं ओ लक्ष्मण ० से भी अधिक प्रीति श्री रामचन्द्र तुमसे कर(-) ० ते हैं विनसे तुम्हे कधी भय नही है (।) मै तुम्हा(-) ० रे हित में सदा रहता हूं तुम अपने जी मे औ(-) ० र कुछ मत विचारो ओ वानरों ने जो कहा कि ० इस कंदरे मे वास करो यहां श्रीरामचन्द्र से तु(-) ० म्हारी कुछ वुराई होने की नही सो तीनों लो(-) ० क मे ऐसा कौन जगह है जो राम के वाण से भ(-) ० स्म नही हो शकत्ता ओ जो वांनर तुम्हे वुरी म(-) ० ति देते हैं सो अपनी स्त्री पुत्रादि को छोड़ क(-) ० र भला क्यूंकर तुम्हारे साथ सदा रहेंगे तुमही ० इस वात को शोचो(।) यों कह फिर हनुमान जी ० वोले कि और भी रहस्य मुज से सुनो(—)श्री रा(-) ० मचन्द्र मनुष्य नही है वे साक्षात नारायण ० हैं ओ सीता को जो सुनते हो सो सवको मो(-) ० हनहारी भगवान की माया हैं ओ लक्ष्मण ० जी इस पृथ्वी के आधार साक्षात शेष ना(-) ० ग हैं व्रह्मा की प्रार्थना से सकल दानवन को ० वधने के लिये माया कर मानुष सरूप हूए हैं ० ओ हम सव उन वैकुंठ वासी विष्णु के गण हैं ० अपनी इछा से जव वे मनुष्य भये हम सव भी ० वुन की माया से वांनर हूए

हमने आगे विन ० की वडी आराधना करी तव विन की कृपा ० से वुन के गण भये अव उनकी सेवा टहल क (–) ० र वैकुण्ठ मे जा उनके संग फिर हम सव आ(-) ० नंद विहार करेगें(।) इस भांति अंगद को जद ० हनुमान जी समझा चूके तद वुन समेत स (-) ० व वांनर वहां से चले तो सीता को ढूढते हूए ० धीरें धीरें पहले विंध्य नाम पहाड पर गये(।) ज(-) ० व वहां भी वुसका कुछ भेद न पाया तव वहां ० से उठकर दक्षिण समुद्र के तीर महेन्द्र ना(-) ० म गरिवर के वहुत निकट अति पवित्र एक ० दूसरे पर्वत पर सव जा पहुचे तो वहां अगा(-) ० ध ओ महाभयावन सागर को जिसका कु(-) ० छ पारावार न सूझे देषकर सव निपट घवरा ० गये ओ लगे कहने कि अव क्या करें यह वत ० राते हूऐ निदान उदधि तीर सव वीर गये तो ० आपस मे लगे संमत करने ओ कहने कि ० फीरते ही फीरते हमलोगन को यह मास यों ० ही वीत चूका न तो अवतक रावण को देषा न ० सीता जी का समाचार पाया अव सुग्रीव को ० क्या उत्तर देंगे वह महाक्रोधी है निसन्देह ह(-) ० म को मार डालेगा तिससे उस अधम के मार(-) ० ने से यह अति उत्तम विचार है कि यहां ही वैठ ० कर आप से हमलोग मरें(।) यह निश्चय कर ० कुश विछा विछा मरने के लिये सचमुच स(-) ० व वैठ गये कि इतने मे महेन्द्र की कंदरे से व(-) ० डा सा एक गीध धीरें धीरें वाहर निकल आ(-) ० या औ पांत जोर सें वैठे हूए सकल वांनर को देष कर लगा मंद मंद कहने(—)अहा आज ० तो भगवान ने वहुत भक्ष्य मुजे भेज दिये ० हैं अव नित्य एक एक कर इन सव को मैं खाऊं(-) ० गा इस भांति गीध की वातें सुन वांनर सव ० जी मे वहुत डर गये ओ कहने लगे कि हा य(-) ० ह निश्चय हमलोगन को खावेगा(,) न तो श्री ० रामचन्द्र का कुछ काज किया न सुग्रीव का हि(-) ० त और न अपना ही कुछ भला हूआ इस दुष्ट ० सें वृथा अपमृत्यु पा अव अवश्य हम सव ० यमलोक जाएगें(।) अहो जटायु तुम वडे धर्मा ० त्मा थे जो राम के काज मे अपना प्राण तज वि(-) ० स मुक्ति धाम को पहुचे कि जहां योगी लोग ० भी शीघ्र नही जा शकत्ते(।) जव उन्होने यों क(-) ० हा संपाति वहुत भैंचक हूआ अरू वोला ० कि अरे यारो तुम सव कौन हो जो मेरे भाई का ० नाम कि जिसका श्रवण मेरे कानों मे अमृ(-) ० त सा लगता है आपस मे लेते हो निडर हो ० कर अपना समाचार मुजे सुनाओ(।)यह ० सुन अंगद तुरन्त उठे ओ विस के समीप ० जा कहने लगे(—)महाराज राजा दशरथ के पु(-) ० त्र रामचन्द्र हैं सो लक्ष्मण भाई समेत सी(-) ० ता को संग लिये घर से निकल कर वन मे व(-) ० से थे जव अहेर के लिये वे दोनों भाई एक दि(-) ० न वाहर निकल गये तव दुष्ट रावन वहां सें ० सीता को हर ले चला तो राम राम कर विन ० का पुकार ओ रोना सुन कर महाप्रतापी ओ ० पक्षिन मे इन्द्रतुल्य जटायु तुरन्त उठ दौडे ० अरु जाते ही रावण से लगे दारुण युद्ध कर(-) ० ने निदान दानव वडा वलवान था सो जटा(-) ० यु को मार कर सीता को लिये अपने भवन ० को चला ही गया तिस पीछे श्री रघुनाथ के हाथ से ० आग पा जटायु विष्णुपद को गये तव ल (-) ० क्ष्मण सहित रामचन्द्र सुग्रीव के पास आ(-) ० ये ओ अग्नि साक्षी कर विन से मिले औ(-) ० र वुनके कहने से महावीर वाली को मार क(-)० र सकल वानरो के राजा[1]

१. 'राज' होना चाहिए।

श्रीरामचन्द्र उ(-) ० न को दिया तद सीता को ढूढने के लिये वि(-) ० न राजा ने हमे भेजा ओ कहा कि एक मास ० के भीतरे ही यहां आओ नही तो मै तुम्हे जी ० से मार डालूंगा सो महाराज सुग्रीव की आ(-) ० ज्ञा से पर्वत पर्वत जंगल जंगल सीता को ढूढते ढूढते हम सव यहां आन पहुचे ओ यह ० मास यों ही वीत गया पर न तो आज तलक ० रावण से भेंट हूई न जानकी का कुछ समा (-) ० चार मिला(।) इस कारण इस पार समुद्र के ती(-) ० र पर वैठ कर हम सव अपना अपना प्राण ० तजा चाहते हैं(।) जों सीता को आप जानते ० हो तो कृपा कर हमे वता दीजे इस भांति ज(-) ० व अंगद ने कहा तव मन मे हर्षा कर संपाति ० वोला(—)जटायु तो मेरा वडा प्यारा भाई था ला(-) ० षों वरस पर आज तुमने विसका वृत्तान्त ० मुझे सुनाया है तिससे मै तुम्हारे वचन ० की सहायता करूंगा पर उस भाई को ति ० लांजलि देने के लिये पहले मुजे जल के समी(-) ० प ले चलो तव तुम्हारे काज के लिये सीता का० समाचार सव मै तुम्हे सुनाऊंगा(।) ० इतने वच ० न के सुनते ही अति हर्षित हो तुरन्त सव वां(-) ० नरों ने संपाति को वहां से उठा कर सागर ती(-) ०र ला रष दिया और जव वह शलिल मे स्ना(-) ० न कर भाई को पानी दे चूका तव फिर विसे वु(-) ० सके स्थान पर सव ले आये तद सकल वांनर(-) ० न को हुलसित करता हूआ लगा वह कहने ० कि त्रिकूट नाम पहाड पर लंका नाम एक न(-) ० गर है तहां अशोक वाटिका मे सीता हैं ओ ० राक्षसिन सव विनकी चौकी करती हैं पर स(-) ० मुद्र के वीच मे यहां से चार शौ कोश पर लंका ० है(।) सीता और वुस पुरी को निसन्देह मै यहां ० से देषता हूं तुम सव अपने जी मे तनिक भी ० संशय मत करो मै गीध हूं वडी दूर तक मेरी ० दृष्टि पहुंचती है(।) जो वीर चार शौ कोश समु(-) ० द्र लांघ शके सोई सीता को देष कर निश्चय फिर ० आवेगा (।) क्या करूं सकल राक्षसों के अधिप ० ति विस दुष्ट रावण को तो मै एकेला ही जा क(-) ० र मार डालता पर विना पक्ष का हूं इससे कुछ ० नही कह शकत्ता(।) तुम सागर लांघने का यत्न क(-) ०रो तव तो रावण को श्रीरामचन्द्र मारेंगे तिससे ० शौ योजन समुद्र लांघ लंका के भीतर जा जा(-) ० नकी को देष वातचित उनसे कर पुन वारि(-) ० धि लांघ यहां आने का तुममे किसे सामर्थ्य ० है यह आपस मे ठहराओ ० इति श्री रामच (-) ० रित्रे किष्किन्धा काण्डे सप्तमोध्याय:(।) ७(।) यों ० कह फिर अपना आगे का वृत्तान्त संपाति ० लगा वुन वांनरो को सुनावने कि आगे हम ० ओ जटायु दोनो भाई जव अछे युवा हूए तव ० वल के गर्व से मात रहे थे निदान अपना अप (-) ० ना पराक्रम जानने के हेतु मारे मद के सूर्य मं(-) ० डल तक जाने के लिये हम दोनो भाई उपर ० को उडे तो जाते जाते वहुत सहस्त्र योजन ० जा पहुंचे(।)जव सूर्य के तेज से जटायु की देह ० लगी जलने तव वुह छोटा भाई था इससे औ(-) ० र उसके मोह से मैने रक्षा के लिये अपने पाखों ० के नीचे विसे कर लिया ओ वीच अधर मे पंख ० पसारें तनिक मै ठहर गया कि इतने मे कीरण ० से मेरे पंख जल गये ओ इस पहाड पर मै गि(-) ० र पडा तो दूर के गिरने से मै निपट मूर्छित हो ग(-) ० या कुछ चेत नही रहा निदान तीसरे दीन मे ० फिर मुझे प्राण पलटा पर पक्ष जो मेरे जल ग(-)० ये थे इससे मन मे ऐसा भ्रम हूआ कि न तो मै दे(-) ० श को पहचान शका और न पर्वत को(।) जद कुछ ० घडी के वीतें धीरें धीरें मेरी आंखें खुलीं तद ० थोडी सी दूर पर अति सुन्दर एक

आश्रम देष ० कर आहिस्ते आहिस्ते मै वहां जा पहुचा तो ० चन्दमा नाम एक वडे ऋषीश्वर जो विस स्था(-) ० न मे रहते थे मुजे देष के वहुत विस्मित भये ओ ० लगे मुज से कहने(—)अरे सम्पाति यह क्या तेरा ० डौल है किसने यिह तेरी दुर्दशा की है मैं नीके ० जानता हूं तू आगे वडा वलवान था पर किस ० कारण तेरे पांख जल गये सो समझा कर मु(-) ० ज से कह जो मेरा सन्देह जावे (।) इस भांति ज(-) ० व मुनि ने पूछा तव सव अपनी करतूति सु(-) ० नाकर निदान दीन की भांति मैंने विन से क(-) ० हा(—)महाराज अव मै विना पक्ष का क्यूं कर जी(-) ऊंगा इस चिन्ता से मैं वहुत जलता हूं यह सु(-) ० न मुझे देष निपट दयावंत हो आंषों मे आं(-) ० शू भर भर ऋषि लगे मुज से कहने कि हे पुत्र ० जो मै कहता हूं विसे पहले सुन लो फिर जो ० जी चाहे जो कीजो(—)सो यह है कि इस दुख का ० कारण देह है सो देह कर्मसे उत्पन्न हूई ओ ० कर्म अहं भाव से (-) अहंभाव अज्ञानता से(।) सो ० अहंभाव जड है पर जैसे आग संग लोहा ० भी आग वनता है वैसे ही जीव से सदा संयु(-) ० क्त होकर अहंभाव भी जीव ही सरूप होता ० है तव जीव सरुप जो अहंभाव है विससे देह ० चेतन होती है इसी प्रकार जैसें जीव से काया ० चेतन होती है तैसे ही अहंभाव से जीव को य(-) ० ह वुद्धि होती है कि मै देह हूं(।) यही जो विस की स(-) ० मझ है सोई इस संसार मे सुख दुख का हेतु ० है ओ विसी वुद्धि से वह जीव अपने को देह ० ओ मैं काज करने वाला हूं यह निश्चय कर ० नाना कर्म करता है ओ भले वुरे जो विन के फल हैं तिनमे वद्ध होता ओ पुण्य से ऊपर जाता ० है पाप से नीचे आता है(—) इस प्रकार से कि य(-) ० ज्ञ दान आदि वहुत पुण्य मैंने किया अव स्व(-) ० र्ग मे जा सुख भोगूंगा यह वासना कर पुण्य ० के प्रताप से स्वर्ग जा पहले तो वुह जीव वहुत ० वर्ष आनन्द विहार करता है निदान जव पुण्य ० निघटता है तव वहां से चंद्र मण्डल मे गिरता है ० फिर वहां से शीत समेत के पृथ्वी मे विरवान[1] आ(-) ० दि पर वरसता है तहां कुछ दिन रह के निदान प्रा(-) ० णी के चार प्रकार के भोजन से वीज होकर ऋ(-) ० तु समय स्त्री की योनि मे गिरता है तो विस के ० लोहू समेत गर्भ मे जा एक दिन मे तो गढ़ा के[2] कु(-) ० छ एक कठोर होता है ओ पांच रात मे वुल्वु(-) ० ल्ला[3] सा वनता ओ सात रात मे वुह मांस का पि(-) ० ण्ड होता है सो पिण्ड एक ही पक्ष मे रक्त माह ० डूवता है और पच्चीश रात मे वुस पिण्ड मे से ० पांच अंकुर निकलते हैं(।) वे ही क्रम क्रम एक ० मांस मे गला शिर कांध पीठ पेट ये पांचो अंग ० वनते है(।) इसी प्रकार दूसरे मांस हाथ पांव पां(-) ० जर कटि जांघ(,) तीसरे माह अंग मे जहां जैसा ० चाहिए वैसा जोड चौठे मे क्रम क्रम सव उंग(-) ० लियां पांचवें मह नाक कान आंख नख ओ ० दांतों की पंगति छठे मांस के भीतरे ही का(-) ० नों मे छेद सातवें मे मार्ग लिंग उपस्थ ना(-) ० भी ओ आठवें मांस मे रोम शिर मे केश ये स(-) ० व विस जीव को उत्पन्न होते हैं(।) इस प्रका ० र से स्त्री के गर्भ मे वह जीव नित्य वढ़ता है ० ओ पांचवें मांस से चेतन होता है ओ माता ० जो खाती है विस अन्न का सार रस नाभी ० के निपट सूक्ष्म छेद से वुस जी को पहुंचता ० है तिसी से गर्भ मे दिन दिन वुह वढता है ओ ० कर्म भोगने के लिये नही मरता अरु जहां ० जहां जन्म लिया ओ जो जो कर्म किया

१. वृक्ष। २. गढ़ा जाकर ३. बुलबुला।

सो ० सव सुमर जठर की आग से दग्ध हो यह वच (-) ० न कहता है कि नाना योनि भ्रमता हूआ को(-) ० टीन का मै वाप भया ओ कोटीन का पुत्र पर ० पशु की सी मेरी बुद्धि थी क्यूंकि कुटुम्ब पाल (-) ० ने के लिये भला वुरा अनेक यत्न कर जैसें ध(-) ० न अर्जन किया वैसे आवागमन से वंचने ० के हेतु स्वप्न मे भी हरि की चिन्ता नही करी औ० जो गृह पुत्रादिक सदा अनित्य हैं तिन को ० नित्य कर माना जो काज नही करने का सो(-) ० ई सव किया अपना हित कुछ न विचारा ० उन्ही का यह फल है जो गर्भ का महा दुख ० भोगता हूं अव जो नरक समान यह गर्भ है तिसमे से किसी प्रकार से निकलूंगा तो विष्णु ० ही को नित्य पूजूंगा कि जिससे ऐसे संक(-) ० ट मे फिर न कभी फसूंगा(।) इस प्रकार चिन्ता ० करते करते निदान अति दुखित होकर जै(-) ० सें नरक मे से पापी ओ सडे हूऐ घाव मे से ० कीडा वराए वैसे ही जनम समय जोनि मे ० से वह जीव निकलता है तो लडकपण का म(-) ० हा महा दुख भोगता है औ यौवनादिक मे ० जो जो कष्ट पाता है सो सव मे विदित है ओ ० तुम भी जानते हो इसलिए विन कष्टों का ० वर्णन मैने तुमसे नही किया(।) इस प्रकार देह ० की ममता से नरक भोग ओ गर्भवास का दुख ० जीव को होता है तिस्से प्राणी को उचित है कि ० ममता को छोड देवे और देह से अलग सुद्ध ज्ञा(-) ० न सरूप जीव को अपना सरूप पहचाने कि ० जिसके जानने से देह जावे अथवा कर्म भो ० गने के लिये रहे पर योगिन को सुख दुख का ० कुछ हर्ष विषाद नही होता(।) यह समझ जव ० तक कर्म भोग है तव तलक इस देह को जैसे ० सांप केचूल रषता वैसे ही रष्षो ओ पीडा से ० आकुल मत हो(।) यों कह फिर चन्द्रमा वोला ० सुनो पुत्र एक और भी हित वात मैं तुम्हे वता(-) ० वता हूं कि रावण को मारने के लिये राम रूप ० हो त्रेता युग मे नारायण अवतार लेंगे औ ० सीता लक्ष्मण समेत दंडकारण्य मे आवे(-) ० गें तहां राम लक्ष्मण के वाहर गये पर विनके ० आश्रम मे से चोर की भांति सीता को रावण ० हर लेगा ओ लंका मे ले जा रष्षेगा तव सुग्री(-) ० व की आज्ञा से सीता को ढूढने के लिये सा(-) ० गर तीर वांनर सव आवेंगे तो वहां तुम से ० विन को भेंट होगी तद सीता की स्थिति तुम ० विन्हे वताइओ तधी तुम्हारे ये दोनों पक्ष ० फिर कर नये उत्पन्न होगे(।) इस भांति चंद्र ० मा मुनि ने समझा कर मुजे वहुत हर्षित कि(-) ० या सो हे वानरो सच मुज अव मेरे पंख न ० ये हूए(।) जाओ तुम्हारा कल्याण होवे(।) तुम सव ० निश्चय सीता को देषोगे पर समुद्र लांघने का यत्न करो(।) इसमे जिन घबराओ तुम स(-) ० व पार हो शकत्ते हो क्यूंकि जिनके नाम के ० सुमरने से अपार संसार सागर तर पापी ० जन भी विष्णुपद को जाते है तिन श्री राम ० चन्द्र के जो तीनो लोक के सृजने वाले हैं तु(-) ० म सव दूत हो ऐंसे वुझा समझा वांनरों को ० सुचित कर सम्पाति आकाश पथ को गया ० ० इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा काण्डे अ(-) ० ष्टमोध्याय: (।) ८(।) जव पक्ष पाकर गीध वहां ० से उड गया तव वांनरन को वडा हर्ष हूआ ० ओ सीता को देषने के लिये अति लाल(-) ० सा तो वडे वडे जलजन्तु ओ तरंगन से नि(-) ० पट भयावन ओ आकाश सा अगम्य ० सागर को देषकर आपस मे यों सव लगे व(-) ० तराने कि अव क्यूंकर इसे पार होवें निदान ० अंगद वोले सुनो वीरो तुम सव अत्यन्त ० शूर हो तुम्हारा पराक्रम विख्यात

है तिस ० से मै तुमसे यह पूछता हूं कि सागर पार हो ० कर राजकाज[1] को कर लावेगा सो मेरे आगे आ ० खडा होवे वही हम सभों का प्राणदाता ओ राम ० सुग्रीव का भी प्रतिपालक होए(।) इस भांति अंग(-) ० द की वातें सुन सव वांनर चुपके हो रहे ओ आ(-) ० पस मे परस्पर एक का एक लगे मुह देषने तद०फिर अंगद वोले कि सुनो यह मौन साधने का०समय नही है राजकाज के लिये तुम सव अप(-) ० ना अपना पराक्रम हमे सुनाओ देषें किस ० से यह काज हो शकेगा(।) जव कि उन्होने यों क(-) ० हा वीर सव अलग अलग लगे अपना अ(-) ० पना वल सुनाने तो कोई वोला दश योजन ० सागर मैं हेल शकत्ता हूं ओ किसी ने कहा वी(-) ० श किसी ने कहा तीश इस प्रकार दश दश यो(-) ० जन कर अशीतलक सव आये तिनमे जांव ० वान यों वोला की जव भगवान वामन अवता(-) ० र हूए थे ओ सारी पृथ्वी को एक डेग किये जव तक ० खडे थे तव विनके पग को इक्कीश वार मै प्रद(-) ० क्षिणा कर आया अव मैंरी वुढापे की अव (—) स्था है इस कारण अधिक नही नब्बे योजन ० तक सागर हेलने का अव मुझे सामर्थ्य है(।) इ(-) ० सी प्रकार अंगद भी वोले कि चार शौ कोश स(-) ० मुद्र मैं पार हो शकत्ता हूं पर फिर इसे लांघ आ(-) ० ने का मुज मे सामर्थ्य है कै नही यह मै नही जा(-) ० नता(।) जाम्ववान ने उत्तर दिया कि सुनो महा(-) ० राज तुम यद्यपि समर्थ हो पर तो भी आपको ० भेजना हमे उचित नही क्यूंकि हम सभों को ० आज्ञा देने वाले तुम राजा हो(।) अंगद वोले(—) ० अछा ऐंसा ही है तो आगे की भांति फिर कुशा(-) ० सन पर हम सव वैठ रहें क्यूंकि किसीने यह का(-) ० यं नही किया तो क्यूं कर जी शकें(।) तव जाम्व(-) ० वान विन से कहने लगा कि अव मै तुम्हे वीर ० देषलाता हूं कि जिससे हमारा काम सिद्ध होगा ० यों अंगद को सुना कर पुन लगा हनुमान से क(-) ० हने(—)ऐं पवन कुमार इस महाभारी काज मे तू ० अनजान सा एकान्त मे जा क्यूं चुपचाप वैठा ० है अपना सामर्थ्य देषला तू साक्षाद्वायु का पु(-) ० त्र है औ पराक्रम मे वाय समान तेरा जन्म रा(-) ० म काज ही के लिय[2] हूआ है(।) जनतें[3] ही पहले तू ० ने उगते हूऐ सूर्य्य को देषकर जाना कि यिह ० कोई पक्का हूआ फल है इसे तोड लूं यों शोच ० लडकपण वश हो ऐंसा फलांस[4] मारा कि पां(-) ० च शौ योजन पर अधर मे जा निदान धरती ० पर गिर पडा(।) तेरे पराक्रम की महिमा को व(-) ० र्णन कर शके(!) उठ श्री रामचन्द्र का कार्य क(-) ० र हम सभों का प्राण वचां ले(।) इस भांति जव ० जाम्ववान ने कहा सुन कर हनुमान जी बहुत ० हर्षाने तो सिंह समान ऐंसा महानाद किया कि ० मानो सारा ब्रह्माण्ड ही गर्ज उठा और जैसें दू(-) ० सरे त्रिविक्रम ही होवें ऐंसे पर्वत सरूप वन कर य(-) ० ह वचन वे कहने लगे कि सागर हेल लंका जला ० कुल समेत रावण को मार कर सीता को मै ला ० दूं अथवा दहने कर से रावण को वाँध लिये ० ओ वांयें हाथ से पर्वत सहित लंका को उखा(-) ० डे रामचन्द्र के आगे जा रख दूं अथवा सीता ० को देष ही कर चला आऊं तुम सव नीके वि ० चार के कहो वैसा मै करूं(।) जाम्ववान वोले हनु(-) ० मान तुम यह देष ही कर चले आओ कि सीता ० जीवती है कै नही पीछे राम समेत अपना ० पौरुष हमे देषलाइओ(।) हम जानते हैं तुम ० समान महावीर इस

१. राजा का कार्य। २. लिये। ३. जनमते। ४. छलांग।

संसार मे दूसरा कोई न(-) ० ही है अव आकाश पथ होकर तुम शीघ्र ० जाओ तुम्हारा कल्याण होए ओ राम का(-) ० र्य के लिये जाते हूऐ तुम्हे वायु सहाय हो(-) ० वें(।) इस प्रकार आशीस कर जांववान आदि ० प्रधान वांनरों ने जद हनुमान को विदा कि(-) ० या तव वे महेन्द्र पहार के ऊपर गये तिस सम(-) ० य मारे हर्ष के फूल कर पर्वत सरूप हो गये ओ ० विनकी देह की शोभा कैसी हूई कि जैसा कां(-) ० चन ओ अरुण वर्ण मुख औ शेषनाग से ० विनके दोनों वांह ऐसा विसका सरूप सभो(-) ० ने देषा। इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा कां(-) ० डे नवमोध्याय:(।) ९(।) समाप्त: ० जव हर्षि (-) ० त होकर हनुमान जी उस पहार प[१] जा खडे हू(-) ० ऐ और चार शौ योजन का चौडा सागर जो म(-) ० गरो का घर है पार होने को उपस्थित हूऐ तव ० रामचन्द्र का ध्यान कर यह वचन लगे सभों से ० कहने हे वांनरो जैसें श्री रघुनाथ जी का स(-) ० फल वाण चले वैसे ही अव मै जाता हूं तुम ० देषो मै अभी सीता जी को देष कृतार्थ हो पु(-) ० न रामचन्द्र का दर्शन आ करता हूं तुमकि(-) ०सी वात का सन्देह मत करो मै एक क्षण मे स(-) ० मुद्र पार हूंगा क्यूंकि मरण समय जिनका नाम ० एक वार भी जो नर सुमरता है सो अपार संसा(-) ० र सागर तर परम पद को जाता है तिन रामचन्द्र का ० मै दूत हूं ओ विन के अंग की मुंदरी मेरे पास है ० तिस्से हृदय मे रघुनाथ को सुमर इस लघु स(-) ० मुद्र को मै सहज मे पार हूंगा(।) यों कह वांह पसा(-) ० र पुछ समेट दोनों पांव लम्वे कर विस पहार ० पर से वायु वेग समान तुरन्त हनुमान जी द(-) ० क्षिण दिशा को उडे तिस समय कौतुक देष(-) ० ने के लिये देवता सव वीच अधर मे जो आ आ ० खड़े थे सो वायु वेग समान पवनकुमार को जा(-) ० ते हूऐ देष के आपस मे सव यों लगे वतराने कि ० महापराक्रमी यह वांनर उडा हूआ तो चला ० जाता है पर हम नही जानते कि लंका मे यह ० पैठ शकेगा कै नही तिससे इसके वल ओ ० वुद्धि की परीक्षा लिया चाहिए यों आपस मे ० मता[२] कर निदान कौतुक देषने के लिये वि(-) ० न्होने सुरसा को जो नागों की मा थी वुला क(-) ० र कहा कि यह वांनर चला हूआ जाता है तू इ(-) ० सके जाने मे कुछ विघ्न जाकर दे ओ इसका व(-) ० ल वुद्धि जान के तुरत यहां चली आ(।) इतनी ० वात के सुनती ही ओंही वह दौडी तो आगे ० वढ वाट रोक हनुमान के आगूं खडी हो कह ० ने लगी कि आओ अव शीघ्र मेरे मुह मे पै(-) ० ठो इस समय मारे भूषके मै वहुत व्याकुल ० हो रही हूं ओ देवताओं के वनाये हूये तुम मेरे ० भक्ष हो(।) हनुमान वोला(—) सुनो माता मै राम की ० आज्ञां से सीता जी को देषने जाता हूं जव व(-) ० हां से फिरूंगा ओ विन का क्षेम कुशल राम को ० जा सुनाऊंगा तव आकर मै तुम्हारे मुह मे पै(-) ० ठूंगा तुम मेरी वाट छोड दो मै तुम्हको प्रणा० म करता हूं। वह वोली नही मै निपट भूषी हूं तु(-) ० म मेरे मुह मे पैठो नही तो पकड कर मै तुम्हे खा ० जाती हूं(।) हनुमान ने कहा तो अछा मुह वा(-) ० ओ मै पैठ कर फिर तुरन्त चला जाऊं(।) यों कह ०जोगन भर के लम्वे होकर हनुमान जी सन्मु. (-) ० ख खडे हो गये तो विन का सरूप देष कर सुर(-) ० सा ने अपना मुंह पांच योजन का किया त(-) ० व हनुमान हूए द्विगुणे(।) फिर जव सुरसा ने वी(-) ० श योजन

---

१. पर। २. विचार।

का मुख वढ़ाया तव हनुमान हू(-) ० ए तीश योजन के लम्वे निदान जव सुरसा ० ने निज मुह पचाश योजन का किया तद ह(-) ० नुमान झट अंगुठा भर के हो विस के वदन मे ० पैठ तुरन्त वाहर निकल आये ओ वुस के आ(-) ० गे हो के कहने लगे कि लो अव तुम्हारे मुखडे ० मे पैठ कर मै निकल आया(।) मेरा प्रणाम लो(।) ० यों कहते हूऐ हनुमान को देष कर वह वोली ० तो अछा जाओ राम का काज कर लाओ तुम ० वडे वुद्धिमान हो तुम्हारा पराक्रम जानने के ० लिये देवताओं ने मुझे भेजा है तुम निश्चय ० सीता जी को देष के फिर रामचन्द्र का दर्शन क(-) ० रोगे(।) ऐसे कह विदा हो सुरसा देवलोक को गयी त(-) ० व पवन कुमार अति हर्षित हो वायु वेग समान ० पुन वहां से चले(।) जद कुछ दूर वढ आये तद स(-) ० मुद्र ने मैनाक नाम पर्वत से जो नाना मणि ओ ० कांचन का है कहा कि यह पवन कुमार महा व(-) ० ली हनुमान राम के काज के लिये चला जाता ० है तुम इसकी सहायता जा करो क्यूंकि जि(-) न सगर के सन्तानों ने मुजे खन के वढ़ाया ० ओ जिनसे मेरा नाम सागर हूआ तिनके वंश ० मे रामचन्द्र उत्पन्न हूऐ हैं विन के काज के लिये य(-) ० ह वानर जाता है तुम जल मे से तुरन्त उपर नि(-) ० कलो जो तुम पर विश्राम करके यह जाए (।) यह ० सुन शीघ्र वह पानी मे से उपर हूआ तो विस पर ० मनुष्य का सरूप होकर विसने हनुमान को पु(-) ० कार के कहा महाराज मेरा नाम मैनाक है आ(-) ० प के विश्राम के लिये समुद ने मुझे भेजा है ति(-) ० ससे यहां आइए अमृत समान मेरे पक्के फल ० खा विश्राम कर फिर सुख से चले जाइऐ(।) हनुमा(-) ० न ने उत्तर दिया(—) सुनो वावा[1] राम काज के हेतु मै ० जाता हूं भोजन ओ विश्राम मैं क्यूं कर करुं मु(-) ० जे शीघ्र जाना है यों कह उंगली से विस पर्वत का ० शिखर छू पुन हनुमान लंका को चले(।) जद कु(-) ० छ दूर निकल आये तो वहां सिंहिका नाम ए(-) ० क महा राक्षसी ने जो सदा पानी के भीतर रह ० ती थी ओ जो कोई आकाश मे होकर विस प(-) ०थ से चलता था विसकी छाया पकड कर उस प(-) ० थिक को षैंच कर खाती थी हनुमान की छाया प(-) ० कड हनुमान को रोका तव वे महावली लगे चि(-) ० न्ता करने कि किस विघ्न करने वाला ने यह मेरा ० वेग रोधन किया मै तो यहां किसी को देषता भी ० नही जो विससे पूछूं यह अति विस्मय मुझे ० लगता है(।) ऐसे विचार निदान झुकके नीचे दृष्टि ० पसार कर जों देषें तो सिंहिका मेरी छाया पकड ० कर षैचती है यह देषते ही पवन कुमार तुरन्त पा(-) ० नी मे कूद परे तो महाक्रुद्ध हो लातों ही से वि(-) ० से मार पुन उपर निकल आये ओ दक्षिण दि(-) ० शा को उडे तो जाते जाते कुछ घडी मे सागर के ० दक्षिण तीर पर जहां नाना लतान से छाये हू(-) ० ऐ अनेक वृक्ष सव फल रहे थे ओ विन वृक्षों ० पर नाना पक्षी रहते थे हनुमान जी जा पहुचे(।) ० तद वहां से अति निकट त्रिकूट नाम पहार के ० उपर वडी वडी अटारीन से अधिक शोभाय(-) ० मान और चहुंदिश गहिरी खाइन से महा ० अगम्य लंका नाम नगर को देष के लगे वहुत ० चिन्ता करने कि रावण से पालित इस नगरी के ० भीतर अव क्यूं कर मै पैठूं(।) निदान शोचते शोच(-) ० ते शोचा कि कि सूक्ष्म होकर रात को मै जाऊं(।) यों वि(-) ० चार दिन भर वहां ही रह रैन समय निपट

---

१. बाबा।

सू(-) ० क्ष्म रूप धारण कर द्वार पर जा जों हनुमान ० लंका भीतर जाने लगे तों ही साक्षात राक्षसी ० का वेष किये आगे आ लंका ने हनुमान को वर्जा ० और कहा तुम कौन हो जो वानर का रूप वन मेरा ० निरादर कर चोर की भांति रात को भीतर जाते ० हो ओ क्या किया चाहते हो(।) ० ऐसें कह निपट रिसि(-) ० आ कर निदान एक लात हनुमान को मार वै (-) ० ठी कि इतने ही मे वायें ही हाथ से हनुमान ने ए(-) ० क ऐसा घुसा वुसे लगाया कि ओं ही मूर्छा कर ० वह धरती पर गिर पडी ओ वार वार लगी मुह से ० लोहू उगलने(।) निदान किसी किसी प्रकार से उ(-) ० ठ कर वह लगी हनुमान महावली से कहने कि ० लो जाओ महाराज तुम्हारा भला होवे तुम ० ने लंका को जीता मुज से व्रह्मा ने आगे ही कहा ० था कि अठाईशवीं चौयुगी मे जव त्रेता युग ० आवेगा तव अयोध्या मे राजा दशरथ के ह्यां राम ० रूप हो नारायण अवतरेंगे और विनकी योग ० माया सीता जनक के घर उत्पन्न होगी तद कि(-) ० सी समय की मेरी प्रार्थना से पृथ्वी का भार दूर ० करने के लिये स्त्री भाई समेत रामचन्द्र दण्ड(-) ० कारण्य मे जाऐगें तहां सीता महामाया को ० रावण हर ले जागा तव दशरथ के लाल सु(-) ० ग्रीव से जा मिलेगें तद सीता को ढूढने के नि(-) ० मित्त सुग्रीव अनेक वांनरों को सव दिशा५[1] भेजेगा तिन ० मे से एक वांनर रात को तुम्हारे निकट आवे(-) ० गा तव तुम विसे एक लात मारोगी ओ वह भी ० तुम्हे मुक्के से हनेगा तिस मार से जद तुम व(-) ० हुत पीडित होगी तधी रावण का विनाश होवेगा ० तिस्से जों तुमने लंका को जीता तो मानो सक(-) ० ल राजान को जीत लिया इसमे कुछ सन्देह ० नही (।) ऐसे कह पुन वोली कि रावण के मन्दिर मे ० अति उत्तम एक वाटिक है विसके वीच मे महा(-) ० सुन्दर अशोक का वन है तहां शीशो का वडा सा ० एक वृक्ष है विसी के नीचे सीता जी का वास ० है ओ निपट भयावन राक्षसी सव उनकी चौ(-) ० की मे सदा रहती हैं(।) तुम जानकी को देष ही कर ० तुरन्त जा राम से समाचार जनाओ(।) आज मै ० कृतार्थ भयी (।) वहुत दिनों पर श्री रामचन्द्र का ० स्मरन जो संसार के आवागमन सें वचावन हा(-) ० रा है मुजको हूआ और राम के भक्त से दु(-) ० र्लभ संग अव मै यही चाहती हूं कि कि दशर(-) ० थ के लाल सदा मुझ पर प्रसन्न रहें(।) यह सुन ० अति हुलसित हो निदान पवन कुमार भी(-) ० तर को चले(।) इस प्रकार सागर हेल जद वे विस ० नगर मे जा पहुचे तद सीता ओ रावण की वांयी ० आंष ओ रामचन्द्र के दाहिने अंग ये सव लगे वा(-) ० र वार फरकने (।) ० इति श्री रामचरित्रे सुन्दर कां(-) ० डे प्रथमोध्याय: (।) १ (।) जव रात समय लंका मे ह(-) ० नुमान जा चूके तव सगरे नगर सीता को ढूढ(-) ० ते ढूढते निदान राजभवन मे आये तो वहां ० सव ठांव मृदंग आदि अनेक वाजे वजा वजा ० ओ मनोहर गीत गा गा नाना कौतुक करते हुए ० नर नारीन को देष और जहां तहां चारो वेद की ० धुनि सुन वहुत चकित हूऐ ओ वडी वड़ी सुन्द(-) ० री स्त्रीन मे जो वहुत शृंगार पटार किये वनठ(-) ० न कर फिरतीं थीं जानकी को नही देषकर जी ० मे कहने लगे कि सीता को यह समय कहां है ० जो इन रण्डियो के साथ हुलसें क्यूंकि वे तो स्वा(-) ० मी के वियोग से महा व्याकुल हूई होगीं विन्हे ० ऐसा हर्ष क्यू कर होवे

१. मूल पुस्तक में यह शब्द नीचे से पाँचवीं और छठीं पंक्ति के बीच में है।

गा(।) यों कह पुन जहां जहां ० गये तहां तहां अद्‌भुत ही अद्‌भुत कौतुक देषा ओ ० उज्वल ही सवका भेष(।) निदान जव जनक नंदि(-) ० नी का भेद कही न पाया लंका का कहा सुमर ० तुरन्त विस अशोक वन मे कि जहां फूलों फ(-) ० लों के भार से पेड सव नीचे को झुक रहे थे ओ ० जहां कल्पवृक्षों के बीच मे रत्न की सीढीन से ० अति सोहावन और नाना पक्षीन से शोभि ० त ओ तीरों पर सुवर्ण की अटारीन से महा मनो(-) ० हर वावलीयां अधिक छवि दे रहीं थीं पवन ० सुत आये और वहां से अति निकट देवता(-) ० न के वडे वडे मन्दिर जिनमे मणिन के शैक(-) ० डों षंभे लगे थे देष विस्मित हो जों कुछ दुर आ(-) ० गे वढें तों ही वह शीसो का पेड कि जिस पर कां(-) ० चन वर्ण पक्षी सव रहते थे औ सघन पत्तों से ० जिसके नीचे कभी धूप का दर्शन नही होता ० देषने मे आया तो हर्षित हो समीप जा सूक्ष्म ० सरूप वन डाढ पर चढ़ विसके पत्तों मे छिप कर वे ० देषें तो विस गाछ के नीचे राक्षसीन के वीच मे मै(-) ० ला कपडा पहने एक चोटी वांधे धरती पर सीता ० लेट रही हैं ओ राम के शोक से उपास करते करते ० शुष कर निपट दुवली सी हो रहीं हैं ओ किसी को ० ऐंसा नही पातीं कि जिस्से अपना त्राण होए त(-) ० व हनुमान अपने मन मे लगे कहने कि अव मैं ० सीता को देष के कृतार्थ हू कृता[1] हूआ(।) मैं ही ने रा(-) ० मचन्द्र का काज किया यह कहते ही है कि मंदि(-) ० रों के वाहर वडा कोलाहल हूआ सो सुन पवनकु(-) ० मार वृक्ष के पत्तों मे और भी छिप गये कि इतने ० मे नील पर्वत सा श्याम ओ दश शिर वीश हा(-) ० थ इनसे अति अद्‌भुत सरूप रावण स्त्रीन को ० साथ लिये कहूं से चला आता है(।) यह देष वहुत ० चकित हूऐं ओ रावण अपने भवन मे आया ० तो लगा मन मे कहने कि रामचन्द्र के हाथ से मेरा ० मरण तुरन्त किस प्रकार से होवे वे तो सीता के ० लिये भी नही आते क्या कारण है इसी चिन्ता ० मे रात हो गयी ओ विसे नींद आयी तव स्वप्ने ० देषता है क्या कि राम की आज्ञा से कोई वांनर ० यहां आया है ओ निपट सूक्ष्म सरूप हो वृक्ष ० के पत्तों मे छिपकर सीता को देष रहा है(।) यह ० अद्‌भुत स्वप्न देषते ही रावण तुरन्त उठ वैठा ० ओ अपने जी ही मे शोचने लगा कि स्वप्न क(-) ० भूं सत्य भी हो जाता है तिस्से वचन के शरों से ० जानकी कों चल के दुखित करूं जो वह वांनर दे(-) ० ष कर राम को सव समाचार जा सुनावे(।) यों विच(-) ० र[2] होत सवेरे नारीन को सं[3] लिये अति शीघ्र सी(-) ० ता के पास रावण चला जब निकट जा पहुंचा घु(-) ० घुरु ओं किंकिनी के झंझनाहट सुन सीता ० वहुत डर गयीं ओ नीचे शिर कर राम मे ध्यान ० लगा संभर वैठीं और आंषों मे आंशू लगी ० भरने इसमे[4] रावण भी आन पहुचा ओ सीता को दे(-) ० षकर कहने लगा कि ऐ प्राण प्यारी तू मुझे देष के व्यर्थ क्यूं लजाती है जिस राम का घंमड रष(-) ० ती है सो तो भाई समेत वनेचरों के बीच मे रहता ० है कभीं किसी के देषने मे आता है कभीं नही ० मैने विसे देष आने के लिये बहुत लोग भेजे ० पर किसी को वुससे भेंट नही होती तिससे वु(-) ० स निर्मोही राम को लेकर तू क्या करेगी वह यद्य(-) ० पि सदा तेरे पास रहा पर तो भी हृदय से तुज मे ० उसे तनिक भी प्रीति नही है वह महा कृतघ्न ० ओ निर्गणी है तेरा गुण ओ तेरे साथ जो जो ० भोग विलाश किया सो सव वह अधम भूल ग(-) ०

१. 'हूकृता' अनावश्यक है। २. विचार। ३. सं=सँग। ४. इतने में।

या देष मैं तुझे यहां लाया ओ तू दुख शोक ० से व्याकुल हो रही है अव भी वह नही आता ० वुसे कुछ तेरा मोह नहीं है वह निष्पराक्रमी ० मूढ झुठमुठ अपने को वीर ओ पण्डित मान ० ता है तिससे वुस नराधम को जो तुझे कधी न ० ही चाहता लेकर क्या करेगी तू मुज से प्रीति क(-) ० र मैं सकल दानवन मे श्रेष्ठ हूं मैं तेरी ही वश मे ० सदा रहूंगा ओ जो तू मुज को स्वीकार करेगी ० तो देव गंधर्व नाग यक्ष किन्नर इनकी स्त्री स(-) ० व तेरी आज्ञा मे सदा रहेंगी(।) इस भांति जव रा(-) ० वण ने कहा सुन कर सीता रिसिआ उठी ओ नी(-) ० चे शिर किये ही वीच में एक तृण रष कर यह वच(-) ० न लगी कहने(—)अरे निर्लज्ज तेरी प्रभुता मैं नीके ० जानती हूं तू वही वीर है जो रामचन्द्र के डर से भि(-) ० क्षुक सरूप होकर मेरे स्थान पर गया था और ० राम लक्ष्मण के पीछे जैसें यज्ञ मे से कुत्ता षीर ० ले भागे वैसे ही घर मे से मुझे हर लाया तिसका ० फल शीघ्र तू पावेगा अभी जो जी चाहे सो वक ० जव तू रामचन्द्र के वाणों से खण्ड खण्ड होकर य(-) ० म लोक सिधारेगा तद राम को मनुष्य जानेगा ० वे समुद्र को वांध कर अथवा वाणों से शो(-) ० ष कर रण मे तुझे मारने के लिये भाई समेत ० निसन्देह यहां आवेंगे औ सैन्य पुत्र सहित ० तुजे मार के अपने पुर मुजे ले जावेंगें यह तू ० निश्चय जान ले(।) इस प्रकार सीता को अति क(-) ० ठोर वातें सुन रावण वहुत क्रुद्ध हूआ तो ला(-) ० ल लाल आषें कर खड्ग ले ओंही विन्हे मारने ० को चला तव मन्दोदरी ने जो पति का हित चाह(-) ० ती थी विसे वर्जा और कहा(—)महाराज आप इ(-) ० से छोड दीजे यह दीन तो स्वामी के वियोग से ० आपे मर रही है ओ मनुष्य की स्त्री है इस्से ० तुझे क्या काम देव गंधर्व नागों की वहुत सी ० स्त्रीयां तुझे हैं जो मदन मद से मत्त हो हो ० तुमही को चाहती हैं(।) सुनकर दशकंधर ठंढा० हूआ ओ महा भयंकर भयंकर राक्षसीन ० को एकान्त मे ले जाकर कहने लगा कि धमका कर ० अथवा पोल्हा कर[1] सीता जीस प्रकार सें मेरी०वश होए सो यत्न तुम तुरन्त करो(।) जों तो[2] दो मां(-) ० स के भीतर वह मेरी वश होगी तव मेरे साथ रा(-) ० ज्य भोग करेगी औ दो मास के वीते भी मेरी पलं(-) ० ग पर न आवेगी तो प्रातष्काल के मेरे भोजन ० के लिये विसे मार कर तुम तल डालियो(।) यों क(-) ० ह स्त्रीन समेत रावण तो अपने मन्दिर मे ग(-) ० या और राक्षसी सव सीता पास आयीं और ० अपनी वुद्धि से वात वना वना लगीं उसे डराने(।) ० तिनमे एक ने कहा(—)हे सीता यह तेरा जोवन अ(-) ० कारथ चला जाता है रावण के साथ इसे जा ० सफल कर क्यूं भूलती है(।) दूसरी कोपकर यों ० वोली कि लो तुम चूप रहो मैं तो अभी इसके ० अंग काट के खंड खंड कर डालती हूं इसमे कु(-) ० छ मुझे विलम्व नही है(।) तीसरी तो खड्ग ले झ(-) ० ट मारने ही को उपस्थित हूई औ चौथी म(-) ० हा भयावन मुह वा[3] निगलने को दौडी(।) इस भां(-) ० ति जव जानकी को राक्षसीनी सव लगी धम(-) ० काने तव त्रिजटा ने जो विन मे वहुत वुढिआ ० थी सव को वरजा और कहा सुनो दुष्ट राक्षसी ० सव जों तो मेरा कहा तुम हित समझो तो इ(-) ० स रोती हूई सीता को तुम लोग मत डराओ ० वरन इसको नमस्कार करो मैंने अभी स्वप्न दे(-) ० षा है कि कमलनयन श्री रामचन्द्र भाई समेत ० ऐरावत

१. बहुला कर। २. बिहारी बोलियों में प्रचलित। ३: बाकर, फैलाकर।

हाथी पर चढ़ के यहां आये हैं अरु सा(-) ० री लंका जला भस्मकर सीता को अंक मे ले ० पहार के उपर जा खडे हूए हैं ओ रावण तेल ० लगा नंगा हो अपने मुण्ड की माला अपने हा(-) ० थ मे लिये पुत्र समेत गोवर के न्हद[1] मे जा ० नहाता है ओ विभीषण हर्षित हो राम के पा(-) ० स जा विन के चरण की सेवा करता है तिससे तु(-) ० म यह निश्चय जान लो कि सव प्रकार सें राव(-)० ण को मार कर विभीषण को राज्य दे सीता को ० अंक मे ले निसन्देह रामचन्द्र अपने नगर मे ० जाऐगें (।) तुम लोग झुठमुठ क्यूं अपयश लेती ० हो(।) त्रिजटा की वातें सुन कर राक्षसीनी सव व(-) ० हुत डरीं और चुप होकर वहां ही सव शो रहीं तव ० सीता विन्हों के डर से निपट व्याकुल हूंई ओ ० निज त्राण करनेवाले किसी को नही देष स(-) ० जल नयन हो अपने मन मे लगीं चिन्ता कर(-) ० ने कि अव हो न हो प्रातः काल राक्षसी सव नि(-) ० सन्देह मुजे खा डांलेंगी तिस्से ऐैसा कोई उपाय(-) ० हो ताकि जिससे अभी मै मर जाती इस प्र(-)० कार दुख से वहुत घवरा मरणाठान निदान ० डाढ पकड कर सीता लगी रोने इसलिए कि ० मृत्यु का उपाय कुछ नही जानती इति ० श्री रामचरित्रे सुन्दरकाण्डे द्वितीयोध्यायः (।) २(।) ० इस भांति अति व्याकुल हो रोती हुई सीता ने ० निदान अपने मन मे ठहराया कि मेरी चोटी ० वडी लम्वी है इसी को फांसी वना गले लगा ० अव मै अपना शरीर त्याग करूं क्यूंकि राक्ष(-) ० सीन से जों मै कदाचित वंची तो रामचन्द्र वि(-) ० ना राक्षसों के वीच में जीने से मुजे क्या फल(।)इ(-)० स प्रकार जानकी ने जद मरण ठाना तव विन ० को देष अवसर जान सूक्ष्म रूप हो धीरें धीरें ० हनुमान उसे सुना कर यह वचन लगे उपर से ० कहने कि इक्ष्वाकु के वंश मे उत्पन्न अयोध्या ० के पति राजा दशरथ हूए तिनके राम लक्ष्म(-) ० ण भरत शत्रुघ्न ये चार पुत्र कैसे हैं कि देवता स(-) ० मान ओ लोक मे विख्यात ओ एक से एक सु(-) ०लक्षण तिन चारों में जेठ रामचन्द्र हैं सो पिता ० की आज्ञा पाय सीता लक्ष्मण को संग लेकर ०दण्डकारण्य मे आ गौतमी तीर पंच-वटी मे व(-) ० से थे तहां रामचन्द्र के पीछे दुष्ट रावण ने सीता ० को हर लिया तव रामचन्द्र अति व्याकुल हो ० सीता को ढूढने निकले तो वाटमे[2] पक्षिराज ० जटायु को पृथ्वी पर पडा देष उसे स्वर्गवास ० दे कर आप शीघ्र ऋष्यमूक पहार पर आये ०तहां जव सुग्रीव से मैत्री हूई तव विन की भा(-) ० र्या हरने वाले वाली को मार कर रामचन्द्र ने कि (-)० ष्किन्धा का राजा सुग्रीव को किया तद विन्हो(-)० ने सकल वांनरन को वुला भेजा ओ सीता को ०षोजने के लिये विन्हे चहुं दिश भेजा(।) तिन्ही ० मे सुग्रीव का मंत्री मै भी एक वांनर हूं(।)संपाति ० के वचन सें शौ योजन सागर लांघ लंकापुरी ० मे आ जानकी को ढूढता हूआ धीरें धीरें अ(-) ० शोक वन मे होकर अव मै इस शीशो के गाछ ० पर आया तो यहां राम की स्त्री सीता को जो ० पति के शोक से वहुत घवरा रहीं है देषकर मै ० निपट कृतार्थ हूआ(।) यों कह वह महावुद्धिमा(-) ० न हनुमान चुप हो रहा तव क्रम क्रम सव सुन क(-) ० र सीता अति विस्मित हूई ओ कहने लगी(—) यिह ० आकाश मे क्या पवन की वोली मैंने सुनी कै ० स्वप्न देषा है इस समय तो चिन्ता से मुझे नींद ० नहीं आती है तिस्से जों यह स्वप्न नही सत्य ० है तो जिसने यह अमृत समान वचन मेरे

१. ह्रद। २. रास्ते में।

का(-) ० नो मे डाला है सो दीनदयालु आगे आकर ० मुजको देषाई दे(।) जव जानकी ने ऐसें कहा सुन ० के हनुमान धीरें धीरें पत्तों मे से नीचे उतरे ओ ० वया समान हो पीतवर्ण देह ओ लाल मुख व (-) ० नाये जानकी को प्रणाम कर हाथ जोर विन के ० आगे जा खडे हूऐ विनको देष के वे डर गयीं कि ० हो न हो मुजे ठगने के लिये वांनर का सरूप हो य(-) ० ह रावण आया है(।) यों समझ नीचे शिर किये सी(-) ० ता फिर वैठीं ओ कुछ वोलीं नही(।) तव पवन कु(-) ० मार ने कहा कि सुनो माता तुम जिसका संदेह ० करती हो सो मै नही हूं मै श्री रामचन्द्र का दास ० हूं ओ वांनरो के राजा जो सुग्रीव हैं उनका मंत्री ० हूं और जो वायु सभ के प्राण हूए हैं तिनका पु(-) ० त्र हूं(।) सुन कर जानकी वोलीं कि तुम जो कहते हो ० कि मैं रामचन्द्र का दास हूं सो मनुष्य ओ वांनर को ० संग किस प्रकार से हूआ यह मुझे समझाकर ० कहो(।) हनुमान ने उत्तर दिया कि शवरी से भेद ० पा राम लक्ष्मण पहले ऋष्यमूक पहार पर आ(-) ० ये वुस पर्वत के उपर आगे सें सुग्रीव रहते थे सो ० इनको दूर से देषकर डर गये निदान मुजसे ० कहा कि तुम इन्हो के हृदय की वात जा समझ आ(-) ० ओ किसलिये ये आये हैं(।) तव ब्रह्मचारी का स(-) ० रूप हो के मैं राम पास गया तो वुन का मन शुद्ध ० देष के वुन दोनों भाई को अपने कांधो पर उठा ० कर सुग्रीव के पास मै लाया ओ उनसे इनसे मि(-) ० त्रता करा दी तव जिसने सुग्रीव की भार्या को ह(-) ० र लिया था विस वाली को एक ही वाण से राम ० चंद्र ने मार डाला ओ वुस के राज्य पर सुग्रीव ० को विठलाया तद आपको ढूढने के लिये सु(-) ० ग्रीव ने सकल वांनरन को दिशा दिशा को भे(-) ० जा मैं भी विन के संग चला मुझे देष कर साथ ० आदर के रामचन्द्र ने मुज से कहा कि सुनो हनु(-) ० मान यह सव भार तुम ही पर है तिससे जी ल(-) ० गा के सीता को ढूढना ओ जों मिलें तो मेरा ल(-) ० क्ष्मण का षेम कुशल कहना ओ विश्वास के ० हेतु यिह मेरी अंगूठी लीये जाओ इसमे मेरा ० नाम लिखा हूआ है सीता को इसे दीजो(।) यों ० कह उंगली मे से निकाल कर विस मुंदरी को वि(-) ० न्हने मुजे दिया सो अति यत्न से मै लाया हूं आ(-) ० प इसे देष लीजे ऐंसें कह विस अंगूठी को सीता ० के हाथ पर हनुमान ने रष दिया और वुन्हे प्रणा(-) ० म कर हाथ जोड अलग जा आप खडे हूए तव ० रामचन्द्र की अंगूठी पा शिर चढा अति हर्षित ० हो सीता लगी कहने अहो कपि तुम मेरे प्राण ० दाता हौ वुद्धिमान हौ रामचन्द्र के वडे भक्त ओ ० हितकारी हौ वुन्हे तुम्हारा ही विश्वास है नही ० तो मेरे पास दूसरे पुरुष को वे क्यूं भेजते तुम मे ० रा सव दुख श्री रामचन्द्र से जा कहो जो विन को ० दया उपजे मै दो मास वचूंगी इसके आगे जों वे ० नही आवेंगे तो राक्षस सव निश्चय मुजे खा ० डालेंगे तिसमे राजा सुग्रीव आदि सकल वां(-) ० नरों समेत यहां आ रण मे पुत्र सेना सहित० दशमुख को मारकर इस संकट से जों मुझे०श्री रामचन्द्र छोडावें तो लोक मे विनकी वडी ० कीर्त्ति होगी ओ वीरों मे वडाई(।) यह समझ शी(-) ० घ्र रावण का नाश कर जिस प्रकार से रामचन्द्र० मेरा उद्धार करें सो यत्न तुम करो तुम्हे वडा धर्म ० होगा(।) हनुमान वोले कि मुजे देषते ही शस्त्र ले ० लक्ष्मण सुग्रीव सहित सकल सेना लिये रा(-) ० मचन्द्र यहां आवेगें ओ दशशीस को जी से मा(-) ० र के निसन्देह तुम्हे अयोध्या ले जाऐगें तुम ० किसी वात का संदेह मत करो(।) सुन के सीता ने ० पूछा कि वांनरों समेत एत्ता वडा सागर वे क्यूं क(-) ० र पार होगें जो यहां

आवेगें यह मुझे समझा ० के कहो जो मेरे मन की शंका जावे(।) हनुमान ० वोले(—)सुग्रीव समेत सकल सेना संग लिये मे(-) ० रे कांधों पर चढ आकाश पथ मे हो क्षण मे रा(-) ० म लक्ष्मण दोनों भाई यहां आवेगें ओ तुम्हारे ० कारण सव राक्षस को निसन्देह जलाकर भ (-) ० स्म कर डालेगें अव आज्ञा करो मैं विन का पा(-) ० स जाऊं ओ ऐसी कुछ वस्तु मुझे दो जिस्से वे ० मेरा विश्वास करें ओ हर्षित हो तुरन्त यहां आ(-) ० वें इतने वचन के सुनती ही सीता ने कुछ सोच ० विचार के अपने जूडे मे से चूडामणि निकाल ० कर हनुमान को दिया ओ कहा कि लो रामल(-) ० क्ष्मण इससे तुम्हारी प्रतीति करेगें ओ विश्वा(-) ० स के लिये एक और भी वात मै तु मसे कहती ० हूं सो यह है कि चित्रकूट पर्वत पर एक वेर ए(-) ० कान्त मे जा मेरे अंक मे शिर किये श्रीरामच ० न्द्र जी सोते थे तहां कौआ का रूपधर इन्द्र लो(-) ० क से इन्द्र का पुत्र गया तो मेरे पांव का अंगुठा ० लाल देष आमिष जान नख ओ चोंच से ल(-) ० गा वुसे वार वार षोदने(।) जव कि विसमे से लो(-) ० हू लगा निकलने तद रामचन्द्र उठ वैठे ओ मे(-) ० रा अंगुठा देष चकित हो कहने लगे कि किस ० दुष्ट ने तुम्हारी उंगली मे यह वुरा घाव कर दि(-) या(।) यों कह शिर उठा आगें देषें तो वह कौ(-) ० आ मुझ पर वार वार झपटता है विसके चोंच ० नख मे लोहू लगा हूआ है(।)यह देषते ही अ(-) ० ति कोपकर श्री रामचन्द्र ने एक तृण उठा लि(-) ० या ओ वुसी को वाण वना जों विस कौऐ पर ० चलाया तों ही वहां से वह भागा ओ वाण भी ० उसके पीछे लगा निदान भागा भागा वह कौ(-) ० आ जद तीनो लोक फिर आया औ इन्द्र व्र(-) ० ह्मादिक भी वुस की रक्षा न कर शके तद वह ० पंक्षी रामचन्द्र के चरणों पर जा गिर पडा विसे ० शरणागत देष दयावन्त हो श्रीरामचन्द्र ने ० कहा मेरा शस्त्र सदा सफल है तिस्से तू अप(-) ० नी एक आंष इसे दे के यहां से चला जा निदा(-) ० न वायीं आंष देकर कौआ निज भवन को ग(-) ० या सो हे हनुमान जी श्रीरामचन्द्र ऐसे सम(-) ० र्थ हैं पर मुझे अव क्यूं तजते हैं(।) वे वोले कि हे ० देवी जों रामचन्द्र जानेंगे कि तुम यहां हौ तो ० यह निश्चय जान लो कि राक्षसन से शोभिति[1] ० इस लंका को एक क्षण मे भस्म कर डालेगें(।)य(-) ० ह सुन जानकी ने वुन से पूछा कि जैसा तुम्हा(-) ० रा निपट सूक्ष्म शरीर है वैसे ही तुम्हारे साथी ० सव भी जों है तो भला कहो असुरों से तुम क्यूं ० कर लडोगे(।) जव सीता ने यों कहा तव मेरु मंदर ० पर्वत समान ओ राक्षसन को महा भयदाय(-) ० क ऐसा अद्‌भुत अपना सरूप हनुमान ने सी(-) ० ता को दिषलाया तद पहार तुल्य इनका रूप ० देष वे वहुत आनन्द मे मगन हूंई ओ कहने ० लगी कि पवन कुमार तुम वडे समर्थ हो मुझे ० निश्चय हूआ अव अपना यह रूप छिपाओ ० नही तो तुम्हे महावलवान देष राक्षसी सव ० रावण सें जा कहेगीं तुम शीघ्र राम पास जा(-) ० ओ तुम्हारा पथ शुभदायक होवे(।) तव हनुमा(-) ० न ने कहा माता मैं कैक[2] दिन का व्रती हूं तुम्हा(-) ० रे दर्शन से अव मुजे पारण करना उचित ० है तिस्से आपके देषे हूए जों कही पक्के फल ० होवें तो वताइऐ वे ही मुझे पारण होगें(।) यों क(-) ० ह सीता की सैन पा एक वाटिका मे वायुकुमार ग(-) ० ये वहां से अमृत फल भोजन कर तृप्त हो फिर ० जनकनन्दिनी पास आये

१. शोभित। २. कई एक।

उन्हे प्रणाम कर वि (-) ० दा हो रामचन्द्र के ह्यां चले (।) जद कुछ दूर निकल ० आये अपने मन मे विचारने लगे कि जो दूत ० निज स्वामी के काम के लिये कहूं आवे ओ वि(-)० सकाज से कुछ अधिकाम[1] नही कर चले सो म (-) ० हा अधमों मे गिणा जाता है तिससे कुछ औ(-)० र भी करतूंति कर रावण को देष ओ वात चि (-) ० त विससे कर पुन राम का तर्शन जा कीजे (।) यह०जी मैं ठांन ओंही हनुमान फिर कर अशोक ० वन मे आये तों जहां सीता थीं वुस गाछकों ० छोड के एक क्षण मे वहां के सकल वृक्षों को उ (-) ० खाड के विस वाटिका को शून्य कर डाला (।) सो दे(-) ० ष राक्षसीनिओं ने सीता से जा पूछा कि वांन (-) ० र का सरूप किये यह वीर कौन है तुम शीघ्र व(-)० ताओ (।) वुन्होने उत्तर दिया कि यह राक्षसों की ० माया तुम ही सव जानती हो मै तो अपने शो(-) ० क संताप से आपे व्याकुल हो रही हूं (।) तुम लोग का ० प्रपंच कुछ नही मै जानती (।) जद जानकी जी ० ने ऐसें कहा राक्षसीनी सव निपट डरी हूंई ० तुरन्त रावण पास आयीं ओ हनुमान की स(-) ० भ करतूति लगीं वुससे कहने कि महाराज ए(-) ० क महा पराक्रमी कोई वांनर सीता का पास ० आया था सो वुन से कुछ संदेश कह एक क्ष(-)० ण मे उस कपि ने सारा अशोक वन उजाड डा(-) ० ला ओ अटारीन को तोड दिया ओ जितने ० वहां रषवारे थे तिन सव को मार करके निर्भ(-) ० य हो वहां ही वैंठा है इस प्रकार अशोक वन का ० वडा वुरा समाचार सुन रावण तुरन्त उठ खडा ० हूआ और लाष किंकरों को वहां भेजा कि ज(-)० हां पर्वत समान हो लोहे की षंभा ओ गदा आ(-)०युध हाथ मे लिये ओ लाल मुह डरावन सरूप ० किये हनुमान जी वैंठकर पूंछ फहरा रहे थे (।) जद ० वे किंकर सव निकट जा पहुंचे ओ नाना शस्त्र ० लगे इन पर चलावने तव उठ कर के इन्होने मा(-) ० रे गदान के एक क्षण मे विन को मछड की भांति ० पीस डाला (।) यह सुन अति क्रुद्ध हो फिर रावण ० ने पांच सेनापतिन को भेजा उन सव को भेज उन सव को भी हनु(-) ० मान ने समाप्त किया तद कोप से मूर्छित होक(-) ० र दशशीश ने अपने मंत्रीन के सात वेटे भेजे ० निदान आगे की भांति पल भर मे तिन सभों ० को भी ठेकाना लगा पुन हनुमान अपने स्था(-) ० न पर आ षडे हूए ओ राक्षसों को निहारने ल(-) ० गे कि देषिए अव कौन सा वीर मेरे पास आ ल(-) ० डता है (।) इतने मे रावण का पुत्र महा-प्रतापी अ(-) ० क्षय कुमार आन ही पहुचा तव देषते ही उछ(-) ० ल कर पवन कुमार ने वुस के शिर मे एक ऐंसा ० गदा मारी कि वह ओंही रह गया (।) इस प्रकार ज(-) ० व कि अक्षय कुमार रण मे मारा गया तद पुत्र ० का मरण सुन दशानन कोप से महा जाज्वल्य(-) ० मान हूआ तो इन्द्रजित नाम अपने दूसरे वेटे ० से कहने लगा हे पुत्र जहां वह शत्रु है तहां मैं ० अव जाता हूं विसे मार के अथवा वांध करके ० तुम्हारे पास मै लाता हूं (।) वह वोला पिता मेरे रह(-) ० ते हूऐ ऐंसा दीन वचन आप क्यूं कहते हैं आ(-) ० प कुछ खेद मत कीजे मै वुस वांनर को ब्रह्मपा(-) ० श से वांध कर शीघ्र तुम्हारे निकट ला देता हूं (।) ० यों कह रथ पर चढ़ राक्षसों को साथ लिये इन्द्र (-) ० जित तुरन्त हनुमान पास आया (।) इसे देषते ० ही वे गर्जे उठे और षंभा हाथ मे लिये गरुड ० की भांति उड कर

---

१. अधिक काम।

झट आकाश में जा लगे मं(-) डल मारने तद इन्द्रजीत ने आकाश मे घूमते ० हुए उनको देष कर वाणों से छेद डाला (।) इस प्र (-) ० कार से कि पांच शर तो शिर मे मारे ओ हृदय मा(-) ० ह आठ(,) पावों मे छ(,) पूंछ मो एक(,) इस भांति मा(-) ० रे वाणों के वुनकी सारी देह छेद कर निदान ० सिंह-सा लगा गर्जने (।) तव पवन कुमार वहुत ० रिसियाने तो घोडे सारथी समेत विस के रथ ० को षंभे से मार क्षण मे चूर्ण कर डाला तद म(-) ० हा प्रतापी मेघनाद दूसरे रथ पर चढा ओ व्रह्मा(-) ० स्त्र से हनुमान को वांध के रावण पास ले चला (।) ० इस प्रकार पाशवद्ध हो नगर देषते हूए जव ० कि हनुमान वहां सें चले कौतुक देषने के लिये ० पुर वासी सव वुन के पीछे पीछे हो लिये ओर ० क्रुद्ध हो हो घुसों सें लगे विनको मारने ओ दां(-) ० त पीसने पर व्रह्मास्त्र की महिमा रहे ओ आ(-) ० गे कुछ काज करना था इस कारण कैक[1] क्षण ० के लिये व्रह्मास्त्र का वंधन अंगीकार कर वा(-) ० यु सुत विस फंद मे परे थे नही तो वुस वंधन ० को काटकर पल मे वे निकल जाते क्यूंकि जि(-) ० न का नाम नित्य जप क्षण मे कर्म वन्धन से छू(-) ० ट कर लोग सव विस परमपद को जाते हैं जो(,) ० कोटीन सूर्य सा प्रकाश हो रहा है(,) तिन श्रीरा(-) ० मचन्द्र के चरण कमल का नित्य ध्यान करते ० जो सदा मुक्त हो रहा है वुसकों और किसी वं (-) ० धन से क्या होना है ० इति श्रीरामचरित्रे सु ० न्दरकाण्डे तृतीयोध्यायः(।) ३ (।) जद सभा मे रा(-) ० वण के आगे हनुमान को मेघनाद पकड लाया ० तव कहने लगा कि देषो पिता मैं इसे व्रह्मास्त्र से ० वांध लाया हूं(।) इसी दुष्ट वांनर ने महा असुरन ० को मारा है अव मंत्रीन से विचार के जो कुछ इ(-) ० सका दंड करना है सो कीजे(।) यह साधारण वांन(-) ० र नही है कोई देहधारी है(।) जव वुसने यों कहा ० अपने आगे वैठे हूए प्रहस्त को देष कर रावण ० ने कहा कि तुम इस शाखा मृग से पूछो कि तू ० कहां सें औ किस लिये यहां आया और यहां तु(-) ० जे क्या कार्य है ओ अशोकवन को क्यूं उजाडा ० अरु किस कारण हमारे राक्षसन को वल से ० मारा(।) प्रभु की आज्ञा पाय अति आदर साथ ० प्रहस्त लगा हनुमान से पूछने कि ऐं वन्दर तु(-) ० म्हे किसने यहां भेजा है(।) महाराज के निकट तुम ० सत्य कहो डरो मत मैं तुम्हे प्राण दान कर शीघ्र छो(-) ० ड दूंगा(।) सुन कर वे वहुत हर्षाने ओ रावण को ० जो तीनों लोक का कंकट[2] था देष वारवार राम ० को सुमर विनकी निर्मल कथा एक क्रम से ल(-) ० गे कहने (—) इस प्रकार से कि सुन देवतान का वैरी[3] ० मैं विन रामचन्द्र का दूत हूं जो सव के हृदय मे ० वसे हूए हैं ओ अपने नाश के लिय[4] जिनकी ० भार्या को तू कैसें हर लाया है जैसें यज्ञ की षी(-) ० र कुकर चोरा लेवे सो रामचन्द्र दंडकारण्य से ० पहले मतंग पर्वत पर आये तहां आग समी(-) ० प जा सुग्रीव से मित्रता कर एक ही वाण से वि(-) ० न्होंने वाली को मारा ओ वुसके राज्य पर सु(-) ० ग्रीव को विठलाया(।) वे वांनरों के प्रभु राजा सु(-) ० ग्रीव वडे वडे वांनरन को संग लिये राम लक्ष्म(-) ० ण के साथ ही प्रवर्षण गिरि पर आ उतरे हैं ० ओ सीता को ढूढने के लिए अति वलवीर वां(-) ० नरन को सव दिशा भेजा

१. कई एक। २. कंटक। ३. इस प्रकार से कहने लगा, "हे देवताओं के वैरी, सुनो.....।" ४. लिये।

है(।) तिन्ही मे का एक ० मै भी वांनर हूं सीता को षोजता हूआ यहां ० आ निकला तो वुन को देषा मेरी जाति चं(-) ० चल है इस कारण मैंने तुम्हारी वाटिका उ(-) ० जाडी सो देष धनुष वाण ले राक्षस सव मु(-) ० झे हठ से मारने को आये तव मैंने विन को ० मार कर अपनी देह वंचायी(।) शरीर सव प्रा(-)० णीन को प्यार[1] है अव व्रह्मास्त्र से वांध कर मेघ ० नाद जो मुझे लाया है सो व्रह्मवर के प्रभाव ० से इस व्रह्मास्त्र ने मुज को छूआ पै त्याग चू(-) ० का है यह सव मै जानता हूं पर दयावश हो तु(-) ० म्हे समझावने के लिये आपसे इसमे वद्ध हो ० कर मै आया हूं तिस्से हे रावण जों तुम अ० पना हित विचारो तो राक्षस की बुद्धि पर क(-) ० धी मत जाओ(,) जिसमे संसार से मुक्ति हो(-) ०वे विस वातों मे चित्त दो(,) तुम व्राह्मण हो उत्त(-) ० म वंश मे तुम्हारा जन्म है पुलस्त्य मुनि के पो(-)०ते हो ओ कुवेर के भाई वन्धु हो(,) कुछ निरे रा(-) ० क्षस ही नही हो (।) इससे मेरा कहा मान कर ० श्रीरामचंद्र को तुम भजो(।) वे पुराण पुरुष हैं ० ओ लक्ष्मी के पति यह समझ अपनी मू(-) ० र्खता विचार वैरत्याग सीता को आगेकर कु(-) ० ल परिवार समेत तुम राम से जा मिलो तुम्हा(-) ० रा भय दूर होगा वे रघु-नाथ निज शरनागत ० को प्यार करते हैं(।) यह अमृत समान वचन ० सुनकर दशानन प्रसन्न तो क्या होगा उल(-) ० टा ही रिसिया उठा ओ कोप से लाल लाल ० आषें कर हनुमान से कहने लगा(—)अरे दुष्ट ० वन्दर तू दीठ होकर मेरे आगे क्यूं इतना व(-) ० कता है(।) वह राम कौन है वुस सरीषे वन जंतु ० तो कितनेन ही पडे हूए हैं सुग्रीव समेत वि(-) ० स अधम को तो मै शीघ्र जा मार डालता हूं ० ओ तुझे तो अभी तिस पीछे सीता को मा(-) ० र कर निदान राम लक्ष्मण को देष लूंगा प(-) ० र वांनरन समेत सुग्रीव को पहले वधूंगा(।) इ(-) ०तनी वात के सुनते ही महाकोप कर हनुमा(-) ० न वोल उठा कि तू एक तो क्या कोटिन रावण० ही के आवेगा तो अभी मेरे साम्हने तू खडा ० नही होवेगा ओ श्री रामचन्द्र तो ईश्वर हैं वु(-) ० न का तू क्या कर शकक्ता है मै उनका दास हूं०मेरा पराक्रम अपार है(।)जव पवन कुमार ने ० यों कहा अति क्रुद्ध होकर दशशीश ने ए(-) ० क राक्षस से जो पास वैठा था कहा कि इस वन्द(-)० र को खड्ग से मार कर तुम खंड खंड कर डालो ० जो मेरे भाई वन्धु सव देषें (।) तद विभीषण ने ० रावण को वर्जा ओ कहा(—)महाराज तुम समा(-) ० न महा प्रतापी राजान को इसे मारना उचित ० नही यह पराये राज्य का वांनर है ओ दूत है ० जों यह मारा जावेगा तो जिस राम से तुम अ(-) ० पना वध चाहते हो वुसे यहां का समाचार को ० जा सुनावेगा जो वह लडने को आवेगा तिस ० से वध के तुल्य इसे और कुछ दण्ड दो कि ० जिससे चिह्नित होकर यह वांनर जावे जो इ (-) ० स को देष कर सुग्रीव समेत राम तुरन्त यहां ० आवें ओ तुम से युद्ध करें(।) इस प्रकार विभी(-) ० षण की वातें सुन रावण वोला तो अछा वां(-) ० नरन को पुंछ वडा प्यारा है तिस्से इसके पूं(-) ० छ मे यत्न से कपडे लपेट आग लगा सग(-) ० रे नगर इसे फिराओ जो राक्षस सव इसकी दशा ० देषें(।)यह सुनते ही अनेक वस्त्र ओ शण[2] तेल ० मे भिंगा भिंगा हनुमान के पूंछ मे राक्षसों ने दृ(-) ० ढकर लपेटे ओ वुस पुछ के उपर आग रष औ(-) ० र

१. प्यारा। २. सन।

रस्सियो से दृढ कर हनुमान को बांध कर ढोल ० समेत सव लगे नगर मे फिरावने ओ वार वार ० उन्हें मारने (—) यह कहते हूए कि यह चोर है (,) पर ह(-) ० नुमान को अपना कुछ नाम करना था इस ० लिये दानव सव जोजो गंजन करें सो सभ ये ० लगे सहने जवकि पछिम द्वार के निकट जा ० पहुंचे तव पवनकुमार सूक्ष्म होकर विस वंध(-) ० न मेसे झट निकले ओ पर्वत समान हो कूद ० कर तुरन्त गढ के भीतर जा रहे (।) वहां एक षंभा ० हाथ मे ले वहां के सकल रषवांरन को मार चूर्ण ० कर झट एक अटारी पर चढ गये वहां सें पूंछ ० लहरायें विस घर पर से वुस घर पर जा जा ल(-) ० गे सारी लंका जलावने (।) तिस समय उनचा (-) ० शो वायु लगे वहने ओ सगरे नगर हाहाका(-) ० र पर गया औ हा पुत्र हो नाथ हा वाप यह क(-) ० ह कर रोती पीटती हूंई दानवन की रंडियां को (-) ० ठों की छत्तों पर चढ चढ कर ऐसी शोभने लगीं ० जैसें देवताओं की स्त्रियां होवे (।) इस प्रकार से ० जव हनुमान एक विभीषण का घर छोड़ स(-) ० गरे पुर भस्म कर चूके तव वहां से कूदकर समु(-) ०द्र मे जा रहे तहां पूंछ वुझा सुचित हो पुन० विदा होने के लियें सीता पास चले (।) कहते हैं ० कि वायु के नेह से ओ सीता की विनती से ह(-) ० नुमान का पूंछ आग नही जला शकी वर(-) ० न वुस समय और भी शीतल हूई थी तिस ० का कारण यह है कि जिनका नाम सुमर स(-) ० कल पातक से लोग मुक्त होते ओ तीनों ता(-) ० प से वंचते हैं तिन रघुवर का श्रेष्ठदूत जो हनु(-) ० मान वह इस आग मे भला क्यूं कर जले ० इति ० श्री रामचरित्रे सुन्दर काण्डे चतुर्थोध्यायः (।) ४ (।) ० इस अनन्तर सीता के समीप जा प्रणाम कर ० हनुमान ने कहा (—) देवी अव आज्ञा करो मैं रा(-) ० म पास जाऊं जो मुझे देष के वे शीघ्र यहां आ(-) ० वें (।) ऐसे कह तीन वेर विन्हे प्रदक्षिण ओ प्र(-) ० णाम कर जव वे विदा हो चले तव यह वचन ० कहने लगे (—) हे सीता तुम किसी वात का संदे(-) ० ह मत करो कोटीन वांनर साथ लिये सुग्री(-) ० व लक्ष्मण समेत श्रीरामचन्द्र को तुरन्त ० देषोगी मेरे पहुंचने ही का विलम्ब है (।) वे वो(-) ० ली कि तुम्हे देष के मै सव दुख भूल गयी थी ० पर अव तुम जाओगे तो इसके आगे विना० रामचन्द्र का समाचार सुने मै क्यूं कर जीऊं(-) ० गी (।) हनुमान ने कहा (—) ऐसा ही है तो अछा तुम ० मेरे काधों पर चढो मै तुम्हे एक क्षण मे राम ० पास पहुंचा दूंगा (।) तद फिर वे वोलीं कि यों नही ०सागर वांध कर अथवा वाणों से शोष कर वांन(-) ० रन सहित श्री रामचन्द्र यहां आवें ओ रण मे रा(-) ० वण को जी से मार कर जों मुजे यहां से ले जाएं ० तद लोक मे वुनकी वडी कीर्त्ति होगी तिससे ०तुम जाओ मै तव तलक किसी प्रकार अपना ० प्राण वंचाऊंगी (।) ऐसें वुझा समझा जव सीता ० ने हनुमान को विदा किया तव सागर पार होने ० के लिये लंका के निकट एक पर्वत के उपर वे चढ ० गये तो वुसे पांवों मे दवा पवन समान ऐसे वहां ० से उडे कि यद्यपि वह पहार तीश योजन का ऊं(-) ० चा था पर विन के भार से पाताल मे इतना धस ० गया कि पृथ्वी का समान हो गया ओर जद ह(-) ० नुमान आकाश पथ होकर चले औ लगे गर्ज(-) ० ने तद विनकी चाल पा इस पार के वांनर सव भी ० अति हर्षित होकर लगे गर्जने ओ आपस मे ० कहने कि हो न हो ये हनूमान हैं इनके गर्जने से ० यह जाना जाता है कि रामचन्द्र का कार्य किये ० चले आते हैं (।) इतने मे पर्वत पर हनुमान आ उ(-) ० तरे ओ आते ही सकल वांनरन से कहने लगे ० कि भाइओ मै सीता को

देष सारी लंका जला ० रावण से वातचित करके चला आता हू तुम स (-) ० व अभी मेरे आथ राम सुग्रीव के पास चलो (।) इत (-) ० नी वात सुनते ही अति हर्षित हो सब वांन ( ) ० रों ने हनुमान को गले लगा लिया तिनमे कि (-) ० तने एक तो लगे विनका पूंछ चूमने ओ कित (-) ० ने एक लगे नांचने (।) इस प्रकार अति आनन्द ० मे मगन हो निदान हनूमान समेट सव भाल ० वांनर प्रवर्षण गिरि को चले तो कुछ दूर जा वा (-) ०ट के निकट राजा सुग्रीव की मधुवन नाम वाटि (-) ०का को देष वहुत हर्षित हो अंगद से सव कह (-) ० ने लगे (—) महाराज हम सव वहुत भूषें हैं तुम आ (-) ० ज्ञा करो तो इस वाग के फल खा सन्तुष्ट हो लें ० तद राम लक्ष्मण का दर्शन जा करें (।) वह वोला ० कि हनुमान ने कार्य किया है इनकी कृपा से तुम ० सव भर इछा भोजन करो मै इसमे अति प्रस (-) ० न्न हूं इतनी वात के सुनते ही विस वाटिका मे ० सव पैठ गये ओ रषवारों का कहा न मान अ (-) ० मृत समान फल तोड तोड कर खाने लगे (।) इत (-) ० ने मे दधिवक्ता की आज्ञा पा सव रषवार मार मा (-) ० र कर दौडे तद अंगद आदि वांनरो ने विन्हे ० घुसों ओ लातों से मार चूरण कर डाला (।) यह ० देष दधिवक्र जो सुग्रीव का मामू था निपट ० क्रुद्ध हूआ ओ सकल रषवारन को साथ लि (-) ० ये राजा सुग्रीव पास जा कहने लगा महारा (-) ० ज वहुत दिनों के पाले हूऐ तुम्हारे मधुव (-) ० न क़ो हनुमान ओ अंगद ने अव नष्ट कर दिया ० ओ चौकी देनहारन को मार गिराया (।) इस भां (-) ० ति दधिमुख की वातें सुन राजा सुग्रीव वहुत० हर्षित हूए ओ कहने लगे कि हो न हो सीता ० को हनुमान देष आया नही तो किसका सा (-) ० मर्थ्य है कि मधुवन के निकट जा शकक्ता[1] (।) इस (-) ० मे जानाता है कि पवनकुमार ही ने कार्य कि (-) ० या इसमे कुछ संदेह नही है (।) यह भणक[2] राम ० चन्द्र के कानों मे जा पहुची तो सुग्रीव से पूछने ० लगे (—) हे राजा तुम क्या सीता का वारवार नाम ० लेते हो (।) वे दूर ही से वोले महाराज हनुमान आ (-) ० दि वांनर सव जानकी जी को देष मधुवन मे ० आ फल खाते हैं ओ जो रषवारा वरजता है ० विसे मारपीट कर वहां मे निकाल देते हैं इस ० से यह निश्चय होता है कि सीता का समाचार ० वे सव ले आये नही तो आपका काज किये ० विना मेरे मधुवन मे कभी नही जा शकक्ते (।) इ (-) ० स प्रकार सीतापति से वतराकर फिर रषवार (-) ० न को सुग्रीव ने कहा कि तुम सव डरो मत मेरी ० आज्ञा से अंगद आदि सकल वांनरन को मेरे[3] पा (-) ०स वुला ले आओ (।) यह सुनते ही वायुवेग समा (-) ० न वे सव वहां से चले ओ हनुमान आदि पास ० जा कहने लगे कि राजा कि आज्ञा है तुम अ (-) ० भी चलो राम लक्ष्मण समेत सुग्रीव तुम्हे शी (-) ० घ्र देषा चाहते हैं ओ तुम पर वे वहुत प्रसन्न हैं (।) ० जव कि वुन्हो यों कहा हनुमान अंगद को आ ० गे कर आकाश पथ हे[4] तुरन्त वांनर सव वहां ० से चल खडे हूऐ जद समीप जा पहुचे पहले रा (-) ० मचन्द्र को तिस पीछे सुग्रीव को सभों ने दंडवत ० प्रणाम किया ओ हनुमान लगा राम से कहने (—) ० महाराज सीता लंका मे हैं मै देष आया अप (-) ०ना षेम कुशल वुन्होने तुम्हे कहा है ओ अशो (-) ० क वन मे शीशो के पेड के नीचे राक्षसीन के वीच ० मे वे हैं पर आहार तज निपट दुवली सी हो

१. सकता। २. भनक। ३. मेरे। ४. से।

रहीं ० है ओं शिरम एक चोटी वांधे मलीन कपडा प(-) ० हने दिन रात हा राम हा राम यही रटती रहती ० हैं मैंने वुन्हे देष कर वहुत आशा भरोशा दिया ० इस प्रकार से कि अति सूक्ष्म सरूप ही वृक्ष की ० शाखा मे छिप कर एक ओंर से मै लगा तुम्हा(-) ० री कथा कहने कि घर से रामचन्द्र दण्डकारण्य ० मे आये तहां विन के वाहर गये पर सीता को ० रावण हर ले गया तद सुग्रीव से मित्रता कर रा(-) ० मचन्द्र ने वाली को जी से मारा तव सीता को ढू (-) ० ढने के लिये बड़े बडे वीर वांनरन को सुग्रीव ने ० चहुं दिश भेजा तिन्ही मे सुग्रीव का मंत्री ओ रा(-) ० मचन्द्र का दास मैं भी एक वांनर हूं(,) यहां आ सी ० ता को देषा तो मेरा परिश्रम सुफल हूआ(,) हे ० सीता तुम किसी वात का संदेह मत करो श्री ० रघुनाथ अव शीघ्र यहां आवेगें ओ रावण ० का विनाश करेगें(,) महाराज यह सुनती ही जा(-) ० न की जी वहुत चकित हूईं तो दृष्टि पसार चंहु ० दिश निहार कर कहने लगीं कि अमृत समा(-) ० न यह वचन किसने मुझे सुनाया है जों यह सच ० है तो वह अपना दर्शन मुजे दे(।) इतनी वात के सु(-) ० नते ही धीरें धीरें पेंड पर से मै नीचे उतर आया ० ओ सीता को प्रणाम कर अलग जा हाथ जो(-) ० ड के मैं खडा हूआ जब कि वहुत प्रकार से वे ल(-) ० गी पूछने कि तुम कौन हो तव एक क्रम से पह(-) ०ले अपना सभ समाचार सुनाया पीछे तुम्हा(-) ० री दी हूई अंगुठी मैंने वुन्हे दी तद अति विश्वा(-) ० स कर आपका षेम कुशल सव पूछ के वह व(-) ० चन वे कहने लगी कि हे हनुमान राक्षसीन ० के दिनरात के डांट डपट से जैसी व्याकुल मु(-) ० झ को देषते हो सो सव समाचार राम से तुम क (-) ० हिओ(।) ओ मैं वोला हे देवी वे तुम्हारी ही चिंता मे ० रहते हैं तुम्हारा वृत्तान्त सुने विना दिन रात ० विन को तनिक चैन नही है तुम्हारा समाचार मैं अ(-) ० भी जा कहता हूं वे सुनते ही सुग्रीव लक्ष्मण स(-) ० मेत सकल वांनरन की सेना लिये तुम्हारे पा(-) ० स आवेंगे जो कुछ परिवार सहित रावण का ० विनाश कर अपने नगर तुम्हे ले जावंगें पर ० ऐसी कुछ वस्तु मुजे दो जिससे मेरी वात पति(-) ० आंएं यह सुन अपने जूडे मे से एक रत्न नि‍का(-) ० ल कर तुरन्त सीता ने मुज को दिया ओ चित्र(-) ० कूट गिरि पर कौऐ ने जो चरित्र किया था सो भी ० तुमसे कहने को वे वोलीं ओ रो रो कर कहने ल(-) ० गी कि स्वामी से मेरा षेम कुशल कहिओ अ(-) ० रु लक्ष्मण देवर को अज्ञानता से जो कुछ ० उत्कट वचन मैंने कहा था सो मेरा अपराध ० तुम वुन से क्षमा कराइओ और हे हनुमान ० जिस प्रकार सें रामचन्द्र मुजे यहां से ले जांए सो ० यत्न तुम कीजो यों कह अति व्याकुल हो सु(-) ० सक सुसक कर लगी रोने तव विन्हे बहुत आशा ० भरोशा दे सुचित कर मैं विदा हूआ तो चल ० ने के समय मैंने अशोक वन को जा उजाडा ० ओ रावण के पुत्र समेत अनेक राक्षसन को ० क्षण मे वहां मार रावण से वातचित कर सा (-) ० री लंका जला हर्षित हो एक क्षण मे यहां आन पहुंचा हूं (।) इस प्रकार जव पवन कुमार ने ० कहा सुन कर श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने ओ ० कहने लगे देषो जो काज देवताओं से भी हो ० ने का नहीं सो हनुमान तुमने किया इस उप (-) ० कार की सन्ती[1] जो अपना सर्वस्व मैं तुम्हे दूं तो ० भी मै तुम्हारा ऋणी ही सदा रहूँगा (।)ऐसे कह ० हनुमान को गरे लगा सजल

१. के बदले।

नयन हो दशरथ ० के लाल वहुत मगन हूएं ओ कहने लगे(—)सु(-) ० नो हनुमान तुम सा आज्ञाकारी मेरा भक्त ० इस लोक मे दूसरा कोई नही है मै तुमसे वहु(-) ० त प्रसन्न हूं: इति श्री रामचरित्रे सुन्दर कां(-) ० डे पंचमोध्याय:(।) ५(।) समाप्त(।) यों कह फिर राम(-) चन्द्र लगें हनुमान को सराहने कि शौ योज(-) ० न सागर को लांघ शकक्ता ओ किसका साम(-) ० र्थ्य है कि राक्षसन से पालित लंका मे जा अ(-) ० पनी प्रभुता जनावे जो काज देवताओं से भी ० नही हो शकक्ता सो वायु के पुत्र ने किया ऐंसा ० भृत्य सुग्रीव को न कोई हूआ होगा न फिर ० कोई होवेगा सीता के दर्शन से सुग्रीव लक्ष्म(-) ० ण समेत हम सव को हनुमान ने वंचा लिया (।) ० पर यह चिन्ता अव मुजे हूई कि जिसके सुम(-) ० रने से मेरा जी घवराता है(—)विस समुद्र को जो ना(-) ० ना जलजन्तु से भर रहा है क्यूं कर हम स(-) ० व पार होगें जो सीता को देखेगें (।) सुग्रीव वोले ० कि समुद्र लांघ लंका को जा भ्रष्ट कर सहज ० मे रावण को हम मारेगें आप किसी वात की चिं(-) ० ता जिन कीजे चिन्ता ही काज विगाडती है इन ० महावीर वांनरन को आप देषिए ये सव तुम्हा(-) ० रे लिये आग मे कूदने को उपस्थित हो रहे हैं अ(-) ० व समुद्र पार होने को पहले संमत कीजे तिस ० पीछे जद लंका मे हमलो' जा पहुचेगें तद यह ० जान लीजे कि रावण का विनाश हो चूका क्यूं(-) ० कि तीनो लोक मे ऐंसा किसी को हम नही देष (-) ० ते जो रण मे तुम्हारे साम्हने ठहर शके सभ प्र(-) ० कार से हम लोग का जय होगा इसमे कुछ संदे(-) ० ह नही हम प्रतिज्ञा कर कहते हैं ओ जितने का ० सव डौल हम देषते हैं(।) इस भांति जव सुग्रीव ० ने कहा तव विन की वात अंगीकार कर राम(-) ० चन्द ने हनुमान से कहा अछा जिस प्रका ० र से होगा विस प्रकार से समुद्र हम पार होगें ० पर जहां देवताओं का भी गम्य नही विस लंका ० का सरूप हमे सुनाओ तद जैसा कुछ विचार मे ० ठहरेगा सो किया जाएगा(।) सुन के हनुमान हाथ जो(-) ० ड कर कहने लगे कि त्रिकूटगिरि के शिखर पर ० अति मनोहर लंका नगर वसता है ओ सुवर्ण ० ही का वडा सा ऊंचा सा विस का घेरा है निर्मल ज(-) ० ल से भरी हूई ओ महा अगम्य चहुंदिश उस पु(-) ० री के खाई हैं ओ नाना वावलीन से वन उप-वन ० की शोभा से ऐंसा वह नगर सोहावन हो रहा है ० जिसका वर्णन मुज से नही किया जाता ओ म(-) ० णिन के खंभन से अति अद्भुत कांचने ही के व(-) ० हां सभ घर हैं वुस नगर के पछम द्वारा पर सहस्त्र(-) ० न घोडे हाथी ये सव रहते हैं ओ पूरव उत्तर द्वार ० पर कोटिन चढैते ओ दक्षिण द्वार पर रथवाले ० लाषों राक्षस ओ अनगिणत हाथी घोडों स(-) ० मेत नाना शस्त्र वांधे हूऐं असंख्य लोग(।) ये सव ० देवढीयों मे जा जा सदा लंका की चौकी देते हैं ० इस प्रकार नाना शस्त्र ओ वीरन से यद्यपि लं(-) ० का भर रही है यहां तक कि क्या सामर्थ्य है जो इ(-) ० न्द्र वरुण ये सभ भी वहां जा के कुछ ढिठाई करें ० तद भी रावण की चौथाई सेना हम मार आये ० है ओ सारी लंका जला भस्म कर दिया ओ सुव(-) ० र्ण के वडे वडे मंदिर ओ अनेक शस्त्र इन सव को ० तोड डाला(।) यह सव काज आपकी प्रताप से हम ० कर आये हैं अव यही संमत है कि इन महावली ० वांनरन को साथ लिये यहां से प्रयान कर सागर ०

१. हम लोग।

तीर आप डेरा कीजे (।) इस भांति हनुमान की बातें ० सुन श्री रामचन्द्र ने सुग्रीव से कहा कि सव सेना (-) ० पतिन को तुम अभी प्रस्थान कराओ यह विज (-) ० य नाम मुहूर्त वीतता है इसमे प्रस्थान कर राक्षस (-) ० न समेत लंका का विनाश कर रावण को वध सी (-) ० ता को मैं लाऊंगा देषो मेरी दाहिनी आंष फर (-) ० कती है सव प्रकार हमारा जय हैं तुम सेनापति ० न को कहो कि सव सेना वीच मेकर तुम लोग अ (-) ० भी प्रस्थान करो (।) ऐसे वुझा समझा फिर सी (-) ० ता पति वोले कि हनुमान के कांधे पर चढ़ कर ० सभ से पहले मैं चलता हूं सुग्रीव तुम मेरे सा (-) ० थ रहो ओ अंगद के कांधे पर लक्ष्मण चढ़ ले ० और गज ० गवाक्ष ० गवय ० मैन्द ० द्विविद ० नल ० नील ० सुखेन ० जाम्ववान आदि जितने वी (-) ० र हैं सो सव अपनी अपनी सेना लिये चलें (।) ० इस प्रकार जद राम ने सुग्रीव से कहा तद वि (-) ० न की आज्ञा पाय अति वलवीर ओ महाग (-) ० ज समान वांनर सव आपस मे नाना कौतुक ० करते ओ आगे आ आ राम से कहते हूए कि अ (-) ० भी जा रावण को हम मारते हैं ओ गाछों पर ज (-) ० हां कहूं फल पावें उन्हे खाते हूऐ झुंड के झुंड ० तुरन्त दक्षिण दिशा को चले ओ सुग्रीव समे (-) त राम लक्ष्मण ये दोनों भाई सेना के वीच में ० हो लिये तिस समय वे ऐसे शोभने लगे कि मानो ० नक्षत्रन के वीच चन्द्रमा सुरज होवे (।) इस भांति ० सारी पृथ्वी छांयें असंख्य वांनरन की सेना महा (-) ० मगन हो दिन रात वहां से ऐसी शीघ्र चली कि क्ष (-) ० ण भर भी न कोई कहूं विश्राम कर शके जव ना (-) ० ना वन पहार देषते हूऐ मलय ओ सह्य नाम ० पर्वत लांघ आये ओ जहां तरंगन के अति भ (-) ० यावन शब्द होते थे उस सागर तीर आन पहु (-) ० चे तव हनुमान के कांधे से उतर सुग्रीव सहित ० पानी समीप जा रामचन्द्र यह वचन कहने लगे ० कि सागर तीर तो हम सव आन पहुचे अव जव ० तलक इसे पार होने का कुछ यत्न न ठहरे तव ० तलक सेना यहां ही डेरा करे (।) इतने वचन के सुन (-) ० ते ही सुग्रीव ने समुद्र तीर सभों को डेरा दिया त (-) ० व महाअपार सागर को जो मगरों का घर है ओ ० आकास सा जिसका कुछ आदि अन्त नही ० सुझता देष कर वे सभ वहुत लगे चिन्ता कर (-) ० ने कि नाना जलजन्तुन से भरे हूऐ इस समुद्र ० को किस प्रकार सें हम लोग पार होंगे जो राक्षसन ० मे महाअधम रावण को मारेगें इस प्रकार वी (-) ० र सव तो चिंता सें अति व्याकुल भये ओ सीता ० को सुमर कर रामचन्द्र लगे वहुत विलाप करने ० ०इति श्री रामचरित्रे युद्धकाण्डे प्रथमोध्यायः (।) १ (।) ० यहां तो यों हो रहा था ओ लंका मे हनूमान ० की करतूति जो वडे वडे देवतान से भी होने की ० नही देष रावण कुछ एक डर गया ओ सव मं (-) ० त्रीन को वुला नीचे शिर कर यह वचन कहने ल (-) ० गा कि जहां दूसरे किसी का प्रवेश होने का नही ० तिस लंका मे आ सीता को देष वीरन समेत अ (-) ० क्षय कुमार को मार सारी लंकापुरी जला तुम ० सव को जीत सुचित हो हनुमान सागर पार हो ग (-) ० या यह वुस की करतूति तो तुमने देषी अव क (-) ० हो इसका क्या यत्न करना (।) तुम सव मेरे मंत्री ० हो जिससे मेरा कल्याण होवे सो आपस मे ठह (-) ० रा कर कहो (।) वे सव वोले कि महाराज तुम इन्द्रा (-) ० दिक को रण मे जीतनवाले हौ तुम्हे राम से ० किस वात की शंका तुम्हारा वह पुत्र मेघनाद ० है जिसने इन्द्र को वांध कर अपने नगर मे ला ० रख्षा था ओ कुवेर को जीत पुष्पक विमान ० विससे छीन कर तुम भोगते हो औ जिसके ० डर से सारा

जगत कांपता है विस यम को तु(-) ० मने जीता वुस के शस्त्र से तुम्हे तनिक भय ० नही हूआ ओ वरुण का पराजय सहज मे ० तुमने किया ऐसा कोई देव राक्षस नही है जो तु(-) ० म से हार न वैठा तुम्हारे डर से मयासुर ने आ(-) ० पसे अपनी कन्या तुम्हे ला दी ओ सदा तुम्हा (-) ० री वश मे रहता है फिर किसका मुह है जो आ(-) ० प के साम्हने ठहर शके हां हनुमान ने सच ढि(-) ० ठाई की है पर जानकर हमने वुस का पीछा ० नही किया इसलिये कि वह वन्दर है इसे अप(-) ० ना पौरुष क्या दिषलावे यह समझ के वुसे छो(-) ० ड दिया तिससे क्या वह वीर कहावेगा अथवा ० हमलोग सावधान नही हूऐ तिससे क्या हम ० को उसने जीत लिया जों हमलोग लडने को ० चाहते तो कधी नहीं यहां से जीता हूआ वह ० जाता(,) अव हम सव को अथवा एक ही को जों ० आज्ञा कीजे तो सारा जगत विना मानुष का ० करके चले आवें(।) इस प्रकार जव मंत्री सव क(-) ० ह चूके तव कुंभकर्ण ने रावण से कहा कि यह ० काज तुमने केवल अपने नाश के लिये कि(-) ० या है ओ भाग्य से वंच आये हो नही तो जों रा(-) ० मचन्द्र तुम्हे देषते तो कवी नही जीते हूऐ तु(-) ० म यहां आते वे मनुष्य नही साक्षात नाराय(-) ० ण हैं ओ सीता जी लक्ष्मी है कि जिन्हे राक्षस(-) ० न के विनाश के लिये यहां लाये हो पर जैसें वं(-) ० शी निगल कर मछली पीछे वहुत पछताती ० है वैसें ही सीता को लाने से तुं भी पीछे पछता(-) ० ओगे ऐसे कह फिर कुम्भकर्ण वोला(—)यह अ(-) ०नुचित काज यद्यपि अन-जान कर तुमने ० किया पर तो भी जिसमे तुम प्रसन्न होगे सो(-) ०ई मैं करूंगा यह सुन इन्द्रजीत ने वाप से कहा(—) ० महाराज आप आज्ञा कीजे तो सुग्रीव लक्ष्म(-) ० ण को ओ सकल वांनरन समेत राम को मार के ए(-) ० क क्षण मे मैं चला आऊं आप मेरा वचन स(-) ० त्य कर मानिऐ इतने मे राम के वडे भक्त ओ स(-) ० व वुद्धिमानों मे अतिश्रेष्ठ विभीषण वहां ० आंन पहुंचे ओ रावण को प्रणाम कर विस(-) ० के निकट जा कहने लगे कि कुम्भकर्ण इन्द्र(-) ० जीत महापार्श्व महोदर ० निकुम्भ ० कुम्भ ओ ० अतिकाय ये सव भी युद्ध मे राम के सन्मुख ० ठहर नही शकेगें और किसकी गिणती हैं तु(-) ० किस घमंड मे भूले हो सीता सरूप ग्रह तुम्हा(-) ० रे शिर पर चढा है तुम्हारा कल्याण किसी प्रका(-) ० र मुझे दृष्ट नही आता जों मेरा कहा मानो तो ० जव तक रामचन्द्र के चोष[1] वाण सव लंका मे राक्षसन के शिर न काटें ओ रूप मे पर्वत स(-) ० मान पराक्रम मे सिंह तुल्य वांनर भाल आ(-) ० के जव लग दांतों ओ नहों से दानवन के प्रा(-) ० ण न लेंवें तिसके पहले ही सीता से अपराध ० क्षमा करा वहुत धन समेत वुन्हे राम पास भें(-) ० ज दो नही तो यह जान लो कि स्वर्ग मर्त्य पा(-) ० ताल कहूं तुम जाओगे अथवा इन्द्र वरुण म(-) ० हेश ये सव तुम्हारी रक्षा करें तद भी राम तु(-) ० म्हे जीते नही छोडेगें(।) इस प्रकार विभीषण ० ने वहुत शिषलाया पर जैसें मरनेवाले प्राणी ० को औषध नही भावे वैसे ही विन की वातों ० पर रावण तनिक भी सावधान न हूआ ओ ० कालवश हो विभीषण से कहने लगा(—) रे दुष्ट० मैनै तुझे नाना पदार्थ खिला पिला कर एत्ता ० वडा किया ओ सदा तेरी भलाई मे रहता हूं ० तद भी तू मेरी वुराई चाहता है(,) तू भाई नही ०

---

१. चोखे = नुकीले।

निसंदेह मेरा शत्रु है तुज सा कृतघ्न किसी ० को आजतक नही देषा तेरे साथ रहना मुझे ० उचित नही है देषो जातिन का विनाश सदा जा(-) ० ति चाहते हैं जों दूसरा कोई मेरे आगे ऐसा ० वचन वोलता तो वुसी क्षण मैं वुसका शिर ० काट डालता धिक्कार है तुजे राक्षसों के कुल ० मे तू अधम उत्पन्न हूआ(।) इस भांति जव रा(-) ० वण ने अति उत्कट उत्कट वचन कहा तव ० महावली विभीषण हाथ मे गदा लियें वीच ० सभा मे चार मंत्रीन समेत तुरन्त अधर मे जा ० रहे ओ क्रुद्ध हो वहां से कहने लगे कि सुनो ० रावण तुम आपसे अपना विनाश मत क(-) ० रो मैं तुम्हारे भले के लिये कहता हूं तुम यद्य(-) ० पि मुझे धिरकारते हो तथापि तुम जेठ भाई ० पिता समान हो मै तुम्हारा कल्याण ही चाह(-) ० ता हूं तुम यह नीके जान लो कि दशरथ के ० घर मे राम सरूप तुम्हारा काल उत्पन्न हूआ ० है ओ राजा जनक के मंदिर मे सीता सरू(-) ० प काली उत्पन्न हूई है वे दोनों पृथ्वी के भा(-) ० र दूर करने के लिये यहां आये हैं वे ही काल ० तुम्हारे शिर पर चढ़े हैं इस कारण मेरी हित ० वात तुम नही सुनते श्रीरामचंद्र मनुष्य न(-) ० ही वे आप रूप परमेश्वर है प्राणीन के वाह(-) ० र भीतर सव मे व्याप रहे हैं व्रह्मा की प्रार्थ(-) ० ना से तुम्हारे नाश के लिये यहां आये हैं अ(-) ० पनी प्रतिज्ञा क्यूं कर वे झूठ करें कुल परि(-) ० वार समेत तुम्हारा संहार निश्चय करेगें त(-) ० द मुझ से देषा नही जाऐगा इस कारण रा(-) ० म पास मैं जाता हूं तुम सुख से अपने घर मे विरा(-) ० जो(।) ऐंसें वहुत वकझक सव घर द्वार तज राम ० के चरण कमल की सेवा के लिये चार मंत्रीन स(-) ० हित विभीषण तुरन्त वहां से राम पास चला ० इति ० श्री रामचरित्रे युद्धकांडे द्विती-योध्या(-) ० यः(।) २ (।) जद विभीषण अधर मे राम के सन्मु(-) ० ख आन पहुंचा उपर ही से यह वात लगा वुन(-) ० से कहने कि हे कमलनयन हे स्वामी मेरा प्र(-) ० णाम लीजे मै रावण का छोटा भाई हूं विभी(-) ० षण मेरा नाम है भाइ ने मुजको निकाल दि(-) ० या है इसलिए मैं आपकी शरण मे आया रा(-) ० वण से मैंने हीत वात कही कि सीता को राम ० पास तुम भेज दो पर कालवश होकर मेरी ० वात पर वह सावधान नही हूआ उलटा ही ० खड्ग लेकर मुझे मारने को दौडा तद डर कर ० चार मंत्रीन समेत मुक्त होने के लियें मैं तु(-) ० म्हारी शरण मे आया(।) सुनकर सुग्रीव ने राम से ० कहा महाराज यह अधम राक्षस वडा मायावी ० है कवहूं मत इसका विश्वास कीजे तिस पर रा(-) ० वण का भाई है आयुध लिये हूऐ मंत्रीन के सा(-) ० थ ही छल से हम सव की मारने आया है वांन(-) ० रन को कह दीजे इसे तुरन्त मार डाले मुजे कप(-) ० टी सा यह लक्षित होता है ओ आपके विचा(-) ० र मे क्या ठहरता है सो कहिए (।) मुस्कुरा कर वे वो(-) ० ले कि मैं अभी चाहूं आधी पल मे सातो ० लोक नष्ट कर डालूं फिर जों का तों सृज दूं ० तुम किसी वात का भय जिन मानो यह परम ० साधु है इसे शीघ्र मेरे पास लाओ मेरा यह प्र(-) ० ण है कि सव प्राणी मे जो कोई नीच से भी अ(-) ० ति नीच है ओ वह मुजे ऐक वेर भी कहे कि तु(-) ० म मेरी आपदा हरो तद मैं वुस का भी संकट ० नाशता हूं ओ यह तो उत्तम व्राह्मण है इस ० का भय तो अवश्य दूर किया चाहिऐ इतनी ० वात के सुनते अति हर्षित हो विभीपण को ० सुग्रीव राम पास लाया तव श्याम सुन्दर ० विशाल लोचन विकशित वदन ओ लक्ष्म(-) ० ण सहित धनुष वाण लिये ऐंसे रामचन्द्र जी ० को देष के विभीषण ने साष्टांग

दंडवत किया ० ओ हाथ जोर गिडगिडाकर लगा वुनकी ० स्तुति करने इस प्रकार से कि हे भक्त-वत्सल ० हे सुग्रीव के मित्र हे सीतापति हे रघुनन्दन ० मै तुम्हे वार वार प्रणाम करता हूं तुम सव के ० माता पिता ओ जगत के आदिकारण हौ ० तुम्हारी माया से मोहित मनुष्य तुम्हारी म(-) ० हिमा नही जानते इन्द्र अग्नि यम वरुण ० कुवेर रुद्र ये सव तुम ही हौ ओ चर अचर प्रा(-) ० णीन के वाहर भीतर व्याप कर जगत सरूप ० हो के तुम ही भास रहे हौ पर माया से छिप ० कर मनुष्य से लगते हो तुम्हारे चरण कमल० की उत्तम भक्ति पाय सहज मे संसार से मै ० मुक्त हूआ चाहता हूं हे करुणानिधान तुम ० मुज पर दयालु होकर मेरा त्राण करो(।) इस प्र(-)० कार विभीषण की वातें सुन वहुत प्रसन्न हो ० भक्त वत्सल श्री रामचन्द्र वोल उठे कि तुम ० क्या चाहते हो सो वर तुम्हें मै दूं(।) विसने कहा हे ० कृपा निधान मै धन्य हूं आपके चरणकम(-) ० ल के दर्शन से निसंदेह मै मुक्त हूआ अव ० मुझ सा भाग्यवान पवित्र ओ श्रेष्ठ इस लो(-) ० क मे दूसरा कोई नही होगा मै तुम से विष(-) ० य का भोग कुछ नही मांगता कर्म वंधन से ० छोडा-वनहारी तुम्हारे चरण मे मुझे भक्ति ० होवे यही वर मै चाहता हूं(।) तव वे कहने लगे कि ० सुनो जो मेरे भक्त वहुत शान्त है ओ काम क्रो(-) ० ध आदि जीत कर योग मे मगन है विनके ० हृदय मे निसन्देह मै सीता समेत वसता हूं ० तिससे सव विषय वासनातज सदा शान्त ० होकर तुम मेरा नित्य ध्यान किया करो इस म (-) ० हा घोर संसार सागर को सहज मे पार हो जा(-)० ओगे मै तुम्हे वर दिया तुम्हारा किया हूआ ० मेरा स्तोत्र जो कोई पढेगा अथवा मुज मे ० प्रीति होने के लिये किसी को लिख देगा ओ ० जी लगा कर सुनेगा वह अन्त समय मुजी मे ० मिल जागा(।) यों कह भक्ति से प्रसन्न हो श्री रा(-) ० मचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा भाई तुम समुद्र० मे से शीघ्र जल लाओ मै विभीषण को लं(-) ० का का राजा करूं मेरे दर्शन का फल अभी ० यह पावे जव तलक चन्द्र सूर्य धरती अरु ० लोक मे मेरी कथा रहें तव तलक लंका का ० राज्य यह करे ऐसे कह लक्ष्मण से कलश मे ० जल मंगा मंत्रीन समेत भाई से तुरन्त विभी (-) ० षण को रामचन्द्र ने राज्य का अभिषेक करा(-) ० या तिस समय सव वांनरोने धन्य धन्य क(-) ० र वहुत विन्हे सराहा ओ सुग्रीव उठकर वि(-) ० भीषण से मिले और कहने लगे कि श्री र(-) ० घुनाथ जी के हम सव कोई दास हैं तिन सभों ० मे अतिश्रेष्ठ आज से तुम हूए अव जिस ० प्रकार से रावण का विनाश होवे वैसी श्री र(-)० घुनाथ की सहायता किया चाहिए(।) वह वो(-) ० ला कि रामचन्द्र तीनों भुवन के नाथ हैं विन ० की सहायता करने की योग्यता हममे क्या ० है पर जहां तक होगा वहां तक तुम्हारे साथ ० विनकी टहल करेगें(।) इतने मे रावण का भेजा हू(-) ० आ शुक नाम महा असुर वीच आकाश मे ० वहां आकर सुग्रीव से यह वचन कहने ल(-) ० गा कि महाराज तुम्हारे पास दशशीश नें ० मुजे भेजा है यह कहने को कि तुम वडे कुल ० मे उत्पन्न और सकल वनवासी के रा ० जा ओ मेरे भाई समान हौ तुम किस लि(-) ० ये राम की सहायता करते हो विसकी भा(-) ० र्या मै हर लाया हूं इसमे तुम्हारा क्या अका(-) ० ज होता है तुम वांनरन समेत किष्किन्धा ० को फिर जाओ यह लंका देवताओं को भी ० हाथ लगने की नही और अति अल्प वल ० मनुष्य वांनर ये किस गिणती मे हैं(।)। यह सु(-) ० नते ही वांनर सव वहुत रिसियाने तो ओं(-) ० ही अधर मे कूद जा किचकिचा

कर घुसों ० से लगे विस दैत्य को मारने तद वुसने राम ० से कहा महाराज दूतन को मारना उचित ० नही इन वांनरन को आप वरजिऐ(।) इस ० प्रकार दानव की अति आरत वचन सु(-) ० न राम नें वांनरों को वर्ज दिया तव वह दुष्ट ० राक्षस पुन सुग्रीव से कहने लगा(—) राजा जी ० महाराज अव मैं जाता हू रावण से क्या जा ० कहूंगा सो उसके संदेश का उत्तर आप दी(-) ० जे(।) वे वोले मेरी ओर से तुम कहिओ कि ० वांनरों मे जैसा नीच वाली मेरा भाई था वै(-) ० सा ही राक्षसों मे महाअधम तू है कुलप(-) ० रिवार समेत तुझे अभी आके मैं मार डा(-) ० लता हूं श्रीराम की भार्या हर कर तू कहां ० जा शकक्ता है(।) यों कह प्रभु की आज्ञा पा(-) ० य शुक को तुरन्त पकड कर सुग्रीव ने वांध ० रष्षा(।) इस अनन्तर सागर देष कोप से ला(-) ० ल लाल आंखें कर रामचन्द्र लगे भाई से ० कहने देषो लक्ष्मण यह समुद्र वडा दुष्ट ० है हमारे आगमन से इसे हर्ष नही है इसी ० लियें हमारे दर्शन को आता नही यह ह(-) ० मको मानुष जानता है ओ समुझता है ० कि वांनरों मे मेरा यें क्या कर शकक्ते हैं इसी ० घमंड से मारे तरंगन के और भी उमड चला(।) ० तुम देषो इसे अभी मैं शोष डालता हूं जो ० अति निश्चिन्त हो या वंधा नही[1] वांनर सव ० पार जाऐं(।) यों कह महा क्रोध कर काल ओ ० अग्नि समान वान तूणी मे से तुरन्त निका(-) ० ल धनुष पर चढा पुन यह वचन वे कहने ल(-) ० गे कि राम के वाण का चमत्कार सव प्राणी दे(-) ० षें नदीन के पति इन सागर को अभी भस्म ० कर डालते हैं(।) इस भांति जव श्री रामचन्द्र ० लगे कहने पर्वत वन समेत धरती लगी कां(-) ० पने ओ चहुंदिश से महा अंधियाला सा ० हो आया ओ डर कर एक योजन भर समु(-) ० द्र भीतर हट गया और छोटे वडे जितने वि(-) ० स मे जल जन्तु थे सो सव वहुत व्याकुल भ(-) ० ये इस अनन्तर अति सुन्दर शरीर धारण ० कर नाना आभरण पहन अनेक रत्न हा(-) ० थ मे लिये पानी मे से तुरन्त समुद्र वाहर नि(-) ० कल आया ओ राम के आगे जा सभ मणि रष ० दंडवत कर हाथ जोड यह वात लगा विनसे ० कहने(—)हे जगन्नाथ हे त्रैलोक्य रक्षक तुम मे(-) ० रा त्राण करो सारा जगत रचते हूऐ तुमने मु(-) ० ज को महा जड स्वरूप वनाया देवता का रचा० हूआ मेरा स्वभाव कौन दूर कर शके निपट ज(-) ०डवुद्धि ओ मूरख होकर मैं तुम्हे क्यूं कर पह(-) ० चानूं तुम निर्गुण व्रह्म हौ क्रीडा करने के लिए(-) ० यें माया मे छिप के मनुष्य से लगते हो अव ० मेरा अपराध क्षमा कीजै मैं तुम्हारी शरण ० मे आया तुम भक्तवसल हौ मुज को अभ(-) ० य दान दीजे लंका की वाट मैं आपको देता ० हूं)।(।)जव विसने ऐसें कहा श्री रामचन्द्र कुछ ० एक प्रसन्न हूए ओ वोले कि मेरा वाण सदा ० अमोघ है तिससे तुम शीघ्र वताओ किस ० देश मे इसे मैं फेंकूं सुन के महा तेजस्वी साग(-) ० र ने विनती की कि महाराज यहां से उत्तर दे(-) ० श मे द्रुमकल्पनाम एक जगह है वहां वहुत ० पापी लोग वसते हैं वे दिन रात मुजे दुख देते ० हैं वहां ही इस शर को आप फेंक दीजे इत(-) ० नी वात के सुनते ही जद राम ने विस शस्त्र ० को छोडा तद द्रुमकल्प मे जा एक क्षण मे ० अहीरों की मंडली जला भस्मकर पुन वह ० वाण आके राम की तूणी मे पैठ गया(।)यह कौ(-) ० तुक देष सागर वहुत चकित भया ओ नम्र० हो कर श्री

---

१. बाधा-रहित ।

रघुनाथ से कहने लगा कि आप ० की सेना मे विश्वकर्मा का पुत्रजो नल है वह ० इस मेरे जल मे अव वांध वांधे वह वुद्धिमा(-) ० न इन कामों मे वडा दृढ़ है विसी से यह काज स(-) ० धेगा ओ लोक मे तुम्हारी उत्तम कीर्त्ति होगी(।) ० ऐसें कह सुन राघव को प्रणाम कर सागर तो० अंतरधान हो गया तव लक्ष्मण सुग्रीव ० समेत आपस मे संमत कर रामचन्द्र ने नल ० से कहा कि वांनरन के साथ होकर समुद्र मे ० तुम शीघ्र वांध वाधो(।) सुनकर वह वहुत आ(-) ० नन्द मगन हूआ ओ सेनापतिन समेत वां ० नरों से वडे वडे पर्वत वृक्ष मंगा शौ योजन स(-) ० मुद्र को तुरन्त दृढ कर वांध लिया ० इति श्री ० रामचरित्रे युद्ध काण्डे तृतीयोध्याय:(।) ३(।) ज(-) ० व समुद्र वांध चूका तव वुस वांध पर रामचन्द्र० ने एक शिव की स्थापना करी ओ उस महादे(-) ०व का नाम रामेश्वर रष्षा ओ विसे पूजा हर्षि(-) ० त हो लोगों के हित के लिये यह वचन कहा ० कि इस सेतु वंध को जो कोई प्रणाम करेगा ० और रामेश्वर का दर्शन करेगा वह मेरे अनु(-) ० ग्रह से व्रह्महत्यादिक पाप से मुक्त होवेगा अ(-) ०रु जो नर सेतु वंध मे न्हा कर रामेश्वर को देषेगा ० और काशी मे जा शंकल्प कर वहां से गंगा ज(-) ० ल भर ला के रामेश्वर को स्नान करावेगा वह ० निसंदेह व्रह्मपद को प्राप्त होवेगा(।) इतनी ० कथा सुन कर पार्वती ने शिव से पूछा महारा(-) ० ज वह वांध कितने दिन मे वांधा गया सो आ(-) ० प समझा कर हमे कहिए जो हमारे मन का सं(-)० देह मिटे(।) वे वोले कि प्रथम दिन मे तो चौदह यो(-) ० जन ओ दूसरे मे वीश तीसरे चौथे दिवस मे ० इक्कीश वाईश पांचवें दिन मे तेइश योजन ० इस क्रम से सागर मे नल ने वांध वांधा तव ० असंख्य वानर सव वुस पर होकर तुरन्द समु(-) ० द्र पार हूऐ ओ लंका के निकट सुवेल नाम प(-)० र्वत पर गये और राम लक्ष्मण भी हनुमान अं(-) ० गद के कांधों पर चढ़ के लंका को देषने के लि(-) ० ये उस पहार पर गये तो देषते क्या हैं कि नाना ० ध्वजा पताकान से ओ चित्र विचित्र अटारीन ० से लंका की अति अद्‌भुत शोभा हो रही है ओ ० विस नगर मे एक कोठे के चौडी सी छत पर ० मंत्रीन सहित वैंठ कर रावण आपस मे वात(-) ० चित कर रहा है औ शिरों मे किरीट मणि पट्ट ० ने अति सुन्दर हूआ है ओ कैसा लगता है ० कि जैसा नील पर्वत होवे ओ वर्षाकाल का ० श्याम मेघ अरु अनेक छत्र चौरन से शोभित ० हो रहा है(।) यह देषकर रामचन्द्र ने शुकासुर को ० छोड दिया तव वांनर से मार खाता हूआ व(-) ० ह भाग कर रावण पास आया रावण ने हंस ० के वुस से पूछा कि क्या जी तुम्हे वांनरों ने वहु(-) ० त संताया वुह कहने लगा कि सागर पार जा ० जव मैं तुम्हारा संदेश सुग्रीव से लगा कहने ० तव छौकर[1] वांनरों ने मुजे पकड लिया ओ ० घुसों से लगे मारने ओ नहों से नोचने दांतों ० सें काटने तद रामराम कर मेरा पुकार सुन राम के ० वर्जने से विन्होने मुझको किसी किसी प्रका(-) ० र से छोड दिया तव डर से भाग के मैं यहां आया रा(-) ० क्षसों ओ वांनरों की दोनों सेना मैंने देषी इन्हो(-) ० का कवंहू मिलाप होने का नही देषो वांनर सव ० तुम्हारे पुर के निकट आन पहुचे अव कै तो सी(-) ० ता को राम के पास भेज दो कै लडने को उपस्थि(-) ० त हो इन दोनों मे एक शीघ्र करो ओ राम ने मुझ ० से कहा है कि

---

१. छोकड़े।

रावण से मेरी यह वात तुम वोलि(-) ० ओ कि जिस वल से जानकी को तुम हर ले गये ० हो सो अपने भाई वन्धु ओ सेना समेत आके ० मुजे दिषलाओ मै वडे तडके आके लंका न(-) ० गरी को देष लूंगा ओ मारे वानों के तुम्हारे रा(-) ० क्षसन की सेना ध्वस्त कर डालूंगा यह तुम ० देष लोगे तुम सव प्रकार सचेत हो मै तुमसे व(-) ० हुत क्रुद्ध हूं यों कह रामचन्द्र चुपके हो रहे औ(-) ० र जहां लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण थे विस स्था(-) ० न मे गये(।) जों ये चारों ही अभी चाहें तों तुम्हारी ० लंका को उखाड के भस्म कर डालें और वांनर ० सभतो कहूं पडे रहें तिन चारों मे भी जैसा कु(-) ० छ राम के पराक्रम रूप शस्त्र मैने देषे विस्से ० यह मुजे निश्चय होता है कि लक्ष्मण सुग्रीव ० विभीषण ये भी तीनो अलग रहैं एकेले रा(-) ० मचन्द्र जों जी के धरें तो तुम्हारे पुर मे आके स(-) ० व को मार डालें वह देषो वांनरों की असंख्य ० सेना जो राम की आज्ञा से सुवेल पर्वत पर द(-) ० ल वादल सी उमड आयीं हैं मेघ समान वां(-) ० नर सव वहां गर्जते हैं किसे सामर्थ्य है जो वु(-) ० न्ह की गिणती कर शके पर जो जो विनमे प्र(-) ० धान हैं तिनका नाम सुनो मै तुमसे कहता हूं ० कि लंका के साम्हने लाषों सेनापतिन के वी(-) ० च मे अतिहर्षित होकर वे जो षडे हैं सो राजा ० सुग्रीव हैं ओ वुन के पास सेनान के पति अरु ० अग्नि के पुत्र नील महावीर हैं ओ वे जो वार(-) ० वार पूंछ पहरा रहे हैं ओ रूप मे पर्वत के शृंग ० समान लगते हैं सो वाली के पुत्र अंगद महा(-) ० वली हैं ओ जिन्होने यहां आकर के सीता को ० देषा और तुम्हारे पुत्र को मारा सो वे विख्या(-) ० त हनुमान हैं ओ वुन के पास जो रूपा सा झ(-) ० लकता है सो महा वुद्धिमान वडा पराक्रमी श्वे(-) ० त नाम वांनर है अरु वार वार सुग्रीव पास जो ० जाता आता है विस अतुल पराक्रमी का ना(-) ० म रंभ है वह अभी चाहे तो एकेला ही आक(-) ० र लंका को एक क्षण मे उलट डाले ओ वे जो ० क्रुद्ध हो होकर तुम्हारे नगर को ऐंसे देष रहे ० हैं कि मानो इसे जला ही देंगे सो (को) टिन सेनाप(-) ० तीन के नायक हैं इनका नाम शरभ है इसी ० प्रकार ० पनस ० द्विविद ० मैन्द ० वे जो साम्हने ० दृष्ट आते हैं एक से एक महावीर हैं ओ वि(-) ० श्वकर्मा के पुत्र वे नल नाम महावली हैं जि(-) ० न्होने सागर माह सहज मे चार शौ कोश का ० वांध वांधा है किसका सामर्थ्य है जो वांनरों ० की गिणती कर शके ओ वुन्हो का गुण वर्ण(-) ० न करे सव एक से एक शूर हैं सभों को युद्ध की ० श्रद्धा है राक्षसों समेत इस लंका को ये सव ध्व(-) ० स्त कर शकते हैं(।) इन्हों के साथ जितनी सेना हैं ० सो सुनो मै तुमसे एक एक कर कहता हूं कि स(-) ० हस्र लाष कोटि ओ एकतीश सहस्र कोटि ० वांनर ये तो एक नील के संग है इसी भांति अं(-) ० गद हनुमान ० श्वेत ० रंभ ० शरभ ० पसन ० द्विवि (-) ० द ० मैन्द ० नल ० ये नव सुग्रीव के और जो मंत्री ० है तिन्हो के साथ भी इतने ही इतने ही जान ० लो इनसे अधिक और जितने वीर हैं विन ० के संग कितनी सेना है यह कहने का साम (-) ० र्थ्य मुजे नही है तिससे हे रावण श्रीरामच(-) ० न्द्र मानुष नही ये साक्षात आदि नारायण ० हैं ओ जगत सरूपिणी सीता विनकी माया ० हैं(।) इन्हीं दोनों से स्थावर जंगम सव संसार उ(-) ० त्पन्न हूआ तिस्से चर अचर जितने प्राणी ० हैं विन सभों के ये माता पिता हैं इन से वैर क(-) ० रना भला नही तुम भूल कर सीता को हर ला ० ये हौ यह जगत अनित्य है इसमे मल मूत ० मांस हाड ओ दुर्गंध इनो से भरा हूआ भोग ० का यह अध्रुव देह कि जिसके लिये अने(-) ० क

ब्रह्महत्यादिक पाप किये हो किसी न कि ० सी दिवस अवश्य छूट जाऐंगी यिह् विचार ० शरीर का अभिमान तज शुद्ध मन से जोतिः ० सरूप भगवान को भजो ओ स्त्री पुत्रादिक ० से सदा उदास रहो (।) भोग के लिये क्यूं आप से ० अपना नाश करते हौ विवेक का घर मानुष की ० देह् पाकर (,) विशेष व्राह्मण की (,) तिसमे भी भा (-) ० रत खण्ड मे ऐसा मूर्ख होगा जो अप ० नी देह् अपने वश मे न करके भोग पर चि (-) ० त्त दौडा वेगा तिस्से उत्तम व्राह्मण हो (,) पुल (-) ० स्त्य मुनि का पोता (;) कहा (कर) अज्ञानी सा भोग ० के पीछे क्यूं तुम झुठमुठ सदा दौडते हो अ ० व से मेरा कहा मान सव का संग त्याग भक्ति ० से सदा राम को सुमरो ओ सीता को उन्हें स (-) ० मर्पण करो सव पाप से छूट कर सहज मे ० तुम विष्णुपद को पहुचोगे नही तो संसा (-) ० र के आवागमन मे सदा पडे रहोगे मै तुम्हा (-) ० रे हित के लिये कहता हूं मेरा वचन अंगीका (-) ० र करो नही तो निश्चय तुम्हारा नाश होगा ० इति श्री रामचरित्रे लंका कांडे चतुर्थो (-) ० ध्यायः (।) ४ (।) इस प्रकार शुकासुर की वातें कि ० जिनके श्रवण से अज्ञानता जाती है सुन ० कर रावण वहुत रिसियाना ओ लाल ला (-) ० ल आषें कर यह वचन लगा वुससे कहने (—) ० अरे मतिमन्द तू सेवक होकर गुरु समान ० क्यूं मुजे ज्ञान वतावता है मै तीनो लोक को ० शिषलानेवाला हूं तू मुजी को लगा शिष (-) ० लाने (,) तुजे लाज नही लगती (,) मै तुजे अभी ० मार डालता पर मेरा दूत होकर तू राम पास ० गया था इस्से छोड दिया चल जा यहां से ० दूर हो (,) तू मढ है तेरी वात मुजसे सुनी नही ० जाती (।) यह सुन अति अनुग्रह मान शुका (-) ० सुर वहां से डरता कांपता हूआ अपने घर ० को गया (।) वह आगे व्राह्मण था अपने व्रह्म (-) ० कर्म मे निपुन हो वाणप्रस्थ के विधि से व (-) ० न मे जा वास कर देवतान की वृद्धि के लिये ० और राक्षसों के विनाश निमित्त सदा य (-) ० ज्ञ किया करता था सो वहां वज्रदंत नाम ० एक वडा राक्षस रहता था उसने मन मे शो (-) ० चा कि राक्षसों से तो यह विरोध रषता है ० ओ देवतान की चाहता है भलाई तिस ० से अवसर पाय इस दुष्ट का कुछ अपका (-) ० र किया चाहिए (।) यों जी मे ठहरा वुस की वुरा (-) ० ई मे वह प्रवृत्त हूआ तो कितने एक दिन ० के वीते शुक के घर पर एक वेर अगस्त्य मु (-) ० नि आ निकले तव शुक ने ऋषि का वडा ० आदर मान किया ओ भोजन के लिये वु (-) ० न्हे नेवता जव वे मुनि स्नान करने को ग (-) ० ये तव अवसर पा विस ऋषि का भेष धर ० वज्रदंत ने शुक से कहा कि जों मुजे षिला (-) ० या चाहते हो तो मांस समेत भोजन मुझ ० को दीजो छाग का मांस खायें मुजे वहुत ० दिन हूऐ (,) सुनकर वह अति र्हषित हूआ ० ओ रसोई मे वहुत सा मांस वनवाया (,) ज (-) ० व अगस्त्य मुनि आ जेमने को वैठे तव शु (-) ० क की भार्या का अति सुन्दर रूप धर जी मे ऋ (-) ० षि को मोहित करता हूआ वह दुष्ट राक्षस ० ही लगा परोसने तो परोसते परोसते नि (-) ० दान मनुष्य का वहुत सा सुपक्व मांस वुन ० मुनि को देकर आप अन्तरधान हो गया ० इस अनन्तर अभक्ष्य आमिष देष अति ० क्रुद्ध हो अगस्त्य मुनि शुक से लगे कहने (—) ० अरे दुष्ट तूने मनुष्य का यह अभक्ष्य मांस ० मुजे खाने को दिया है तो जा तू राक्षस हो (,) ० जो मनुष्य ही तेरा आहार होवे (।) इस भांति ० शाप पा निपट डर कर वह वोला (—) महाराज ० तुम आपे अभी कह गये कि मांस मुजे षि (-) ० लाओ अव मैने ला दिया तो विना

२०

अपरा(-) ० ध मुजे शाप क्यूं देते हो इसमे भला मेरा क्या ० दोष मैंने तो छाग का मांस वनवाया वह मनु(-) ० ष्य का मांस क्यूंकर हो गया यिह् चरित्र कुछ मै ० जानता नही(।) जव वुसने यों कहा क्षण ए(-) ० क ध्यान कर राक्षस की सभ करतूति जान० निदान अगस्त्य जी वहुत लज्जित भये ० ओ विससे कहने लगे कि तुम्हारा अपका(-) ० र करने वाले राक्षस का यह सव कर्म है मै ० ने अनजान कर तुम्हे श्राप दिया पर अव ० मेरा वचन झूठ होने का नहीं(,) तुम राक्षस ० होके रावण की सहायता जा करो जव रा(-) ० वण को मारने के लिये वांनरों समेत श्री रा(-) ० मचन्द्र लंका समीप आवेगें औ अपना ० दूत कर रावण तुमको वुनके पास भेजेगा ० तव उन्हे देष मेरे श्राप से मुक्त हो रावण ० को तत्त्वज्ञान वता फिर तुम अपने पद ० को पहुंचोगे(।) ऐसे वुझा समझा अगस्त्य ० मुनि तो निज आश्रम को गये ओ शुक० नाम वह व्राह्मण राक्षस हो रावण पास ० आया ओ उसकी सहायता लगा करने(।) ज० व राम लक्ष्मण लंका निकट आये तव दूत ० हो वुन दोनों भाई का दर्शन कर रावण को ० ज्ञान वता शीघ्र घर जा पुन वह व्राह्मण का ० व्राह्मण हूआ ओ अपने पद को प्राप्त(।) तिस ० अनन्तर मल्यवान नाम एक महावृद्ध ० राक्षस जो सभों मे वडा वुद्धिमान था ओ ० नीतिविद्या मे अति निपुन ओ नाता मे रा(-) ० वण का नाना था रावण पास आया ओ ० शान्त हो यह वचन लगा वुससे कहने(—)हे रा(-) ० जा मै तुमसे एक वात कहने को आया हूं ० वुसे सावधान होकर सुन लो फिर जो जी(-) ० हे सो कीजो(,) सो यह है कि जव से इस नगर ० मे सीता का प्रवेश हूआ है तव से सव प्रका ० र विनाश ही का लक्षण यहां दृष्ट आता है ० देषो ये भयंकर मेघ सव अति कठोर गर्जते ० है ओ लंका मे सदा लोहू आग वरसाते हैं ० ओ देवतान की प्रतिमा सव रोती हैं ओ प(-) ० सेनों से भर जाती हैं ओ राक्षसों के आगे ० आ वडे वडे पांडुर पांडुर दान्त निकाले का ० लिका देवी नित्य हंसती हैं ओ गौओं को ग(-) ० दहे जनते हैं और नेउले विल्ली सों(,) चूहे ० ओ गरुड सो सांप सदा युद्ध किया करते हैं ० ओ अति भयान[1] सरूप मृत्यु को साथ लिये ० काल सव के घर घर नाच रहा है इस आ(-) ० दि और भी अनेक दुर्योग देषने मे आ(-) ० ते हैं तिस्से हे दशानन कुल रक्षा के लिये तुम ० मन को शान्त करो ओ आदर मान कर कु(-) ० छ धन सहित सीता को राम पास भेज दो ० ओ श्री रामचन्द्र को नारायण कर जानो वु(-) ० न से विरोध कवहूं मत करो उनही के चर(-) ० ण सरूप नाव का आश्रयण कर ओ विन(-) ० की भक्ति से पवित्र हो ज्ञानी लोग सहज मे ० भवसागर पार होते हैं(।) वे रामचन्द्र मनुष्य न(-) ० ही ईश्वर हैं भक्ति भाव से वुन्हे भजो वे सव ० के घट घट वासी हैं तुम यद्यपि दुराचारी हो ० तथापि वुनकी भक्ति से पवित्र होगे कुल ० परिवार की रक्षा के लिये मेरी यह वात ० तुम मानो इसी मै कल्याण है(।) इस प्रका(-) ० र माल्यवान ने वहुत शिषलाया पर व(-) ० ह दुष्ट रावण काल का वश हो रहा था इ(-) ० स कारण उसकी वातों पर तनिक भी साव ० धान नही हूआ ओ रिसियिा कर कहने ० लगा कि जो राम एक छोटा सा मनुष्य है ० ओ वानरों का भरोंसा रषता है वुसे क्यूंक(-) ० र समर्थ्य मानते हो मै जानता हूं कि शि ० षला पढा के नीश्चय राम ने तुम्हे भेजा है ० जो ऐसा अनर्थ वक्ते

१. भयावना या भयानक।

हो चलो जाओ वुढे ० हो इससे तुम्हारा कहा सव सव मैने सहा है इस ० के आगे फिर जों कवहूं ऐसा वचन मुह से नि ० कालोगे तो मै तुम्हे तुरन्त मरवा ही डालूंगा (।) ० यों कह सव मंत्रीन समेत वहां से उठ के एक ० दूसरी अटारी के ऊपर रावण गया तहां से ० वांनरों की सेना देष सव राक्षसों को वुला ० युद्ध के लिये लगा उतावली करने तव मंत्री (-) ० न से घेरे हूएे ओ शिरों मे किरीट मणि पह ० ने रावण को सुवेल पर से देष कर लक्ष्मण ० समेत श्री रामचन्द्र जी वहुत क्रुद्ध भये तो अ (-) ० र्द्ध चन्द्राकार एक ऐसा वाण मारा कि आधे ० पल मे इसके दशों किरीट ओ सहस्रों श्वे (-) ० त छत्र काट कर धरती पर गिर पडे सो लो (-) ० गन को अति अद्भुत लगा ओ लज्जि (-) ० त होकर रावण तुरन्त नीचे उतर आया ० और भवन के भीतर जा प्रहस्त आदि सक (-) ० ल मंत्रीन को वुला संमत कर वांनर से लडने ० को सव राक्षस को आज्ञा करी (।) तव मेरी मृदंग ० ढाक आदि भांति भांति के वाजों समेत भैसों ० उटों गदहों ओ हाथी घोडों सिंहों पर चढे हूएे ० ओ खड्ग शूल धनुष वाण वरछे गदा धोप ० आदि नाना शस्त्र वांधे तुरन्त वीर राक्षस स (-) ० व अपने अपने स्थान से निकले ओ चहुंदि (-) ० श लंका के सव द्वार रोक रोक (क) र खडे हो गये औ (-) ० र वहां हनूमान अंगद कुमुद नील-नल-स ० रभ-मैन्द-द्विविद-जाम्ववान ० दधिमुख केश (-) ० री तार इन आदि और जो सहस्र सहस्र ० लाष लाष शौ शौ कोटि वांनरो के नायक थे ० सो सव राम की आज्ञा पा पहार के वडे वडे च (-) ० टान ओ नाना वृक्ष उखाड कर हाथों मे ० लिये आगे ही से लडने को उपस्थित हो रहे ० थे सो रावण की सेना देषते ही मारे हर्ष के कू (-) ० दते फांदते ओ गर्जते हूएे लंका पर चढ़ दौडे ० ओ चहुंदिश से विसे घेर लिया ओ राजा सु (-) ० ग्रीव समेत राम लक्ष्मण का जय यह कहते ० हूएे लगे राक्षसों को शिला ओ वृक्ष फेंक फें (-) ० कर मारने ओ लपट झपट कर दांतों से का (-) ० टने ओ द्वारों को फांद फांद पुर के भीतर ध (-) ० सने (।) निदान राक्षस सव महाक्रुद्ध हूएे तो द्वा (-) ० रों से निकल ओंही शत्रु की सेना मे जा गिरे ० ओ खड्गों शूलों फरसों से लगे वुन्हे काटने ० ओ गदान से चूर्ण करने तिस समय वान ० र ओ राक्षसों की जो परस्पर अपना अप (-) ० ना जय चाहते थे ऐसी अद्भुत लडाई हूई ० कि लोहू और मांस का वहां चहला हो ग (-) ० या (।) कोई वहां से हट शके नही जिस जिस प्र (-) ० कार से वांनर सव राक्षसों को मारें विसी वि (-) ० सी भांति से ये वुन को हने ओ अति भया (-) ० वन चितकार शव्द करें निदान वांनरों पर श्री-० राम की सुदृष्टि थी ओ देवतान के अंश से वे ० उत्पन्न हूएे थे इससे वुन वांनरो ने राक्षसों को ० ऐसा मारा कि उनकी चौथाई सेना नष्ट० हो गई सो देष मे (घ) नाद जो शस्त्र विद्या मे वडा० निपुन था वहुत क्रुद्ध हूआ तो झट नभ मे ० जा अन्तरधान हो व्रह्मास्त्र समेत नाना ० शस्त्रन से वांनरों का विनाश लगा करने ० ओ रामचन्द्र पर ऐसा लगा वाण वरसाने ० कि लोग सव देष कर वहुत चकित हूएे (।) तव ० व्रह्मास्त्र की महिमा रषने के लिये क्षण ऐक ० तो श्री रामचन्द्र चुप होके रहे निदान वांनरों ० का नाश देष कोप से लाल हो लक्ष्मण से क (-) ० हा कि व्रह्मास्त्र सहित मेरा धनुष तुम मुझे ० ला दो मै एक क्षण मे इन असुरों को भस्म क (-) ० र डालता हूं मेरा पराक्रम आज तुम देषो (।) य (-) ० यह[1] सुनते ही मेघनाद तुरन्त वहां से भागा ओ ०

१. 'य' पहले ही आ चुका है।

लंका मे आया तद वांनरों की सेना निहत ० देष अति दुखित हो रामचन्द्र ने हनुमान से ० कहा तुम शीघ्र क्षीर समुद्र तीर जाओ वहां ० द्रोणाचल पर संजीवनी नाम औषधी है ० वुसे यहां लाकर इन महापराक्रमी वांनरों ० को जिला फिर वहां विसे रष आइओ इस ० मे तुम्हारी वडी कीर्त्ती होगी इतनी वात के ० सुनते ही अनिलकुमार वहां से वायुवेग स(-) ० मान उडे ओ औषधी समेत द्रोणगिरि को ० उखाड ला सकल वांनरों को जिला फिर उस ० पर्वत को जहां के तहां तुरत रष आये तव तो ० आगे की भांति वांनर सव पुन भारी कोला(-) ० हल करने लगे सो सुन रावण वहुत विस्मित ० हूआ ओ सभ राक्षसों को वुला कर कहने ल(-) ० गा कि देवतान का रचा हूआ राम मेरा वडा श(-) ० त्रु उत्पन्न भया विसे मारने के लिये सेनान के ० नायक जितने मेरे भाई वन्धु ओ मंत्री हैं सो स ० व मेरी आज्ञा से शीघ्र रण मे जाएँ और जो मे(-) ० रा शासन नहीं मानेंगे प्राण वंचाने के लिये ड(-) ० र कर लडने को नही जावेगें विन सव को जी ० से मैं मार डालूंगा (।) इस प्रकार जव रावण ने ० कहा तव अतिकाय ० प्रहस्त ० महानाद ० महो ० दर ० देवशत्रु ० निकुम्भ ० देवान्तक ० नरान्तक आ(-) ० दि जो लाषों करोरों शूर थे सो सव मारे भ(-) ० य के वानरों से लडने को तुरन्त लंका से निक(-) ० ले ओ विन की सेना मे पैठ कर खड्ग शूल आ(-) ० दि नाना प्रकार के आयुधों से लगे वांनरों को ० पटरा करने ओ मारे चटानों वृक्षों के ओ दां(-) ० तों घुसों से वे भी इनका प्राण लगे लेने कित- ० ने एक असुरन को तो राम सुग्रीव ने मार गि(-) ० राया अरू कितने एक को हनूमान अंगद ल(-) ० क्ष्मण ने ओ वहुतेरन को वांनर के नायको ० ने मार कर चूर्ण कर डाला ० इति श्री रामचरि(-) ० त्रे युद्ध काण्डे पंचमोध्यायः(।) ५ (।) जव अतिका(-) ० य आदि अनेक वीर सव युद्ध मे मारे गये ओ ० सेना सव नष्ट हूई तव सुन कर रावण वडा दू(-) ० खित हूआ ओ अति क्रोध कर चौकी के लि(-) ० ये इन्द्रजीत को लंका मे रष सव शस्त्र लिये ० सुंदर रथ पर चढ़ राक्षसों समेत आप संग्रा(-) ० म पर आया ओ आते ही राम पर दौडा तो मा(-) ० रे वाणों के अनेक वांनरों को वध सुग्रीव आ(-) ० दि सेनापतिन को अचेत कर धरती पर लो टा(-) ० ता हूआ आगे जा देषे तो राम पास हाथ मे ग(-) ० दा लिये विभीषण महावीर खडे हैं (।) यह देषते ० ही जों विसने यम की दी हूई महाशक्ति वि (-) ० भीषण पर चलाई है तों ही धनुष वाण लेक(-) ० र विभीषण के आगे लक्ष्मण जी जा पर्वत से ० खडे हो गये(—)यह कहते हूऐ कि हमने इसे अभ(-) ० य दान दिया है यह महा असुर वध का योग्य ० नही है(।) इतने मे वह महाशक्ति लक्ष्मण की ० देह मे आ लगी वे यद्यपि साक्षत शेषनाग(-) ० के अवतार थे विन्हे शक्ति वह कुछ नही क(-) ० र शकक्ती थी पर तो भी वे मनुष्य हूऐ थे इस हेतु ० मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडे (।) तव घर पर ला ० ने को रावण लगा वुनको हाथों से उठा वने ० पर नही उठा शका वहुत चकित हूआ कारण ० इसका यह है कि जिनके पीठ पर सारी पृथ्वी ० है विन परमेश्वर को छोटा सा राक्षस भला ० क्यूंकर उठा शके(।) निदान जव फिर लगा साह(-) ० स करने तव लक्ष्मण को रावण ले जाया चा(-) ० हता है यह देषते ही हनूमान ने वुसे वज्र स(-) ० मान एक ऐसा घुसा मारा कि मुहों आंषों ओ ० कानों से वहुत लोहू उगलता हूआ अपने र(-) ० थ के निकट जा अचेत हो कर वह गिर पडा(।) त(-) ० व लक्ष्मण को राम

पास तुरन्त हनुमान उठा ० लाया(।) उसकी प्रीति ओ भक्ति से उठावने की ० वेरियां लक्ष्मण जी वहुत हलके हो गये(।) जव ० जाना कि लक्ष्मण जी नारायण के अवतार हैं ० तव वन्हे त्याग कर वह महाशक्ति रावण के ० रथ पर फिर आयी (।) तद चेत कर[1] रावण भी धी(-) ० रें धीरें उठ वैठा ओ रथ पर जा धनुषवान ले ० अति क्रोध कर पुन रामचन्द्र पर दौडा(।) वुसे ० रथ पर आते हूऐ देष हनुमान महावलीय ० के कांधे पर चढ़ धनु का वज्र समान टंकार श(-) ० ब्द कर श्री रमचन्द्र भी आगे वढ आये ओ वि(-) ० स राक्षस से लगे कहने(—)अरे अध० असुर तू ० ऐत्ता वडा अपराध कर मेरे आगे से अव कहां ० जा शक्ता है(,) खडा रह जिन वाणों से मार कर ० तेरे राक्षसन को मैंने यमलोक भेजा विन्ही ० शस्त्रन से तेरा भी आज प्राण लेता हूं मे(-) ० रे साम्हने आ यह सुनते ही तीक्ष्ण तीक्ष्ण वा(-) ० णों से हनुमान को विस दानव ने वहुत मारा पर उ(-) ० न को कुछ नही हूआ वरन और भी देह मे ते(-) ० ज वढ़ा ओ लगे गर्जने इस उपरान्त हनुमा(-) ० न की देह मे शस्त्र के घाव देष अतिक्रुद्ध हो ० छत्र पताका समेत रावण के धनुष आयुध ० ओ घोडे रथ सहित विसके सारथी को मा(-) ० रे वाणों के श्री रामचन्द्र ने खंड खंड कर डाला ० ओ वज्र समान एक महावाण से विस दुष्ट ० को ऐसा मारा कि वह मूर्छित हो गया ओ ल(-) ० गा कांपने(।) तद अर्द्ध चन्द्राकार वाण से वुसके ० शिर के किरीट मणि जो सूर्य से झलकते थे ० काट गिरा यह वचन लगे विससे कहने(—) मेरे ० वाणों से तुम वहुत पीडित हूऐ अव लंका मे ० जाओ वहां सव को सुचित कर सवेरे यहां आ ० के फिर मेरा पराक्रम देष लीजो(।) इस प्रकार ज ० व राम ने कहा हतदर्प्प हो वडी लज्जा पा राव(-) ० ण लंका मे फिर आया तव लक्ष्मण को मू(-) ० छित देष मानुष की भांति वहुत पछता कर ० श्री रामचन्द्र ने हनुमान से कहा(—)भैया आगे ० की भांति फिर संजीवनी लाकर वांनरों स (-) ० मेत लक्ष्मण को जिलाओ (।) यह सुन अ(-) ० ति शीघ्र सागर पार हो वायुकुमार औषधी ० लाने को चले(।)सो समाचार किसी दूत ने ० रावण से जा कहा कि लक्ष्मण को जिलाने ० के लिये संजीवनी लाने को राम का भेजा हू(-) ० आ हनूमान क्षीर समुद्र तीर गया(।) जद दू(-) ० त ने यों कहा सुन कर रावण वहुत लगा चिं(-) ० ता करने निदान रात समय ऐकेले ही उ(-) ० ठ कर कालनेमी के घर पर तुरन्त गया(।) काल(-) ० नेमी वुसे देषकर वहुत चकित हूआ ओ ० डर गया ओ आदर मान कर हाथ जोड यह ० वात विससे कहने लगा(—)महाराज क्या कारण ० है कि आप आये सो कहिऐ मै करूं(।) वह वो(-) ० ला क्या पूछते हो कालवश होकर मुज प(-) ० र भी कष्ट आ प्राप्त हूआ मैने यमकी श(-) ० क्ति से लक्ष्मण को मार कर पृथ्वी पर गिरा ० दिया है वुसे जीलाने के लिये संजीवनी ला(-) ० ने को हनूमान गया है तुम मुनि का भेष ध(-) ० र अद्‌भुत माया फैला ऐंसा विसे जा मोहित ० करो कि औषध लाने मे विसे विघ्न हो जावे ० ओ समय वीत जाऐ(।) यह काज करके फिर अ ० पने मंदिर पर आओ (।) सुन कर कालनेमी व(-) ० हुत पछताया ओ कहने लगा अछा जिस ० मे तुम प्रसन्न होगे सोई मैं करूंगा यहां तक ० कि तुम्हारे लिये अपना प्राण तजूंगा पर हे ० रावण तुम यह नीके जान लो

१. तब, चेतना आने पर।

कि मृग सरू(-) ० प मारीच की जो दशा वन मे आगे हूई सोई दशा ० मेरी भी होगी इसमे कुछ संदेह नही (।) मै तुम्हा(-) ० री आज्ञा कधी न टालूंगा शीघ्र जाऊंगा ओ ० जो कहते हौ सो करूंगा पै यह मै तुमसे कह ० ता हूं कि पुत्र पौत्रादिक समेत सकल परिवा(-) ० र का संहार करा ऐकेले एक तुम जी कर क्या क(-) ० रोगे ओ सीता सहित इस राज्य ही से क्या तुम्हे ० होगा जो ऐसा कर्म करते हो(।) इसमे कधी नही ० तुम्हारा भला होगा तुम मेरा कहा मानो तो अ(-) ० भी जा सीता को राम पास भेज दो औ विभीष(-) ० ण को राज्य पर विठला वन मे जा मुनिन के सा(-) ० थ वसो ओ वहां निर्मल जल मे प्रातस्स्नान ० कर संध्या वंदनादिक क्रिया से सुचित हो ए(-) ० कान्त मे जा सुन्दर आसन पर वैठ विषय वास(-) ० ना त्याग सदा निर्गुण व्रह्म का ध्यान करो इ(-) ० स संसार से सहज मे मुक्त होगे(,) ओ निर्गुण ० का ध्यान नही कर शको तो नाना रत्नों से रचि(-) ० त सुवर्ण के सिंहासन पर सीता सहित वैठ[1] हूए ० सगुण सरूप श्री रामचन्द्र को जो नाना भूष ० ण पहने अति अद्‌भत शोभ रहे हैं ओ धनुष ० वाण लिये जिनके पास लक्ष्मण जी खडे हैं ० ओ जिनकी देह मे विजली सा पीताम्वर चम(-) ० कता है सदा अपने हृदय मे ध्यान करो ओ वि(-) ० न के भक्तों सें विन का चरित्र मन देके सुनो(।) वे ० सव घट वासी पूरण व्रह्म हैं वुनकी भक्ति मे ० जों मगन होगे तो संसार सागर को निसन्देह ० तर जाओगे ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे ० षष्ठोध्यायः(।) ६ (।) इस प्रकार कालनेमी का अ(-) ० मृत समान वचन सुनकर मारे क्रोध के राव(-) ० ण ऐसे जल गया जैसे उष्ण घृत मे पानी प(-) ० डे(।) निदान दांत पीस कर कालनेमी से कहने ० लगा क्या मेरा कहा तुम नही मानोगे(,) अछा मै ० तुम्हे अभी मार डालता हूं मै जानता हूं मेरे वै(-) ० री से कुछ ले कर ऐसा वचन तुम वोलते हो(।) सु(-) ० न कर विसने कानों पर हाथ दिये ओ कहा ऐ महाराज तुम क्रुद्ध क्यूं होते हौ मेरा ० कहा तुम्हे नही रुचे तो लो मै अभी जाता हूं(।) यों ० कह विदा हो वाट मे हनुमान को विघ्न करने ० के लिये कालनेमी शीघ्र वहां से चला तो जा ० ते जाते हिमालय के पास जा हनुमान का पं(-) ० थ रोक माया कर एक अछा सुन्दर तपोवन र(-) ० च मुनि का भेष वन अनेक शिष्य साथ लि(-) ० ये एक आश्रम मे जा वैठा ओ विधि से लगा ० शिवपूजन करने(।) इतने मे पवन कुमार वहां ० जा पहुचे ओ विस सोहावन स्थान को देष ० कर वहुत चकित हूए ओ जी मे कहने लगे ० कि ऐसा आश्रम ओ ऐसा मुनिमंडल आ(-) ० ज तलक मैंने कहूं देषा नही क्या मै पथ भू(-) ० ल गया कै मुजे चित्तभ्रम हूआ(,) ऐसे वहुत ० कह कर निदान ठहराया कि अव कुछ होवे प(-) ० र इस आश्रम मे जा मुनिन का दर्शन कर पा(-) ० नी पी लूं तद द्रोणाचल को चलूंगा(।) यह मनो(-) ० रथ कर विस स्थान के भीतर कि जहां पक्के ० हूए फलों के भार से केला कटहल खजूर आ(-) ० दि अनेक वृक्ष सव नीचे को झूक रहे थे औ(-) ० र जहां किसी से किसी को वैर न था हनूमा(-) ० न गये(।) तहां शिव पूजते हूए कालनेमी को ० जो मुनि सरूप हूआ था देष के निपट प्रस(-) ० न्न हूऐ ओ निकट जा प्रणाम कर यह वचन ० लगे विससे कहने कि मै श्रीरामचन्द्र का दू(-) ० त हूं हनूमान मेरा नाम है अपने प्रभु के का(-) ०

---

१. बैठे।

ज के लिये क्षीर समुद्र को मै जाता था सो ० अति प्यासा होकर यहां आया कहूं पानी ० होए तो वताइए जो भर इछा जा पीऊं(।)सु(-) ० न कर वह कपटी मुनि वोला मेरे कमडंलु मे ० जल रष्षा हूआ है वुसी को पीओ अरु पक्के ० हूए फलों को खाकर सुख से यहां विश्राम ० करो ओ जी चाहे तो सो रहो(।) भूत भविष्य व(-) ० र्त्तमान तीनो काल अपनी तपस्या के वल ० से मै जानता हूं(।) तुम किसी वात की चिन्ता न ० करो(।) वांनरों समेत लक्ष्मण जी अव उठ वै(-) ० ठे हैं(।) मै नीके जानता हूं इस लडाई मे श्रीराम(-) ० चन्द्र निश्चय जीतेगें(।) यिह सुन हनूमान व(-) ० हुत आनन्द मगन हूऐ ओ वोले अछा ० अव मुजे पानी पिलाइऐ मारे प्यास के मेरी ० जीभ लरषरा रही है पर कमंडलु के जल ० से मेरी तृषा न जाऐगी कोई सरोवर मुझे ० दिषा दीजे(।) इतनी वात के सुनते ही विस ऋ(-) ० षि ने माया के वनाये हूऐ अपने एक चेले ० सें कहा कि तुम एक जलाशय इनको दिषा ० आओ अरु सुनो हनूमान तुम आंष मूं(-) ० द के पानी पीकर शीघ्र मेरे पास आना(,) मै तुम्हे ० एक मंत्र शिषला दूंगा जिस्से औषधी शीघ्र ० पहचान लोगे(।) इस प्रकार जव गुरु ने कहा त(-) ० व वुस विद्यार्थी ने हनूमान को तुरन्त ले जा ० कर एक सुन्दर सरोवर देषा दिया(।)विसमे पैठ ० आंष मूंद कर जों पवनकुमार लगे पानी पी(-) ० ने तों ही एक वडी सी मकरी जो विस तालाव ० में वहुत दिनों से रहती थी वुन्हे पाव पकड के ० खैंच ले चली ओ लगी निगलने तव देष क(-) ० र वे महाक्रुद्ध हूऐ और हाथों से उसके ठो(-) ० ठ[1] पकड के ओंही वुसे चीर डाला अरु वह म(-) ० र गयी तद आकाश मे जा सुन्दर स्त्री सरू(-) ० प हो हनूमान से वह कहने लगी(—) ० महाराज मै धा(-) ० न्यमाली नाम अप्सरा हूं(,) एक ऋषि के श्रा(-) ० प से मै मकरी भयी थी सो आपके प्रसाद ० से मै मुक्त हूई(।) इस आश्रम मे जिसे तुमने ० देषा है सो कालनेमी नाम महाअसुर है राव(-) ० ण का भेजा हूआ(,) तुम्हारे काज मे विघ्न करने ० को आया है इसके भेप मे मत भूलो(,) यह रा(-) ० क्षस है सहस्त्रन मुनि को इसने मारा है इस ० दुष्ट को मार कर तुम शीघ्र द्रोणाचल को जा(-)० ओ(।) मै व्रह्मलोक को जाती हूं(।)तुम्हारे पुण्य प्रता(-) ० प से अव मै निःपाप हूई(।) यों कह अप्सरा तो ० स्वर्ग को गयी ओ हनूमान विस आश्रम में ० आये(।) वुन्हे देषकर कालनेमी वोल उठा(—) ० लो क्यूं वहुत विलम्व करते हो आओ मुझ ० से मंत्र ग्रहण करो ओ गुरु दक्षिणा मुजे ० दो(।) यह सुनते ही हनुमान ने वुसे वडा मुक्का ० मारा ओ कहा यिह गुरु दक्षिणा तो पहले तुम ले लो तिस पीछे मुजे मंत्र दीजो(।) तव ० मुनि का भेष त्याग नाना माया फैला काल(-) ० नेमी महासुर लगा हनूमान से महायुद्ध क(-) ०रने(।)निदान रिसिया कर एक ऐसा मूका वि(-)० स के शिर मे विन्होने मारा कि विसका शि(-) ० र चूर्ण हो गया ओ वह मर गया तव हर्षि(-) ० त होकर पवनकुमार तुरन्त द्रोणाचल ० पर गये(।)जव वहां औषधी न पहचान श(-) ० के तव विस पर्वत ही को उखाडे लिये वा(-) ० युवेग समान तुरत राम पास आये ओ ० कहने लगे महाराज मै इस पहार ही को ० वहां से उठा लाया अव जो कुछ करना क(-) ० राना है सो शीघ्र कीजे विलम्व का समय न(-) ० ही है(।) सुनकर श्रीरामचन्द्र वहुत प्रसन्न हू(-)० ऐ तो औषधी

---

१. चोंच, होंठ।

ले सुखेन वैद्य को वुला तु(-) ० रत लक्ष्मण की वैदकी करा कराई(।) तव वे ऐं(-) ० से उठ वैठे कि जैसे सो के जागे होवे(—)यह कह(-) ० ते हूए कि खडा रह खडा रह रावण अव तू ० कहां जा शक्ता है मैं अभी तुझे मार डाल(-) ० ता हूं(।) तव लक्ष्मण को गरे लगा विनका मा(-) ० थ चूम श्रीरामचन्द्र ने हनूमान से कहा(—)व(-) ० त्स केवल तुम्हारे प्रसाद से लक्ष्मण वंचे ० अव किसी वात की चिन्ता नही तुम इस ० द्रोणाचल को जहां से लाये वहां शीघ्र रष ०आओ(।) यिह सुनते ही विस पर्वत को जव ० पवनकुमार क्षीर समुद्र तीर रष आया त(-) ० व विभीषण के संमत से सुग्रीव आदि ० सकल वांनरों समेत श्री रामचन्द्र पुन श(-) ० त्रु से लड़ने को उपस्थित हूऐ तो शिला पा(-) ० षाण वृक्षों हाथों मे ले ले युद्ध करने के लि(-) ० ये निशाचरों के सन्मुख जा तुरन्त वांनर स(-) ० व खडे हो गये ओ जैसें सिंह से हाथी(,) गरू(-) ० ड से सांप महा पीडित होऐ वैसें ही राम के ० वाणों से घाहल होकर लंका मे रावण तो ० व्याकुल हो ही रहा था तिस पर हनूमान ० के प्रताप से लक्ष्मण को आराम हूआ य(-) ० ह सुन अति दुखित भया ओ सिंहासन ० पर जा राक्षसों को वुला कहने लगा(—)सुनो ० भाईओ व्रह्माने आगे मुज से कहा था कि ० मनुष्य के हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी सो इस ० पृथ्वीतल मे ऐंसा कोई मनुष्य नही है जो ० मुजे मार शके इस कारण राम सरूप आप ० नारायण मनुष्य हूए हैं(,) मुजे मारने के लि(-) ० ये यहां आये हैं ओ एक समय अनरण्य ० नाम राजर्षि ने भी मुझे श्राप दिया था कि ० जाओ मरे[1] वंश मे परमेश्वर अवतार लेगें ० तव पुत्र पौत्र सहित तुम्हारा नाश वे करें(-) ० गें मै समझता हूं कि वे ही नारायण राम स(-) ० रूप होकर मुजे मारने को आये हैं(।) तुम कि(-) ० सी प्रकार कुम्भकर्ण को उठाकर मेरे पास ० लाओ (।) वह वडा मूढ है क्यूंकि सदा ही नींद ० वश रहता है(।) इस भांति जव प्रभु ने कहा ० राक्षस सभ अतिशीघ्र कुम्भकर्ण के घर मे ० गये ओ नाना यत्न कर वहां से वुसे जगा रा(-) ० वण पास ले आये(।) जव राजा को प्रणाम ० कर आसन पर वह जा वैठा तव राजा राव(-) ० ण लगा विससे कहने(—)भाई कुम्भकर्ण तुम ० जाओ मुज पर वडा कष्ट आन पहुचा पुत्र ० पौत्रादिक समेत मेरे भाई वंधुन को जो व(-) ० डे वीर थे राम ने मार डाला(,)कहो अव क्या ० करना(,)मेरा मृत्यु योग आन पहुचा(,) देषो० सुग्रीव सहित सकल सेना साथ लिये द[2](-) ० दशरथ का वेटा यिह राम महावली सगार पा(,) ० र हो हम सव का जड काटता है जो जो वडे ० वडे राक्षस थे तिन्हे वांनरों ने युद्ध मे मार गि(-)० राया ओ रण मे वांनरो का नाश किसी प्रकार ० मुझे दृष्ट नही आता तुम विनका संहार क (-)० रो इसीलिये मैंने तुम्हे जगाया है तुम महा ० वीर हौ भाई के लिये यह काज(,) जो दूसरे कि(-) ० सी से होने का नहीं(,) करो(।) सुनके कुम्भकर्ण ० खिलखिला कर हंस उठा ओ कहने लगा ० कि आगे के विचार से मैं तुम्ह से कह चूका हूं ० कि रामचन्द्र साक्षात नारायण हैं ओ सीता ० जी विनकी योगमाया मैंने वहुत समझाया ० पर अपनी अज्ञानता से तुम काहे को सम ० झोगे(।) यों कह फिर वोला कि एक वेर वडी रात ० को वन मे जा एक शिला पर मैं वैठा था तहां ० अचानक नारद मुनि आये प्रणाम कर मैं(-) ० ने वुन से पूछा महाराज इस समय आपक(-) ०

१. मेरे। २. 'द' अनावश्यक है।

हां से आते हैं वे वोले देवताओं के पास से मै ० आता हूं वहां का समाचार यिह है कि तुम दो(-) ० नो भाई से पीडित हो विष्णु पास जा देवता(-) ०ओं ने एक वेर विनकी वडी स्तुति करी और ० वर मांगा कि महाराज आप रावण को मारि(-) ० ए वह तीनों लोक का कंटक हो रहा है(।) विधा(-) ० ता ने मनुष्य हाथ विसकी मरण रची है ति(-) ० स्से मानुस होकर विस दुष्ट को आप मारि(-) ० ए(।) इस वात को भगवान ने स्वीकार किया था ० सो वही अपनी प्रतिज्ञा सत्य करने के लिए(-) ० रघुकुल मे राम सरूप हो आप नाराय(-) ० ण अवतरे हैं(,) तुम सभों को मारेंगें(।) यों कह ० नारद मुनि सुरपुर को गये तिस्से हे राव(-) ० ण श्री रामचन्द्र को तुम पूरण व्रह्म जानो ० वे माया कर मनुष्य सरूप हूए हैं विन से वै(-) ० र मत करो वरन सदा उनको भजो वे भक्ति ० सें वहुत प्रसन्न होते हैं भक्ति ही संसार से ० प्राणी को मुक्त करावनहारी है ओ हृदय ० मे ज्ञान उपजाती विना भक्ति कभूं गति मु(-)० क्ति होने की नही भगवान के अवतार व(-) ० हुत से हैं तिन सभों मे अति श्रेष्ठ श्री राम ० चन्द्र हैं जो चतुर लोग निशवासर विन्हे भ(-) ० जते हैं वे सहज मे संसार सागर तर विष्णु(-) ० पद को जाते हैं ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध(-) ० काण्डे सप्तमोध्यायः(।) ७(।) इस प्रकार कुंभ (-) ० कर्ण की वातें सुन कर दशानन महा क्रु(-) ० द्ध हूआ ओ भौं चढा यह वचन लगा वुससे ० कहने कि ज्ञान वताने के लिये मैंने तुम्हे न(-) ० ही वुलाया है मैंने जो कहा है सो जों तुम्हे ० रुचे तो राम से जा लडो नही तो चुप-० चाप जा सो रहो अभी तुम नींद से अकु(-) ० ला रहे हो(।) जव रावण ने यों कहा वुसे क्रुद्ध ० जान युद्ध के लिये कुम्भकर्ण तुरन्त वहां ० से उठा ओ गढ़ की पर्वत समान भीतें टप[1] ० नगर के वाहर हो अति शीघ्र वांनरों की से(-) ० ना मे ऐंसे जा गिरा जैंसे देह धर काल ही ० आन पहुचे तो महा चित्कार शव्द करता ० हूआ कोप से वांनरों को पकड पकड लगा ० खाने ओ मुंगरों से चूरण करने पांवों से मल(-) ० ने(।) वुसे देषकर वांनर सव चहुंदिश भाग च(-) ० ले तव कुंभकर्ण को देष जेठ भाई जान तुर(-) ० न्त विभीषण आगे आये ओ चरण छू प्र(-) ० णाम कर यह वचन लगे विससे कहने(—)मैं ० विभीषण हूं मुज पर दया करो मेरा कुछ ० दोस नही मैंने रावण को वहुत समझा(-) ० या था कि सीता को राम पास तुम भेज दो वे ० साक्षात नारायण हैं विन से वैर मत वेसाहो[2] ० पर विन्होने मेरी वात को हित नही माना उ(-) ० लटे ही खड्ग लेकर मुझे मारने को दौडे ओ ० कहने लगे कि धिक्कार है तुजे जो तू मेरे ह्यां से ० जा ऐंसे कह जव एक लात वुन्होने मुजे मा(-) ० री तव चार मंत्रीन समेत वहां से भाग के राम की ० शरण मे मैं आया(।) यह सुन भाई जान कर कुं(-) ० भकर्ण ने विभीषण को अंक मे लगा लिया० ओ प्यार कर कहा कि कुल रक्षा के लिये ओ ० राक्षसों के हित निमित्त तुम युग युग जी(-) ० ओ भगवान के तुम वडे भक्त हो मैं नारद ० मुनि से आगे सुन चूका हूं अव जाओ इस ० समय मुजे अपना पराया कोई नही सु(-) ० झता(।) यह सुन भाई के चरणों की वंदना क(-) ० र विलकता हूआ राम पास विभीषण गया ० ओ वहुत चिन्ता लगा करने तव कुम्भकर्ण ० हाथों पावों से वांनरों को पीसता हूआ लप(-) ० क झपक कर शत्रु की सेना का संहार लगा ० करने(।)

१. लांघकर। २. वैर मत ठानो।

उसे देषके श्री रामचन्द्र अतिक्रुद्ध ० भये ओ वायु का दिया हूआ एक ऐसा वाण ० मारा कि मुंगरे समेत विस राक्षस का दह(-) ० ना हाथ कट गया ओ वह निशाचर महा ० घोर शब्द करने लगा औ वह हाथ अनेक ० वानरों को चूरण करता हूआ धरती पर जा ० गिरा(।) तिस समय रण भूमि मे मर्कट सव जो ० खडे थे सो राम ओ राक्षस की लडाई देषकर ० मारे डर के लगे कांपने(।) जव कुंभकर्ण शिसो[1] ० का वृक्ष उखाड लेकर राम को मारने दौडा ० तव रामचन्द्र ने इन्द्र के दिये हूऐ वाण से पेड ० समेत वुसका वायां हाथ भी काट गिराया तो ० भी सिंह सा गर्जता हूआ फिर वह राम पर झप(-) ० टा तव दो वाण से विन्ह ने विसकी दोनों जां(-) ० घ काट डाली सो जांघ लंका के द्वार पर जा ० गिरीं तद भी वुस राक्षस ने हार न मानी ओ ० चन्द्रमा पर राहु की भांति मुह वाकर[2] पुन ० निगलने को जों रामचन्द्र पर चला तोंही को(-) ० प कर विन्होने ऐसा वाण मारा कि तनु से अ(-) ० लग हो विसका शिर तो वडा हाहास करता ० हूआ लंका के द्वार मे जा अटक रहा ओ शरी(-) ० र समुद्र मे जा गिरा विस से अनेक जलजंतु ० सव चूर्ण हो गये(।) तव देव मुनि गंधर्व पन्नग ० खग सिद्ध गुह्यक चारण अप्सरा ये सव अ(-) ० धर मे आ आ राम पर झोरियों लगे फूल व(-) ० रसाने ओ दुंदुभी वजा वजा विनका यश व(-) ० षानने(।) विसी समय नारद ऋषि वहां आये ० ओ श्याम सुन्दर विशाल लोचन श्री रामचं(-) ० द्र को जो वाणों से अति पीडित हूऐ वांनरों को ० दया दृष्टि से ताक रहे थे देष प्रणाम स्तुति ० कर कहने लगे(—)महाराज आप पूरण व्रह्म ० हैं तुम्हारी पूजा भक्ति मे जो नर सदा लीन ० रहते हैं विनके लेखें यह संसार सागर गोः प(-) ० द[3]समान है इस हेतु सदा हृदय मे तुम्हारा ध्या(-) ० न कर मुक्त हो सव लोकों मे मै फिरता हूं ओ दे(-)० वतान से अपने को पुजाता हूं यह केवल तु(-) ० म्हारे भजन का प्रताप है(।) ऐसे वहुत स्तुति क(-) ० र पुनि वोले(—) सुरन की हिताई के लिये महा(—) ० राज आपने यह वडा काम किया जो कुम्भक(-) ० र्ण को मारा इसके वध से धरती का भार अ(-) ० व गया कल्ह की लडाई मे मेघनाद को ल(-) ० क्ष्मण जी मारेंगे ओ परशों रावण को आप ० संहारेंगे(,) पृथ्वी का वोझ उतरा(,) मै तुम्हारे द(-) ० र्शन को आया अव आज्ञा कीजे मै सुर पु(-) ० र को जाऊंगा(।) यों कह श्री रामचन्द्र से विदा ० हो नारद मुनि व्रह्मलोक को गये तव ० कुंभकर्ण का वध सुन रावण अति शोक ल(-) ० गा करने ओ मूर्छित हो पृथिवी पर गिरा ओ ० वहुत विलाप लगा करने तिस अवसर मे(-) ० घनाद वहां आया ओ चचा के वध से पिता ० को निपट व्याकुल देष यह वचन लगा कह(-) ० ने महाराज मै मेघनाद महावली हूं मेरे जी(-) ० ते हूऐ आप शोक मत कीजे यिह मोह का सम(-)० य नही है तुम देवतान को संहारने वाले हो तु(-) ० म्हारे लेखें वांनर भाल मनुष्य किस गिणती ० मे हैं आप निश्चिन्त हूजिऐ तुम्हारे वैरीन को ० मै कल्ह जा मार डालूंगा मेरी प्रभुताई आप दे(-) ० ष लीजेगा मै अभी निकुंभिला मे अग्नि दे(-) ० वता को संतुष्ट कर लडने की रथ आदि ना(-) ० ना सामग्री वुनसे या[4] सहज मे वैरी को जीत लूं(-) ० गा (।) यों कह तुरन्त होम की जगह मे जा वैठा ओ ० लाल कपडे लाल ही माला पहन देह मे रक्त ० चन्दन लगा मौन साथ[5]

१. शीशम। २. बाकर। ३. गोष्पद। ४. 'पा' (पाकर) हो सकता है। ५. साध।

विधि से लगा होम क(-) ० रने सो समाचार सुन कर विभीषण ने राम ० से जा कहा(—) महाराज मेघनाद निकुंभिला मे ० जा होम करता है जों यह हवन काज समाप्त ० होवेगा तो वुस दुष्ट को कोई नही जीत शकेगा ० तिस्से आप आज्ञा कीजे तो लक्ष्मण से मै शी(-) ० घ्र विसे जा मरवा डालूं मुजे निश्चय है कि तुम्हा(-) ० रे भाई निसन्देह मेघनाद को वधेंगे(।) रामचन्द्र वो(-) ० ले कि आग्नेय महावाणों सें जो सकल राक्षसों ० को विनाशहारा है मै ही जा मेघनाद को मा(-) ० रूंगा तुम दोनों यहां सेना की चौकी मे रहो(।) त(-) ० व विभीषण ने कहा(——) वुसे दूसरा कोई नही वध ० शकेगा(।) जो नर वारह वर्ष सोआ न होगा ओ ० न कुछ आहार किया होगा वुसी से इन्द्रजीत ० का वध विधाता ने लिखा है ओ मै जानता हूं ० कि तुम्हारे साथ जव अयोध्या सें लक्ष्मणजी ० निकले तभी सें न तो आजतक कभी वे सोए ० हैं ओ न कुछ खाया है तिस्से आप आज्ञा ० कीजे मेरे साथ चलके निसंदेह मेघनाद को ० लक्ष्मण जी मार गिरावेंगे वे साक्षात शेष(-) ० नाग के अवतार हैं ओ तुम आपरूप नारा(-) ० यण हौ पृथ्वी का वोझ उतारने के लिये मानुष्य ० सरूप तुम दोनों हूऐ हौ मै यह सव जानता हूं (।) ० इति श्री रामचरित्र युद्ध काण्डे अष्टमोध्या ० यः(।) ८(।) विभीषण की वातें सुनकर श्रीराम (-) ० चन्द्र वोले मेघनाद की माया सभ मै जानता(,) ० वह व्रह्मास्त्र चलाने (में) वडा वीर है ओ नाना ० माया रचने मे अति निपुन और लक्ष्मण ० का भी सरूप मै जानता हूं तो भी अनजान ० सा चुपचाप रहता हूं इसलिये कि आगे वहु(-) ० त कुछ काज करना है ऐसे कह पुन लक्ष्म(-) ० ण वोले कि हनूमान आदि सकल सेना(-) ० पतिन समेत ओ सैन्य सहित राजा जांव(।) ० वान के साथ हो तुम शीघ्र जा मेघनाद को मा(-) ० रो मंत्री समेत विभीषण तुम्हारी सहायता ० के लिये तुम्हारे संग जावेगें ये सव घर घाट जा(-) ० नते हैं(,) जहां मेघनाद होम करता है विस जग(-) ० ह को ये तुम्हे वता देगें (।)यह सुनते ही विभीष(-) ० ण समेत लक्ष्मण ने वडा धनुष हाथ मे ले ० लिया ओ अति हर्षित हो राम के चरण छूक(-) ० र विन से कहा आप यह जान लीजे कि आ (-) ज मेरे कार्मुक से वाण निकल मेघनाद का ० शिर काट पाताल लोक मे जा भोगवती के ज(-) ० ल मे स्नान करेंगे(।) यों कह श्री रामचन्द्र को ती(-) ० न वेर परिक्रमा दे प्रणाम कर मेघनाद को ० मारने के लिये तुरन्त लक्ष्मण जी वहां से वि(-) ० दा हूऐ तो अपने अपने मंत्रीन सहित को(-) ० टीन वांनर भाल साथ लिये हनुमान जांव(-) ० वान विभीषण ये सव विन के पीठ पर होलि(-) ० ये(।) जव निकुंभिला के साम्हने जा पहुचे(,) दूर से ० राक्षसों की सेना देखते ही धनुष वाण ले ० कर लक्ष्मण जी ओ अंगद समेत हनुमा (-) ० न जाम्ववान आदि वहुत सचेत हो गये तद ० विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि देषिऐ ० यही राक्षसों की सेना है जो श्याम घटा सी दृष्ट ० आती है इन्हे भगाने का अव यत्न कीजे इन ० राक्षसों के अलग होने से मेघनाद दृष्ट आ(-) ० वेगा(।) जव तक विसका होम समाप्त न होवे इ(-) ० सी वीच मे वुस महादुष्ट को शीघ्र जा मारो(।) य(-) ० ह सुनते ही निकट जा लक्ष्मण जी मेघनाद ० पर लगे वाण वृष्टि करने ओ जितने वांनर भा(-) ० ल थे सो पाषाणों ओ वृक्षों से राक्षसों को प(-) ० टरा करने लगे ओ फरसा शक्ति तोमर ख(-) ० ड्ग यष्टि वाण आदि नाना शस्त्रन सें दैत्य स(-) ० व भी मर्कटों को लगे काटने(।) तिस समय धर ० धर मार मार कर वहां वडा कोलाहल हूआ ० दोनों ओर से ऐसी वाणवृष्टि

लगी होने कि ० मानो मघा मेघ ने झडी लाई है निदान निज से(-) ० ना अति पीडित देष होम तज धनुष वाण ० ले निकुंभिला से निकल रथ पर चढ़ युद्ध के ० लिये तुरन्त मेघनाद रणभूमि पर आन पहु(-) ० चा तो पुकार कर कहने लगा(—)सुनो लक्ष्मण ० मैं मेघनाद हूं विना वधे अव मैं तुम्हे छोडने ० का नही(।) इतने मे विभीषण पर वुसकी दृष्टि ० परी तो वुन्हे कटुवचन लगा कहने(—)रे दुष्ट तू इ(-) ० हां ही ऐत्ता वडा हूआ ओ मेरे पिता का तू सा(-) ० क्षात भाई है वुन्हे तज पर की सेवकाई अंगी(-) ० कार कर क्यूं मुझ से वैर करता है(,) रे पापी कृतघ्न ० मैं तो तेरा लडका हूं(।) ऐसे कह हनुमान आदि ० को देष के पुन वोला(—)हे वांनरो मेरे ये वाण स(-) ० दा अचूक हैं तुम्हारा प्राण अव व्यर्थ जाऐ(-) ० गा(।) यह सुनते ही अति क्रुद्ध हो वज्र समान ० वाणों से लक्ष्मण ने वुसे ऐसा मारा कि क्षण ए(-) ० क तो वह अचेत हो गया फिर चेत कर कोप व(-) ० श हो धनुष वाण ले लक्ष्मण को देष कर क(-) ० हने लगा कि पहली लडाई मे जो तुम मेरा प(-) ० राक्रम नही देषे हो तो अव मैं तुम्हे देषाऊंगा ० खडे रहो(।) यों कह सात वाण तो लक्ष्मण को वि(-) ० सने मारे ओ दश हनूमान को ओ शौ विभी(-) ० षण को(।) तव लक्ष्मण भी विस शत्रु पर वाण ० वृष्टि करने लगे वुन के वाणों से वुसका कव(-) ० च जो कांचन सा झलकता था तिलतिल क(-) ० ट कर पहले रथ पर गिरा पीछे धरती पर(।) तव ० मेघनाद ने वहुत रिसियाकर सहस्र वाण से ० लक्ष्मणजी को छेद डाला ओ अति सुन्दर ० विनका कवच काट गिराया(।) इस प्रकार पहरों ० वे दोनों आपस मे महायुद्ध लगे करने ओ ० मारे वाणों के सगरे अंग लोहू लोहू हो गये(।) ० निदान संभर कर लक्ष्मण ने ऐसे पांच वा(-) ० ण मारे कि सारथी घोडों समेत मेघनाद का ० रथ ओ धनुष खंड खंड हो गया(।) जव वह शी(-) ० घ्र दूसरा धनुष लेकर पुन लगा लडने तव (-) ० लक्ष्मण जी तीन वाण से फिर विसका चाप काट ० गिराया तद दूसरा कार्मुक लेकर शौ वाण से ० विसने लक्ष्मण के सगरे गात भेद डाला सो ० देष वानर सव डर गये ओ दिशा दिशा को भा(-) ० ग चले तव इन्द्र का दिया हूआ महाकठोर वा(-) ० ण ले धनुष पर चढ़ा कान तक विसे षेंच के ल(-) ० क्ष्मण जी ने श्रीरामचन्द्र के चरण कमल का ध्यान कर यह वचन कहा कि जों श्रीरामचं(-) ० द्र धर्मात्मा हैं ओ सत्यवादी औ तीनों लोक ० के एक ठाकुर हैं तो उनके पुण्यप्रताप से यह मे(-) ० रा वाण मेघनाद का शिर काटे(।) यों कह विस म(-) ० हावाण को इन्द्रजीत पर चलाया तो मुकुट ० समेत विसका शिर जो कुंडलों से अति प्र(-) ० काश हो रहा था कटकर धरती पर गिर पडा(।) ० तव इन्द्र समेत देवता सभ वहुत हर्षित हूऐ ० ओ उपर से फूल वरसा वरसा लगे राम ल(-) ० क्ष्मण का यश वषानने औ आकाश तुरन्त निर्मल ० हो गया ओ धरती वहुत स्थिर हूई ओ ० ऋषि लोग सव निपट जुडाने ओ मेघनाद ० को रण मे जूझा हूआ देष जय जय कह ल(-) ० क्ष्मण जी सिंहनाद समान लगे शंखधुनि क(-) ० रने(।)वुस शब्द से देवता सव महाहर्षित भये ० ओ वांनरों को वडा आनन्द हूआ ओ परिश्रम वु(-) ० न का मिटा तव हनूमान विभीषण सहित ल(-) ० क्ष्मण जी राम पास आये ओ शिर झुका प्रणा(-) ० म कर यह वचन लगे वुनसे कहने(—)महाराज ० आपके प्रताप से मेघनाद को मैंने मारा(,) सुनक(-) ० र श्रीरामचन्द्र ने भाई को हृदय मे लगा लिया ० ओ माथ चूमकर विससे कहने लगे(—)अहो ल(-) ० क्ष्मण तुमने यह वडा कठिन काज किया है मै ० तुमसे वहुत

प्रसन्न हूं मेघनाद को जूझने से स(-) ० व राक्षसों को मैंने जीत लिया(।) तीन दिन मे इन्द्र(-) ० जीत को क्यूं कर तुमने मार गिराया मुझे व ० डा आश्चर्य लगता है(।) तुमने मुजे निकंटक ० किया(।) अव पुत्र के शोक से जों रावण लड(-) ० ने को आवेगा तो वुस दुष्ट को अपने हाथों ० से मै मारूँगा(।) यहां तो यों हो रहा था औ वहां मे(-) ० घनाद महावीर की मरण सुन रावण मूर्छित ० होकर धरती पर गिर पडा पुन उठकर पुत्र का ० गुण सुमर सुमर महा विलाप करने लगा(—) इ(-) ० स प्रकार से कि देवता लोकपाल ओ मुनि लो(-) ० ग ये जितने हैं सो सव मेघनाद की मरण सुन ० निर्भय हो सुख से अव सोवेंगे(।) इस भांति वहु ० त शोक संताप कर निदान अति क्रुद्ध हो स(-) ० कल राक्षसों को वुलाकर आज्ञा करी कि तु(-) ० म सव रणभूमि पर जा लडाई करो सीता को ० मार कर मै भी तुरन्त चला आता हूं(।) यों कह ख(-) ० ड्ग हाथ मे लेकर रावण चला सीता को मारने(।) उ(-) ० से देष के सीता वहुत डर गयीं(,) तव सुपार्श्व ना(-) ० म रावण का मंत्री जो वडा वुद्धिमान था रावण ० से कहने लगा(—)महाराज तुम साक्षात कुवेर ० के भाई हौ औ वेद विद्या पढ कर अपने कर्म ध(-) ० र्म मे निपुन ओ अनेक गुण के खानि हौ(।) स्त्री ० का वध तुम क्यूं कर चाहते हौ(।)इन राक्षसों के ० साथ हो रण मे जा राम लक्ष्मण को मार कर सी(-) ० ता समेत आनन्द विहार करो(।) इस प्रकार जव ० सुपार्श्व मंत्री ने वहुत समझाया वुसका व(-) ० चन हित विचार निदान रावण अपने घर ० फिर आया ओ पुत्र को शोक से महाव्याकुल ० हो हितून सहित सभा मे जा वैठा ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे नवमोध्याय:(।) ९ (।) इस ० भांति सभा मे जा सकल राक्षसों ओ मंत्रीन ० से एक मत हो निदान जूझने से जो जो वंचे ० हुए थे विन दानवन के साथ हो राम पास लड(-) ० ने को फिर रावण ऐंसा गया जैसा प्रज्वलित ० आग मे फनिगों समेत फनिगा जा गिरे (।)तव ० श्री रामचन्द्र ने संग्राम पर से सकल राक्षसों ० को मार हटाया ओ रावण के हृदय मे एक ऐं(-) सा चोष वाण जडा ओ अति व्याकुल होकर ० लंका मे वह भाग आया ओ राम हनूमान ० का वडा पराक्रम जो ओर किसी मनुष्य मे ० न था देष चकित हो तुरंत शुक्राचार्य पास ० गया(।) ० विन्हे शिर झुका प्रणाम कर हाथ जोड ० कहने लगा(—)महाराज वडे वडे दैत्यन को राम ० ने रण मे मार गिराया(,) तुमसे गुरू के रहते हूऐं ० यह महादुख क्यूंकर मुजे हुआ(।) वह वोला (—)हे ० रावण तुम एकान्त मे जा वहुत यत्न से होम ० करो जों विस होम मे कुछ विघ्न न होवेगा तो तू(-) ० णी वाण समेत धनुष ओ सारथी घोडे सहित ० एक वडा सा रथ वुस आग मे से निकलेगा वि(-) ० से लेकर जों तुम लडोगे तो कोई न तुम्हे जी(-) ० त शकेगा(।) आओ मुज से मंत्र लिखलो ओ ० शीघ्र जा उससे होम करो(।) यों कह जव विन्ह(-) ० ने विसको मंत्र लिखा दिया तव तुरन्त निज ० मंदिर मे आके विस राक्षस ने एक वडा सा ० भोंहरा[1] खनवाया ओ लंका की द्वारों को कवा(-) ० डे लगवा कर होम की सव सामग्री ले वुस भोंह(-) ० रे के भीतर जा मौन साध लगा होम करने(।) ० तव वहां से वहुत धूंआ निकलते देष कर ० विभीषण ने राम से जा कहा(—)धर्म्मावतार ० वह देषो रावण होम करता है जों यह यज्ञ स(-) ०

---

१. भूमिगृह (तहखाना)।

प्राप्त होगा तो विस दुष्ट को कोई न जीतेगा ० तिससे होम मे विघ्न करने के लिये वांनरों को ० वहां आप भेज दीजे (।) यह सुनते ही सुग्रीव अं(-) ० गद समेत हनुमान आदि सकल वांनर ० को वुला कर रामचन्द्र ने कहा कि तुम अभी ० जा रावण का यज्ञ विध्वंस करो (।) तव दशक ० रोर मर्कटन को साथ लिये चार दिवाली हे (-) ० ल के तुरन्त रावण के मंदिर मे वे गये (।) वहा घो(-) ० डे हाथी सहित रषवारों को एक क्षण मे मा(-) ० र चूरण कर होम की जगह लगे षोजने त(-) ० द शरभा नाम विभीषण की भार्या ने उंग(-) ० ली की सैन से विस स्थान को उन्हे वता दिया (।) ० तहां तुरन्त अंगद जा पहुंचे ओ पांवों से ० मुह पर की शीला अल (ग) कर आसन पर ध्या(-) ० न लगा वैठे हूए रावण को देष विस भोहरे ० के भीतर पैठ गये ओ विनकी आज्ञा पा वां(-) ० नर सव भी विसमे जा घुसे तो महा कोला(-) ० हल कर रावण के सेवकन को मार गिरा हो(-) ० म की सामग्री कुंड मे डाल दी ओ कुंड को ० ढाह दिया ओ रावण के हाथ से हनुमान ० ने श्रुवा छीन ली वुसी से उसे वहुत मारा ० ओ वांनरो ने दान्तों से काटा ओ सोटों घुसों से ० निपट पीटा (।) जव शत्रुन को जीतने के लिये कि(-) ० सी प्रकार रावण ने अपना ध्यान न छोडा तव अ(-) ० ति शीघ्र अंगद वहां से निकले ओ घर के भी ० तर जा चोटी पकड के मंदोदरी को घसीटे हू(-) ० ए रावण के आगे लाये ओ वह अनाथ सा ० लगी विलाप करने (।) तव अंगद ने वुसकी अं(-) ० गिया जो नाना रत्न से भूषित थी फाड डा(-) ० ली ओ मोतीन की माला तोड दी (।) जव निज ० देह के भूषण सव जहां तहां गिर पडे ओ व(-) ० डा गंजन लगा होने मंदोदरी रो रो कर स्वामी ० से लगी कहने (—) तुम वडे निर्लज्ज हो जो तुम्हा(-) ० रे आगे ही तुम्हारी भार्या को शत्रु सव ऐसा ० दुख देते हैं तिस पर भी वैठे होम करते हौ औ ० लजाते नही (।) जिसकी स्त्री को वैरी लोग ऐसा ० गंजन करें ओ वह वैठा हूआ कौतुक देषता ० है वुस पति के जीने से मरण ही भला है (।) हा ० मेघनाद तुम कहां हो तुम्हारी माता को वां(-) ० नर सव ऐसी दुर्गति करते हैं (,) मै जानती हूं तु(-) ० म्हारे जीते हूए यह दुख मुजे कवहूं न होता (।) ० इस भांति जव मंदोदरी ने वहुत विलाप कि(-) ० या रावण से रहा न गया तो ओं ही खड्ग ले क(-) ० र वहां से उठा यह कहता हूआ कि रानी (को) छो(-) ० ड दे नही तो मैं तेरा शिर काट डालता हूं त(-) ० व यज्ञ विध्वंस जान वांनर सव वहां से निक(-) ० ले ओ अति हर्षित हो राम-पास आये (।) तद ० रावण लगा मंदोदरी से कहने (—) हे रानी तुम ० खेद मत करो ईश्वर की इछा प्रवल है इस ० मे मेरा शक्य कुछ नही (।) जीता है सो क्या न ० देषता है यह समझ शोक को जो अज्ञान(-) ० ता से हूआ है तजो ओ हृदय मे ज्ञान करो (।) ० वह शोक विनाशनहारा है ओ जो इस ० झूठा शरीरादि का अभिमान अज्ञानता से ० हूआ है वही इस संसार मे स्त्रीपुत्र आदि ० के मोह मे फंसने का कारण है ओ काम क्रोध ० लोभ मोह भ्रम मद जनन मरण यह सव ० अज्ञानता से हूआ है और आत्मा शुद्ध आ(-) ० नन्द सरूप निर्लेप है असंग है ओ सकल ० उपाधि से रहित वुसे जानकर शोक तजो (।) ० मै अभी जा राम लक्ष्मण को मार के चला ० आऊंगा ओ नही वाणों से जों राम ही मु(-) ० जे मार गिरावेगा तो मै वुसके धाम को जा(-) ० ऊंगा तव जो कुछ मेरी क्रिया करनी होए सो ० करना ओ सीता को मार कर मेरे साथ आग ० मे तुम जलना (।) सुन के मन्दोदरी वहुत दु(-) ० खित भयी ओ लगी विससे कहने (—) हे नाथ ० तुम मेरा वचन

सुन लो फिर जो जी चाहै सो ० कीजो(—)सो यह है कि श्रीरामचन्द्र को तुम कभी ० न जीत शकोगे हठ छोड दो वे साक्षात आदि ० पुरुष परमेश्वर हैं उन्ही भक्तवत्सल नाराय(-) ० णने मत्स्य रूप होके आगे वैवश्वत मनु को ० सकल आपदा से वचा लिया था ओ समु(-) ० द्र मथन समय कछप अवतार हो लक्ष योजन ० निज देह विस्तार कर मन्दराचल को अपने पी(-) ० ठ पर ले रष्षा था ओ विन्ही महापुरुष ने हिर(-) ० ण्याक्ष नाम दानव को जो महादुष्ट था मार गि(-) ० राया(,) शूकर शरीर हो धरती का उद्धार किया ० और तीनों लोक के महाकंटक हिरण्यकशि(-) ० पु नाम असुर को नृसिंह रूप होकर संहारा(,) ० वामन अवतार ले स्वर्ग मर्त्य पाताल तीन डेग ० कर राजावलि को छल तीनों लोक विससे छी(-) ० नके इन्द्र को दिये ओ वुन्ही परमेश्वर ने सक(-) ० ल क्षत्रियन को जो इस पृथ्वी के वोझ हूऐ थे ० विनाश कर धरती को जीत कश्यप मुनि को दा(-) ० न कर दिया था(।) सोई भगवान अव तुम्हारे लिये ० रघुकुल मे मानुष अवतार लेकर यहां आये ० हैं विन की भार्या सीता को अपने समेत मेरे पु(-) ० त्र के विनाश के लिये क्यूं तुम वल से हरलाये ० हौ अव जो मेरा कहा हित समझो तो जानकी ० को तुरत राम पास भेज दो ओ विभीषण ० को सव राजपाट दे सुचित हो चलो मेरे संग व(-) ० न मे वसो(।) रावण वोल उठा कि भाई वेटों समेत ० सकल राक्षस मंडली को रण मे जुझा कर अ(-) ० व कहो अपना प्राण वंचाने के लिये भला क्यूं ० कर वन मे चलके वसूं तिससे अव जो कुछ हो(-) ० नी है सो होवे पर राम से जा मै लड़ूंगा ओ वि(-) ० न के वाणों से विदीर्ण हो विष्णु पद को जाऊँगा(।) ० मै राम को जानता हूं वे विष्णु है ओ सीता जी ल(-) ० क्ष्मी यह जानवुझ कर जानकी को मै हर ला(-) ० या हूं अव राम के हाथ मृत्यु पा मै परमपद को ० जाऊंगा०इति श्री रामचरित्रे युद्धकाण्डे दश(-) ० मोध्याय:(।) १० (।) इस प्रकार अति प्रीतिकर रानी ० मंदोदरी को वहुत वुझा समझा निदान श्री(-) ० रामचन्द्र से लडने को फिर रावण अपने घर से ० निकला तो वडे वडे भयावन राक्षसन के साथ ० हो सोरह पहिए का रथ पर चढ नाना प्रकार के ० शस्त्र लिये डरावन सरूप वनाये रणभूमि प(-) ० र जा पहुंचा(।) विसे देषते ही वांनरों की सेना वहु(-) ० त डर गयी तव हनूमान वहां से कूद कर रावण ० के आगे आ खडे हूऐ ओ आते ही वुस की छा(-) ० ती मे ऐक ऐसा मुष्टिका प्रहार किया कि विस ० चोट से वह महा असुर मूर्छा कर रथ पर गिर ० पडा ओ मुहूर्त्त भर अचेत रहा(।) फिर उठ कर ० हनुमान से कहने लगा(—)मैंने जाना तुम वडे ० वीर हौ(।) वे वोले(—)धिक्कार है मुजे जों तुम जीते ही हौ(,) ० आओ अव पहले तुम मेरी छाती मे मूका मा(-) ० रो तिस पीछे मै तुम्हे मारूंगा तव निसंदेह तु(-) ० म अपना प्राण तजोगे(।) इस वात को रावण ने ० माना ओ हनूमान के उर मे झट एक वडा घु(-) ० सा मारा(।) वे कपिराज क्षण भर तो मूर्छित हो र(-) ० हे फिर चेत कर जों रावण को मारने चले तों ही ० डर कर वह और जगह मे भाग गया(।) तव हनूमान(-) ० अंगद नल नील ये चारो महावीर वहुत ० रिसियाने तो अग्निवर्ण सर्वरोमा खड्ग रोमा ० ओ वृश्चिकरोमा इन चारो राक्षसन को क्र(-) ० म से रण मे मार गिरा सिंह से गर्जते हूऐ रा(-) ० म पास जा खडे हूऐ(।) इस अनन्तर दशानन ० महा क्रुद्ध भया ओ दांत पीसता हूआ राम ही प(-) ० र दौडा ओ रथ ही पर हो वज्र समान वांणो से ० लगा विन्हे मारने ओ वुन के साम्हने सव वां(-) ० नरों को काटने

तद पावक समान वान जो ० कांचन से भूषित थे रामचन्द्र भी रावण प(-) ० र लगे वरसाने तव रावण को रथ पर ओ सीता(-) ० पति को धरती पर देष इन्द्र ने मातलि नाम ० अपने सारथी को वुला के कहा तुम मेरा रथ ० लेकर भूतल मे जा शीघ्र राम को दो(।) यह का(-) ० ज तुरन्त करो(।) इतनी वात के सुनते ही विस देव ० सारथी ने घोडों को झट सुन्दर रथ मे जोता ओ ० विसे ले स्वर्ग से उतर राम पास आया ओ प्र(-) ० णाम कर हाथ जोड यह वचन लगा विनसे ० कहने(—)महाराज तुम्हारे जय के लियें यह र(—) ० थ तुम्हे देने को इन्द्र ने मुझे भेजा है आप इ (-) ० से लीजे ओ खड्ग धनुष समेत दो तूणी(-) ० ओ अभेद्य कवच ये भी उन्होने तुम्हे भेजे ० है इन्हे लेकर इस रथ पर चढिऐ ओ मुजे अ(-) ० पना सारथी कर वृत्रासुर को इन्द्र की भांति ० रावण को मारिऐ(।) इस प्रकार जव मातलि ने ० कहा परिक्रमा प्रणाम कर रामचन्द्र वुस र(-) ० थ पर जा वैठें तो राम रावण का महा संग्राम लगा ० होने(।) निदान लडते लडते श्रीरामचन्द्र ने रावण ० के आग्नेय शस्त्र को आग्नेय ही शस्त्र से ओं दैव श(-) ० स्त्र को दैव ही शस्त्र से काट डाला(।) तव रावण म(-) ० हा वाण वृष्टि लगा करने वे वाण सव विषधर स(-) ० र्प हो हो कर रामचन्द्र पर लगे गिरने(।) जव मुहों से ० आग उगलते हूऐ विन सांपो ने दिशा विदिशा ० सव छा ली तव चहुंदिश उन्हे देषके श्रीराम ने वी(-) ० च रण मे सौपर्ण अस्त्र छोडे(।) वे शस्त्र ओंही ग(-) ० रुड सरूप हो गये ओ रावण के वाणों को पक(-) ० ड पकड झट निगल गये फिर राम पर महाघोर वा(-) ० ण वृष्टि लगा रावण करने तो दशरथ के लाल ० को अति पीडित कर मातली को सारी देह छे(-) ० द रथ पर गिरा कांचन की ध्वजा काट क्रोध से ० अति मूर्छित हो इन्द्र के घोडों को लगा मारने ० तव आरतहरन भगवान को अति व्यथित ० देष देव गंधर्व सिद्ध चारण पितर महर्षि ओ ० विभीषण समेत सकल वांनर भाल वहुत दु(-) ० खित हूऐ(।) उस समय विशों हाथों मे विश धनु(-) ० ष लिये कैसा लोगन को रावण देषने मे आया ० मानो मैनाक पहार ही आ खडा होवे(।) विसे देष ० कोप से आंषे लाल कर भौं चढा श्रीरामचन्द्र ० ने हाथ मे अद्‌भुत धनुष ले लिया ओ शत्रु ० को अपना पराक्रम देषाने के लिए अति प्र(-) ० ज्वलित सरूप हो गये ओ वांनरों को हर्षित ० करते हूऐ रावण पर दौडे(।) विनका प्रचण्ड रू(-) ० प देष प्राणी सव वहुत डर गये ओ धरती ० लगी कांपने(।) रावण को भी वडा भय हूआ ओ ० देव सिद्ध गंधर्व किन्नर ये सव अपने अपने ० विमानों पर चढ अधर मे आ प्रलय समान ० युद्ध लगे देषने (।) तव ऐन्द्रवाण लेकर श्रीराम ० ने हाथों समेत रावण के शिर काट डाले(।) वे माथ ० लोहू लोहू हो के विसके तन से धरती पर ऐसें ० गिरे जैसे आकाश से ताल फल खसें(।) तिस स(-) ० मय विस महा संग्राम मे मारे धूर के न तो किसी ० को कोई दिशा सूझे ओ न दिन समझा जावे ० न रात न सांझ न चांद न सूरज देषने मे आ(-) ० वें जव कि रावण के माथ फिर ज्यों के त्यों हो ग(-) ० ये(।) विसे देष कर रामचन्द्र वहुत चक्रित हूऐ ० ओ कहने लगे(—)एक सौ एक वेर इसके शिर मैं ० ने काट गिराये तो भी इस महादुष्ट का प्राण न(-) ० ही जाता फिर जों के तों ही इसे देषता हूं जिन ० जिन वाणों से अनेक दैत्यन को मैंने संहारा ० सोई ये मेरे वाण हैं रावण के विनाश करने ० मे अव निष्फल हो गये (।) इस भांति जव राम(-) ० चन्द्र वहुत चिन्ता लगे करने तव विभीषण ० जो पास खडा था विन से कहने

लगा(—)महारा(-) ० ज इसे ब्रह्मा का वर है इस कारण यद्यपि इसके ० शिर हाथ काटे जाते हैं तो भी फिर तुरन्त उत्प(-) ० न्न होते हैं इस दुष्ट के नाभि कमल मे अमृत ० वसता है वुस को शोषिए तभी यह मरेगा(।)इत(-)० ने वचन के सुनते ही पावकास्त्र से पहले राम ० ने वाणों से रावण की नाभी छेद डाली तिस पीछे विस(-)० के नव शिर अठारह हाथ तनु से काट गिराये(।)० तव अति कोपकर महाशक्ति ले विभीखण ० पर वह दौडा(।)विस शक्ति को भी राम ने वाणों० से खंड खंड कर दिया तद शिर कटने से रावण ० के शरीर का सभ तेज निकल गया ओ कटे० हूऐ माथों से विसका सरूप महामलीन हू(-) ० आ अरु एक शिर दो हाथ विसे रह गये तो ० भी अति क्रुद्ध हो फिर वह महा असुर राम ० पर नाना शस्त्र वृष्टि करने लगा(।) विसी प्र(-) ० कार राम भी वुस पर लगे वाण वरसाने (।) ति(-) ० स समय विन दोनों को आपसे[1] महाघोर संग्रा(-) ० म लगा होने तव मातलि ने राम से कहा(—)महारा(-) ० ज जिसलिये देवताओं ने तुम से वडी प्रार्थना ० की थी सोई रावण का विनाश काल यह आज ० आन पहुंचा अव इसे ब्रह्मास्त्र से शीघ्र मारिए ० ओ हे रामचन्द्र इस रावण का माथ आप मत ० काटिए इसे मर्मस्थान मे वाण मारिऐ तव यह ० मरेगा(।) इस भांति मातली की वातें सुन श्रीराम(-) ० चन्द्र ने विस दिप्त वाण को जो सांप सा उसास ० भर रहा था ओ जिसके दोनों पंजरे मे पवन ० का वास था ओ शिर मे अग्नि सूरज रहते थे ओ ० पोर पोर मे लोकपाल ओर जो मेरु पर्वत समा ० न भारी था आ सूर्य सा प्रज्वलित हाथ मै उ(-) ० ठा लिया ओ वेद के मंत्र से अभिमंत्रित कर ज्यों ० वुसे धनुष पर चढाया सकल जीव जन्तु त्रसित ०हूऐ ओ धरती लगी कांपने(।)तव राम ने वह वज्र स(-) ० मान वाण रावण की छाती मे मारा वुह वाण रा(-)० वण के कलेजे मे चुभ गया तद वह महादुष्ट राक्ष(-)० स मूर्छित हो धरती पर गिर परा अरु तुरन्त म(-)० र गया ओ वह वाण रावण को मार के फिर राम(-) ० की तूणी मे जा पैठ गया(।) तव रावण को भूमि ० पर गिरा हूआ देष राक्षस सव जो जूझने से ० वंचे थे अनाथ हो दिशा दिशा को भाग गये ० ओ कितने एक अति व्याकुल हो लंका मे जा घु(-) ० से ओ वांनर सव वहुत हर्षित होकर राम का जय ० रावण का वध यह वार वार लगे पुकारने(।) इस अ(-) ० नन्तर रावण का क्षय देष आकाश मे देवता ० सव जो विमानों पर चढ युद्ध देषने को आये थे ० लगे ढोल डमामे वजाने ओ चहुंदिश से राम ० पर फूल वरसावने ओ सिद्ध मुनि सव यश व(-) ० षानने अपसरा गण नाचने ओ रावण की ० देह मे से लुक सा तेज निकला ओ देवताओं ० के देषते हूऐ रामचन्द्र के शरीर में पैठ गया(।) सो ० अचरज देष देवता सव आपस मे कहने लगे ० कि देषो हम सव सात्विक देहधारी हैं ओ विष्णु० की दया हम पर सदा रहती है तो भी संसार का दु(-)० ख भय हम लोग पर व्यापा ही रहता है ओ यह ० महातामसी क्रूर राक्षस जो ब्रह्मघातक ओ ० परदार मे रत था ओ विष्णु का द्वेषी और तप(-) ० स्वीजन का हिंसक था सकल प्राणीन के देष(-) ० ते राम मे जा मिल गया(।) इसके भाग्य का कुछ ० पारावार नही है(।) तव नारद मुनि वोले(—)सुने दे(-) ० वता सव इसका कारण यह है कि जव रावण ० ने सुना कि राम के हाथ मेरी मृत्यु होवेगी तव ० से भृत्यन

१. आपस में।

समेत वैर भाव से निशवासर राम ० का ध्यान करते करते ऐसा हूआ था कि भय ० से सव ठांव राम ही को देषता था निदान अं ० त समय विनके हाथ मृत्यु पा निष्पाप हो स(-) ० कल कर्म वंधन से छूट राम ही मे जा मिला सो ० है क्याकि कैसा ही कोई पापी होय पर नेह से ० अथवा डर से नित्य इश्वर को सुमरता होवे व(-) ० ह भी सव दुख से मुक्त हो विष्णु पद को जाता है(।) ० हरि के ध्यान का यही महातम है तुम लोग वृ(-) ० था खेद करते हौ ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध कां(-) ० डे ऐकादशोध्याय:(।) ११(।) जव रावण मारा गया ० विभीषण हनुमान अंगद ओ सुग्रीव को प्र(-) ० सन्न मन देष के रामचन्द्र कहने लगे(—)सु(-) ० नो वीरो तुम्हारे वाहु-वल से रावण को मैंने मारा ० है यह तुम्हारी उत्तम कीर्ति जव तलक चंद्र(-) ० मा सूर्य रहेगें संसार मे रहेगी ओ सकल पा(-) ० प हरनहारी अरु महापुण्यदाय इस कथा ० को जो नर गावेगा सो परमगति पावेगा(।) इस भां(-) ० ति श्रीरामचन्द्र कहते ही है कि मन्दोदरी आ(-) ० दि रावण की सकल स्त्रियां रावण पास आ(-) ० न पहुची ओ पृथ्वी पर विसे पडा हूआ देष धर(-) ० ती पर गिर पडीं और छाती पीट पीट लगी व(-) ० हुत रोने(।) वुन्हे देष कर विभीषण को वडा शोक ० भया तो रावण के आगे जा गिर पडा ओ महा ० विलाप करने लगा तव राम ने लक्ष्मण से कहा ० तुम इन्हे समझाओ जो भाई का दाहकर्म ० करें क्यूं वहुत विलम्व करते हैं और रावण की ० प्यारी राक्षसी सव मंदोदरी आदि को चुप करा(-) ० वें अव रोने पीटने से कुछ होने का नही(।) इतनी ० वात के सुनते ही विभीषण के पास जो शोक ० से अति व्याकुल हो मृत के निकट मृतक ही ० सा पडा हूआ था लक्ष्मण जी गये ओ यह व(-) ० चन लगे विससे कहने(—) हे विभीषण तुम जिस ० का मोह करते हौ वह संसार के पहले(,) अव(,) ओ ० आगे तुम्हारा कौन है ओ तुम विसके कौन हौ ० ज्ञान दृष्टि से विचार देषो तो जैसे कभीं तो वालू ० पानी के साथ रहता है ओ कवहूं विससे अल(-) ० ग होता है वैसे ही काल सें प्राणीन के संयोग वि(-) ०योग है ओ जैसें विरवान मे फल लगता ओ ० झरता है विसी प्रकार हरि की माया से प्राणीन ० मे प्राणी उत्पन्न होते ओ मरते हैं तिस्से क्या ह(-) ० म क्या तुम क्या दूसरे सव काल वश होकर उत्प(-) ० न्न हुए हैं जव जिससे जिसका जनम मरन हो(-) ० ना है हो ही गा इसमे किसी का कुछ शक्य है न(-) ० ही(।) ईश्वर सकल जी को उत्पन्न करते ओ मा ० रते हैं तुम वृथा एत्ता मोह करते हौ(।) देह के ज्ञा(-) ० न से माता पिता भाई वंधु ये सव हैं ओ जव देह ० से अलग आत्मा को आपसे आप जाने तव ० को किसका भाई वंधु ओ माता पिता मित्र है(।) ० स्त्री पुत्र घर द्वार विषय भोग नाना प्रकार ० की संपत भंडार वल राज्य भूमि यिह सव अ(-) ० ज्ञानता से हूऐ हैं क्षण मे नष्ट हो जाते हैं यह सम ० झ मोह त्याग कर तुम उठो ओ जो कुछ हुआ ० ओ होगा विसकी चिन्ता तज भक्ति से नित्य ० राम का ध्यान करते हूऐ अपना राज्य जो भा(-) ० ग्य से हाथ लगा है भोगो संसार के दुख मे क(-) ० वहूं न फंसोगे(।) यों कह फिर वोले(—)रामचन्द्र ० की आज्ञा है शास्त्र के विधि से भाई का दा(-) ० ह कर्म जा करो ओ रोती हूई स्त्रीयों को वर्जो ० वे शीघ्र लंका मे जांये(।) इस भांति जव लक्ष्म(-) ० ण ने कहा शोक मोह तज विभीषण तुरन्त ० राम पास आया ओ यह वचन लगा विनसे ० कहने महाराज इस क्रूर रावण का जो स(-) ० दा लंपट ओ महाअधर्मी था अग्नि संस्का(-) ० र करना उचित नही(।) विन्होने उत्तर दिया म(-) ०

रने तक वैर था अव इससे किस वात का विरो(-) ० ध(।) तुम शीघ्र जा इसे दाह् दो(।) इस प्रकार राम ० की आज्ञा शिर पर रष के निदान ज्ञान की ० वातों से शीघ्र विभीषण ने रानी मंदोदरी को चु(-) ० प कराया ओ भाईन मंत्रीन के साथ हो रावण को ० तुरन्त वहां से उठा चिता पर रष विधि से जला ० स्नान कर गीला ही वस्त्र पहने विसे तिलांज(-) ० लि दे प्रणाम कर स्त्रियों को वहुत वुझा समझा लंका ० मे भेज दिया(।) वुन्हो के वहां से गये पर आप रा(-) ० म पास आ षडा हूआ(।) वुसे देष लक्ष्मण सुग्रीव(-) ० समेत श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने(।) तव राम को ० प्रदक्षिणा प्रणाम कर विनकी आज्ञा पा विदा ० हो मातलि स्वर्ग लोक गया तव अति मगन ० हो श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा विभीष(-) ० ण को लंका राज्य मैं आगे दे चूका हूं तिससे ० अव लंका मे जा विप्रन मंत्रीन के साथ हो वि(-) ० भीषण को राज्य पर विठलाओ(।) यह सुन वां(-) ० नरों समेत तुरन्त लक्ष्मण जी लंका मे गये ० और सुवर्ण के कलशों मे समुद्र के जल मंगा(-) ० विभीषण को राज्य का अभिषेक किया ओ भेंट की ० नाना सामग्री हाथों मे लिये हूऐ पुरवासीन के सा(-) ० थ हो विसे उपायन दिया(।) तव अति हर्षित हो वि(-) ० भीषण ने राम को आ दंडवत किया विसे देष क(-) ० र वे वहुत प्रसन्न हूए ओ अनुज समेत अपने को० धन्य कर माना ओ सुग्रीव को गले लगा कर य(-) ० ह वचन कहा(—)हे वीर तुम्हारी सहायता से राव(-) ० ण को मैंने जीता ओ विभीषण को लंका का ० राज्य दिया(।) इस प्रकार सुग्रीव से वतरा फिर न(-) ० म्र हो हनूमान से राम ने कहा कि विभीषण से ० पूछ कर तुम रावण के घर मे जाओ अरु जिस ० जिस प्रकार से रावण का वध हूआ सो सभ स(-) ० माचार सीता से जा कहो ओ जो कुछ वे कहें सो ० मुझे आ सुनाओ(।) इस भांति प्रभु की आज्ञा ० पा विभीषण से संमत कर पवन कुमार तुरत ० लंका मे गये वहां निशाचरों से पूजित हो रावण ० के घर भीतर शीशो के वृक्ष तले राक्षसीन के वीच मे ० सीता को जो राम के ध्यान मे मगन हो रही थी देष शि(-) ० र झुका प्रणाम कर हाथ जोडे विन के आगे जा ख(-) ० डे हूए(।) वुन्हे देष जानकी जी पहले तो डर कर मुह फे(-) ० र वैठीं फिर आगे की वात सुमर राम का दूत जान ० वहुत हुलसित भयीं(।) तव सीता का प्रसन्न मुख देख ० राम का सव संदेश हनूमान ने सुनाने को आरम्भ ० किया इस प्रकार से कि हे देवी विभीषण को सहा(-) ० य पा लक्ष्मण सुग्रीव के साथ हो पुत्र समेत ओ ० सकल सेना मंत्री सहित रावण को रण मे मार क(-) ० र विभीषण को लंका राज्य दे श्री रामचन्द्र ने अप(-) ० ना क्षेम कुशल तुमसे कहने को हमे भेजा है(।) सुन क(-) ० र सीता वहुत हर्षित हूंई ओ वोली(—)अहो तुमने मु(-) ० जे वडा हर्ष सुनाया(,) इसकी वधायी(,) मै तुम्हे कौन व(-) ० स्तु दूं(,) तुम्हारे इस प्रिय वचन के तुल्य न तो तीनों लो(-) ० क मे कोई रत्न मै देषती ओ न कोई आभरण(।) ह(-) ० नूमान ने उत्तर दिया कि नाना रत्न की ढेड ओ ० स्वर्ग के राज्य इन से भी अधिक लाभ यही मुझे ० है कि शत्रु को मार कर सुचित हूए हैं जो श्री रामचं(-) ० द्र विनका दर्शन पाता हूं(।) तव सीता ने कहा(—)सव ० गुणों से तुम भरे हूऐ हौ तुम्हारी क्या वात है अव ० ऐसा यत्न करो जो रामचन्द्र मुजे शीघ्र वुलावें ओ ० मै विन्हे जा देषूं(।) यह वचन सुन अछा कह सीता से तुरं(-) ० त हनूमान विदा हूआ ओ जो कुछ सीता ने क(-) ० हा था सो सव राम को आ सुनाया ओ कहा(—)जि(-) ० स के लिये आपने वडी धूम

धाम कर रावण को ० मारा विस जानकी को वुलाकर देषिऐ वह शो(-) ० क से बहुत ब्याकुल हो रही है(।) इस प्रकार जब ह(-) ० नूमान ने कहा राम ने शोचा कि माया कि सीता ० को अव त्याग करूं और आग मे से जनक नंदि(-) ० नी को निकाल लूं(।) यिह अपने मन मे ठहरा ० कर विभीषण से उन्होने कहा(—)तुम लंका मे जा ० ओ अरु सीता को स्नान करा सव भूषण वस्त्र ० पहना शीघ्र मेरे पास लाओ(।) सो सुन हनूमान ० समेत विभीषण लंका मे गया तो वृद्ध राक्षसीन ० से सीता को स्नान करा सव आभरण पहना सु(-) ० थरी सी पालकी पर चढा राम पास ले चला तव ० सुन्दर जामा पगडी पहने ओ रूपा के सोटे हा(-) ० थों मे लिये हूऐ अनेक लोग वुन्हो के संग हो ० लिये(।) जव पथ से सव आन पहुचे वुनको देष(-) ० ने के लिये बांनर सभ आये तव हाथों मे वेत ले ० कर वहुतेरे लगे विन को वर्जने(।) जव महा रौर ० मचाते हूऐ निकट वे आन पहुचे तव पालकी ० पर सीता को देषकर रामचन्द्र ने विभीषण ० को कहा किसलिये वांनरो को वरजते हौ वे स(-) ० व सीता को देषें ओ सीता पादचारें[1] मेरे पास ० आवे(।) यह सुन पालकी पर सें तुरंत जानकी ० उतरी ओ धीरें धीरें राम समीप आयी(।) तव का(-) ० म के लिये माया की वनी हूई विस सीता को देष ० कर श्रीरामचन्द्र ने वहुत सी वातें जो कहने यो(-) ० ग्य नही विसे सुनायीं(।) सो वात वह सह न शकी तो ल(-) ० क्ष्मण से कहने लगी कि लोगों समेत राम को विश्वा(-) ० से होने के लिये मै अपना विचार दूंगी(।) तुम शीघ्र अ(-) ० व आग लहराओ(।) यिह सुन राम की भी सैन पा विसी ० घडी लक्ष्मण जी वहुत सा काठ इकठा कर आग वि(-) ० न मे लहरा आप राम पास आ चुपचाप खडे हो गये(।) ० तव देव राक्षसों की स्त्रियों सहित सकल लोगन के ० देषते हुए भक्ति से राम को प्रदक्षिण ओ दे(-) ० वता व्राह्मणों को प्रणाम कर सीता आग समीप ० आयी ओ हाथ जोड यह वचन विससे कहने लगी ० हे अग्नि देवता जों तो एक राम विना दूसरे किसी ० पुरुष पर मेरा मन न डगा होवे तव तो मुजे वंचा(-) ० ना नही तो जलाकर भस्म कर दीजो(,) तुम धर्म के साक्षी हो(।) यों ० कह परिक्रमा कर जी मे अति निर्भय हो निदान वि(-) ० स प्रज्वलित पावक मे माया कि सीता कूद परी(।) वु(-) ० से आग मे जों कि तों देष जितने देवगण ० सिद्ध लोग थे सो सव वहुत दुखित हूऐ ओ आ(-) ० पसे परस्पर सीता को पतिव्रता कहने लगे ओ ० वैसी ही आकाशवाणी भी उपर से हूई ० इति श्रीरामचरित्रे युद्ध काण्डे द्वादशोध्याय:(।) १२ (।) ० इस अनन्तर इन्द्र वरुण कुवेर महादेव व्रह्मा ० सिद्ध चारण साध्य किन्नर गंधर्व अप्सरा पि(-) ० तर मुनि ये सव अपने अपने बिमान पर च(-) ० ढे हूऐ सीता को देषने के लिये राम पास ० आये ओ वुन को प्रणाम कर हाथ जोड यह व(-) ० चन कहने लगे(—)महाराज तुम तीनों भवन ० के आदि कर्त्ता ओ ज्ञान सरूप हौ औ वसु(-) ० न मे आठवें ओ रुद्रों मे तुम शंकर हौ ओ ० सव को सृजनेवाले चतुर्मुख व्रह्मा तुम ही ० हौ अश्विनी कुमार तुम्हारी नाक हैं ओ चां(-) ० द सूरज आंष तुम सकल लोक के आदि अं(-) ० त हौ सदा शुद्ध चैतन्य सरूप निर्गुण व्रह्महो(।)तु(-) ० म्हारी माया से अन्धे हूऐ लोगन को मनुष्य ० से लगते हौ(।)रावण ने तेज समेत हमारा स्था(-) ० न हर लिया था सो वुस महादुष्ट को आप ०

---

१. पैदल।

ने मारा तो हम सव फिर अपने पद को पहुचे (।) ० इस भांति जव देवता सव कह चुके तव ब्रह्मा ० लगा राम से कहने (—) तुम सव की स्थिति के का(-) ० रण विष्णु हौ आत्मज्ञानी लोग हृदय में नित्य तुम्हारा ही ध्यान करते हैं तुम सव घट ० वासी पूरण ब्रह्म हौ तुम्हारी महिमा को जा(-) ० न शके ओ आदि अन्त पावे (।) तुम अनाथों ० के नाथ करुणा अवतार हौ मेरी सेवा के लि(-) ० यें मानुष सरूप हूऐ हौ मैं तुम्हे प्रणाम कर ० ता हूं यिह मेरा किया हूआ स्तोत्र जो नर म(-) ० न देकर पढेगा सव पाप से छूट ब्रह्मपद को जा(-) ० वेगा (।) इस प्रकार राम की स्तुति सुन धर्म का ० साक्षी अग्नि देवता सीता को अंक मे लिये ० जो दिव्य वस्त्र भूषण पहने सूरज सी प्रका(-) ० श हो रही थी रामचन्द्र से कहने लगा (—) हे महा(-) ० राज रावण के विनाश हेतु माया की सीता ० जो आपने वनायी थी विसके प्रताप से कु(-) ० ल परिवार समेत दशानन मारा गया ओ ० धरती का भार मिटा ओ वह माया की सी(-) ० ता कृतार्थ हो अन्तरध्यान हो गयी ओ जि(-) ० स को मुजेमे आपने आगे रष्या था सो ० सीता यही है अव आप इसे लीजें यह सु(-) ० न अति हर्षित हो अग्नि देवता की पूजा क(-) ० र श्री रामचन्द्र ने सीता को(-) जो तीनो लोक ० की जननी ओ सदा निष्कलंक है (,) आग ० मे से निकाल कर अंक मे लिया (।) तव जान(-) ० की सहित राम को देष इन्द्र को वडा आनं(-) ० द हूआ तो हाथ जोड कर वह भी वुनकी स्तु(-) ० ति करने लगा (—) इस प्रकार से कि जो रामचन्द्र इंदी(-) ० वर समान श्याम सरूप हैं ओ दुःख रूप वन को ० जलाने मे दावानल हैं देवतान के कष्ट विनाश(-) ० न हारे हैं परमानन्द परम सुखदायक हैं नर सरू(-) ० प हो दुखी जन के सकल क्लेश निवारण हैं ओ ० निरंकार ब्रह्म हैं सुग्रीव आदि के परम मित्र हैं वि(-) ० न सीतापति को सदा प्रणाम करता हूं ओ जो मा(-) ० या कर मानुष हुऐ हैं ओ जिनकी अमृत समा(-) ० न कथा सुन संसार मे लोग कृतार्थ होते हैं वे द(-) ० शरथ के लाल सदा मेरे मन मे वसें (।) हे जानकी ० पति मै अपने राज्य के अभिमान से महामत्त ० हो रहा था अव तुम्हारे चरण कमल को प्रणाम ० किये से मेरा अभिमान नष्ट हूआ (।) इस भांति व(-) ० हुत कहके जव इन्द्र चुप भया तव महादेव ने राम ० से कहा जव तुम अयोध्या मे राज्य पर बैठोगे मै ० तुम्हे देषने को आऊंगा (।) ० अव राजा दशरथ को तु० म देषो विमान पर चढ स्वर्ग से आ आकाश मे ये ० खडे हैं (।) यह सुनते ही जव शिर उठा के देखा कि ० राजा दशरथ विमान पर चढ आगे आ खडे हूऐ ० हैं तव राम लक्ष्मण दोनो भाई विनके चरणों प(-) ० र जा गिर पडे वुन्होने इन दोनों को अंक मे लगा क(-) ० र मुह चूम लिया ओ कहा हे वत्सो तुमने संसार ० के दुःख से मुजे वंचा लिया यों कह राम लक्ष्मण ० से पूजित हो राजा दशरथ फिर सुरपुर को ग(-) ० ये (।) तव इन्द्र से जो कर जोरे खडा था रामचन्द्र ने क(-) ० हा ये वांनर भाल सव मेरे लिये लडाई मे मारे ग(-) ० ये हैं तिससे तुम शीघ्र इन्हो पर मेरी आज्ञा से ० अमृत वरसाओ (।) यह सुनते ही सुरपति ने दो(-) ० नो दल पर अमृत वृष्टि की तो जो जो भाल वां(-) ० नर संग्राम मे मारे गये थे सो सव विस सुधा के ० पडते ही जैसे नींद से जागे होंऐ वैसे ही उठ वैठे ० ओ आगे की भांति महापराक्रमी हो राम पास ०आ खडे हूए ओ रावण पर यद्यपि अमृत वरसा ० तो भी वह न उठा तिसका कारण यह है कि मृत(-) ०क को अमृत जिला शक्ता है ओ विष्णु के हाथ ० मृत्यु पाकर जो मुक्त हो गये हैं विनको अमृत ० नही जिला शक्ता (।)

इस अनन्तर प्रणाम कर ० विभीषण ने राम से कहा(—)महाराज जों मुजे जा(-) ० निऐ कि यह मेरा भक्त है तो मुझ पर अनुग्रह ० करके सीता समेत आप मंगल स्नान कीजे(।) सव ० भूषण वस्त्र पहना भाई सहित आपको क(-) ० ल्ह मैं अयोध्या ले चलूंगा(।) वे वोले मेरा अति भ(-) ० क्त ओ सुकुमार भरत जटावल्कल धारण ० किये शत्रुघ्न समेत पुर मे हमारी वाट निहार(-) ० ता होगा विस विना मंगल स्नान मैं क्यूंकर करूं ० ओ अलंकार पहनूं तिससे मेरी पती[1] सुग्रीव ० आदि सकल सेनापतिन को वस्त्र भूषण से ० तुम पूजो विनकी पूजा से निसंदेह मेरी पूजा ० हो चुकी(।) इस प्रकार जव प्रभु ने आज्ञा की तव ० जो जिसकी रुचि थी विस सेनापतिन को वैसे ही ० रत्न भूषण भर इछा दे विभीषण ने पूजा ओ ० स्तुति विनती कर वहुत प्रसन्न किया तव अन(-) ० मोल रत्नों वस्त्रों से पूजित विन सेनापतिन को ० देष श्रीरामचन्द्र वडे हर्षित हूऐ ओ विभीषण ० से अति उत्तम पुष्पक विमान मंगा सीता को ० अंक मे लिये भाई लक्ष्मण समेत विस पर जा ० वैठे और सुग्रीव अंगद विभीषण जाम्ववान ० आदि से कहने लगे कि वांनरों सहित तुमने मि(-) ० त्र काज जैसा कुछ चाहिऐ वैसा किया तुम लोगों ० से हम वहुत प्रसन्न हैं अव हमारी आज्ञा से ज ० हां तुम्हारा जी चाहै वहां तुम सव जाओ(।) सुग्री ० व तुम तो अपने सेनापतिन समेत किष्किधा ० को सिधारो ओ हे विभीषण तुम लंका मे जा राज्य ० पर वैठो किसी वात का संदेह न करना इन्द्रादिक भी ० अव तुमसे कुछ ढिठाई न करेगें अव हम अयो(-) ० ध्या को जाते है मेरे पिता की वह राजधानी है(।)इस ० प्रकार जव राम ने कहा कर जोर वांनरों समेत वि(-) ० भीषण वोल उठे(—)महाराज आपके साथ हम भी ० अयोध्या जाया चाहते हैं वहां तुम्हारा अभिषे(-) ० क देष कौशल्या जी का दर्शन कर फिर यहां आ ० राज्य पर वैठेगें(,)आप आज्ञा कीजे(।) यह सुन ज(-) ० व राम ने कहा अच्छा तव सेना मंत्रीन समेत सु(-) ० ग्रीव विभीषण हनूमान आदि सव पुष्पक प(-) ० र चढ गये(।) विन्हो के चढे पर राम की आज्ञा पा कु(-) ० वेर का वह वाहन जिसमे हंस सव जोते हूए थे आ(-) ० काश पथ हो अतिशीघ्र अवधपुरी को चला(।) तव ० रामचन्द्र वहुत हर्षित भये ओ ऐंसे शोभने लगे ० जैसें चतुर्मुख कोई दूसरा व्रह्मा होवे ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे त्रयोदशोध्यायः(।)१३(।) ० इस भांति जव लंकासे श्री रामचन्द्र चले चहुं दिश ० निहार के सीता से कहने लगे देषो त्रिकूट पहार ० पर यिह लंका नगर वसता है ओ महा प्रकाश हो ० रहा है ओ यही रणभूमि है जहां असुरों वांनरों का ० महा संग्राम हूआ है ओ जहां मांस लोहू का चह(-) ० ला हो रहा है यहां ही कुम्भकर्ण इन्द्र जीत आदि स(-) ० कल वीरों समेत रावण मारा गया है ओ सागर मे ० यही पूल हमने वांधा है यिह सेतुवंध नाम तीर्थ ० वडा विख्यात होगा ओ तीनों लोक से पूजित ओ ० परम पुनीत(।) इसके दर्शन से सकल महापाप ० नशता है यहां रामेश्वर महादेव की स्थापना ह(-) ० मने की है ओ यिह वह स्थान है जहां मंत्री सहि(-) ० त विभीषण हमसे आ मिले थे ओ यही किष्कि(-) ० धा नाम नगरी है जहां आश्चर्य वन उप(-) ० वन सव दृष्ट आते हैं(।) यह कहते हूए विस पुरी के ० पास आ श्री रामचन्द्र ने सुग्रीव से कहा(—)तारा आ(-) ० दि स्त्रियों को तुम वुलाओ जो वुन के साथ

१. मेरे बदले।

हर्षित ० होकर सीता अयोध्या पहुचे (।) यिह सुनते ही सुग्रीव ० की आज्ञा पाय तारा आदि वांनरों की अनेक स्त्री ० सब आन पहुंची औ जव पुष्पक पर चढ चुकीं तव ० देष कर राम ने वुस वाहन को शीघ्र वहां से हांका तो ० ऋष्यमूक के साम्हने आ फिर वे सीता से कहने ल (-) ० गे देषो यहां ही वाली को हमने मारा ओ यही पंचव (-) ० टी नाम स्थान है जहां अगस्त्य ओ सुतीक्ष्ण मुनि ० के सुन्दर आश्रम शोभ रहे हैं (।) यहां अनेक राक्षसों को ० हमने संहारा ओ ये तपस्वी जन जहां दृष्ट आते ० हैं सो यिह चित्रकूट नाम गिरिवर प्रकाशित हो रहा ० है (।) यहां ही केकयी का पुत्र भरत मुजे मनाने को आ (-) ० या था और यमुनातीर भारद्वाज मुनि का यिह आ (-) ० श्रम है यिह भागीरथी गंगा है जो सव को पवित्र क (-) ० रती है ओ यह सरजू नाम नदी है ओ वह देषो अ (-) ० योध्या है वुसे प्रणाम करो (।) इस क्रम से सीता को स (-) ० व स्थान देषाते हूए चौदहवां वर्ष पञ्चमी को श्री रामच (-) ० न्द्र भाई समेत भरद्वाज मुनि के आश्रम मे आ (-) ० न पहुचे (।) तव प्रणामकर नम्र हो विस ऋषि से अप (-) ० ने घर का समाचार दोनों भाई लगे पूछने (—) महारा (-) ० ज आपने सुना है शत्रुघ्न सहित भरत कुशल क्षेम ० से है ओ अयोध्या सुभिक्ष है ओ मेरी माता सव ० जीवती हैं (?) राम की बातें सुन भरद्वाज मुनि वहुत ० हर्षाने ओ वोले (—) हां सवको आनन्द है भरत जी ज (-) ० टा वल्कल धारण किये नित्य फलाहार ही करते ० हैं ओ सदा तुम्हारा पंथ निहारते ओ जो कुछ राज्य ० काज करते हैं सो सव तुम्हारी खरांऊन को जा सु (-) ० नाते हैं (।) महाराज (,) दण्डकारण्य मे राक्षसों का नाश ० आदि जो जो काज आपने किये ओ जिस प्रकार ० से सीता का हरण हूआ सो सव तुम्हारी कृपा से ओ ० अपनी तपस्या के वल से मै जानता था तुम साक्षा ० त परमव्रह्म हौ ओ सवके अंतरयामी नारायण ० हो तुम्हारे नाभिकमल से व्रह्मा जो लोक का पिता (-) ० मह हैं उत्पन्न हूआ इस कारण जगत के तुम ईश ० हौ ओ सभ लोक मे नमस्कृत तुम विष्णु हौ (,) जान (-) ० की जी लक्ष्मी हैं (,) ओ लक्ष्मण जी (,) आप शेष ना (-) ० ग हैं (।) आकाश तुम सवमे व्याप रहे हौ ओ चेतन ० रूप हो सभों के साक्षी हौ माया कर नाना सरूप हूऐ ० हौ प्राणिन के वाहर भीतर सव मे तुम्ही व्याप रहे हौ ० पर मूढो को कुछ लक्षित न होते हौ तुम जगत के ० आधार ओ पालक हौ जो कुछ देषा सुना ओ सुमि (-) ० रा जाता है सो सव तुम ही हौ तुम विना दूसरा कुछ ० दृष्ट नही आता तुम्हारे अवतारों की कथा जो नर ० सुचित होकर गाते हैं संसार से मुक्त हो परमपद ० को जाते हैं (।) पृथ्वी का भार दूर करने के लीये व्रह्मा ० की विनती से रघकुल में मानुष अवतार ले देव ० तान का काज जो अति कठिन था सव आपने कि (-) ० या यिह उत्तम आपका यश तीनों लोक मे फैले ० गा (।) अव मेरी प्रार्थना यह है कि सव समेत आज य (-) ० हां रहकर मेरा घर आप पवित्र कीजे कल्ह अयो (-) ० ध्या जाइएगा (।) सुनकर श्रीरामचन्द्र वहुत प्रसन्न हू (-) ० ऐ तो सकल सेना सहित विस दिवस वुस आश्रम मे ० रह गये तद ऋषि ने उनका वडा शिष्टाचार किया (।) ० जव खाने पीने से सव सुचित हूऐ क्षण एक शोचक (-) ० र रामचन्द्र ने हनूमान को कहा अव तुम शीघ्र अयो (-) ० ध्या जा राजमंदिर की क्षेमकुशल लाओ पर शृं (-) ० गवेर पुर मे गुह नाम एक हमारा वडा मित्र रहता ० है विसे सीता लक्ष्मण समेत हमारा आगमन ० पहले सुना कर फिर नंदिग्राम मे जा भाई भरत से ० हमारी कुशल जनाइओ ओ कहिओ कि सकल ० शत्रुन को जीत

कर सीता लक्ष्मण सहित ऋक्ष वां(-) ० नरों को साथ लिये भरद्वाज मुनि के आश्रम मे राम(-) ० चन्द्र आन पहुचे(।) यिह वृत्तान्त भरत को जना वि(-) ० न की चाल रहन सब देष तुम शीघ्र हमारे पास आ(-) ० ओ(।) यिह सुनते ही हनूमान तुरन्त वहां से विदा हूऐ ० ओ मानुष सरूप हो वायुवेग समान अति शीघ्र ० नंदी ग्राम को चले तो जाते जाते शृंगवेरपुर आ ० वहुत हर्षित हो गुह को बुलाकर कहने लगे(—)सीता ० लक्ष्मण समेत श्रीरामचन्द्र तुम्हारे सखा ने अप(-) ० ना षेम कुशल तुमको कहा है भरद्वाज से विदा ० हो आज वे यहां आवेंगे तव तुम देषोगे(।) यों कह गु(-) ० हू को वहुत हुलसित कर फिर आगे को हनूमान व(-) ० ढे ओ कुछ घडी मे सरजू नदी पार हो अयोध्या से ० पछम कोश भर पर नंदीग्राम मे आन पहुचे(।) त(-) ० हां देषें तो चीर वसन पहने शिर मे जटा वढाये म(-) ० लीन मुख किये मंत्रीन समेत वीच सभा मे भरत ० वैठे हैं ओ कन्द मूल आहार करते करते अति दुव(-) ० ले से हो रहे हैं और राम की दोनों खराऊं आगे र(-) ० ष राजकाज सव करते हैं पर रह कर राम की०चिन्ता से निपट व्याकुल हो रहे हैं ओ नगर के मा(-) ० ननीय लोगों संग कैसें लगते हैं जैसें मूर्त्ति धा(-) ० रण किये साक्षात धर्मराज ही आ वैठे हैं(।) यह देष(-) ० ते ही हाथ जोर कर हनूमान लगे विनसे कहने ० कि दंडकारण्य के रहनेवाले जिन रामचन्द्र महा(-) ० तपस्वी की तुम चिन्ता करते हो विन्होने अपना ० षेमकुशल तुम्हे कहा है अव तुम दारुण शोक ० तजो इसी मुहूर्त मे राम से तुम्हे भेट होगी वे वां(-) ० नरों संग हो युद्ध मे रावण को वध सीता को साथ ० लिये लक्ष्मण समेत अति निकट आ चुके(।) सु(-) ० न कर भरत चकित भये ओ महाहर्षित हो शीघ्र ० हनूमान को अंक मे लगा मारे आनन्द के सजल ० नयन हो यह वचन कहने लगे(—)महाराज तुम देव(-) ० ता हो कैं[1] मनुष्य आपने वडी कृपा की जो यहां आ(-) ० ये इस प्रिय संदेशे का नछावर सहस्र गौ शौ ग्रा(-) ० म मैं तुम्हे दूंगा(।) वहुत वर्ष पर मेरे नाथ का समाचा(-) ० र तुमने आज सुनाया यह तुम्हारी वात सच सी ० मुजे लगती है क्यूंकि कुशल क्षेम से जो मनुष्य र(-) ० हे तो किसी न किसी दिन विससे भेट अवश्य हो(-) ० ती है अव तुम यह मुझे सुनाओ कि रामचन्द्र को ० वांनरो से किस प्रकार साथ हूआ(।) यह सच कर कहो ० जो तुम्हारे वचन का मुजको विश्वास होवे(।) इस भां(-) ० ति जव भरत ने पूछा एक ओर से राम का चरित्र ० हनूमान कहने लगा कि ऋष्यमूक पर्वत के निकट ० किष्किन्धा नाम एक नगर है तहां वालीको वध वां(-) ० नरों के साथ हो श्री रामचन्द्र लंका मे गंये वहां वि(-) ० भीषण को राज्य पर विठला पुष्पक विमान पर च(-) ० ढ़ भारद्वाजके आश्रम मे आये हैं(।) इस प्रकार हनू(-) ० मान की वातें सुन भरत ने शत्रुघ्न को कहा(—)नगर मे ० जितने देवता हैं विनकी पूजा नाना विधि से अब ० होवे ओ सूतों मागधों वंदियों समेत शैकरों श्रे(-) ० ष्ठ वेश्या ओ घोडों हाथिओं लोगों सहित मंत्रीन ० के साथ हो सव रानीवांस नगर के लोग व्राह्मण औ(-)०र जो जो राजा यहां आये हैं सो सव रामचन्द्र को आ(-) ० गे से लाने को मेरे साथ अभी चलें(।) यह सुनते ही श(-) ० त्रुघ्न ने लोगों को आज्ञा की कि मुक्ता आदि नाना ० रत्नों की लडीन से सगरे अयोध्या नगर

१. या।

अलंकृत होवे ओ ० वर्णवर्ण की ध्वजा पताकान से भूषित ओ लाष ० घोडे दश सहस्र हाथी ओ सोने रूप से शोभित द(-) ० श सहस्र रथ ओ भेट की नाना सामग्री समेत व(-) ० डे वडे लोग सव अपना अपना वृन्द लिये रामचं(-) ० द्र को देषने चलें(।) इतनी वात के सुनते ही लोगों ने ० सारी पुरी को महा अलंकृत किया ओ घर घर आ(-) ० नन्द वधावा होने ओ जिसने जहां सुना वहां ही ० से वह रामपास दौडा औ पालकीन पर हो सव रा(-) ० नियां घर से निकलीं(।) तव राम की खराऊं शिर पर ० लिये दोनों कर जोरे शत्रुघ्न को संग लगाये लोग(-) ० न के साथ हो पादचारें ही भरत राम जी से मीलने ० को चले(।) जव कुछ दूर जा पहुचे सुनकर भरद्वाज मु(-) ० नि से विदा हो श्रीरामचन्द्र भी उधर से निकले ० तव सूर्य समान पुष्पक विमान जिसे मन लगा ० कर व्रह्मा ने अपने हाथों से रचा था दूर ही से देष ० कर पवनकुमार कहने लगा(—) सीता समेत राम ल(-) ० क्ष्मण दोनो भाई ओ सुग्रीव मंत्रीन सहित विभी(-) ० षण जी इसी वाहन पर हैं तुम लोग नीके देषो(।) त(-) ० व स्त्री वाल वृद्ध युवा जितने थे सो सभ हर्षित हो ० महाकोलाहल लगे करने कि ये ही रामचन्द्र आये(।) ० वह शव्द आकाश तक जा पहूंचा ओ घोडों हाथि(-) ० ओं रथों पर से लोग सव तुरन्त धरती पर उतरे ० ओ अधर मे चन्द्रमा समान वुस विमान को लगे ० देषने और अति हर्षित हो हाथ जोरे राम की ओ(-) ० र मुख कर भरत जो खडे हो गये(।) इतने मे वुह विमा(-) ० न निकट आन पहुचा तो नभ मे सुरज समान ० विस वाहन पर रामचन्द्र को देष भरत ने शिर झु(-) ० का कर प्रणाम किया(।) तव राम की आज्ञा पा वि (-) ० मान धरती पर आ खडा हूआ विस पर शत्रुघ्न ० समेत भरत तुरन्त चढ गये ओ राम लक्ष्मण के च[1] ० चरणों पर जा गिर परे(।)वुन को उठा अंक मे लगा ० कर पहले श्री रामचन्द्र मीले(,) तिस पीछे लक्ष्मण(,) ० इस अनन्तर सीता को प्रणामकर सुग्रीव जाम्व ० वान अंगद मैंद द्विविद नील नल ऋषभ सुखे(-) ० ण गवाक्ष गंध मादन शरभ पणस इन सव को ० भरत ने प्रणाम किया(।) इन्होने भी मनुष्य सरूप हो ० नमस्कार कर भरत का वडी आवभगति करी ० ओ कुशल मंगल पूछा(।) तव सुग्रीव को गरे लगा ० कर भरत लगा कहने(—)तुम्हारी सहायता से राम ० का जय हूआ ओ रावण मारा गया हम चारों के ० तुम पंचवे भाई हौ(।) इस भांति जव सव से कुशल ० प्रणाम हूआ ओ कौशल्या केकयी सुमित्रा आ(-) ० दि जननी को यथा उचित प्रणाम कर जव राम(-) ० चन्द्र सुचित भये तव विन की खराऊं वुन के पांवो ० मे भरत ने पहना दीं ओ नम्र हो कर कहा(—)महाराज ० आपका राज्य मैने थाती कर रष्षा था सो आप ० लीजे अव मेरा जन्म ओ मनोरथ सुफल हूआ ० जों अयोध्या आप आये भंडारों मे जितनी द्रव्य ० तुम छोड गये विन्हे दश गुणी मैने वढायीं अव रा(-) ० ज्य पर वैठ कर प्रजापालन कीजे यही मेरी प्रार्थना ० है(।) यों कहते हूऐ भरत को देष कर सव वांनर आंषो में ० आंशू भर लाये ओ वार वार वुनको लगे वषानने ० तव अति हर्षित हो भरत को अंक मे लिये पुष्पक ० पर चढे हूए श्रीरामचन्द्र भरत के आश्रम में आये तहां विमान पर से उत्तर विस विमान से कहने लगे तुम कुवेर के वाहन हौ तिस्से अव तुम वुन्ही को जा(-) ० ओ(।) यह सुनते ही वह कुवेर पास गया तव

१. 'च' अनावश्यक।

बृहस्पति ० को इन्द्र की भांति रामचन्द्र ने चरण छूकर वशिष्ठ ० गुरु को प्रणाम किया ओ विनके पास जा वैठे ० इति श्रीरामचरित्रे युद्धकाण्डे चतुर्दशोध्यायः(।) १४ (।) ० गुरु के निकट राम को देष हाथ जोर भरत लगा ० वुन से कहने(—)महाराज तुमने कैकेयी का मान र(-) ० ष्षा जो मूजे राज्य दिया अव अपना राज्य मुज(-) ० से लीजे अपनी इछा से मैं आपको देता हूं (।) यों ० कह निदान राम के चरणों पर भरत गिर परा ओ ० केकयी सहित वशिष्ट मुनि से वुनकी वहुत प्रा(-) ० र्थना करवायी तव राम ने जो माया फैला सक(-) ० ल नर चरित्र करने को उत्पन्न हूऐ थे भरत से रा(-) ० ज्य लेने को अंगीकार किया यद्यपि वे निपट सु(-) ० ख ज्ञान के स्वरूप परमात्मा थे कि जिसकी भौं(-) ० ह की सैन ही से तीनों लोक नष्ट होता ओ क्षण ० मे फिर वनता है ओ जिनके तनिक अनुग्रह से ० यहां तक कि इन्द्र पदवी को लोग पाते हैं(।) विनको ० मनुष्य के राज्य से कुछ हर्ष नही तथापि लीला ० सरूप मानुष की देह से भक्तों का सकल अभि(-) ० लाष पूरण करते हैं इसलीये भरत का वचन ० उन्होने माना तव शत्रुघ्न की आज्ञा सो नाई ० आदि निपुण लोग राम के अभिषेक के लिये ० सव सामग्री लाये तो भरत लक्ष्मण सुग्रीव वि(-) ० भीषण इन्होने पहले स्नान कर कपडे पहने ० तिस पीछे न्हा धो जटा मल श्री रामचन्द्र ने सुं(-) ० दर वस्त्र धारण किया ओ नाना सुगंध वस्तु ० देह मे लगायीं तव अनमोल कपडे भूषण ० मंगा भरत ने सीता को अति अलंकृत करवा(-) ० या वुसी प्रकार महाहर्षित हो वानरों की सक(-) ० ल स्त्रियों को कौशल्या रानी ने भूषित करवा(-) ० या तव शत्रुघ्न की आज्ञा से विचित्र रथ जो सू(-) ० र्य सा प्रकाश था सुमंत्र ने लाकर आगे खडा ० कर दिया वुस रथ पर चढ श्री रामचन्द्र अयो(-) ० ध्या को चले तो सुग्रीव अंगद हनूमान आ(-) ० दि सव लोग स्नान कर दिव्य कपडे भूषण पह(-) ० न घोडों रथों हाथिओं पर चढ श्री राम के पीछे ० हो लिये (।) इसी भांति सुग्रीव की स्त्रियों समेत ० सीता भी चली तिस समय भरत जी तो राम ० का रथ लगे हाकने ओ सुवर्ण दण्ड का छत्र ० शत्रुघ्न ने हाथ मे उठा लिया ओ लक्ष्मण जी ० राम पर चौर डोलाते चले ओ देवता ऋषि स(-) ० व आ आकर लगे राम का यश वषानने ओ भेरी ० मृदंग आदि नाना वाजे वजाने और जितने वांन(-) ० र थे सो सव मनुष्य सरूप हो गजों पर चढ राम सा(-) ० थ चले(।) जव पुरी भीतर आन पहुचे श्याम सुन्दर श्री ० रामचन्द्र को जो अनमोल रत्नजडित भूषणों ० से अति अलंकृत हो रहे थे ओ सुग्रीव आदि से ० सेवित ओ जो मोतीन की माला पहने कस्तूरी ० के तिलक किये सगरे गात चन्दन लगाये महा ० सुन्दर लगेते[1] थे आगत सुन पुर की स्त्री सव व(-) ० हुत मगन हो घर के सकल कामकाज ओंही त(-) ० ज अति हुलसित हो सव शिंगार पटार कियें को(-) ० ठों पर चढ गयीं(।) वहां से हरिमुख देख वहुत जुडा(-) ० नीं ओ मुस्कुरा मुस्कुरा फूल लगीं उपर से वर(-) ० साने ओ मंगल गान करने ओ आपस मे कह(-) ० ने कि अव हमारा मनोरथ फला जो सीतारा(-) ० म को देष[2](।) इतने प्रजा लोगन को अति हर्षित ० देषते हूए धीरें धीरें अपने पिता के मंदिर मे जो ० इन्द्र का घर सा सोहावन था श्री रामचन्द्र आ(-) ० न पहुंचे तो पहले कौशल्या को फिर कर प्रणा(-) ० म तिस

१. लगते। २. देखा।

पीछे पिता की जितनी स्त्रियां थीं वु(-) ० न्ह को(।) इस प्रकार राज मंदिर मे जव राम आये ० भरत से उन्होने यह वचन कहा(—)राजा सुग्रीव मे(-) ० रे वडे मित्र हैं तिस्से जिसमे खाने पीने कीं सव ० सामग्री भरीं होवें विस घर मे सुग्रीव को डेरा क(-) ० राना ओ जो जैसा लोग है वुसे सुख से रहने के ० लिये वैसा ही घर दो(।) इस भांति राम की आज्ञा पा ० सभों को उत्तम घरों मे डेरा दे सुचित हो भरत ने ० सुग्रीव से जा कहा अव राम को राज्य का ति(-) ० लक दिया जायगा तुम अतिशीघ्र चलनहार दू(-) ० तों को कहो जो चारों समुद्र के जल तुरन्त यहां ला(-) ० वें(।)यह सुनते ही सुग्रीव की आज्ञा से जाम्ववान ह(-) ० नूमान अंगद सुखेन ये चारों वीर दिश के ० सागरों मे से काञ्चन कलशभर पानी तुरत भ(-) ० र लाये (।) तव राम के अभिषेक के लिये मंत्रीन स(-) ० मेत शत्रुघ्न ने वशिष्ट से जा जनाया कि तीर्थ का ० जल तो आया सो सुन व्राह्मणों के साथ हो वशि(-) ० ष्ट मुनि ने रत्न जडित सुवर्ण के पीढा पर सीता ० राम को विठलाया तव राम का अभिषेक देषने ० के लिये लोकपालों समेत सकल देवता आका(-) ० श मे समीप आ आकर वहां खडे हूऐ ओ वारवा(-) ० र राम की स्तुति लगे करने तव कन्यान मंत्रीन ० सहित ओ वामदेव जावालि गोतम वाल्मीकि ० आदि ऋषिन के साथ हो वशिष्ट मुनि ने कुश ओ ० सर्वोषधि के रस समेत तुलसी दल मिश्रित ती(-) ० र्थ के अति पवित्र जल से स्नान करा राम को राज्य ० का तिलक दिया(।) तिस समय शत्रुघ्न तो रामचंद्र ० पर पांडुर छत्र लिये रहे ओ सुग्रीव विभीषण ये ० दोनो चौंर लगे करने तव इन्द्र की सैन पा वायु दे(-) ० वता ने कांचन की माला तुरन्त राम के गले मे डा(-) ० ल दी उसी प्रकार नाना रत्नमय सुवर्ण का हार ० आय इन्द्र ने भी राम को पहना दिया(।) तव देव गंध (-) ० र्व सव आनन्द मे मगन हो हो कर लगे गाने ओ ० अप्सरागण नाचने ढोल दमामे वाजने ओ ० आकाश से पुष्प वृष्टि लगी होने (।) इस अनंत(-) ० र सव आभरण पहने केशर के तिलक दिये पी(-) ० ताम्बर धारण किये तेज मे कोटीन सूर्य समान ० ओ रूप मे कोटीन कंदर्प तुल्य श्याम सरूप कम(-) ० ल नयन श्री राम चन्द्र को ओ वैसे ही कपडे भू(-) ० षण पहने कांचन वर्ण सीता को वुनके वायें भाग ० मे देष देवतान समेत महादेव लगे राम की स्तुति ० करने कि हे महाराज हम तुम्हे प्रणाम करते हैं सं(-) ० सार की उत्पत्ति पालन प्रलय तुम ही करते हौ ० ओ जव जव साधुन पर संकट परता है तव तव ० नाना अवतार हो वुन की आपदा हरते हौ ओ ० अपने अंश से सकल लोक रच रसातल मे जा ० शेषनाग रूप हो विन्ह लोकों को निज पीठ पर ० लिये हौ और उपर सूर्य चन्द्रमा पवन ओ मेघ ० रूप हो अनेक प्रकार से सृष्टी'* को पालते हौ(।) प्रा ० णी सव जो खाते हैं विसे जठराग्नि रूप से पचाते ० रवि शशि पावक मे जो तेज है सो सव तुम्हारा ही ० विभव दृष्ट आता है व्रह्मा विष्णु महेश आदि ० सकल देवता तुम ही हूऐ हौ वेद पुराणों मे मत्स्या(-) ० दि रूप से तुम प्रसिद्ध हौ ओ सृष्टि मे स्थावर जंग(-) ० म सरूप जो जो प्राणी उत्पन्न हूऐ होगें और हैं ० सो सव तुम ही हौ तुम विना दूसरा कोई न दृष्ट आ(-) ० ता है तुम्हारी भक्ति से जिनका मन निर्मल हो र(-) ० हा है विन ही को तुम्हारा सव भेद प्रकाश है ओ ० तुम्हारी माया से जो अंधे है वे तुम्हे

*यहाँ १ सम्भवतः ह्रस्व का द्योतक है।

नही पहचा(-) ० नते(।) तुम पूरण ब्रह्म हो तुम्हारा सरूप ब्रह्मादि(-) ० क भी नही जानते(।) राम सरूप जो आपका यह ० रूप है विसे भक्ति से जो भजता है सो सव दुःख ० से छूट कर परम पद को जाता है(।) हम तुम्हारा नि(-) ० त्य नाम जपते जपते कृतार्थ हो भवानी सहि(-) ० त सदा काशी मे वसते हैं ओ जो प्राणी वहां म(-) ० रता है विसे मुक्त होने के लिये तुम्हारा राम ना(-) ० म उपदेश करते हैं(।) जो नर इस स्तोत्र को भक्ति ० से सुनता ओ गाता है वह संसार मे सव सुख ० भोग कर अन्त समय परम पद को जाता है (।) इसी ० प्रकार इन्द्र ने भी स्तुति की कि हे रामचन्द्र ब्रह्मा ० के वर से रावण ने मेरा सव सुख छीन लिया था ० अव आपके प्रताप से रावण महाशत्रु मारा गया ० तो फिर अपने पद को मैं पहुंचा (।) इस प्रकार जव इंद्र ० कह चुका देवता सव भी राम से कहने लगे(—)हे महा(-) ० राज यज्ञ मे जो भाग हम पाते थे सो सव वल से ० रावण ने हर लिया था अव वुस महादुष्ट दैत्य को ० जों आपने मारा तो तुम्हारे प्रताप से आगे की ० भांति यज्ञ मे पुन हम अपना भाग पावेंगे(।) पितरों ० ने तो तुरत ही कहा(—)हे कृपानिधान गयादिक तीर्थों ० मे जो नर लोग पिण्डदान हमे करते हैं सो सव हमा(-) ० रा अंश रावण ही चट करता था अव उसका क्ष(-) ० य तुमने किया तो निज भाग फिर हम लोग पावें(-) ० गे(।) यक्ष लोग भी वोले(—)महाराज सदा हमसे राव(-) ० ण अपनी पालकी ढोलाता था पर एक कौडी भी ० न कभूं देता था वुस दुष्ट को आपने वधा तो मा(-) ० ने[1] वुस दुःख से हम लोगन को वंचा लिया(।) इसी भां ० ति गंधर्वों ने भी कहा(—) हे दीन दयाल हम लोग संगी(-) ० त विद्या मे निपुन होकर पहले तो तुम्हारे ही यश ० गा गा अपने आनन्द मे मगन थे पीछे रावण ० ने हमे पकडवा मंगाया तव से वुसी का गुण ल(-) ० गे नित्य गाने ओ विसी की सेवा मे तत्पर हम हू(-) ० ए थे अव जों उस अधम को तुमने मारा तो ह(-) ० मारा वडा त्राण किया(।) इस भांति उरग सिद्ध ० किन्नर मरुत आठो वसु मुनि गुह्यक यती ० अप्सरा प्रजा लोग ओ इन्द्र आदि देवता ० सव राम को देष अलग अलग विनकी स्तु(-) ० ति कर विदा हो अपने अपने स्थान को जा ० प्राप्त हूऐ(।) पर सगरी वाट राम ही के गुण गाते ० ओ हृदय मे सीता समेत विन्ही का ध्यान क(-) ० रते हूऐ सव गये ० इति श्री राम चरित्रे युद्ध कां(-) ० डे पंचदशोध्यायः (।) १५ (।) सव लोगन को सुख ० देने के लिये जव राम चन्द्र राज्य पर वैठे अ(-) ० न्न धन से पृथिवी भर गयी वृक्ष सव अमृ(-) ० त फल लगे फलने गंध हीन फूल भी अ[2](-) ० अति सुगंध हो गये ओ जव राम को राज्य तिल(-) ० क हूआ लाष घोडे हाथी धेनु सैकरों वृषभ ती(-) ० श कोटि दीनार ओ भांति भांति के कपडे आ(-) ० भरण तुरन्त वुन्होने ब्राह्मणों को दान दिया ० ओ सव रत्नों की अनमोल माला जो जोति मे ० सूर्य समान थी सुग्रीव को दी ओ अति सुंदर ० दो विजायठ अंगद को दिये और जोति मे च(-) ० न्द्रमा तुल्य मणिन के हार प्रीतिकर सीता को ० पहना दिया जव विस हार को अपने कंठ मे ० से निकाल कर वह लगी सकल वांनरों के ओ(-) ० र देषने ओ रह रह राम दिश ताकने तव सव ० के मन की वात जाननहार रामचन्द्र ने उस ० से कहा हे सीता तुम जिससे संतुष्ट हो वुसी को ०

१. मानों। २. अनावश्यक।

यह हार दो(।) यह सुनती ही हनूमान को वुस (-) ० ने वह माला पहना दी(।) वुस हार से ओ अति ० आदर मान से हनूमान वहुत लगा शोभ(-) ० ने तव वुसकी भक्ति से निपट प्रसन्न हो ओ हाथ ० जोड खडे हूऐ वुसे देष श्रीरामचन्द्र ने यह वचन ० कहा(—)पवन कुमार मैं तुमसे वहुत संतुष्ट हूं तु(-) ० म जो जी चाहे सो मुज से अव मांगों देवताओं ० को भी जो दुर्लभ है सो वर मै तुमको दूंगा(।) सुनक(-) ० र हनूमान वडा हर्षित हूआ ओ शिर झूका रा(-) ० म को प्रणाम कर कहने लगा(—)महाराज तुम्हारा ० नाम सुमरते सुमरते मेरा मन सन्तुष्ट नही होता ० है तिससे पृथ्वी मे सदा तुम्हारा नाम मैं सुमरता ० रहूं ओ लोक मे जव तक आपका नाम रहे मैं जी(-) ० ता रहूं यही वर तुमसे मांगता हूं(।) रामचन्द्र वोले(—) ० अछा तुम जीवन मुक्त हो सुख से रहो जव कल्पा(-) ० न्त होगा मेरे धाम को निसंदेह प्राप्त होगे(।) तव सी(-) ० ता ने भी वुससे कहा(—)हनूमान तू जहां कही र(-) ० हेगा वहा मेरी आज्ञा से खाने पीने का सव प(-) ० दार्थ पहुंचा करेगा(।) यह सुन हनूमान अति ह(-) ० र्षित हूआ तो वहुत प्रणामकर अति दुख से ० सीता समेत श्री रामचन्द्र से विदा हो तप करने ० के लिये हिमालय पर्वत को गया(।) तव गुह से जो ० हाथ जोरे खडा था राम ने कहा(—) सखा अव तु भी[१] ० शृंगवेर पुर जाओ वहां मुजी को नित्य सुमर ० सव भोग विलाशकरो अंत समय निसन्देह ० मेरे धाम को पहुंचोगे(।) यों कह वहुत सा आभर(-) ० न पहना राज्य दे ज्ञान वता[२] राम ने वुसे विदा ० किया तव हर्षा कर वह अपने भवन को गया(।) ० वुसी प्रकार सुग्रीव आदि श्रेष्ठ वांनर सव जो ० अयोध्या मे आये थे विन्हो समेत विभीषण ० को भी अनमोल अनेक कपडे भूषण दे प्रसन्नकर ० राम ने विदा किया(।) तव सुग्रीव आदि तो आ(-) ० नंद मे मगन हो किष्किन्धा मे गये ओ विभी(-) ० षण निकंटक राज्य पा लंका को गया(।) तव ल(-) ० क्ष्मण को हठ से यौवराज्य का तिलक दे सुचि(-) ० त होकर श्री रामचन्द्र सव राजकाज करने लगे(।) ० यद्यपि ये पूरण व्रह्म हैं इनको राज्य पाट से कुछ०काम नही क्यूंकि आनन्द मूरति हैं अपने आन(-) ० न्दे ही से ये सदा सन्तुष्ट रहते हैं तो भी लोगन को ० हित शिषलाने के लिये मनुष्य सरूप हूए ओ ० राज्य पर वैठे जव ये राज्य करने लगे न तो किसी ० को चोर का भय होवे न व्याधि का डर न सांप का त्रा(-) ० स ओ न कोई कुछ उपद्रव कर शके न कोई ना(-) ० स्तिक होऐ ओ न वुढों के रहते हूऐ लडके की मृ(-) ० त्यु(।) सव लोग राम की पूजा पाठ मे मगन रहें ओ ० दिन रात विन्ही का ध्यान चर्चा किया करें ओ जि(-) ० स अवसर जितना पानी का काम होवे वुसी स(-) ० मय ओतना ही जल मेघ वरसावे प्रजा लोग स(-) ० व अपने अपने कर्म धर्म से रहें ओ सव लक्षण(-) ० वान वडे धर्मात्मा ही उत्पन्न होते ओ श्री रामचं(-) ० न्द्र ऐसें प्रजान को लगे पालने जैसें वाप अपने ० वेटों की रक्षा करे(।) इस प्रकार से दश सहस्त्र वर्ष रा(-) ० ज्य उन्होने किया(।) शिव का कहा हूआ यह रामा(-) ० यण जो धनधान्य का घर है ओ आरोग्य दाय(-) ० क जो मनुष्य श्रद्धा से सुनते ओ पाठ करते हैं ० वे कोटीन पातक से तुरत छूटते हैं ओ मनोवां(-) ० छित फल पाते(।) धन के अभिलाष से राम का ० अभिषेक जो नर सुनता है

१. तुम भी। २. ज्ञान बताकर, उपदेश देकर।

वहुत धन होता ० है ओ स्त्री पुत्र राज्य शत्रुन से जय (।) इस आदि ० जिस जिस वस्तु की इछा होवे सो सो सव इसके ० पाठ से पाते हैं यहां तक कि वांझको भी सुन्दर ० पुत्र होता है ओ कैसा ही कोई आपदा होये सो ० सव दूर हो जाती है ओ नर इस पोथी को ० भक्ति से प्रणाम करता है सो सव पाप से छूट अं(-) ० त समय राम के प्रसाद से वैकुंठ पद को सिधार०ता है● इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे षोडशो(-) ० घ्याय: (।) १६ (।) युद्ध काण्ड: समाप्त: (।) इतनी कथा सु(-) ० न फिर पार्वती ने महादेव से पूछा महाराज राव(-) ० णादिक को संग्राम मे मार अयोध्या मे आ राज्य ० पा कौशल्या के नन्दन श्री रामचन्द्र जो सनात(-) ० न पूरण व्रह्म थे सीता समेत मानुष देह से कितने वर्ष धरती में रहें ० ओ अन्त समय किस लिये मर्त्य ० लोक को तजा यह समझाकर मुजसे कहिए ० जो मेरा मन प्रसन्न होऐ(।) राम की कथा सरूप ० अमृत जों जों मेरे कानों में पडता है तों तों सुन(-) ० ने की अधिक तृष्णा मुजे वढती है तिस्से वि(-) ० स्तार कर वुनका गुणानुवाद आप कहिऐ(।) स(-) ० दा शिव वोले(—)राक्षसों का वधकर जव रामचन्द्र ० राज्य पर आ वैठे तव विश्वामित्र असित कन्व ० दुर्व्वासा भृगु अंगिरा कश्यप अत्रि आदि अ(-) ० नेक मुनि ओ शिष्यों समेत अगस्त्य ऋषि ये ० सव राम को प्रणाम स्तुति करने के लिये अयोध्या ० मे आये (।) जव राजद्वार पर आन पहुचे अगस्त्य जी ने ० द्वार पाल से कहा तुम राजा से जा कहो कि अग(-) ० स्त्य आदि मुनि लोग ड्योढी पर आ खडे हैं तुम्हा(-)० रे पास आ आशीर्वाद किया चाहते हैं(।) यह सुनते ० ही वह भीतर गया ओ हाथ जोर कर राम से कह(-) ० ने लगा(—)महाराज आपसे भेट करने के लिये ऋ(-) ० षिन समेत अगस्त्य मुनि वाहर आ खडे हैं आ(-) ० ज्ञा होए तो यहां वुला लाऊं(।) वे वोले(—)अछा अति ० आदर से शीघ्र वुन्हे लाओ(।) प्रभु की आज्ञा पा(-) ० कर फिर द्वारपाल वाहर आया ओ मुनि लोग ० को वोला(—)महाराजो आओ राजा तुम्हे वुलाते ० हैं(।) इस प्रकार जव विसने कहा ऋषि लोग मंदि(-) ० र भीतर गये(।) उन्हे देष कर दशरथ के लाल तुरं(-) ० त उठ खडे हूऐ ओ अर्घपादार्घ कर अति आद(-) ० र साथ विधि से पूज वुन सवों को आसन पर विठ(-) ० लाया ओ कुशल मंगल पूछा तव इन्होने भी ० वुन से क्षेम कुशल पूछा ओ कहा(—)महाराज वडा ० भाग है जो तुम्हारा दर्शन पाया तुम रावण को ० जीत आये यिह सुन हमे महा आनन्द हूआ ० रावण को मारना तुम्हारे लेखे कुछ वडी वात ० न थी क्यूंकि धनुष लेकर जों तुम खडे हो तो ० तीनों लोक को जीत शक्ते हो वह किस गिण(-) ० ती मे था विस आदि सकल राक्षसों को भाग ० से रण मे तुमने मारा यिह आश्चर्य नही(,) अचर(-) ० ज यह है कि मेघनाद को वधा(,) इसमे तुम्हारी व(-) ० डी वडाई है(।) यों कह फिर वोले(—)महाराज कुम्भ-क(-) ० र्ण आदि राक्षस सव साक्षात यम सरूप थे वु(-) ० न सभों को यम स्वरूप ही वाणों से आपने मा(-) ० रा तो हम लोगन को अभयदान दिया अव कृ(-) ० तार्थ होकर विराजिए सव दानव मारे गये(।)इ(-) ० स भांति ऋषिन की बातें सुन रामचन्द्र वहुत च(-) ० कित भये ओ हाथ जोड के कहने लगे महाराजो ० तुम लोग रावण कुम्भकर्ण आदि दैत्यों को जो ० तीनो भुवन को जीतने वाले थे छोडकर एक मेघ(-) ० नाद को किसलिये वहुत सराहते हो यिह सम(-) ० झा कर कहो जो मेरे मन का संदेह जाये(।) तव म(-) ० हा तेजस्वी अगस्त्य मुनि

बोले(—) जिस प्रकार से ० मेघनाद ओ रावण का जन्म ओ वुन्हे वरदा ० न हूआ सो संक्षेप कर मै कहता हूं सावधान हो ० के सुनो(।) आगे सत्ययुग मे व्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य ० नाम महा-तेजस्वी एक मुनि थे सो मेरुके पास ० तृणविन्दु के आश्रम मे तप करने को जा वसे तो ० अपने कर्मधर्म मे मगन हो नित्य वह तपस्या ० किया करे(।) कुछ दिवस के वीते वुस सोहावन आ(-) ० श्रम मे देव गन्धर्व किन्नरों की कन्या नित्य जा जा ० कर लगीं नाचने ओ गा गा वजा वजा पुलस्त्य ० के तप मे विघ्न करने तव अति क्रुद्ध होकर एक दि ० न यह वचन वे वोल उठे कि आज से जो मेरे साम्हने ० आवेगी वुसे अनायास गर्भ रह जायेगा(।) यह श्रा(-) ० प सुन वे कन्या सव वहुत डर गयीं तव से विस ० स्थान मे फिर न कभी आवें पर उस आश्रम मे ० तृणविन्दु नाम राजर्षि की एक कन्या थी वह मु(-) ० निका श्राप सुन कर नही डरी और भी निर्भय ० हो साम्हने जा पुलस्त्य मुनि को लगी देषने कि इत(-) ० ने मे वुस कन्या को गर्भ रह गया(।) कितने एक दि(-) ० नों के वीते अपनी देह की वुरी दशा देष डर कर ० निज पिता पास गयी(।)वुह राजर्षि ने पुत्री को दे(-) ० ष ध्यान कर दिव्य दृष्टि से मुनि की करतूति जा(-) ० न विस कन्या को पुलस्त्य मुनि ही को जा संक(-) ० ल्प कर दिया(।) वुन्होने वुसे अंगीकार किया औ(-) ० र कहा अछा विराजो(।) जो कुछ दिन के वीते निज से(-) ० वा मे वुस कन्या को वहुत लवलीन देष ऋषि नि(-) ० पट प्रसन्न हूऐ ओ वुसे कहने लगे तुम्हारी टहल ० से हम संतुष्ट भये हमारी कृपा से तुम्हे एक ऐं(-) ० सा पुत्र होगा जिस्से माता पिता का वंश वहुत ० वढेगा(।) इस अनन्तर पुलस्त्य मुनि से विस कन्या ० को एक पुत्र भया उसका नाम विश्रवा कर वि(-) ० ख्यात हूआ(।) वुसे अति सुशील देष भरद्वाज मु(-) ० नि ने अपनी वेटी व्याह दी(-) विस स्त्री से विश्र(-) ० वा को भी एक ही पुत्र हूआ वुसका नाम पिता ० ने कुवेर कर पुकारा वुसकी तपस्या से वहुत ० प्रसन्न हो व्रह्मा ने वुसे चढने को पुष्पक विमा(-) ० न दिया ओ वर दिया कि आज से धन के स्वा-० मी तुम ही को मैने किया (।) इस प्रकार जव व्रह्मा ० ने कहा तव कुवेर पुष्पक पर चढ अपने पि(-)० ता से भेट को आया वुन्हे प्रणाम कर निज त(-)० प का फल सुना कहने लगा(—) पिता विधाता ० ने वर तो मुजे वडा दिया पर रहने का स्थान न ० वताया तिस्से जहां किसी जीव का हिंसा न ० होती हो वह जगह नित्य रहने को मुजे आप ० वताइऐ(।) विश्रवा वोल उठे(—)राक्षसों के रहने के ० लिये विश्वकर्मा की रची हूई लंका नाम अति ० अपूर्व एक नगरी है विसे विष्णु के भय से त्या(-) ० गकर दानव सव पाताल लोक मे गये वह पु(-) ० री समुद्र वीच वसती है दुसरे किसी शत्रु का ० सामर्थ्य नही जो वुसे जा ले शके तिस्से वसने ० के लिये तुम वहां ही जाओ जव से दैत्य सव ० वुस पुरी से भाग गये हैं तव से अव तक उस ० नगर मे दूसरा कोई नही वसा है (।) इस भांति ० पिता की आज्ञा पाकर निदान कुवेर लंका ० मे जा रहने लगा(।) इस अनन्तर कितने एक ० दिनों के वीते सुमाली नाम राक्षस फिरते फि(-) ० रते पाताल से मर्त्य लोक मे आ निकला ओ ० साक्षात लक्ष्मी देवी सी सुन्दरी कैकसी नाम ० अपनी पुत्री को साथ लिये आया(।) वह दैत्य कु(-) ० वेर को पुष्पक पर कहीं जाते हूए देष राक्षसों ० के हित निमित्त चिन्ताकर वेटी से कहने लगा(—) ० मैना तेरी यौवन अवस्था हो चुकी व्याह का ० समय वीता हूआ चला जाता है अस्वीकार ० करने के डर से वर लोग तुजसे व्याह की

प्रार्थ(-) ०ना नही कर शक्ते तिस्से विश्रवा मुनि वडे यो(-) ०ग्य हैं ओ ब्रह्मा के कुल मे उत्पन्न जों वुनकों ०तू अपना वर करे तो कुवेर ही समान अति ०सुंदर ओ वडे वीर आपसे पुत्र तुजे होवें(।) यह ०सुन अछा कह कैंकसी तुरन्त वहां से उठी ०ओ विस ऋषि के पास जा खडी हो लाज ०से नीचे शिर कर पांव की उंगली से धरती प(-) ०र लगी लिखने तव मुनि ने विससे पूछा तू ०कौन है ओ किसकी स्त्री है ओ किसलिए ह्यां ०आयी(।) वह हाथ जोड कर वोली आप ध्यान ०ही से समझ जाइऐ(।) सो सुन ध्यान से सव जा(-) ०न कर गोशांई कहने लगा(—) हमने तुम्हारा अ(-) ०भिलाष जाना अछा हमसें पुत्र तुझे होंगे ०पर दारुण वेला मे तू आयी इस कारण दारु(-) ०ण राक्षस दो पुत्र तुजे होंगे(।) वह गिडगिडा उ(-) ०ठी(—)महाराज तुमसें भी ऐंसे सुत होंगे तो अति ०आश्चर्य है(।)फिर मुनि ने कहा(—)पीछे एक पुत्र ०और भी जनेगा सो परम साधु ओ राम की ०भक्ति मे तत्पर होगा(।) यों कह ऋषि ने विस क(-) ०न्या से व्याह किया(।)कितने एक दिनों के बीते स(-) ०मय पा कर वुस स्त्री को पहले रावण उत्पन्न ०भया जिसे दश तो माथ ओ वीश हाथ(।) वुस ०दारुण राक्षस के जनते ही धरती लगी कांप ०ने ओ विनाश के कारण सव देषने आये(।) इस अ(-) ०नन्तर महापर्वत समान कुम्भ कर्ण उत्पन्न ०हुआ(।) जवकि कुछ वर्ष का वह हो चुका तव वु(-) ०से सुर्पनखा नाम एक वहन उत्पन्न हूई(।) इन तीनो ०के पीछे अति शान्त मूरति विभीषण का जन(-) ०म हूआ सो अपने नित्य कर्मधर्म मे वहुत सा(-) ०वधान भया विस का भाई दुष्ट कुम्भकर्ण स(-) ०दा व्राह्मण ऋषिन को पकड पकड खाए ओ ०विनके मांस से निपट संतुष्ट रहे(।)इस प्रकार कै(-) ०कसी से विश्रवा मुनि को एक कन्या ओ तीन ०पुत्र उत्पन्न हूऐ इन सभों मे वडा पराक्रमी ०ओ लोगन को भयदायक रावण हूआ ओ ०प्राणीन को रोग की भांति जगत को दुखदेने ०के लिये दिन दिन वढने लगा(।) हे रामचन्द्र तुम ०अन्तर्यामी परमेश्वर हौ सव का हृदय जान ०ते हौ लीला के लिये मानुष रूप होकर निज ०महिमा से अति शोभायमान हो रहे हौ कौतु(-) ०क निमित्त तुम्हारे पूछने से राक्षसों की उत्प(-) ०त्ति मैंने तुम्हे सुनायी ओ सुनाऊंगा(।) मै तुम्हे ०जानता हूं तुम चेतन रूप आदि नारायण हो मा(-) ०या कर अपना रूप छिपा मनुष्य हूऐ हौ मै यद्यपि ०मूढ हूं पर तुम्हारी कृपा से तुम्हे पहचानता हूं(।) ०इस भांति अगस्त्य मुनि की वातें सुन मुस्कुरा ०कर रामचन्द्र वोले(—)राक्षसों का जन्म जो तुम क(-) ०हते हो ओ सकल संसार जो दृष्ट आता है यि(-) ०ह सव माया का रचा हूआ भ्रम है एक मै सत्य हूं ०मेरा कीर्त्तन इस भ्रम को दूर करता है यह तुम ०नीके जान लो०इति श्रीरामचरित्रे उत्तर(-)०काण्डे प्रथमोध्याय: (।)१(।) राम की वातें सुन फि(-) ०र अगस्त्य ऋषि वोले(—)एक समय पुष्पक पर ०हो पिता के दर्शन को कुवेर आया तहां अति ०शोभायमान ओ महाप्रतापी वुसे देष कैंकसी ०तुरत रावण पास जा कहने लगी पुत्र देषो तो ०यिह कुवेर अपने तेज से कैसा प्रज्वलित हो रहा ०है तुम भी इसके तुल्य जिस प्रकार से हो शको ०सो यत्न करो(।) सुनकर दशानन वडा क्रुद्ध हूआ ०ओ झट प्रतिज्ञा कर वैठा कि थोडे ही दिनों मे कु(-) ०वेर समान कै इससे अधिक मै हूंगा तुम अप(-) ०ने मन का संताप तजो यों कह भाइन समेत ०महा तप करने को तुरन्त वहां से उठा तो चला च(-) ०ला गोकर्ण नाम पर्वत पर आया तहां राजस ०तामस सात्विक अपना अपना

मनोरथ पूर(-) ० ण करने के लिये कठिन से भी कठिन तप कि ० जिससे सव लोग वडा दुख पावें करने को अ(-) ० लग अलग तीनो भाई वैठे गये ओ तीनो ने ० साथ ही दश सहस्र वर्ष तपस्या करी तिनमे ० महाधर्मात्मा ओ सत्यवादी विभीषण तो ० अन्त मे पांस[1] सहस्र वर्ष एक ही पांव से खडे र(-) ० हे ओ रावण ने दश सहस्त्र वर्ष के वीच मे एक ० दीन भी कुछ अहार न किया ओ जव जव सह(-) ० स्त्र वर्ष पूर्ण होवे तव तव अपना एक माथ काट ० कर आगे मे होम कर डाले इस भांति नव सह ० स्र वत्सर वीत गये ओ नव माथ वह काट चूका ० जव कि दशवां सहस्र का अन्त हूआ तव अप(-) ० ना दशवां शिर जों वह काटने को चाहा तों ही ० अति प्रसन्न हो व्रह्मा वुस के आगे आ प्रगट भ(-) ० ये ओ यह वचन कहने लगे पुत्र पुत्र मैं तुज सें ० वहुत संतुष्ट हूआ जिसकी वांछा होए सो व(-) ० र तू मुजसे मांग(।) सुन कर रावण वडा हर्षित भ(-) ० या ओ वोला जो मुजे वर दिया चाहते हो तो दे(-) ० वता असुर यक्ष किन्नर नाग सुपर्ण ये सव मे(-) ० रे वश मे रहें इनसे भी मेरा वध न कभी होवे य(-) ०ही मैं तुमसे मांगता हूं ओ मनुष्य किस गिण(-) ० ती मे हैं ये तो मेरे लेखे तृण समान है(।) तव व्रह्मा ० ने कहा अछा यही होगा ओ जितने शिर तू ० ने आग मे होम किये सो फिर कर जों के तो तु(-) ० झे हो जावें[2] इस प्रकार रावण को वर दे प्रजाप(-) ० ति विभीषण से कहने लगे(—)वत्स तूने धर्म के ० लिये उत्तम तप किया अव वर मांग क्या तेरे ० जी मे है(।) यिह सुन वुन को प्रणाम कर हाथ जोड ० विभीषण वोला महाराज मेरी मति सदा धर्म ० मे रहै ओ अधर्म मे कभूं न मेरा जी लगे(।) विधाता ० ने प्रसन्न होकर कहा पुत्र तू वडा धर्मशील है ० जा यही होगा ओ यद्यपि तू नही मांगता तो ० भी मैंने तुजे वर दिया तू आज से चिरंजीवी ० हूआ मेरे वर से कभी न तेरी मृत्यु होगी ऐंसे ० वुसे कह पुन कुंभकर्ण के पास जा कहने लगे ० पुत्र तुम्भी वर मांगो मै तुम्हारा अभिलाष ० पूरण करुंगा (।) इस प्रकार तो विधि ने कहा प(-) ० र देवताओं की प्रार्थना से वुस दानव की जी(-) ० भ पर सरस्वती जो आकर वैठी थी सो वह अ(-) ० भागा वोल उठा कृपानिधान छ मांस तो मैं ० सोऊं ओ एक दिन उट कर भोजन करूं(।) व्रह्मा ० ने कहा अछा ऐंसा ही होगा(।) इस भांति वुन ती ० नो को वर दे विधाता अपने धाम को गया ० ओ कुम्भ कर्ण का वर सुन देवता लोग वहु(-) ० त हर्षाने(।) जव कि कुम्भकर्ण के मुह से निक ० ल कर सरस्वती देवलोक को गयी तव वह दु(-) ० ष्ट अपने मन मे वहुत लगा पछताने कि हा मे(-) ० रे मुख से क्या निकल गया जिसकी इछा ० न थी सोई वर मैंने व्रह्मा से मांगा(,)किसलि(-) ० ये दश सहस्र वर्ष तप किया (।) इस अनन्तर ० नातीओं को वर लाभ हूआ जान सुमाली ० निपट हर्षित हूआ तो अति निर्भय हो प्रह(-) ० स्त आदि निशाचरों को साथ लिये पाताल ० से तुरन्त रावण पास आया ओ वुसे गरे ल(-) ० गा माथ चूम यह वात कहने लगा पुत्र भाग्य ० से तुमने पर[3] पाया तो हमारा मनोरथ पूरण ० भया जिस विष्णु के डर से लंका तज पाता(-) ० ल मे हम गये सो महाभय मिटा अव कहना ० हमे यिह है जिस लंका मे हम लोग आगे र(-) ०

१. पाँच। २. उतने सिर पहले की तरह हो जायें, धड़ पर लग जायें। ३. वर।

हते थे विस पुरी को कि जहां तुम्हारे भाई कुवे(-) ० र अव आनन्द किया करते हैं मिलाप से[1] अ(-) ० थवा वल से अपने वश मे तुम्हे करना उचि(-) ० त है(—)राजान[2] को भाई मित्र कौन(।) यिह सुन राव(-) ० ण वोला ऐसा वचन कभी मत कहो कुवेर तो ० हमारे पिता समान है(।) इस प्रकार जव दशमु(-) ० ख ने कहा तव प्रहस्त वुसे समझाने लगा ० शूरों को भाइन से प्रीति करनी क्या इसका ० वृत्तान्त सुनो मै तुमसे कहता हूं(—)देवता दान ० व ये दोनों कश्यप मुनि के संतान हैं पर आ(-) ० पस मे भैयारी की प्रीति तज अपने अपने ० हित के लिये परस्पर युद्ध किया करते हैं ति(-) ० स्मे लंका को कुवेर से तुम छीन लो वह पुरी ० हम लोग की है हमसे देवताओं ने विसे हर ० लिया तो यह वैर आगे से चला आता है कुछ ० नया विरोध करने को हम नही कहते(।)इस प्र(-) ० कार जव वुसने कहा अतिक्रुद्ध हो तुरन्त त्रि(-) ० कूटाचल पर रावण गया तहा प्रहस्त दूत को भे(-) ० ज लंका से कुवेर को निकलवा मंत्रीन राक्ष(-) ० सन समेत आप सुख से रहने लगा(।) तव पिता ० की आज्ञा से लंका नगर तज कुवेर कैलाश ० के शिखर पर गया तहां तपस्या से ऐसा शिव ० को संतुष्ट किया कि वुन से उसको परम मि(-) ० त्रता हो गयी तव अति प्रसन्न हो कैलाश प(-) ० र विश्वकर्मा से वनवा अलका नाम पुरी उन्हो(-) ० ने वुसे वसने को दी ओ दशों दिगपालों मे ए(-) ० क दिगपाल वुसे किया ओ वहां कुम्भकर्ण वि(-) ० भीषण समेत सव राक्षसों ने मिल कर लं(-) ० का का जाजा[2] रावण को किया तव वह दुष्ट रा(-) ० ज्य पर वैठ त्रिलोकी को लगा संतावने(।) कुछ ० दिन के वीतें विद्युज्जिह्व नाम महा असुर से सू(-) ० र्पनखा नाम अपनी वहन का वुसने व्याह क(-) ० र दिया तिस अनन्तर दिति का पुत्र मय नाम ० दैत्य ने मन्दोदरी नाम निजपुत्री जो लोक मे ० एक सुन्दर थी रावण को व्याह दी और अमो(-) ० घ शक्ति भी वुसे दे डाली तव वैरोचन की वेटी ० को जिसका नाम संसार मे तृत्रज्वाला कर प्र(-) ० सिद्ध था आप रावण ने कुंभकर्ण को व्याह दि(-) ० या ओ शैलूष नाम गंधर्व राज की सरभा ना(-) ० म अति धर्मिष्ट एक लडकी थी वुसे विभीष-० ण को व्याह दिया (।) इस अनंतर मंदोदरी के ० मेघनाद एक पुत्र उत्पन्न हूआ वुस ने जन(-) ० ते हीं मेघ सा महा चीत्कार शव्द किया इस का(-) ० रण सव लोगों नो[3] मेघनाद वुसका नाम र(-) ० ष्षा तव कुंभकर्ण ने रावण से जा कहा भाई ० मुजे नींद वहुत संतावती है एक जगह वता दो ० तो चुपचाप जाकर मै वहां सो रहूं सुनते ही ० रावण ने एक वडा सा घर वनवा दिया वुसमे ० वह मूढ जा सो रहा(।)वुस के सोऐ पर देव दान(-) ० व किन्नर मनुष्य ऋषि इन सभों को रावण ० महा दुख देने लगा ओ देव मनुष्यो की कन्या ० हरने वुस का महाउत्पात सुन दूतों से कुवेर ने ० रावण को वरज भेजा कि एत्ता अधर्म मत क(-) ० रो सो सुन वह अति क्रुद्ध हूआ तो ओंही अ(-) ० लका मे जा कुवेर को जीत पुष्पक विमान वि(-) ० ससे छीन लिया फिर यम ओ वरुण से जा भि(-) ० डा उन्हो को भी वीच संग्राम मे जीत निदान इंद्र ० को मारने के लिये तुरन्त स्वर्ग लोक मे जा रहा ० तहां देवतान समेत इन्द्र ओ रावण से वडी ० लडाई हूई तव इन्द्र ने इसे पकड कर वांध रष्षा(।) ० सो समाचार सुन महाप्रतापी मेघनाद चढ़ ० आया ओ महा

१. मेल से। २. राजा। ३. ने।

संग्राम कर सव देवतान को जी(-) ० त सुरपति को वांधे और पिता को वंधन से ० छोडाये लिये फिर लंका मे चला आया(।) तहाँ ० जा व्रह्मा ने इन्द्र को छोडवा दिया ओ मेघना(-) ० द को वहुत वर दे पुन अपने पद को आये त(-) ० व क्रम क्रम सव लोक को रावण ने जीत लिया ० ओ कैलाश पर्वत को हाथों से उठा कर तौला ० तव कोप कर महादेव के गण नन्दीश्वर ने वु(-) ० से श्राप दिया अरे दुष्ट तूने वडा उत्पात मंचा(-) ०या जा तेरा विनाश वांनरों ओ मनुष्यों से हो(-) ० गा(।) इस प्रकार नन्दीश्वर ने कहा पर उनकी वा(-) त० से रावण तनिक भी डरा नही ओ अपने ० जी मे समझा कि इसके वकने से मेरा कुछ हो ० ने का नहीं(।) यों कह तुरत सहस्रार्जुन के नगर ० मे गया तव वुन्होने इसे पकडकर वांधा तहां ० पुलस्त्य मुनि ने आकर इसको छोडवा दिया ० वहां से छूटते ही वाली को मारने के लिये कि(-) ० ष्किधा मे रावण आया तव वाली ने इसे पकड ० अपने कांष मे लटका लिया ओ सारी पृथ्वी प (-) ० र्य्यटन कर फिर छोड दिया(।) तव अति प्रसन्न ० हो वाली से मित्रता कर रावण ने सव लोक नि(-) ० ज वश मे किये इस प्रकार से मेघनाद समेद द(-) ० शग्रीव की प्रभुता वढी तिस दुष्ट को ओ महा(-) ० पर्वत समान कुंभ कर्ण को रण मे तुमने मारा ० ओ मेघनाद को लक्ष्मण जी ने पछारा तुम ० जगत के आदि कर्त्ता साक्षात नारायण हो ० स्थावर जंगम ये सव तुम्हारे सरूप है तुम्हारे ० नाभिकमल से व्रह्मा उत्पन्न हूआ ओ मुख ० से अग्नि वाहों से सव लोकपाल आषों से चन्द्र(-) ० मा और सूरज कांनों सें सव दिशा नाक से वा(-) ० यु ओ अश्विनीकुमार ये दोनो उत्पन्न हूऐ ओ ० जांघ, ० जानू ० ठेहुन० जघन इन्हो से भुवन् आदि ० लोक उपजे ओ तुम्हारे पेट से चारो समुद्र स्त(-) ० न से इन्द्र वरुण वीर्ज से सनकादिक चारो वा ० लखिल्या ओ लिंग से यम गुद से मृत्यु क्रोध ० से रुद्र हड्डियों से सर्व पर्वत केश से मेघ रोमों से ० सकल औषधी औ तुम्हारे नखों से देवता आ(-) ० दि उत्पन्न हुए(।) तुम विश्वरूप परमेश्वर हो व्र(-) ० ह्मा विष्णु महेश आदि नाना रूप होकर तुम ० ही भास रहे हौ(।) अग्नि जो तुम्हारा एक रूप है वु(-) ० सके आश्रय से देवता सव यज्ञ मे सदा हविष्य ० भोजन किया करते हैं चर अचर रूप सकल सं(-) ० सार तुमही ने सृजा है ओ तुम्हारे ही अवल(-) ० म्व से वे सव जीवते हैं ओ जैसे दूध मे घी व्याप र(-) ० हा है वैसे ही सव वस्तुन मे तुम छा रहे हौ तुम्हा(-) ० रे तेज से चंद्रमा सूर्य प्रकाश होते हैं ऐसी कोई व(-) ० स्तु नही है जिसमे तुम नही हौ पर ज्ञान की दृष्टि ० से लक्षित होते हौ ओ विज्ञान की दृष्टि वाले तु(-) ० म्हे नही देषते जैसे अंधा प्राणी सूर्य को नही ० निरष शकक्ते(।) तुम्हारी कृपा से योली[1] लोग अप(-) ० ने हृदये ही तुम्हे देषते हैं(।) यों कह फिर वोले महा(-) ० राज मैंने तुम्हारे आगे ढिठाई की वातें वहुत ० की हैं तुम क्षमा करो ० इति श्री रामचरित्रे उ(-) ० त्तरकाण्डे द्वितीयो-ध्याय: (।) २ (।) इस भांति जव ० अगस्त्य मुनि कह चूके तव राम ने वुन से पूछा ० महाराज मैंने सुना है कि वाली सुग्रीव ये दोनो ० इन्द्र सूर्य के वीज से उत्पन्न हूऐ हैं तिससे वुन्हो ० का जन्म मै तुमसे सुना चाहता हूं(।) मुनि कहने ० लगे कि मेरु नाम सुवर्ण का एक पर्वत है उसके ० वीच

१. योगी।

शृंग पर जो मणि सा प्रकाश हो रहा है शौ ० योजन की विस्तार व्रह्मा की एक सभा है तहां ० चतुर्मुख व्रह्मा अपने ध्यान मे एकवेर मगन ० हो रहे थे सो वुन की आंषो से आनन्दाश्रु वह ० चला तव उन्होने उसे हाथ मे ले कुछ जी मे शो(-) ० च कर धरती पर फेक दिया वह पृथ्वी पर गिर(-)० ते ही वडा सा एक वांनर हो गया तव व्रह्मा ने उ(-) ० से कहा पुत्र इस जगह से सब प्रकार का भोग है ० तिससे कुछ दिन तो मेरे समीप ह्यां तुम वसो ० पीछे तुम्हारा वहुत भला होगा यिह सुन वहां ० वह रहने लगा फिर कितने दिनों के वीते ० फलमूल के लिये अपने घर से एक वेर वुस प(-) ० हार पर वह निकला सो कुछ दूर जाकर देषता ० क्या है कि अति सुन्दर एक वावली है ओ मणि(-) ० न की शिलों से विसके घाट वांधे हूऐ हैं यह देष ० कर वह वांनर उसमे पानी पीने को गया तहां ० निज परछांही देष दूसरा वांनर जान ओंही ज(-) ० ल मे कूद पडा वहां कपि को न देष कर फिर शीघ्र ० जों वाहर निकला कि तो ही अति सुंदरी नारी ० का सरूप वह हो गया तव अपने को स्त्री सरूप ० देष वहुत चकृत हूआ इस अनन्तर दोपहर के ० समय चतुर्मुख व्रह्मा की पूजा कर सुचित हो इ(-) ० न्द्र विस वावली पर आन पहुचे तो वहां उस नारी ० को देष कामदेव के वाणों से ऐंसे पीडित हूए कि उ(-) ० न्हे वीर्ज पतन हूआ सो वीर्ज वुस अवला के वालों ० मे जा गिरा वुसी से वाली उत्पन्न भया तव वुस को ० सुवर्ण की माला दे इन्द्र अपने धाम को गये कि इत(-) ० नही मे फीरते फीरते सूर्य भी वहां आ निकला ० ओ वुस कामिनी को देष अति कामवश हो वुस ० ने भी उसके गले मे वीर्ज त्याग किया वुस से सुग्री ० व तुरन्त उत्पन्न हूआ विस के साथ सहायता के ० लिये हनूमान को रष सूर्य्य देवता स्वर्ग लोक ग(-) ० या तव दोनों पुत्रों को संग लिये वह स्त्री कहूं जा ० कर सो रही(।) जद प्रभात भयी तद आगे की भांति ० फिर वह पुरुष हो गयी तव लडकों समेत फल ० मूल लिये व्रह्मा के आगे जा खडा हूआ व्रह्मा ने ० वुसे वहुत आश्वासन किया ओ एक देवदूत को ० वुलाकर कहा कि विश्वकर्मा की वनायी हूई कि(-)० ष्किन्धा नाम एक नगरी है वहां सव प्रकार के भो(-) ० ग विलास हैं ओ देवताओं का भी गम्य नही है त(-) ० हां इस वांनर को मेरी आज्ञा से ले जाकर सिं(-) ० हासन पर विटला राज्य का तिलक तुम दो ओ सा(-) ० तो द्वीप के जितने वडे वडे वांनर हैं सो सव इस ० की आज्ञा मे रहें जव धरती के भार हूऐ राक्षसों ० के वध निमित्त रामरूप हो साक्षात नारायण पृ(-) ० थ्वीतल मे अवतार लेंगे तव सव वांनर विन ई(-) ० श्वर की सहायता जा करेंगे(।)यिह सुनते ही देव(-) ० ताओं का वुह दूत विस वांनर को किष्किधा मे तु(-) ० रत ले आया ओ वहां का उसे राजा कर फिर आ(-) ० प व्रह्मा के पास चला गया(।) तव से वह किष्किधा(-) ० नगरी वांनरों की राजधानी हूई(।) हे रामचन्द्र सव ० के ईश्वर तुम हौ जो लीला कर मनुष्य सरूप हो इ(-) ० स पृथ्वी का सकल भार तुमने दूर किया तुम सव ० घटवासी अखण्डानन्द पूरण व्रह्म हौ तुम्हा(-) ० रे इस पराक्रम मे क्या आश्चर्य्य क्यूंकि जो प्रा(-) ० णी तुम्हारे इस रूप को जानता है वह सारी सृष्टि को ० संहार कर शक्ता है ओ जो साक्षात आप हैं वि(-) ० न की प्रभुता मे क्या अचरज पर लोगन के पाप दू(-) ० र करने के लिये ओ वुन को सुख देने के अर्थ स ० ज्जन लोग तुम्हारा यश वषानते हैं(।) तुम्हारे उप(-) ० कार निमित्त वाली सुग्रीव का जो जनम हूआ ० विसका कीर्त्तन जो नर करता है सो सव पातक ० से छूट मुक्ति धाम को जाता है(।)

इतनी कथा कह ० फिर अगस्त्य मुनि वोला(—)हे रामचन्द्र जिस का(-) ० रण दुष्ट रावण ने सीता का हरण किया सो कथा ० अव मै तुमसे कहता हूं सावधान होकर सुनो(-) ० आगे सत्य युग मे ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार ऋषि ० कहूं एकान्त स्थान मे वैठे थे तहां जा नम्र हो राव(-) ० ण ने विन से पूछा महाराज इस संसार माह देव(-) ० तान मे वडा वलसान औ श्रेष्ठ कौन है जिसके ० आश्रय से देवता सव रण के वीच मे शत्रुन को ० जीत लेते हैं ओ व्राह्मण लोग किसका नित्य ज(-) ० प करते हैं ओ योगी सव किसका ध्यान यिह सम(-) ० झाकर आप मुजसे कहिऐ जो मेरे जी का संदेह ०,जावे तव योग की दृष्टि से रावण की मनसा जान ० सनत्कुमार यह वचन वोले(—)सुनो पुत्र जो ईश्वर ० जगत के कर्त्ता हैं ओ जिनका जनन मरण नही ० होता ओ सुर असुर जिन्हे नित्य प्रणाम करते हैं ० ओ जिनके नाभिकमल से व्रह्मा निकला ओ ० जिन्होंने स्थावर जंगम सरूप इस संसार को सृ(-) ० जी है विन्ही के आश्रय से संग्राम मे देवता लोग ० शत्रुन को जीतते हैं ओ योगी सव उन ही का ० ध्यान नित्य करते ओ विन्ही को व्राह्मण लोग स ० दा जपते हैं(।) इस प्रकार महर्षि की वातें सुन फिर ० दशानन ने विनसे पूछा भला अव यिह मुजसे ० कहिऐ कि जो दैत्य दानव राक्षस विष्णु के हाथ ० मृत्यु पाते हैं वे मर कर किस गति को पहुचते हैं(।) ० मुनि ने उत्तर दिया कि जो तो देवतान के हाथों से ० मारे जाते हैं सो स्वर्ग मे जा उत्तम भोग करते हैं औ(-) ० र जव भोग हो चुकता है फिर मर्त्य लोक मे आ ० जनमते हैं ओ अपने आगे के कमाऐ हूऐ पुण्य ० पाप से जीते मरते ओ जो विष्णु के हाथ मृत्यु पा ० ते हैं वे वुन्ही मे मिल जाते हैं विनका जनन मरन ० फिर न कभूं होता है(।) मुनि के मुह से इतनी वात सु(-) ० न कर रावण वहुत हर्षित भया ओ जी मे ठहरा ० या कि विष्णु के साथ अवश्य मै लड़ूंगा तव वुस का मनोरथ जानकर ऋषि ने वुससे कहा पुत्र ० तेरा अभिलाष पूरण होगा इसमे कुछ संदे(-) ० ह नही पर कुछ दिन धीरज करना होगा यों क(-) ० ह फिर सनत्कुमार वोले हे रावण यद्यपि वे भग(-) ० वान अलष निरंजन हैं वुन का रूप कुछ नही तो ० भी माया का जो विनका सरूप है सो मै कहता हूं कि ० पृथिवी ओ समस्त जगत के आधार शेषनाग० ओ सकल देवता सातो समुद्र चन्द्रमा सूर्य्य अग्नि ० वायु वरुण इन्द्र मेघ काल मृत्यु व्रह्मादि रुद्र दिन ० रात घडी प्रहर क्षण पशु पंक्षी मनुष्य असुर आ(-) ० दि जितने स्थावर जंगम प्राणी हैं सो सव ईश्वर ही ० के सरूप हैं वे ही सनातन परमात्मा नाना रूप हो ० क्रीडा कर रहे हैं ओ कुन्दन वर्ण लक्ष्मी को वांये ० अंग मे लिये विजली सा पीताम्बर पहने नील ० कंवल समान श्याम सुन्दर हो सव ठांव विराजते ० हैं पर वुनकी कृपा विन देव दानव आदि कोई वि(-) ० न्हे देष नही शक्ता(।) कितनी ही पूजा पाठ जज्ञ दा ० न तपस्या कोई करे पै विना अनुग्रह वुनका दर्श(-) ० न कभी होने का नही ओ जो वेदान्त शास्त्र पढ ० ज्ञान पा निष्पाप हो भगवान मे लीन हो रहे हैं ० वे भक्त जन वुन का दर्शन पाते हैं(।) हे रावण तू सं(-) ० तोष कर त्रेता युग मे देव मनुष्यों के हित के लिये ० इक्ष्वाकु के कुल मे वे ही नारायण रामरूप हो अ(-) ० वतरेंगे ओ पिता की आज्ञा से स्त्री भाई समेत दं ० डकारण्य मे जायेंगे तव उनका दर्शन तू पावेगा(।) ० यह राम का समाचार विस्तार कर मैंने तुजे कह सु(-) ० नाया सीता सहित विनको भक्ति से तू भज(।)इस ० प्रकार जव सनत्कुमार ने कहा तव ध्यान कर मूर(-) ० ख रावण ने अपने मन मे ठहराया कि मुक्ति के ० लिये राम से

अश्व[1] मै विरोध करूंगा इस कारण ० हे रामचन्द्र तुमसे अपने वध की आकांक्षा कर ० सीता को रावण हर ले गया था सो वुस का मनो(-) ० रथ आपने पूरण किया इस कथा को जो नर ० सुने सुनावे वुसका आयुर्वल वढता है ओ जिस ० की कभी हानि नही सो धन वुसको होता है ० इति श्री रामचरित्रे उत्तरकाण्डे तृतीयोध्याय:(।) ० इतनी कथा कह फिर अगस्त्य मुनि वोले(—) हे रा(-) ० मचन्द्र एक समय व्रह्मलोक से नारद मुनि चले ० आते थे ओ लोकों मे फीरते फीरते रावण भी आ(-) ० ता था संयोगन दोनों से भेट हो गयी तव देष क(-) ० र रावण ने नारद को प्रणाम किया ओ पूछा महारा(-) ० ज तुम तो तीनों लोक का समाचार जानते हौ ति(-) ० स्से यह वताओ कि मुजसे लडने जोग्य महावली ० सव कहा हैं विन वीरों से युद्ध किया चाहता हूं त(-) ० व वडी देर तक शोच कर ऋषि वोल उठे स्वेत द्वी(-) ० प के रहने वाले लोग वडे शूर हैं ओ देषने मे भी ० वडे लम्बे चौडे हैं तिस्से तुम वहां ही जाओ जो नर ० विष्णु की पूजा मे लीन रहते हैं ओ वुन के हाथ ० जिनका वध होता वे ही लोग विस द्वीप मे जा ज(-) ० नम लेते हैं विनको सुर असुर कोई नही जीत ० शक्ता(।) यिह सुनते ही मोछों पर हाथ फेर मंत्री(-) ० न समेत पुष्पक पर तुरन्त रावण चढा ओ विन ० वीरों से लडने के लिये स्वेत द्वीप को चला जव स(-) ० मीप जा पहुंचा तो उस द्वीप के तेज से अति व्याकु(-) ० ल हो पुष्पक एक डेग भी चल नही शके तव मंत्री(-) ० न सहित विमान को ओंही तज पद चार ही एके(-) ० ला जों रावण विस द्वीप के भीतर को चला है तों ही ० एक किसी दासी ने जो अनेक उत्तम स्त्रीन के सा(-) ० थ थी रावण का हाथ पकड लिया ओ पूछा अरे ० भैया तू कौन है ओ किसने तुझे यहां भेजा है यिह ० हमे वता(।) यों कह कौतुक साथ आपसे ये वे सव वहु(-) ० त लगीं हंसने तव किसी किसी प्रकार से विन्हो के ० हाथों से छूटकर रावण फिर आया ओ वुन स्त्री(-) ० ओं का पराक्रम देष अति आश्चर्य मान जी मे ठ(-) ० हराया कि विष्णु के हाथ मृत्यु पाय वैकुण्ठ धाम को ० मै जाऊंगा अव जिसमे वे मुजसे क्रुद्ध होवें सो ० काज मैं करूं (।) यिह मन मे ठान तुमको परमे-श्वर प(-) ० र जान कर सीता को रावण हर ले गया पर तुमसे ० अपने वध की आकांक्षा कर माता की भांति जा(-) ० नकी जी को पालता था(।) हे रामचन्द्र तुम भूत भवि(-) ० ष्य वर्तमान तीनों काल जानते हौ ओ सव के हृ(-) ० दय के साक्षी हौ मेरे भक्त जन मेरी कथा गाय कृ(-) ० तार्थ होवे इसलिए सकल क्रिया करते हो(।) इस ० भांति श्रीरामचन्द्र की स्तुति कर विन से पूजि(-) ० त हो मुनिन समेत अगस्त्य ऋषि अति हर्षित ० होकर अपने आश्रम को गये तव सीता सहित ० भाई मंत्रीन के साथ श्री रघुनाथ जी घर मे वस ० कर आनन्द विहार करने लगे ओ यद्यपि वि(-) ० षय मे अशक्त थे तो भी स्त्री समेत वुसे लगे भो(-) ० गने ओ हनूमान आदि वांनर सव विन दोनो ० भाईन की नित्य सेवा टहल करने(।) इसमे एक दि(-) ० न आगे की भांति पुष्पक विमान फिर राम पा(-) ० स आया ओ यह वचन लगा उनसे कहने महा(-) ० राज तुम्हारे ह्यां कुवेर ने मुजे भेजा है यिह कह क(-) ० र के कि हे पुष्पक पहले रावण ने तुम्हे जीता ति(-) ० स पीछे रामचन्द्र ने तिस्से जव तक संसार मे वे वसें ० वैकुण्ठ को न जांये तव तक

---

१. अवश्य।

वुन्ही को तुम जा डो(-) ० ओ इसलिये मै तुम्हारे पास आया हूं(।) सुन क ० र रामचन्द्र वोले जव तुम्हारा स्मरण मै करूं तव ० मेरे समीप तुम आइओ अव मेरी आज्ञा से ० अन्तर्धान होकर सव ठांव रहो यह सुनते ही ० विमान अन्तर्धा न हो गया(।) रामचन्द्र भी भाई ० न मंत्रीन समेत नीते[1] से सव राज्य काज लगे ० करने (।) राम के राज्य करते हूएे पृथ्वी मे सव प्रका(-) ० र के विरवान वहुत उपजने लगे ओ वृक्ष फ(-) ० लने लोग सव देवतान की भक्ति मे तत्पर हो ० ने स्त्री जन निज स्वामी को देवता समान मा(-) ० नने राम के धर्मराज्य से किसी ने पुत्र का मरण ० नही देषा जहां कहूं कुछ काम काज आ लगे ० तहां वांनरों मंत्रीन समेत सीता को संग लिये० पुष्पक विमान पर चढ कर आप रामचन्द्र जा ० यें आवें ओ जो मनुष्य से साध्य नही सो सो काम ० किया करें(।) एक दिन की वात यों है कि किसी व्राह्म(-) ० ण का वालक मर गया वह वुस मृत को लिये व(-) ० हुत रो पीट रहा था उसे देष कर राम ने अपने मन ० मे विचारा कि मेरे राज्य मे वाप के आगे पुत्र नही म(-) ० रता यिह क्या कारण है कि इसका वालक मरा(।) यि(-) ० ह जी मे शोच ध्यान कर देषें तो एक वन के वीच शू(-) ० द्र तप (।) कर रहा है तव विचारा कि शूद्र को तपस्या क(-) ० रने की आज्ञा नही ओ यह मूरख हठ से करता ० है तो हो न हो इसीके पाप से विप्र का लडका मरा ० है(।) यों ठहरा विस वन मे जा शूद्र को मार स्वर्ग वा(-) ० स विसे दे द्विज के पुत्र को जिला दिया(।) फिर कुछ ० दिन के वीते सव लोगों के उपकार के लिये को(-) ० टिन शिवलिंग की स्थापना करी ओ जो मनु(-) ० ष्यन को देषने मे भी न आये होंगे विन भोगों से ० सीता को दिन दिन अति सन्तुष्ट करते हूएे ध(-) ० रम से प्रजा को लगे पालने ओ सव का पाप दू(-) ० र करण हारी निज कथा सगरे लोक मे विस्तार क(-) ० रने(।) इस प्रकार माया कर मानुष सरूप हो श्री राम(-) ० चन्द्र ने दश सहस्र वर्ष विधि से राज्य किया ओ ० एक सीता विन दूसरी किसी स्त्री का मुख न देषा ० ओ गृहस्थाश्रम मे रह कर अछी रीति लोगन ० को शिषलायी(।) जव दश सहस्र वर्ष का अन्त हो ० चूका तव एक दिन पुष्पवाटिका वीच जहां सव ० प्रकार के भोग थे किसी एकान्त मन्दिर मे जा सं(-) ० कल भूषण पहने प्रसन्न वदन हो श्रीरामचन्द्र ० सुथरे से पलंग पर शोये थे ओ नीलमणि स(-) ० मान शोभ रहे थे तहां सव आभरण से भूषित ० हो कमलनयनी सीता जा विन का पांव दवां रही ० थी सो आपस मे नाना प्रकार की वातचित कर ० निदान यह वचन वोल उठीं हे त्रिलोकी नाथ देव(-) ० न हूं के देव परमेश्वर वैकुण्ठ मे आने के लिये दे(-) ० वताओ ने ऐकान्त मे आकर मुजसे वहुत प्रा(-) ० र्थना करी है कि वैकुण्ठ तज हमे विसरा तुम्हे ० साथ लिये श्री रामचन्द्र पृथ्वीतल मे आ वस ० रहे हैं वुन विना सगरे सुर लोक शून्य हो रहे हैं ० तिससे जों तो वैंकुण्ठ मे पहले तुम आओ तो ० रामचन्द्र भी वहां आवेंगे ओ हम लोगन को ० सनाथ करेगें इस भांति देवताओं ने मुजसे व(-) ० डी विनती की है ओ मै भी तुमसे प्रार्थना करती ० हूं कि शीघ्र वहां चलिए यिह सुन क्षण एक ० ध्यान कर रामचन्द्र वोले इसका उपाय यिही है ० कि झूठमुठ का अपवाद लगा मै तुमको वन ० मे छोडवा दूंगा तहां वाल्मीकि मुनि के आश्रम ० मे इस गर्भ से जो अव मै तुम्हे देषता

---

१. नीति से।

हूं दो कुमा(-)०र जन्मेगें वुन्हो को लिये फिर तुम मेरेपास आ(-) ० इओ तद लोगों के विश्वास के लिये मै तुमसे ० दिव्य कराऊंगा तहां तुम्हारा दुःख देष पृथ्वी फ(-)०ट जायेगी तव उसी पथ से हो कर वैकुण्ठ तु (-) ० म जाइओ विस पीछे मै भी वहां निश्चय आऊं(-)०गा ऐसे शिषा पढा कर रामचन्द्र ने जानकी जी ० को मंदिर भितर भेज दिया(।) तव मंत्रीन समेत ० वैठे हूऐ राम के पास इष्ट मित्र सव आन पहु(-)०चे तो भांति भांति की कथा कह लगे सव हंसने ० ओ राम को हंसाने इसमे प्रसंग पाकर राम ने ० विजय नाम एक सखा से कहा ऐ मित्र तुम ० से यिह पूछता हूं कि इस नगर के ओ देश के ० लोग सव मेरा अथवा सीता कौशल्या का अ(-) ० थवा केकयी ओ मेरे भाईयों का क्या भला वु(-) ० रा कहते हैं तुम्हे मेरा शपथ है जों तुम इसमे ० कुछ छिपाओ(।) वह वोला महाराज सच पूछ(-)०ते हो तो लोग सव तुम्हे यिह कहते हैं कि राम ० ने वडा वडा कठिन कठिन काम किया पर रावण ० को मार निर्लज्ज हो सीता को घर मे लाये ० यिह वहुत अनुचित किया(।) वुसके साथ कि ० जिसे ऐकान्त वन मे से दुष्ट रावण हर ले गया ० भोग करने मे कैसा सुख राम के हृदय मे होता ० होगा(।) ऐसी स्त्री को जों विन्होने संग्रह किया तो ० वुन को देषकर हमलोंगन की नारी सव भी कु(-) ० कर्म करावेंगी सो हमे अवश्य सहना होगा क्यूं ० कि जैसा राजा उसके प्रजा सव भी वैसे ही होते ० हैं(।)इस प्रकार सखा की वातें सुन अपने लोगन ० से भी राम ने पूछा वे सव भी वोले हां जो कहते ० हैं सो सच है इसमे कुछ संदेह नही(।) तव श्रीराम ० चन्द्र ने विजय आदि सव सुहृदों को वहां से वि(-) ० दाकिया ओ लक्ष्मण को वुलाकर कहा कि सी(-) ० ता के लाने से लोक मे वडा अपवाद मेरा हूआ ० तिससे वडे तडके रथ पर चढ़ा वाल्मीकि के आ(-) ० श्रम मे उसे जा छोड आओ इसमे जों कुछ वो(-) ० लोगे तो मुजे मारने की हत्या तुम्हे होगी सुनकर ० मारे डर के प्रभात ही लक्ष्मण जी उठे ओ सुमं(-)त्र० के साथ सीता को रथ पर लिये वीच वन मे वा ० ल्मीकि के आश्रम समीप ले आये तहां रथ से वु ० से उतार यह वचन कहने लगे कि लोकापवाद के ० भय से राम ने तुम्हे वनवास दिया है अव से इस ० ऋषि के स्थान मे तुम रहो हे माता इसमे हमारा ० कुछ दोस नही हम क्या करें(।) ऐसे कह जानकी को ० तज शीघ्र लक्ष्मण जी राम पास आये तव अ(-) ० नाथ की भांति सीता वहुत लगी रोने सो समाचा(-) ० र शिष्यों के मुह से सुनकर वाल्मीकि ऋषि दिव्य ० दृष्टि से सव जानकर सीता को अति आदर सा(-) ० थ अपने स्थान मे ले आये ओ विधि से उन्हे ० पूजा वहुत वुझा समझा सुचित कर सकल हो(-) ० नी विचार ऋषिन की स्त्रीन को वुनका हाथ प(-) ० कडा यह वचन लगे कहने कि देषिओ ये राम ० की भार्या साक्षात लक्ष्मी हैं तुम सव मन लगा क[1] ० कर इनकी रक्षा कीजो(।)तव नारायण की स्त्री जा(-) ० न वाल्मीकि की आज्ञा से ऋषि पत्नी सव जान(-) ० की को आदर से लगीं रषने ओ भक्ति भाव से ० दिन दिन पूजने ओ वहां सीता के विरह से श्री राम-) ० मचन्द्र ओ आदि देव परमात्मा थे निपट व्याकु(-) ० ल भये तो सव भोग विलास तज संसार से महा(-) ० उदास हो मुनि लोगन की भांति नेम आचार ० करने लगे ० इति श्री रामचरित्रे उत्तरकांडे ०

१. 'क' अनावश्यक।

चतुर्थोध्याय: (।) ४ (।) इस अनन्तर यमुना तीर के ० वासी असंख्य ऋषि लोग च्यवन मुनि को आ(-) ० गे कर लवण नाम राक्षस के भय से एक दिन रा(-) ० म पास आये इसलिये कि ये हमारा भय मिटावें(-) ० गे तव रामचन्द्र ने उन्हो को भली भांति से पू(-) ० जा ओ अति आदर साथ पूछा महाराजो अ(-) ० व अपने आगमन का कारण कहो मै धन्य हूं ० जो कृपाकर तुमलोग मुझे दर्शन देने को यहां ० आये तुम्हारा कैसा ही कठिन काज होवेगा तो ० भी मै करूंगा मुज भृत्य को आज्ञा करो व्राह्मण ० लोग मेरे देवता हैं ओ कुलपूज्य(।) यिह सुन अ ० ति हर्षित हो च्यवन मुनि वोले कि आगे सत्य ० युग मे देव व्राह्मणों के पूजक वडा धर्मात्मा म(-) ० धु नाम एक महा दैत्य था वुसे अति संतुष्ट हो ० कर महादेव ने एक अति उत्तम त्रिशूल दिया ० ओ कहा कि जिसको तू इससे मारेगा वह ओंही भ ० स्म हो जायेगा इस प्रकार से तो वुसे वुह शस्त्र ० हाथ लगा ओ रावण की छोटी वहन कुंभी न(-) ० सी उस की भार्या थी उसी स्त्री से महा पराक्रमी ० लवण नाम राक्षस उत्पन्न हूआ वह देवताओं ० व्राह्मणों को पकड पकड मारता है विस दुष्ट से ० अति पीडित होकर हम लोग तुम्हारी शरण मे ० आये हैं तुम वुस चंडाल को जी से मारो(।) रामचंद्र ० वोले महाराज आप लोग तनिक मत डरो लव(-) ० ण को जडमूल से हम उखडवा डालते हैं तुम लो(-) ० ग चिन्ता जिन करो(।) ऐसें ऋषिन को वहुत कह सुचित ० कर फिर कौशल्या नन्दन अपने भाईन से क(-) ० हने लगे कि लवण राक्षस को मार कर इन व्रा(-) ० ह्मणों को अभयदान अव को करेगा सो मुजे ० सुनाओ यिह सुन हाथ जोर भरत वोले महा(-) ० राज मैं ही जाऊंगा आप आज्ञा कीजे(।) इतने मे ० शत्रुघ्न ने राम से प्रार्थना करी कि महाराज रा(-) ० क्षसों की लडाई मे लक्ष्मण जी ने वडा वडा का(-) ० म किया है ओ तुम्हारे पीछे नन्दी ग्राम मे जा भ(-) ० रत ने वहुत दुख भोगा है तिससे लवण को मा(-) ० रने के लिये मैं ही जाऊंगा ओ तुम्हारे प्रताप से ० विस दैत्य को वीच रण मे मारूंगा आप किसी ० वात का संदेह न कीजे(।) सो सुन राम ने शत्रुघ्न ० को अंक मे लगा लिया ओ कहा कि अछा तु(-) ० म जा वुसे मारो हम अभी तुम्हे मथुरा के राजा०करते हैं यों कह लक्ष्मण से तुरन्त सव सामग्री०मंगवायी ओ यद्यपि शत्रुघ्न नही चाहता था तो ० भी प्रीति से वुसे राज्य का तिलक करा एक वहु(-) ० त अनूठा वाण दे यह वचन राम ने कहा भैया ० इसी शर से लवणासुर को जो लोक का महा ए(-) ० क कंटक है जा मारो वह अपने वाप के त्रिशूल ० को पूज घर मे उसे रष प्राणीन को पकड पक ० ड खाने के लिये ओ वुन्हो के वध निमित्त सदा ० वन मे जाता है जव तक वुह वन मे रहे घर मे न ० आवे तव तलक धनुष वाण लिये विसकी न ० गरी के द्वार पर तुम खडे रहिओ जव उह वहां ० आवेगा ओ क्रुद्ध होकर विना शूल ही तुमसे ल ० डने लगेगा तव अवश्य मारा जायेगा(।) इस प्र(-) ० कार से महाक्रूर लवणासुर को मार विसकी ० पुरी को मधुवन मे फिर कर वसा मेरी आज्ञा से तुम वहा का राज्य कीजो पांच सहस्र घोडे अ(-) ० ढाई शौ रथ छ शौ हाथी तीश सहस्र तैलंगे ० ये सव पीछे सें तुम्हारे पास जायेगें अभी तुम ० एकेला ही जा उस राक्षस को मारो(।) ऐसे कह मा(-) ० थ चूम मुनिन समेत आशीस कर रामचन्द्र ने ० शत्रुघ्न को विदा किया तव वे वहां गये ओ जो डौ(-) ० ल राम ने वताया था विसी प्रकार से युद्ध मे मधु ० के पुत्र को मार मथुरा नगर मधुवन मे फिर क(-) ० र वसा दान मान से विसको वडा विस्तार कर

ल(-) ० गे वहां राज्य करने(।) यिह तो यहां का समाचार है ० ओ वहां वाल्मीकि जी के आश्रम मे सीता को ० दो पुत्र उत्पन्न हूऐ तव वाल्मीकि मुनि ने विन ० दोनो मे वडे का कुश ओ छोटे लडके का लव ० नाम रष्षा जव कि वे दोनो सीता के पुत्र क्रम क्र(-) ० म सव विद्या पढ के पण्डित हूऐ ओ वेदाध्य(-) ० यन मे तत्पर तद वेद का अभिप्राय जानने के ० लिये सारा रामायण कि जिसे महादेव ने पार्व(-) ० ती को सुनाया था ऋषि ने विन्होंको पढा दिया(।) ० तव वे दोनो वालक जो अश्विनीकुमार से सुं(-) ० दर थे ओ गाने वजाने मे अति निपुन वीना लि(-) ० ये मधुर स्वर से गाते हूऐ वन वीच मुनिन के स(-) ० माजों मे जहां तहां फीरने लगे(।) विनको देष क(-) ० र मुनि लोग आपस मे यों वतराया करें कि दे(-) ० षो हम लोग चिरंजीवी हैं ओ सकल देश फिर ० फिर कर देषे हैं पर देवता गंधर्व किन्नर इन ० मे ओ स्वर्ग मर्त्य पाताल आदि लोकों मे एंसे ० गानेवाले कहीं देषे तो क्या हमने सुने भी नही(।) ० इस प्रकार नित्य सराहते हूऐ ऋषिन के सा(-) ० थ वाल्मीकि के आश्रम मे वे दोनो कुमार वहु(-) ० त दिनों तक सुख से रहे(।) इस अनन्तर अयो(-) ० ध्या मे श्रीरामचन्द्र ने सुवर्ण की सीता वनवा ० अश्वमेध आदि यज्ञ करने को आरम्भ कि(-) ० या तो विस यज्ञशाला मे ब्राह्मण क्षत्रिय वै(-) ० श्य ऋषि राजर्षि ये सव नेवते हूए यज्ञ देषने ० को आये तहां मुनिन के समीप लवकुश को ० लिये वाल्मीकि जी भी आन पहुचे(।) जव कि एकां(-) ० त मे जा अपने पाठ पूजा से सुचित भये तव ज्ञा(-) ० न शास्त्र की चर्चा मे कुश ने विन से जा कहा म(-) ० हाराज मै तुमसे थोडे ही मे यह सुना चा ० हता हूं कि इस संसार के दृढ वंधन मे क्यूं कर ० प्राणी आ फंसता है ओ क्यूं कर विससे छूट ० ता है यिह समझा कर आप मुजसे कहिऐ मैं ० तुम्हारा शिष्य हूं ओ तुम मेरे गुरु हौ(।) सुनकर ० वाल्मीकि मुनि वोले कि वंध मोक्ष का स्वरूप ० ओ विनका साधन संक्षेप कर सव मैं तुझसे क (-) हूंगा मुजसे सुन कर जों विस पर ठहरोगे तो जी (-) वन मुक्त हो जाओगे सो यिह कि अदेही चेत ० न रूप जो परमात्मा है देह ही वुसका घर है ओ ० इस देह मे अभिमान विसका मंत्री है इस मं(-) ० त्री के वश हो अपने को देही जान स्त्री पुत्रादि ० क मे फंस कर वह परमात्मा नाना भावना किया ० करता है ओ सात्विक राजस तामस ये उत्तम ० मध्यम अधम तीन प्रकार की विस परमात्मा ० की देह है (।) जवकि सात्विक चेष्टा वह करता है त(-) ० व धर्मात्मा हो सुख भोगता है ओ राजसी चेष्टा ० कर स्त्री पुत्रादि के नेहवश हो लोक मे भांति ० भांति के व्यवहार किया करता है ओ तामसी चे ० ष्टा से महाक्रोधी हो निदान कीट योनि मे जा ० जनमता है(।) इस प्रकार चेतनरूप परमात्मा अ(-) ० भिमान वश हो संसार के वंधन मे फंसता है जों ० अपने को चेते तो सहज मे मुक्त होवे(।) यिह स ० मझ जों तुम मुक्त हूआ चाहते हो तो सात्विक ० राजस तामस सकल वांछा तजो ओ मन को ० निज वश मे रष्षो(।) मुक्ति का यही उपाय है इ(-) ० स विन स्वर्ग मर्त्य पाताल मे जा सहस्त्रन वर्ष ० दारुण तप किया करो पर गति मुक्ति होने की ० नही ० इति श्रीरामचरित्रे उत्तरकाण्डे पंच(-) ० मोध्यायः (।) ५ (।) इस भांति जव वाल्मीकि मुनि ० ने समझाया तव कुश के मन का भ्रम तुरन्त ० मिट गया ओ अन्त-ष्करण से मुक्त हूआ इ(-) ० स अनन्तर लवकुश से वाल्मीकि ने कहा कि ० हे पुत्रो अव तुम इस नगर की सव गलीन ० मे मधुर स्वर से गाते हूए राम पास जाओ ० अरु जों वे सुना चाहें

तो अपना गीत विन्हे ० सुनाओ पर जों कुछ तुम्हे वे दें तो मत ली(-) ० जो(।) इतनी वात के सुनते ही वीना लेक़र वे दो(-) ० नो कुमार वहां से उठे ओ जिस प्रकार से ऋ(-)० षि ने कहा था विसी भांति से जहां तहां गाव (-) ० ते हूऐ निदान राम के आगे जा पहुचे(।) रामचन्द्र ० ने विन वालको का अपूर्व गीत सुन वहुत अ(-) ० चरज माना ओ जहां बैठके यज्ञ करते थे त(-)० हां राजान समेत वडे वडे मुनिन को औ पौरा(-)० णिक वैयाकरण आदि जितने व्राह्मण पंडि(-)० त थे तिन सहित नगर के सव महाजनो को वु(-) ० ला भेजा(।) तिन के साथ विन दोनों गाने वालो ० को विठलाया तव वे राजा लोग ओ ब्राह्मणा(-)० दिक सव अति हर्षित हूऐ ओ विन दोनो कु(-) ० मारों को श्रीरामचन्द्र को रूप मे समान दे(-) ० ष निपट विस्मित हो आपस मे परस्पर यह ० वचन कहने लगे कि देषो ये दोनों वालक ठी(-) ० क राम तुल्य हैं(।) जों जटा वल्कल धारण किये ० न रहते तो इनसे ओ रामचन्द्र से रूप मे कुछ ० भेद नही होता(।) इस भांति अति चकित हो हो ० कर आपस मे जव वे लगे वतराने कि इतने मे ० वे दोनो लडके मधुर स्वर से लगे भजन कर(-) ० ने सो सुन वहुत प्रसन्न हो श्रीरामचन्द्र ने ती(-) ० सरे पहर को भरत से कहा कि इन गायनों को ० दश सहस्र दीनार तुम दो(।) यह सुनते ही सुव(-) ० र्ण मगा वे लगे देने पर कुमारों ने न लिये ओ ० कहा कि हम लोग वन के कन्द मूल खाने वा(-)० ले हैं हम इस द्रव्य को लेकर भला क्या करेंगे(।) ० यों कह सुवर्ण को ओंही तज लव कुश दोनो ० भाई वहां से विदा हो कर फिर वाल्मीकि पास ग(-)० ये तव वालकों का चरित्र सुन अति चक्रत हो ० राम ने जाना कि हो न हो ये दोनो सीता के पु(-) ० त्र हैं यिह समझ शत्रुघ्न हनूमान अंगद सु(-) षेण विभीषण इन सभों को वुलाकर राम ने ० कहा कि तुम लोग शीघ्र जा सीता समेत वा(-) ० ल्मीकि जी को यहां ले आओ इसलिये कि ० इस सभा मे आकर सीता शपथ करे जो स(-) ० व कोई विसे निष्कंलक जाने(।) इतनी वात के ० सुनते ही अति विस्मय मान वे पार्श्ववर्त्ती ० सव तुरन्त वाल्मीकि पास गये ओ जितना कु(-) ० छ राम ने कहा था सो सव वुन से वोले तव रा(-) ० म का हृदय जान वाल्मीकि मुनि ने कहा अछा ० पर आज नही कल्ह वडे तडके सभा मे जा सी(-) ० ता शपथ करेगी(।) स्त्रीन को पति ही परम देव ० ता है(।)यिह सुन फिर विन लोगों ने राम से आ ० कहा(।) राम ने तुरत सकल राजान को ओ मु(-) ० निन को कह भेजा कि सीता अपना कलंक ० मिटाने के लिये विचार देगी तुम लोग यहां ० आकर वुस का निर्णय करो(।) इस भांति प्रभु०की आज्ञा पाय व्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र०ऋषि वांनर ये जितने थे सो सव कौतुक देष(-) ० ने को तुरत आन पहुचे सो समाचार सुन ही लवकुश को सं ० ग लिये वाल्मीकि मुनि के साथ हो लाज से ० नीचे शिर किये दोनों कर जोरें कुछ एक वि(-) ० लकती हुई सीता भी सभा मे आन पहुंचीं(।) ० विन को साक्षात लक्ष्मी समान देषते ही स(-) ० कल लोग जय जयकार शव्द कर उठे(।) तव ० वीच सभा मे वैठ कर वाल्मीकि जी रामचन्द्र से ० कहने लगे महाराज ये महा पतिव्रता सीता तुम्हा(-) ० री स्त्री हैं ओ सदा निष्पाप हैं लोक-पवा(-) ० द के डर से आपने इन्हे वन माह मेरे आश्रम मे ० भेज दिया था अब वीच सभा मे ये किरिया दें(-) ० गी तुम आज्ञा करो ओ ये दोनो कुमार सीता ० के पुत्र हैं(,) जांव[1] ही जने हैं(,)

---

१. युग्म, जुड़वां।

ओ तुम्हारे सुत हैं मै ० तुमसे सच कहता हूं ओ सुनो रामचन्द्र मै व(-) ० रुण का दशवां पुत्र हूं मेरे मुह से कभी झूठ ० निकलने का नही ये वालक तुम्हारे ही तन(-)० य है ओ सीता निष्पाप,(,) वरन इनकी सन्ती[1] मै ० शपथ करता हूं कि वहुत वर्ष तक जों मैंने त(-) ० प किये विन का फल न पाऊं जों ये जानकी ० दुष्ट होवें आप मेरे वचन का विश्वास कीजे(।) इ(-) ० स प्रकार वाल्मीकि की वातें सुन रामचन्द्र वोले ० महाराज तुम जो कहते हो सो सच है तुम्हा(-) ० रे सत्य वचन से मुजे विश्वास हूआ लंका मे भी ० देवतान के आगे सीता ने दिव्य दिया था इस्से मै ० इसको घर लाया पर यद्यपि यिह निष्पाप थी ० तो भी लोकापवाद के भय से मैने इसे देश निकाला दिया आप मेरा अपराध क्षमा कीजे ० मैं जानता हूं ये दो(-) ० नो पुत्र मेरे ही हैं अव संसार मे सीता से जो शप(-) ० थ कर शुद्ध हो चुकी है मुजे प्रीति होवे(।) इतने ही ० मे राम का अभिप्राय जान व्रह्मा को आगे कर दे(-) ० वता सव आन पहुचे ओ हर्षित होकर प्रजा ० लोग भी आये तव पीताम्बर पहने नीचे दृष्टि ० किये सीता उठ खडी हूई ओ उत्तर दिश मुह क(-) ० र हाथ जोड यह वचन कहने लगी हे धरती दे(–) ० वी जों तो एक राम विन दूसरे किसी पुरुष को मै ० न चाहती हूं तो विल सरूप पंथ मुजे तुम दो इ(-) ० स प्रकार विस के आरत वचन सुन पृथ्वी तुरत ० फट गयी विसमे से सूर्य समान एक अति अ(-) ० द्भुत सिंहासन लिये देवी का सरूप किये धरती ० देवी झट आ प्रगट हूई ओ नेह से जनकनन्दिनी०को दोनो हाथों से पकड सिंहासन पर चढ़ा रसात(-)० ल को ले चली तव देवता सव अति प्रसन्न हो उ(-) ० पर से लगे फूल वरसाने ओ जय जयकार श(-) ० व्द करने(।) वुस समय क्या आकाश के क्या धरती ० के जितने प्राणी वहां थे सो सव सीता का विचा(-) ० र देष आपस मे वहुत कुछ कहने लगे कि हा सी(-) ० ता अव तुम कहां जाओगी कितने एक तो चि(-) ० त्र समान हो गये ओ कितने राम को लगे निहा (-) ० रने वहुतेरे तो सीता को न देष अचेत हो धरती ० पर गिर पडे(।) इस प्रकार सीता का जाना देष कि(-) ० सी को चेत न रहा मोह से क्षण एक सव चित्र स(-) ० मान हो गये ओ रामचन्द्र सव जानकर भी अ(-) ० नजान से हो सीता के लिये वहुत पछताने लगे(।) ० निदान ऋषियों ने कैंक[2] प्रकार से समझाया त(-)० व जैसें सो के जागें ऐसे सचेत हो श्री रामचन्द्र जी ० ने यज्ञ समाप्त किया ओ जो जो व्राह्मण ऋषि ० लोग नेवते हूऐं आये थे तिन सव को अनमोल ० रत्न कपडे दे आदर मान से सन्तुष्ट कर विदा कि(-) ० या ओ लवकुश को लिये मन्दिर मे आ डेरा लिया(।) ० तव से सकल भोग विलास तज संसार से महा उ(-) ० दास हो एकान्त मे जा नित्य हरि ही की चिन्ता मे ० वे लगे रहने (।) तिस अनन्तर एक दिन ध्यान पूजा ० से विन को सुचित जान साक्षात नारायण पहचा(-) ० न भक्ति से प्रणाम कर विन के पास जा नम्र हो ० कौशल्या यह वचन कहने लगी हे रामचन्द्र तुम ० जगत के आदि पुरुष पूरण परमानन्द ईश्वर हो ० मेरे पुण्य से मेरे गर्भ मे अवतार लिये हो इस वुढा(-) ० पे मे तुमसे कहने का आज मुजे यिह अवसर मि(-) ० ला कि संसार का वन्धन जो अज्ञानता से हूआ है ० अव तक भी सव मेरा नही कटा विससे भव वंध ० न काटनहार ज्ञान अव भी जिस प्रकार से होवे सो ० संछेप कर तुम मुझे

१. इनकी ओर से। २. कई एक।

बताओ (।) इस भांति वैराग्य की ० वातें जव विन्होने पूछी मातृवत्सल ओ परम द(-) ० यालु रघुनाथ जी बोले कि मोक्ष के साधन के ती(-) ० न मार्ग मैं तुम्हे आगे कह चुका हूं (।) एक तो कर्म योग ० दूसरा ज्ञान योग तीसरा भक्ति योग तिनमे भक्ति ० योग निपट सहज है सो भी तामस राजस सात्वि(-) ० क तीन भेद से तीन प्रकार की है जिसका जैसा स्वभाव वि(-) ० से वैसी ही भक्ति होती है (।) जो तो हींसा आरम्भ कर ० दंभ द्वेष वढा मेरी आराधना करता है विसे ताम(-) ० स भक्त जानो ओ स्वर्ग भोग धन यश इन आ(-) ० दि के लिये क्या प्रतिमा से क्या किसी उत्तम स्था (-) ० न मे जा जो मुझे पूजता है वह राजस भक्त है ओ ० जो प्राणी सकल पाप से छूटने के लिये मुजको पू(-) ० जता है ओ सकल पुण्य का फल मुजी को संकल्प ० कर देता है (—) यिह कह के कि इस पुण्य कर्म से भगवा(-) ० न मुज पर संतुष्ट होंवे (—) विसको सात्विक भक्त सम ० झो ओ (।) वही मुक्ति धाम को जाता है (।) यों कह फि(-) ० र वोले मेरे गुणों के श्रवण से जो मन समुद्र मे गं(-) ० गा की भांति मुजमे आ मिलता है वही भक्ति योग का लक्षण है ओ फल रहित जो मेरी दृ(-) ० ढ भक्ति है सो सालोक्य सामिष्य सारूप्य सायु(-) ० ज्य ये चार प्रकार के जो मुक्ति धाम हैं विस पद ० को पहुचावती है पर मेरी सेवा के लिये भक्ति[1] लो(-) ० ग विस धाम को नही ग्रहण करते (।) यही निपट उ(-) ० त्तम भक्ति मार्ग है (।) इसके वल से मेरी प्रभुता ० पाय माया को सहज मे जीत जीवन मुक्त हो(-) ० ते हैं (।) हे माता यह तो भक्ति योग है ओ कर्म यो(-) ० ग यह है कि फल हिंसा रहित जो नित्य नैमि(-) ० त्य कर्म है सो ओ अपने धर्म पर रहना ओ मे(-) ० री स्तुति महापूजा स्मरण वंदना दर्शन ओ ० सव जीव जन्तु मे मेरी भावना (,) सत्य वोलना (,) व(-) ० डों का आदर (,) दुखित जन पर दया (,) सज्जनो ० से संग करना (,) अहंकार तजना (,) श्रद्धा से मुजे ० पूजना (—) ये ही सव कर्म योग हैं इन से शुद्ध मन ० हो मेरे धाम को अति शीघ्र कैसें प्राप्त होते है ० लोग जैसे पवन के वल से गंध नाक मे जा पहु(-) ० चता है (।) हे माता देषो जो मैं सकल घट मे वस र(-) ० हा हूं विसे न पहचान मूढ लोग गंध पुष्प धूपा(-) ० दिक सें वाहर मुजे पूजते हैं पर मैं सन्तुष्ट नही ० होता हूं (।) जो नर मुजे सर्व व्यापी जानकर पूज(-) ० ता है वह पूजा पूजा है यिह समझ अपना प(-) ० राया यिह भेद वुद्धि तज सव घट वासी, जान ज्ञा(-) ० न मान से मुजे पूजना ओ चर अचर सकल ० प्राणीन को मेरा सरूप जान नित्य प्रणाम क(-) ० रना (।) जीव रूप से मैं सव मे वस रहा हूं मुजको ० शुद्ध चेतन सरूप जान किसी से भेद ज्ञान न र(-) ० षना सकल संसार एक ब्रह्ममय समझना (।) ० हे माता यह कर्म योग है ओ ज्ञान योग तो भ(-) ० क्ति योग ही है इससे वुससे वहुत भेद नही है ० इसलिये मैंने नही कहा (।) इन योगों मे से किसी ए(-) ० क को भी अवलम्बकर प्राणी परम सुख पाता ० है यिह विचार मुजे पुत्र जान अथवा सव घट ० वासी जान भक्ति योग से नित्य मेरा ध्यान क(-) ० रो अन्त समय परम पद को जाओगी (।) इस भां(-) ० ति राम की वातें सुन कौशल्या अति हर्षित हूंई ० ओ राजस तामस सात्विक स्वभाव तज नि(-) ० त्य राम को सुमरती हूई कुछ दिन संसार मे ० रह

---

१. भक्त।

निदान परमगति को पहुची ओ राम ने ० जो आगे कहा था वुससे नित्य विन्हे सुमरती ० हूई केकयी ओ सुमित्रा जिसकी मति उत्त(-) ० म थी कुछ दिनों के वीते ये दोनो भी मर गयीं ० ओ स्वर्ग जा दशरथ समेत आनंद विहार क(-) ० रने लगी ० इति श्री रामचरित्रे उत्तर काण्डे ० षष्ठोध्याय:(।) ६ (।) इस अनन्तर कितने एक ० दिनों के वीते युवाजित नाम भरत के मामा ० ने लडाई मे गंधर्वों को जीतने के लिये भरत ० को वुला भेजा तव राम की आज्ञा पाय सेना ० लिये वे वहां गये वो तीन कोटि गंधर्वों को मा(-) ० र विध्वंस कर पुष्करावती नाम उनके नगर का ० राज्य पुष्कर नाम अपने वडे वेटे को दे ओ त(-) ० क्षशिला नाम उनके पुर का राजा तक्षक० नाम निज छोटे पुत्र को कर वहुत अन्न धन ० समेत अनेक इष्ट मित्रन को विनके साथ र(-)० ष फिर अयोध्या मे आ राम की सेवा लगे क(-) ० रने(।) तव रामचन्द्र ने हर्षित होकर लक्ष्मण से ० कहा तुम अपने दोनों कुमारों को पछिम दे(-) ० श मे ले जाओ वहां मल्ल लोग रहते हैं सक(-) ० ल मनुष्य को संताते है विन को जीत निज ० पुत्रो को वहां का राज्य दे फिर शीघ्र मेरे पास ० आओ(।) इतनी वात के सुनते ही वहुत ० हाथी घोडे सैन्य लेकर तुरत वे वहां गये ओ ० सकल शत्रुन को मार सुचित हो वहां के राज्य पर ० अपने कुमारों को विठला पुन रामकी सेवा मे० आ प्रवृत्त हूए(।) इस अनन्तर कैक वर्ष के बीतें पर ० राम को देषने के लिये मुनि का भेष धारण कर ० लक्ष्मण पास आप काल आन पहुचा ओ यह ० वात उनसे कहने लगा महाराज एक वडे ऋ(-) ० षीश्वर का मैं दूत हूं विन स्वामी का कुछ संदेशा ० राम से मुझे कहना है ओ वुनका दर्शन करना ० है तुम मेरा समाचार राम से जा कहो जों वुला ० वें तो विन के पास मैं चलूं (।) यिह सुन लक्ष्मण जी ० ने तुरन्त राम से जा कहा कि एक कोई तपस्वी ० द्वार पर आ खडा है आज्ञा होवे तो वुसे यहां ० लाऊं(।) वे वोले कि अति आदर साथ शीघ्र जा ० विन को वुला लाओ(।) इतने वचन के सुनते ही ० लक्ष्मण जी उस महामुनि को जो अपने तेज ० से आग सा प्रज्वलित हो रहा था तुरत राम पास ० वुला लाये (।) वुस ऋषि ने आकर राम को आशी(-)० ष दी तव प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ इन्होने ० विधि से वुसकी पूजा की ओ आसन पर विठ(-) ० ला यह वात विससे पूछी महाराज जिसलिये ० आप यहां आये सो अपना काज मुझे अव सु(-) ० नाइऐ(।) मुनि वोला कि तुमसे कुछ गुप्त वातें मु(-) ० जे करनी है वुह दूसरे किसी को सुनने योग्य न ० ही है तिससे जो कोई हठ से यहां आकर विसे ० सुने अथवा वातचित करने मे हम दोनों को ० देषे तो वह मारा जाये यिह प्रतिज्ञा करो तो वि ० स वात को मै प्रकाश करूं(।) सो सुन अछा कह ० राम ने लक्ष्मण को आज्ञा करी कि तुम द्वार प(-) ० र जा खडे रहो किसी को यहा आने मत दो जो ० कोई यहां आवेगा वह जी से मारा जावेगा यों ० कह भाई को डेवढी पर भेज आप रामचन्द्र ने ० एकान्त मे ले जाकर फिर विस ऋषि से पूछा ० कहो महाराज जिसने तुम्हे भेजा है विसका ० अथवा तुम्हारा अपना कुछ काम है सो अव ० मुज को सुनाओ(।) वह वोला धर्मावतार मैं सच ० कहता हूं कुछ काज के लिये तुम्हारे पास ब्रह्मा ० ने मुझको भेजा है मै सव का संहार करनेवाला ० काल हूं विधाता तुमको यिह बात कहता है कि ० धरती का भार तो दूर हूआ अव तुम स्वर्ग लो(-) ० क मे आकर हमारी रक्षा करो यहां आने का स(-) ० मय वीता चला जाता है(।) महाप्रलय मे सकल ० लोक का क्षय कर जव तुम एकेले थे तव माया ० के साथ

होकर पहले तो एक मुजी को तुमने ० पुत्र उत्पन्न किया तिस पीछे शेषनाग को ० तिस अनन्तर वडे पराक्रमी मधुकैटभ दो ० दानव उत्पन्न हूए विनको मार कर विन के मां(-) ० स से यह धरती ओ हड्डियों से पर्वत तुमने ० रचे ओ सृष्टि रचने का भार मुज को दिया मैंने ० अंगीकार किया ओ तुमसे कहा अछा महारा(-) ० ज मै सृष्टि रचूंगा पर मेरी प्रजान को जों कोई संता(-) ० वे तो वुन की रक्षा आप किया कीजे तो तुम्हारी ० आज्ञा निवाहूं(।) तव तुमने इस वात को माना फि(-) ० र कितने एक वर्षों के वीतें कश्यप के ह्यां वामन ० अवतार ले वलि को छल इन्द्र को राज्य पर वि(-) ० ठलाया इस प्रकार जव कभी प्रजान को दुख ० हूआ तव विनकी सहायता की ओ राक्षसन ० को मार कर धरती का वोझ तुमने उतारा(।)पु(-) ० न रावण को मारने के लिये मर्त्य लोक मे गये ० तो वह काज कर एक शौ दश सहस्र वर्ष धर(-) ० ती मे तुम रहे तुम्हारा मनोरथ सव पूरण हू(-) ० आ अव उचित है कि वैकुण्ठ मे आईये (।) मनु(-) ० ष्य लोक मे आपका आयुर्वल पूरण हो चुका ० इसके आगे राज्य करने की फिर जों आप ० की इछा है तो कीजे पर अव जों स्वर्ग में आ ० इये तो देवता सव सनाथ होते हैं ओ दुख ० विन का मिटता है यिह तो व्रह्मा का सन्देश है ० ओ मै काल हूं तपस्वी का भेष कर तुम्हारे ० पास आया हूं(।) इस प्रकार से जव विधाता की ० वातें काल ने कह सुनायी तव हंस कर श्री रा(-) ० मचन्द्र वोले तुम्हारा वचन मैंने सुना तुम सं(-) ० तोष करो मुजे भी स्वर्ग चलने की इछा है ० मेरा जन्म तीनों लोक की रक्षा के लिये हू(-) ० आ है इस कारण जहां से मैं आया हूं वहां ० जाऊंगा ही यही अभिलाष है ओ यहां अव ० कुछ मुजे काज नही है व्रह्मा जो कहते हैं सो ० मै करूंगा देवता सव मेरे सेवक हैं विन की र(-) ० क्षा अवश्य मुझे करनी है(।) इस भांति काल ० से रामचन्द्र कहते ही हैं कि अति श्रद्धा सें वि(-) ० न का दर्शन करने के लिये राजद्वार पर दु[1] ० दुर्वासा ऋषि आन पहुचे ओ लक्ष्मण जी ० से कहने लगे तुम शीघ्र मुजे राम पास ले ० चले उनसे मुजे वडा काम है(।) वे वोले राम ० से तुम्हे क्या काम है तुम कहो तुम्हारा अभि(-) ० लाष मैं पूरण करूंगा ओ नही राम ही से भेट ० किया चाहते हो तो वे अभी वडी भीर मे हैं कुछ ० घडी क्षमा करो सुन के कर[2] ऋषि वहुत क्रुद्ध हू(-) ० आ ओ वोल उठा इस समय राम को न मु(-) ० झे देषाओगे तो वुसका सारा वंश निसंदे(-) ० ह भस्म कर डालूंगा(।) इस भांति मुनि की अ(-) ० ति डरावनी वातें सुन लक्ष्मण ने अपने म(-) ० न मे शोचा कि मेरे मरणे से मेरे कुल का संहा(-) ० र न होवे तो यिह अति उत्तम विचार है(।) यों शो(-) ० च कर निदान लक्ष्मण ने राम से जा कहा ० कि तुम्हारे दर्शन के लिये दुर्वासा ऋषि आ(-) ० या है(।) इतनी वात के सुनते ही दशरथ के ला(-) ० ल ने काल को तुरत विदा किया ओ शीघ्र वहां से ० उठ कर ऋषि पास आये विसे प्रणाम कर प्रस ० न्न हो यह वात पूछी महाराज कहिऐ क्या काज ० है सो मै करूं(।)वह वोला सहस्र वर्ष मैंने उपवास ० व्रत किया है सो हो चुका अव भोजन किया चा(-) ० हता हूं जों कुछ अन्न सिद्ध होयें तो मुझे खिला(-) ० ओ यिह सुन अति हर्षित हो अमृत समान ० नाना पदार्थ मंगा कर राम ने दुर्वासा को भोज(-) ० न कराया तव खा पी वहुत संतुष्ट हो आशी ० र्वाद कर

१. 'दु' अनावश्यक। २. करके।

वह अपने आश्रम को गया(।) विस के ० वहां से गये पर रामचन्द्र को सुर्त्त हूई कि काल ० से मैने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई हमारी तु(-) ० म्हारी वात यहां आकर सुनेगा अथवा हमे तु(-) ० म्हे देषेगा वह मारा जायेगा सो लक्ष्मण ने दे(-) ० षा अव मै इसका क्या करूं(।) इस चिन्ता से वे महा ० व्याकुल हूऐ यहां तक कि नीचे शिर किये एकां(-) ० त मे चुपचाप जा वैठ रहै ओ संसार से निपट ० उदास हो नेह वंधन की निन्दा वहुत लगे कर ० ने ओ मन से भी लक्ष्मण को कुछ कह शकें ० नही(।) तव राम को अति आकुल देष लक्ष्मण ० जी विन से जा कहने लगे महाराज मेरे लिये ० आप चिन्ता न कीजे मुजे मार डालिये यिह ० अवश्य होनी थी इसमे आप क्या करेंगे अप(-) ० ना प्रण मत तजिये तुम्हारी प्रतिज्ञा जों झूठ ० होवेगी तो निश्चय मुझे नरकवास होगा ति(-) ० ससे मुजमे जों तुम्हें प्रीति है तो निःशंक मुज ० को मारिये अपनी प्रतिज्ञा मिथ्या जिन की(-) ० जे इसमे वडा अधर्म आपको होवेगा(।) जव कि ० विसने ऐंसे कहा तव रामचन्द्र का मन डगा ० तो वशिष्ट समेत सकल मंत्रीन को वुला भे(-) ० जा ओ जिस प्रकार से दुर्वासा ऋषि आया ० ओ काल से प्रतिज्ञा करी थी सो सव विन को ० कह सुनाया(।) वे लोग हाथ जोड कर वोले धर्माव(-) ० तार तुम धरती का भार दूर करने को आये हो ० लक्ष्मण जी का वियोग तुम्हे होना था यिह तो ० विज्ञान दृष्टि से आगे ही हम लोग जान चुके ० आप लक्ष्मण को शीघ्र त्याग कीजे प्रतिज्ञा मत ० तजिए प्रतिज्ञा झूठ होने से धर्म नष्ट होता है ० धर्मनष्ट होने से तीनों लोक का नाश होगा (।)है[1] ० ओ तुम सव लोक के पालक हौ तिससे उचित ० है कि एक लक्ष्मण को त्याग कर त्रिलोक का ० त्राण कीजे इसीमे तुम्हारा नाम है(।) इस प्रकार ० मंत्रीन की धर्माथिं वातें सुन रामचन्द्र वीच सभा(-) ० मे जा वैठे ओ लक्ष्मण को वुलाकर कहने ल(-) ० गे भाई मै अधर्म न करूं तुम शीघ्र यहां से नि(-) ० कलो सज्जनों का त्याग ओ वध दोनो समान ० है(।) यिह सुन वे वहुत व्याकुल हूऐ निदान राम को ० प्रणाम कर तुरन्त अपने घर मे आये वहां सव ० सें विदा हो फिर सरजू तीर गये वहां झट हाथ ० मे जल ले आचमन कर आसन मार नवो द्वार ० वंद कर प्राण को व्रह्माण्ड मे ले गये ओ ध्यान से ० व्रह्म मे लीन हो योगी की भांति लगे प्राण तजने(।) ० सो समाचार सुन के सुर नर मुनि लोग सव व(-) ० हां आये ओ झोरियों फूल वरसा वरसा लगे ० विनकी स्तुति करने तव कितने एक देवतान ० से भी छिपा गुप्त हो शरीर समेत लक्ष्मण को ० इन्द्र स्वर्ग मे उठा ले गया(।) वे जाते ही आगे की भां(-) ० ति शेष सरूप हो गये तहां व्रह्मा सहित सिद्ध ० लोक के योगी सव विनके दर्शन को आये ० इति श्री रामचरित्रे उत्तर काण्डे सप्तमोध्याय:(।) ० वहां लक्ष्मण को त्याग कर रामचन्द्र वहुत दु(-) ० खित हूऐ तो वसिष्ट समेत सकल मंत्रीन को ० ओ नगर के सव महाजनों को वुला कर कह(-) ० ने लगे कि भरत को राज्य का तिलक देकर ह(-) ० म आज ही लक्ष्मण के पास जायेंगे इसलिये ० तुमको वुलाया है(।) इतनी वात के सुनते ही जित(-) ० ने वहां लोग थे सो मूर्छित हो धरती पर ऐंसें गि(-) ० र पडे जैसें जड मूल से उखड कर पेड षसे ओ ० राम की वात सुन भरत भी अचेत हूऐ निदान ० विन के निकट जा राज्य की निन्दा वहुत लगे क(-) ० रन[2] ओ कहने महाराज मै आपका

१. 'है' अनावश्यक। २. करने।

शपथ खा(-) ० ता हूं कि तुम्हारे विना स्वर्ग का अथवा पृ(-) ० थ्वी का राज्य जों मैं चाहता हूं आप कोशल ० का राज्य कुश को ओ उत्तर देश का राज्य लव ० को दीजे दूत लोग शीघ्र जा शत्रुघ्न को यहां ० वुला ले आवें वह हमारा स्वर्ग जाने का समा(-) ० चार सुन तुरत चला आवेगा(।) इस प्रकार भर(-) ० त की वातें सुन प्रजा लोग भय से अकुला उ(-) ० ठें ओ राम के वियोग ये[1] वहुत व्याकुल हूएं(।) वि(-) ० न को अति आतुर देष वसिष्ठ मुनि ने राम ० से कहा देषो ये लोग तुम्हारा जाना सुन अचेत ० हो धरती पर लोट रहें हैं तुम इन पर कृपा क ० रो(।) तव राम ने अति प्रीति कर सकल प्रजान को ० उठा विठलाया ओ कहा तुम लोग क्या चाहते ० हो सो काज मैं कर चलूं(।) वे सव हाथ जोड कर वो(-) ० ल उठें कृपा निधान जहां तुम जाया चाहते हो ० तुम्हारे साथ हम भी वहां चलेंगे इसमे हमे अ(-) ० क्षय धर्म होता है आप हमारी प्रार्थना अंगी ० कार कीजे हम वहुत हर्षित होते हैं लडके वा(-) ० लों समेत तुम्हारे साथ चलने की दृढ मति हमे ० हो चुकी है(।) आप तपोवन मे अथवा स्वर्गलोक ० मे अथवा किसी दूसरे नगर मे कहूं जाईये प(-) ० र तुम्हारा संग हम न छोडेंगे(।) तव विन के मन ० की दृढ़ता देष श्री रामचन्द्र वोले अछा चलो ० तुम्हारी वात हमने मानी यों कह स्वर्ग जाने ० का निश्चय कर विसी दिन रघुनायक ने लव ० कुश को राज्य का तिलक देकर कोशल ओ उ ० त्तर देश को विदा किया ओ आठ आठ सह ० स्र रथ सहस्र सहस्र हाथी साठ साठ सहस्र ० घोडे विन के संग दिये तव वे दोनों भाई वहुत ध(-) ० न रत्न समेत हृष्ट पुष्ट अनेक लोग साथ ले ० राम को प्रणाम कर अति उदास हो वहां से नि(-) ० कले(।) तिस अनन्तर रामचन्द्र ने शत्रुघ्न को वु(-) ० ला लाने के लिये दूतों को भेजा (।) दूत सव शीघ्र० शत्रुघ्न पास गये ओ काल का आगमन दुर्वा(-) ० सा की करतूति लक्ष्मण का स्वर्गवास राम की ० प्रतिज्ञा लवकुश का अभिषेक यिह सव वि(-) ० न को कह सुनाया(।) वे अपने कुल का संहार सु(-) ० न निपट दुखित हूएं निदान धीरज कर सुवा(-) ० हु नाम अपने जेठ पुत्र को मथुरा का ओ जू(-) ० प केतु नाम छोटे सुत को विदिश नगर का रा(-) ० जा कर आप रामचन्द्र को देषने के लिये तुरन्त अ(-) ० योध्या मे आन पहुचे तो आते ही जहां तेज मे ० अग्नि समान रामचन्द्र धोती पहने अंगोछा ० ओढे ऋषिन के वीच मे वैठे थे तहां जा विन को ० देष प्रणाम कर हाथ जोड यह वचन कहने ल(-) ० गे महाराज मैं अपने लडकन को राज्य पर वि(-) ० ठला तुम्हारे साथ चलने का मन मे निश्चय क(-) ० रके यहाँ आया हूं मैं आपका सेवक हूं मुजे त्या(-) ० ग जाना तुम्हे उचित नही है (।) तव शत्रुघ्न की म(-) ० ति दृढ जान कौशल्यानन्दन वोले अछा दो ० पहर को यहां से हम जायेंगे तुम हमारे संग च(-) ० लो (।) इतने मे राम का जाना सुन सहस्रन ऋछ(-) ० वांनर राक्षस ओ अनेक ऋषि लोग तुरंत व(-) ० हां आन पहुचे ओ राम से कहने लगे कृपानि(-) ० धान हम भी आपके संग चलेंगे(।) इसी मे राजा ० सुग्रीव भी आये ओ भक्तवत्सल रामचन्द्र ० को प्रणाम कर कहने लगे दीन दयाल मैं तु(-) ० म्हारा प्रयाण सुन अंगद को निज राज्य का ति(-) ० लक दे आपके साथ चलने का जी मे निश्चय क(-) ० र के आया हूं मुज को संग लिये चलिये(।) इस प्रका(-)०

---

१. से।

र भाल वांनर ओ राक्षसों का दृढ वचन सुन श्री ० रामचन्द्र विभीषण से कोमल वचन कहने लगे० कि जब तलक धरती रहेगी तलग[1] लंका का रा(-) ० ज्य तुम करो तुम्हे मेरा शपथ है जों इसमे कुछ ० वोलो(।) यों वुसे कह फिर हनूमान को वोले पवन(-) ० कुमार तुम चिरंजीवी होकर धरती मे विराजो ० मेरी इस आज्ञा को मिथ्या मत करो(।) इसी भांति ० जाम्ववान को भी कहा कि तुम भी यहां रहो कु(-) ० छ कारण पा द्वापर मे मुजसे तुम्हे युद्ध होगा त(-) ० व स्वर्ग मे आना(।) ऐंसे इन तीनों को वुझा सम(-) ० झा सुचित कर पुन सकल भाल वानर राक्ष(-) ० सन को कहा तुम लोग मेरे साथ चलो(।) इसी ० वातचित मे रात वीत गयी तव वडे प्रभाते ही रा[2] ० रामचन्द्र ने वसिष्ठ पुरोहित को आज्ञा करी कि ० प्रयाण समय का जो कुछ विधि है सो कीजै(।) प्र(-) ० भु की आज्ञा पाते ही वडे विधान से वसिष्ठ मु(-) ० नि ने यात्रा का सव कर्म किया तव अति विचि(-) ० त्र उन वस्त्र पहने हाथ मे कुश का पवित्रक (-) ० लिये कमलनयन श्रीरामचन्द्र जो कोटिन ० चन्द्रमा से शोभायमान हो रहे थे सव समेत ० अयोध्या सें निकले (।) विसी समय लक्ष्मी सरू (-) ० प होकर सीता स्वर्ग से आयीं ओ हाथ मे ० लाल कमल लिये वायीं दिश हो राम के सा(-) ० थ साथ चलीं ओ धनुष वाण आदि शस्त्र (,) ० वेद (,) वेद की माता(,) सकल शास्त्र ये सव देह धा(-) ० रण किये विन्हो के पीछे-पीछे हो लिये ओ अ(-) ० नुचरों मंत्रियों सहित स्त्री वर्ग को आगे कर ० भरत शत्रुघ्न तो तुरत ही प्रस्थित हूऐ ओ मु(-) ० क्ति धाम की खुली हुई द्वार की भांति राम को ० लक्ष्मी सहित जाते हूऐ देष क्या वाल क्या ० जुवा क्या वृद्ध स्त्री पुरुष व्राह्मण क्षत्रिय ० वैश्य शूद्र आदि छोटे वडे जितने पुर के ० लोग थे सो सव सकल वस्तु की माया मोह ० तज महा आनन्द मे मगन हो पशु पंछी स(-) ० मेत अपना अपना परिवार लिये शीघ्र च(-) ० ल खडे हूऐ(।) विस समय न तो कोई डरा न ० किसी का तनिक भी मुह मलीन न हूआ ० एक महाउत्सव सा हो गया(।) एक ओर से मु(-) ० नियों का वृन्द अल[3] ही निकला दूसरी दि(-) ० श से सुग्रीव आदि जितने श्रेष्ठ वांनर थे ० सो सव स्नान कर शुद्ध हो मंगल ध्वनि कर(-) ० ते हूए तुरन्त नगर से निकले(।) इसी प्रकार से ० स्थावर जंगम दृश्य अदृश्य और जो प्राणी ० थे सो भी संसार से विरक्त हो राम संग चले(।) ० कमलनयन राजा रामचन्द्र के निकलते ही ० सारा अयोध्या नगर शून्याकार हो गया ० यहां तक कि कोई कीट पतंग भी न रहा(। ज(-) ० व कि सव को लिये नगर से कुछ दूर वाहर रा(-) ० मचन्द्र गये तव सरजू नदी को देष अति ० हर्षित हो ध्यान कर अपने को देषतें क्या हैं ० मैं विराट सरूप हूं ओ संसार मेरे उदर मे है(।) ० इतने मे आगे से राम को लाने के लिये स्व(-) ० र्ग लोक से व्रह्मा वहां आन पहुचे विन के ० आते ही सकल देवता और ऋषि सिद्ध ० ये सव भी अपने अपने विमानों पर चढ़े ० हूऐ ऐत्ते आये कि सगरे आकाश छा लि ० या(।) उन सवों की प्रभा से जो सूर्य के कीरण ० समान चमक रही थी विस दिन ऐंसा आ(-) ० काश सोहावन हूआ मानो तारा गण सें रै(-) ० न शोभ रही होए(।) विस समय शीतल मंद ० सुगंध तीन प्रकार की पवन लगी वहने ओ ० फूलों की वृष्टि होने ओ देव गंधर्व किन्नर ० विद्याधर यिह सव मृदंग आदि अनेक

१. तबतक। २. 'रा' अनावश्यक। ३. अलग।

प्र (-) ० कार के वाजे वजा वजा मधुर स्वर से लगे गा (-) ० न करने तव रामचन्द्र ने सरजू का जल स्प (-) ० र्श किया ओ विसमे जा खडे हूऐ तहां जा हा (-) ० थ जोड व्रह्मा लगा कहने हे परमात्मा परमे (-) ० श्वर तुम संसार की उत्पत्ति प्रालन प्रलय ० करने वाले विष्णु हौ अपना प्रभाव जान (-) ० ते हौ आनन्द सरूप पूरण व्रह्म हौ तो भी मे (-) ० री वात सव तुमने रष्षी मै तुम्हारा दास हूं तु (-) ० म भक्तों पर सदा दया करते हो अव मेरी वि (-) ० नती यिह है कि आदि विष्णु सरूप हो के भा (-) ० ईन समेत वैकुण्ठ मे चल के देवतान को पा (-) ० लिये अथवा और किसी देह धारण की ० रुचि है तो वे ही सरूप होकर हम सव की रक्षा ० किजे (।) तुम सकल देवतान के पति विष्णु हौ ० मुज विनु तुम्हे कोई जान नही शक्ता (।) मै[1] ० मै आपको सहस्रन प्रणाम करता हूं मुज ० पर प्रसन्न हूजिऐ (।) इस भांति विधाता की ० वहुत प्रार्थना सुन सकल देवतान के देष (-) ० ते ही ओ अपने तेज से विनकी आषें मूंदत (-) ० हूऐ श्री रामचन्द्र तुरत चतुर्भुज वन गये ० ओ भरत शत्रुघ्न ये दोनों विन के शंख चक्र ० हूए तहां शेस सरूप किये लक्ष्मण जी भीं ० आये ओ सीता तो पहले से साक्षात ल (-) ० क्ष्मी होकर विन के साथ ही थीं (।) इस प्रकार से ० पुरुष पुरातन श्रीरामचन्द्र जंव कि भाईन ० समेत ज्योति सरूप हूऐ तव इन्द्र व्रह्मादिक ० देवता ओ सिद्ध मुनि यक्ष किन्नर गन्धर्व ० ओ पितर लोग ये सव पूरण मनोरथ हो मा (-) ० रे आनन्द के आंषों मे आंसू भर लगे वि (-) ० न को पूजने ओ हाथ जोड स्तुति करने ० तव व्रह्मा से विष्णु ने कहा सुनो प्रजापति ० ये लोग मेरे वडे भक्त हैं मेरे साथ स्वर्ग चल (-) ० ने को सव आये हैं इनमे कीट पतंग हैं वे भी ० पुण्यात्मा हैं ओ मनुष्यों की तो क्या वात है ० तिससे वैकुण्ठ समान जो स्थान है वहां इ (-) ० न सभों को मेरी आज्ञा से ले जाकर स्था (-) ० पित करो (।) वह वोला महाराज अनेक अने ० क प्रकार के भोगों से भरा हूआ मेरे ऊपर सां (-) ० तनिक नाम अति उत्तम एक लोक है जो ० कोटिन सूर्य समान प्रकाश हो रहा है जो ० नर आपका भक्त हो वहुत पुण्य धर्म क (-) ० रते हैं ओ अनजान कर भी मरण समय ० तुम्हारा पवित्र नाम लेते हैं विन का ओ ० योगियों का वहां गम्य है ये लोग उसी स्था (-) ० न मे जा वसें वैकुण्ठ से भी अधिक सुख ० वहां है (।) इतनी वात के सुनते ही अति हर्षि (-) ० त हो आचमन कर सकल वांनर राक्षस ० आदि ने तुरत शरीर त्याग किया ओ आ (-) ० गे की भांति देव सरूप हो वैकुण्ठ धाम को ० गये (।) तिनमे सुग्रीव की उत्पत्ति सूर्य से थी ० इस कारण वह विन्ही मे जा मिला (।) इस प्र (-) ० कार विन के वहां जाते ही पशु पक्षीन स (-) ० मेत जितने लोग राम संग गये थे सो सव ० सरजू मे जा हरि को सुमर मानुष की देह ० तज उत्तम शरीर धारण कर नाना आ (-) ० भरणन से भूषित हो विमानों पर चढ़ सां (-) ० तनिक लोक को गये (।) तिस पीछे सव देव (-) ० तान समेत हंसते खेलते विष्णु जी वैकुण्ठ (-) ० मे जा प्राप्त हूऐ (।) सूत कहता है शौन (-) ० कादि ऋषियों से कि यही रामायण क (-) ० था महादेव ने पार्वती को कह सुनायी थी (।) ० जो नर भक्ति भाव से नित्य नित्य इसे सु (-) ० नता सुनाता है विसे सीता राम प्रसन्न हो ० वहुत लक्ष्मी देते हैं ओ जो इसको सदा ० पाठ करता है वह सहस्रन जन्म के पाप से ० छूट मुक्ति धाम को जाता है यहां तक कि ० राम सरूप हो जाता है० इति श्रीरामचरि ० त्रे उत्तरकाण्डे अष्टमोध्यायः (।) ८ (।) उत्तर ० काण्ड : समाप्तः ॥

१. 'मैं' अनावश्यक

हिन्दी के गौरव ग्रन्थ

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१. हिन्दी-साहित्य का आदिकाल	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३·२५
२. यूरोपीय दर्शन	स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा	३·२५
३. हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	९·५०
४. विश्वधर्म-दर्शन	श्रीसाँवलियाविहारीलाल वर्मा	१३·५०
५. सार्थवाह	डॉ० मोतीचन्द्र	११·००
६. वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा	डॉ० सत्यप्रकाश	८·००
७. सन्तकवि दरिया : एक अनुशीलन	डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री	१४·००
८. काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)	अनु० स्व० पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	९·५०
९. श्रीरामावतार शर्मा-निबन्धावली	स्व० म० म० रामावतार शर्मा	८·७५
१०. प्राङ्मौर्य बिहार	डॉ० देवसहाय त्रिवेद	७·२५
११. गुप्तकालीन मुद्राएँ	स्व० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर	९·५०
१२. भोजपुरी भाषा और साहित्य	डॉ० उदयनारायण तिवारी	१३·५०
१३. राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त	श्रीगोरखनाथ सिंह	१·५०
१४. रबर	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा, एम्० एस्-सी०	७·५०
१५. ग्रह-नक्षत्र	श्रीत्रिवेणीप्रसाद आइ० सी० एस्०	४·२५
१६. नीहारिकाएँ	डॉ० गोरखप्रसाद	४·२५
१७. हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ	श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिंह	३·००
१८. ईख और चीनी	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा	१३·५०
१९. शैवमत	मूललेखक और अनुवादक डॉ० यदुवंशी	८·००
२०. मध्यदेश : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सिंहावलोक	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	७·००
२१-२२. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (खंड १ और २)	सं० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री प्रत्येक का मूल्य	२·५०
२३-२६. शिवपूजन-रचनावली (चार खंडों में)	आचार्य शिवपूजन सहाय : मूल्य क्रमशः	८·७५; ९·००; १०·००; ८·५०
२७. राजनीति और दर्शन	डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा	१४·००

२८. बौद्धधर्म-दर्शन	स्व० आचार्य नरेन्द्रदेव	१७·००
२९-३०. मध्य एसिया का इतिहास (दो खण्डों में)	महापण्डित राहुल सांकृत्यायन प्र० खं० १२·२५; द्वि० खं० ८·५०	
३१. सरहपाद का दोहाकोश	छायानुवादक महापण्डित राहुल सांकृत्यायन	१३·२५
३२. हिन्दी को मराठी संतों की देन	आचार्य विनयमोहन शर्मा	११·२५
३३. रामभक्ति-साहित्य में मधुर उपासना	डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'	१०·२५
३४. अध्यात्मयोग और चित्तविकलन	स्व० वेंकटेश्वर शर्मा	७·५०
३५. प्राचीन भारत की सांग्रामिकता	पं० रामदीन पाण्डेय	६·५०
३६. बाँसरी बज रही	श्रीजगदीश त्रिगुणायत	८·००
३७. चतुर्दशभाषा-निबन्धावली	(संगृहीत)	४·२५
३८. भारतीय कला को बिहार की देन	डॉ० विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह	७·५०
३९. भोजपुरी के कवि और काव्य	श्रीदुर्गाशंकर प्रसाद सिंह	५·७५
४०. पेट्रोलियम	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा	५·५०
४१. नील-पंछी (मूल लेखक मारिस मेटरलिंक)	अनुवादक डॉ० कामिल बुल्के	२·५०
४२. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ् मानभूम एण्ड सिंहभूम		४·५०
४३. षड्दर्शन-रहस्य	पं० रंगनाथ पाठक	५·००
४४. जातक-कालीन भारतीय संस्कृति	श्रीमोहनलाल महतो 'वियोगी'	६·५०
४५. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	मूल लेखक श्री रिचर्ड पिशल अनुवादक डॉ० हेमचन्द्र जोशी	२०·००
४६. दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा	महापंडित राहुल सांकृत्यायन	६·००
४७. भारतीय प्रतीक-विद्या	डॉ० जनार्दन मिश्र	११·००
४८. संतमत का सरभंग-सम्प्रदाय	डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री	५·५०
४९. कृषिकोश (प्रथम खण्ड)	सं० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद	३·००
५०. कुँवरसिंह-अमरसिंह	अनु० पं० छविनाथ पाण्डेय	५·००
५१. मुद्रण-कला	पं० छविनाथ पाण्डेय	७·२५
५२. लोक-साहित्य : आकर-साहित्य-सूची	सं० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	०·५०
५३. लोकगाथा-परिचय	सं० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	०·२५
५४. लोककथा-कोश	सं० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	०·३२
५५. बौद्धधर्म और बिहार	पं० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'	८.००
५६. साहित्य का इतिहास-दर्शन	आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	५.००
५७. मुहावरा-मीमांसा	डॉ० ओम्प्रकाश गुप्त	६.५०
५८. वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति	म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	५.००

५९. पंचदश लोकभाषा-निबन्धावली	(संगृहीत)	४.५०
६०-६१. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (खण्ड ३-४)	सं० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	१.२५ १.००
६२. हिन्दी-साहित्य और बिहार (सातवीं शती से अठारहवीं शती तक)	सं० आचार्य शिवपूजन सहाय	५.५०
६३. कथासरित्सागर (प्रथम खण्ड, षष्ठ लम्बक)	मूल लेखक महाकवि सोमदेव भट्ट अनुवादक स्व० पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	१०.००
६४. भारतीय अब्दकोश	सं० गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ	६.००

उपर्युक्त प्रत्येक सजिल्द पुस्तक पर तिरंगा नयनाभिराम आवरण है।

●

हमारी शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

६५. अयोध्याप्रसाद खत्री-स्मारक-ग्रंथ	सं० आचार्य शिवपूजन सहाय तथा आचार्य नलिनविलोचन शर्मा
६६. पुस्तकालय-विज्ञान-कोश	श्रीप्रभुनारायण गौड़
६७. गोस्वामी तुलसीदास	स्व० श्री शिवनन्दन सहाय
६८. रंगनाथ रामायण (मूल तेलगु से अनूदित)	अनु० श्री ए० कामाक्षी राव
६९. वेणु-शिल्प	श्रीउपेन्द्र महारथी
७०. कथासरित्सागर (दूसरा खण्ड)	मूल लेखक महाकवि सोमदेव भट्ट
७१. विद्यापति-पदावली (प्रथम खण्ड)	
७२. दरियादास-ग्रन्थावली (दूसरा खण्ड)	सं० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
७३. मगही संस्कार-गीत	सं० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

●